वृन्द-ग्रंथावली

[कविवर वृन्द की अप्रकाशित मूल रचनाएं]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता प्राप्त

सम्पादक

डा० जनार्दन राव चेलेर

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०

हिन्दी-विभाग

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

तिरुपति (आंध्र)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

प्रकाशक
विनोद पुस्तक मन्दिर
कार्यालय : रांगेय राघव मार्ग, आगरा-२
बिक्री-केन्द्र : हॉस्पिटल रोड, आगरा-३

प्रथम संस्करण : १९७१
मूल्य : २०.००

कम्पोजिंग : हिन्दी कम्पोजिंग गृह, आगरा
मुद्रण : कैलाश प्रिन्टिङ्ग प्रेस, आगरा
[१२/५/७१]

उस अभागिन माँ की
संजीवनी स्मृति को—

जिसने एक कुम्हलाते हुए पौधे को
जिलाने के लिए अपने सम्पूर्ण
जीवन का उत्सर्ग किया था।

—जनार्दन राव चेलेर

भूमिका

श्री वेंकटेश्वर विद्यालय (तिरुपति) में जब स्नातकोत्तर हिन्दी-अध्ययन और शोध का कार्य आरम्भ हुआ, तब डा० जनार्दन राव चेलेर का नाम विभाग के प्रथम शोधार्थी के रूप में पंजीकृत हुआ था। आज डा० चेलेर का स्वीकृत शोधप्रबंध प्रकाशित हो रहा है। यह मेरे लिए बड़े हर्ष की बात है।

जब 'वृन्द और उनका साहित्य' विषय स्वीकृत हुआ, तब ऐसा अनुभव किया जाने लगा था कि सुदूर दक्षिण में स्थित विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के लिए यह विषय अधिक उपयुक्त नहीं है। वृन्द की अल्पज्ञात या अज्ञात कृतियों का अनुसंधान यहाँ रहकर करना कठिन है; साथ ही शुद्ध ब्रजभाषा की रचनाओं का विश्लेषण एवं पाठानुसंधान भी अधिक न्यायपूर्वक होना संभव नहीं है। डा० चेलेर ने जिस धैर्य एवं अध्यवसाय के साथ शोधकार्य संपन्न किया, वह उल्लेखनीय है। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि अनुसंधित्सु मनोयोग से कार्य में प्रवृत्त होता है, तो कोई भी विषय उसके लिए उपयुक्त हो सकता है।

डा० चेलेर ने वृन्द की रचनाओं की खोज के लिए दो बार राजस्थान की यात्रा की। वृन्द के वंशजों से उन्होंने सौहार्द बढ़ाया। उनसे सामग्री भी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त चेलेरजी ने राजस्थान के हस्तलिखित ग्रंथों के अन्य संग्रहों को भी देखा। राजस्थान के कई अधिकारी विद्वानों से उन्होंने सम्पर्क स्थापित किया। फलतः वृन्द की प्रायः सभी कृतियाँ एकत्र हो गयीं। इनमें से कुछ रचनाएँ अल्पज्ञात थीं। उनके केवल उल्लेख मिलते थे। कुछ अज्ञात रचनाएँ भी प्राप्त हुईं। वृन्द का मूल्यांकन अब तक प्रायः नीति-कवि के रूप में होता रहा था। प्राप्त कृतियों के आधार पर वृन्द का शृङ्गारी कवि के रूप में भी व्यक्तित्व उभरने लगा। ऐतिहासिक मूल्य-महत्त्व की वचनिकाएँ भी प्रकाश में आयीं। इनके आधार पर तत्कालीन ऐतिहासिक परिवेश में भी वृन्द का व्यक्तित्व भास्वर हो उठा। तात्पर्य यह कि वृन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व की अज्ञात परिधियाँ प्रकाश में आयीं।

यही नहीं, डा० चेलेर जी का शोधकार्य भी पूर्व निर्धारित सीमाओं से अधिक

विस्तृत होने लगा। वृन्द-ग्रंथावली की सम्भावना अब यथार्थ बन गयी थी। शोधकार्य के साथ इसका सम्पादन भी सम्बद्ध हो गया। प्रबंध का अवतरण अध्ययन और सम्पादन, इन दो धरातलों पर हुआ। शोध के ये दोनों ही धरातल स्वीकृत और प्रशंसित हुए। इस प्रकार विभाग का प्रथम शोध-अनुष्ठान सम्पन्न हुआ।

वृन्द-ग्रंथावली का तो आकर-ग्रन्थ के रूप में महत्त्व निर्विवाद है। इससे काव्यरूपों के सम्बन्ध में वृन्द की प्रयोगशीलता भी सिद्ध होती है। वचनिका से जहाँ वृन्द की ऐतिहासिक चेतना सामने आती है, वहाँ राजस्थानी गद्य-साहित्य की दृष्टि से भी इस विधा का महत्त्व है। वृन्द-ग्रंथावली में रीतिकाल की सभी प्रवृत्तियाँ अपने-अपने वैशिष्ट्य के साथ प्रतिबिंबित मिलती हैं। वृन्द-ग्रंथावली के रूप में चेलेरजी ने एक महत्त्वपूर्ण आकर-ग्रंथ हिन्दी को दिया है।

वृन्द के साहित्य का मूल्यांकन करते समय लेखक शोधपरक दृष्टि से निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न करता रहा है। शोध-पद्धति से प्राप्त तथ्यों का वस्तुपरक विश्लेषण ही लेखक का अभीष्ट रहा है। सर्वत्र ही एक प्रबुद्ध एवं सक्रिय तटस्थता मिलती है।

जहाँ लेखक वृन्द की कृतियों को खोजने के लिए राजस्थान की भूमि से संपर्क बनाए रहा, वहाँ उस भूमि से वह वृन्द के जीवन के लिए आवश्यक साक्ष्यों का भी संग्रह करता रहा। वचनिका और अन्य कृतियों के अंतःसाक्ष्य से पुष्ट, उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर वृन्द के जीवन की रेखाओं को स्पष्ट किया गया है। किन्तु लेखक की दृष्टि सदैव जीवन की रेखाओं में से वृन्द के व्यक्तित्व को उभारने की ओर रही है। व्यक्तित्व के साथ कृतित्व को संबद्ध करने में लेखक संक्रमण की प्रक्रिया का वैज्ञानिक निरूपण कर सका है।

वृन्द की कृतियों में जो कृतित्व प्रकट होता है, उसके आंतरिक पक्षों का उद्घाटन ही शोधप्रबंध का लक्ष्य है। नीतिकार वृन्द के अनुभव, ऐतिहासिक परि-ज्ञान और पूर्ववर्ती नीति-साहित्य के अवगाहन ने उनके नीति-साहित्य को वस्तुगत गौरव प्रदान किया है। इस साहित्य के लिए प्रभावशील अप्रस्तुत विधान में पर्याप्त मौलिकता है। इस भाग के विश्लेषण में लेखक ने बड़ी रुचि ली है। यही वह क्षेत्र है, जहाँ शृंगारी कवि वृन्द की नीतिकार वृन्द से मैत्री होती है। शृङ्गारी अप्रस्तुत नीति-कथन को विशेष चमत्कारपूर्ण बना देता है। शृङ्गारी वृन्द के रूप को स्पष्ट करना तो उनके एक अज्ञात सौंदर्य-बोध को प्रकाश में लाना है। भाव पंचाशिका, यमक सतसई आदि कृतियों में यद्यपि रूढ़ वस्तु ही समाविष्ट है, तथापि उक्ति-चमत्कार अपने ढंग का है। अनुभूति का पक्ष तो सभी रीति-कवियों की भाँति वृन्द का भी शिथिल है, किन्तु उक्ति-वैभव में वृन्द की देन निश्चित रूप से उत्कृष्ट है। इसीलिए रीतिकालीन साहित्य का शोधार्थी बरबस कला-प्रविधियों के विश्लेषण में रम जाता है। डा० चेलेर जी ने वृन्द के कला-पक्ष को अपनी निजी पद्धति से उजागर किया है।

शोधप्रबंध के अन्तिम भाग में आदान-प्रदान और स्थानांकन है। आदान भाग में लेखक ने कवि के व्यक्तित्व को अतीत के स्रोतों से संबद्ध किया है और प्रदान के द्वारा भावी परम्परा में वृन्द के व्यक्तित्व की विस्तृति दिखलाई है। इस प्रकार एक परम्परा में वृन्द का व्यक्तित्व अपना स्थान सिद्ध करता है।

यहाँ शोधप्रबंध की विधिवत् समीक्षा मेरा उद्देश्य नहीं है। प्रबंध-निर्देशक के रूप में प्रबंध की कतिपय विशेषताओं की ओर संकेत मात्र कर दिया गया है। विषय-निर्धारण से लेकर अन्त तक मेरा इस शोध-प्रबन्ध से सम्बन्ध रहा है। डा० चेलेर मेरे प्रिय शिष्यों में हैं। उनके बहुभाषा ज्ञान, प्रतिभा तथा अध्यवसाय से मैं अधिक प्रभावित रहा हूँ।

अंत में शोधप्रबंध के स्वागत के प्रति मैं अपनी कामना और आशा व्यक्त करता हूँ। शोध के जिस स्तर को डा० चेलेर ने प्राप्त करने का प्रयत्न किया है, वह अपने आप में उल्लेखनीय है। इस सफल कृति के लिए मैं डा० चेलेर को हार्दिक बधाई देता हूँ।

—डा० विजयपाल सिंह
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी-विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

रामनवमी, सं० २०२८
वाराणसी

प्राक्कथन

कविवर वृन्द का आनुसंधानिक अध्ययन अलग से 'वृन्द और उनका साहित्य' शीर्षक से प्रकाशित हो रहा है। उसकी आधारभूत सामग्री संप्रति 'वृन्द ग्रन्थावली' के रूप में स्वतन्त्रतः प्रकाशित की जा रही है जिसमें वृन्द कवि का सम्पूर्ण साहित्य एकत्र, संकलित एवं सम्पादित किया गया है। प्रस्तुत वृन्द की रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियों का विवरण देना मात्र अभिप्रेत है।

कविवर वृन्द की कुल रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(१) सम्मेत सिखर छन्द (२) बारहमासा (३) अक्षरादि दोहे (४) भाव पंचाशिका (५) शृंगार शिक्षा (६) नैन बत्तीसी (७) पवन पच्चीसी (८) बचनिका अथवा रूपसिंह की वार्त्ता (६) सत्य सरूप रूपक (१०) नीति सतसई (११) यमक सतसई (१२) हितोपदेशाष्टक (१३) भाषा हितोपदेश (१४) पुष्कराष्टक (१५) भारत कथा तथा (१६) स्फुट छन्द। इनमें से संख्या २ से १२ तक की रचनाएँ पूर्णरूपेण उपलब्ध है। भाषा हितोपदेश का नामोल्लेख मात्र मिलता है। शेष के कुछ ही छन्द प्राप्त होते हैं। स्फुट छन्दों की उपलब्ध संख्या लगभग १५० तक पहुँचती है। इन कृतियों के प्रमुख स्रोत हैं—कवि के ही वर्तमान वंशज जो किशनगढ़ (राजस्थान) में रहते हैं। इनके अतिरिक्त प्रधान स्रोत हैं—(१) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, (२) श्रीयुत अगरचन्द नाहटा जी का निजी संग्रहालय, बीकानेर तथा (३) अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर। गौण स्रोत हैं—सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर, चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा, मुनि कांतिसागर जी का निजी संग्रहालय, उदयपुर। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग तथा नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी। नीति सतसई तो वृन्द की सुप्रसिद्ध रचना है जो अनेक बार प्रकाशित हो चुकी है। प्रायः सभी संग्रहालयों में इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ अवश्य उपलब्ध होती हैं। शृंगार शिक्षा पहली बार सन् १९१३ में अजमेर से प्रकाशित हुई थी, जिसकी केवल एक प्रकाशित प्रति चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा में उपलब्ध होती है। भाव पंचाशिका एक बार सन् १९२६ में अजमेर से ही प्रकाशित हुई थी, जिसकी केवल एक-एक प्रति चिरंजीव

पुस्तकालय आगरा तथा सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर में उपलब्ध होती है। इनके अतिरिक्त शेष सभी रचनाएँ अप्रकाशित हैं। जून, १६२८ में वृन्द जी के वंशज कवीश्वर घनश्यामजी तथा विजयदयाल जी ने शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु पत्रिका का 'वृन्द विशेषांक' निकाला था जिसमें उन्होंने वृन्द की जीवनी तथा कृतित्व के परिचय के साथ उनकी कृतियों के कुछ उद्धरण भी प्रकाशित कराये थे।

वृन्द की उपर्युक्त कृतियों में से केवल नीति सतसई की ही ह० लि० प्रतियाँ सर्वाधिक संख्या में उपलब्ध होती हैं। इसके बाद क्रम आता है भाव पंचाशिका का, जिसकी चार-छह हस्तलिखित प्रतियाँ यत्र-तत्र देखने में आयीं। इनके अतिरिक्त शेष कृतियों की ह० लि० प्रतियाँ एक-दो से अधिक नहीं मिलतीं। स्फुट संग्रहों की गुटिकाओं में भाव पंचाशिका, शृंगार शिक्षा तथा पवन पच्चीसी के छन्दों के अतिरिक्त वृन्द के स्फुट छन्द भी प्रायः संकलित किये हुए मिलते हैं। मैंने वृन्द के स्फुट छन्दों का इसी प्रकार विभिन्न संग्रहों से चयन किया है। वंशजों के पास उपलब्ध प्रतियाँ पूर्ण तथा उनके पाठ प्रायः शुद्ध हैं। इनमें से अधिकांश प्रतियाँ वृन्द के प्रपौत्र कवि दौलतराम के द्वारा लिपिबद्ध की हुई हैं। अन्यत्र उपलब्ध प्रतियों में क्षेपकों की मात्रा बहुतायत में होने के कारण उनके पाठ भी प्रायः अशुद्ध दिखायी देते हैं। प्रायः लिपिकर्ताओं की प्रांतीयता तथा उनके शिक्षा-संस्कारों की योग्यता प्रतियों में पाठभेद उत्पन्न करने में विशेष रूप से कारणीभूत हुई है। और यह पाठभेद भी प्रायः स्थूल रूप में ही हुआ है। इस प्रकार, एक तो वृन्द की रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियाँ ही अधिक नहीं मिलतीं, और दूसरे जिन रचनाओं की एकाधिक प्रतियाँ मिलीं भी तो उनमें मात्राओं के ह्रस्व-दीर्घ-परक अन्तर के अतिरिक्त कोई ऐसा पाठांतर नहीं मिलता जिससे अर्थान्तर लक्षित किया जा सके। पाठभेदाध्ययन का लक्ष्य होता है संभावित अर्थभेद का विवेक करके मूल कवि-अभिप्रेत अर्थ का अन्वेषण करना। वृन्द की रचनाओं की ह० लि० प्रतियों में ऐसा पाठभेद लक्षित नहीं हुआ। यह रूप-भेद भी विशेष रूप से कारकों में ही लक्षित होता है; जैसे—सूं-सों-सौं, कूं-कों-कौं; कें-कैं, सें-सैं, तें-तैं, में-मैं, हूँ-हौं, हो-हौ तथा कुछ हद तक क्रियापदों में भी; यथा—वर्तमानकालिक रूप जराय-जराइ तथा पूर्वकालिक कृदंत रूप हस-हसि। इनके अतिरिक्त लिपि में इ-यि, ओ-वो, ऐ-अै, व-ब तथा ष-ख जैसा भेद भी दिखायी देता है।

अब प्रत्येक कृति की हस्तलिखित प्रतियों का परिचयात्मक विवरण दिया जाता है—

(१) **बारहमासा (रचनाकाल संवत् १७२५)**—इसकी केवल एक प्रति श्रीयुत अगरचन्द नाहटा, बीकानेर के निजी संग्रहालय में प्राप्त हुई, जहाँ कवितासंग्रह की एक ह० लि० प्रति (गुटिका नं० ६६ उप०) में यह संकलित था। प्रति की भाषा-शैली काफी गड़बड़ दिखायी देती है। गड़बड़ी का कारण लिखक का कदाचित् अल्पशिक्षित होना है।

(२) अक्षरादि किंवा अंत्याक्षरी दोहे (सं० १७४२)—इसकी कुल तीन ह० लि० प्रतियाँ देखने को मिलीं—दो वंशजों के पास तथा एक प्रति श्री नाहटा जी के पास। नाहटा जी वाली प्रति वंशजों की प्रति की तुलना में काफी भ्रष्ट प्रतीत होती है। वंशजों के पास एक पूर्ण प्रति है और दूसरी अपूर्ण। एक लम्बे-से सिले हुए नोट-बुक में अत्यन्त सुपाठ्य तथा बड़े-बड़े अक्षरों में यह लिखा हुआ है। प्रति पूर्ण सुरक्षित है। इसका लिपिकाल सं० १९७१ दिया गया है।

(३) भाव पंचाशिका (सं० १७४३)—इसकी प्रकाशित प्रतियाँ चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा तथा सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर में देखने को मिलीं। इसकी ह० लि० प्रतियाँ वंशजों के अतिरिक्त बीकानेर में नाहटा जी, जोधपुर में प्रतिष्ठान तथा काशी में नागरी-प्रचारिणी सभा में सुरक्षित हैं। इसकी प्राचीनतम ह० लि० प्रति जोधपुर के प्रतिष्ठान में देखने को मिली जिसका लिपिकाल सं० १७९३ है। इसके अतिरिक्त 'प्रतिष्ठान' की दो अन्य प्रतियों का लिपिकाल है सं० १७९८ तथा १८३९। नाहटाजी की प्रति का लिपिकाल सं० १७९९ है और वंशजों की प्रति का लिपिकाल सं० १८५५। मैंने इन सभी प्रतियों का मिलान करके देखा। वंशजों की प्रति संभवतः कवि के वंशज दौलतराम के हाथों लिखी हुई है। इसी को मैंने अधिक शुद्ध पाया। वैसे पाठांतर यत्र-तत्र ही पाया गया; विशेषकर कारकों के रूपों में।

(४) शृंगार शिक्षा (सं० १७४८)—इसकी केवल एक प्रकाशित प्रति आगरे के चिरंजीव पुस्तकालय में मिली तथा केवल एक हस्तलिखित प्रति वंशजों के पास जिसका लिपिकाल सं० १८५५ है। प्रकाशित प्रति में लिपिकाल सं० १८७४ दिया गया है। किशनगढ़ की प्रति कवि-वंशज दौलतराम के ही हाथों की लिखी हुई सुपाठ्य अक्षरों में सुरक्षित है। दोनों प्रतियों में पाठभेद प्रायः नहीं के बराबर है।

(५) नैन बत्तीसी (सं० १७४३)—यह कवि वृन्द के नाम की एक सर्वथा अनुल्लिखित—पूर्व रचना है जिसकी केवल एक प्रति जोधपर के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में प्राप्त हुई। ह० लि० ग्रं० सं० ४४५२। इसकी प्रामाणिकता पर मैंने अपने शोधप्रबन्ध 'वृन्द और उनका साहित्य' में पूर्ण विस्तार के साथ विचार किया है। इसका लिखक तथा लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं। यह प्रति काफी भ्रष्ट प्रतीत होती है जिसमें प्रक्षेपांश भी पर्याप्त लक्षित होता है। लिपिकर्ता कोई राजस्थानी प्रतीत होता है जिसके हाथों लिपि करने में इसकी भाषा मे डिंगल का प्रभाव आ गया है। सिवाय इसकी भाषा-शैली में एकरूपता बाधित दिखायी देती है। कुल मिलाकर लिपि करने में लिखक ने काफी असावधानी बरती है; यहाँ तक कि काव्यार्थ-संगति में भी बाधा पड़ने लगती है।

(६) पवन पच्चीसी (सं० १७४८)—इसकी केवल एक पूर्ण प्रति वंशजों के पास प्राप्त हुई, जहाँ एक गुटिका में पवन पच्चीसी के बाद वृन्द का ही 'हितोपदेशा-

ष्टक' तथा अंत में वृन्द के ही चार स्फुट छंद लिखे गये थे। प्रति सुपाठ्य अक्षरों में पूर्ण सुरक्षित है। लिपिकाल सं० १९६६ दिया गया है। नाहटा जी के पास इसकी एक अपूर्ण तथा किंचित् भ्रष्ट प्रति उपलब्ध है।

(७) **बचनिका अथवा रूपसिंह की वार्त्ता** (सं० १७६२)—इसकी केवल एक ही प्रति वंशजों के पास सुरक्षित है। यह प्रति मोटे पुट्ठों वाली सजिल्द है, किन्तु जिल्द टूट गयी है, प्रति पुरानी हो गयी है और कागज भी नरम पड़ गये हैं। नमी लग जाने के कारण जगह-जगह काले धब्बे भी दिखायी देते हैं। कुल १०८ पन्ने हैं। आरंभ के २८ पन्नों में एक दूसरे लिखक का हस्तलेख दिखाई देता है; विशेषकर २८ वाँ पन्ना तो काफी बचपने से मोटे-तिरछे अक्षरों में लिखा गया है। २८ पन्नों तक की लिपि भी अत्यन्त खराब है, कागज भी जीर्ण हो गये हैं। २८वें पन्ने पर आधे में ही लेखन छूट गया है। फिर २९वें पन्ने पर क्रम जारी रखा गया है। ऐसा लगता है कि आरम्भ के ये २८ पन्ने अलग से जोड़े गये हैं। इसके बाद के पन्ने अच्छे हैं, लिपि भी सुलेख तथा सुपाठ्य है। बीच-बीच में 'बचनिका' 'छंद' आदि शीर्षक लाल अक्षरों में लिखे गये है। प्रत्येक पृष्ठ पर 'केदार' लिखा गया है। ये केदार कवि के ही एक वंशज थे। वस्तुत: बचनिका की इस प्रति के भी लिखक दौलतराम ही दिखायी देते हैं। संभवत: आरम्भ के २८ पन्ने खो जाने के कारण दूसरे वंशज केदार जी ने उनकी प्रतिलिपि करके आरम्भ में जोड़ दिया होगा। इनका हस्तलेख बहुत ही खराब है और पाठक के रूप में प्रत्येक पृष्ठ पर अपना नाम अंकित किया है।

(८) **सत्य सरूप रूपक** (सं० १७६४)—इसकी एक पूर्णप्राय प्रति वंशजों के पास उपलब्ध है। इसके कुल ३५ पन्ने उपलब्ध हैं। शायद ३६वें पन्ने पर दो-एक छन्दों के साथ रचना समाप्त होती है। अंतिम पन्ना न होने के कारण पुष्पिका भी लुप्त है। लिपि को देखते हुए लगता है कि यह भी दौलतराम की ही लिखी हुई प्रति है जो अब काफी जीर्ण हो चली है, तथा पन्ने नरम पड़ चले हैं। अक्षर सुपाठ्य हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति उदयपुर में मुनि कांतिसागर जी के पास उपलब्ध है। उसके आदि तथा अन्त के पृष्ठ लुप्त हो गये हैं। प्रति का आरम्भ १५ वें छन्द से होता है तथा अन्त ३५०वें दोहे के बाद एक अधूरे सवैये के साथ। इसका लिपिकाल ज्ञात नहीं है।

(९) **यमक सतसई** (सं० १७६३)—वंशजों के पास इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक दौलतराम की लिखी हुई पुरानी प्रति तथा दूसरी अपेक्षाकृत आधुनिक काल की जिल्दवाली अधूरी प्रति, जिसके लिखक का ज्ञान नहीं है। इस जिल्दवाली दूसरी प्रति में २२७ दोहे हैं; कागज मोटा, अक्षर सुपाठ्य, यत्रतत्र संशोधन भी किया गया है। प्रति अधूरी है। पहली प्रति पर्याप्त पुरानी हो गयी है, कागज पतला व पुराना। स्वतंत्र पन्ने कुल ६१ हैं; बीच-बीच में फटे हुए स्थान पर गोंद से चिपकाया गया है। इनमें से २४, २५, २६, २७, ५१ और ५८ संख्यक कुल ६ पन्ने खो गये हैं। अक्षर वैसे सुपाठ्य हैं, किन्तु यह सबसे अधिक गड़बड़ प्रति है। कहीं छन्द-संख्या में व्यति-

क्रम हुआ है तो कहीं दोहों के चरण दुहराये गए हैं, किंवा कहीं कोई दोहा अथवा उसका कोई चरण ही छूट गया है। वास्तव में रचना की संगति बैठाना बड़ा कठिन है। इसका लिपिकाल सं० १८७८ दिया गया है। तीसरी प्रति जोधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में सुरक्षित है जो अपेक्षाकृत नवीन है, लिपिकाल सं० १९०१। यह जोधपुर में ही लिखी हुई है। दोनों प्रतियों में कुल दोहे ७१५ हैं। प्रति अत्यन्त सुन्दर है, अक्षर सर्वथा सुपाठ्य व सुडौल।

(१०) **नीति सतसई (सं० १७६१)**—यह 'वृन्द-सतसई' के नाम से सुप्रसिद्ध रचना है जो कई बार प्रकाशित हो चुकी है। ऐसा कोई संग्रहालय नहीं होगा जहाँ इसकी एकाध प्रति—पूरी किंवा अधूरी नहीं होगी। वंशजों के पास भी इसकी दो-तीन प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति का लिपिकाल सं० १८९५ दिया गया है। जोधपुर के प्रतिष्ठान में लगभग एक दर्जन प्रतियाँ देखी गयीं। वहाँ पर प्राचीनतम प्रति सं० १८१३ की उपलब्ध हुई। सभी प्रतियों का परस्पर मिलान करके देखने पर पर्याप्त वैविध्य दिखायी देता है जो इसकी लोकप्रसिद्धि को देखते हुए स्वाभाविक लगता है। इसमें प्रक्षेप भी काफी हुआ है। दोहों की संख्या में व्यतिक्रम होना तो साधारण बात है। उनके प्रथम एवं द्वितीय चरणों में भी यत्रतत्र व्यतिक्रम हुआ है। कुछेक प्रतियों की भाषा भी स्पष्टतः भ्रष्ट की हुई मिलती है। लिपि-कर्ताओं ने जगह जगह नवीन दोहे भी जोड़े हैं। इसलिए दोहों की कुल संख्या में भी व्यत्यास मिलता है। अधिकतम संख्या ७२०-७२५ तक चली गयी है तथापि प्रकाशित प्रतियों में से 'सतसई सप्तक' में संगृहीत डा० श्यामसुन्दरदास द्वारा संपादित संस्करण तथा काशी से श्रीकृष्णदास द्वारा संपादित संस्करण अधिक निर्भरयोग्य प्रतीत होते हैं।

शेष रचनाएँ प्रायः अधूरी हैं। इनमें से 'सम्मेत शिखर छंद' के कुल ८ छप्पयों में से अंतिम 'राजस्थान भारती'—जुलाई-अक्तूबर, १९४६ में श्रीयुत नाहटा जी द्वारा उद्धृत किया गया था। 'पुष्कराष्टक' के भी केवल दो ही छप्पय उपलब्ध हो सके, जो वंशजों के पास एक गुटिका में संगृहीत थे। वंशजों के पास ही किसी संग्रह में 'कवि वृन्द-कृत भारतकथा के दोहे' लिखे हुए थे, जिनकी कुल संख्या केवल ११ है। वैसे कथा-प्रसंग इनमें पूरा आ गया है। इसकी प्रामाणिकता प्रश्ननीय है। इस पर मैंने अपने शोधप्रबन्ध 'वृन्द और उनका साहित्य' में पूर्ण विस्तार के साथ विचार किया है। स्फुट छन्दों की संख्या तो लगभग १००० तक भी बतायी जाती है। यत्रतत्र शृंगार, नीति, वैराग्य तथा भक्ति-परक संग्रहों में वृन्द के छन्द भी संकलित किये हुए मिलते हैं। विशेष प्राप्ति-स्थान हैं—किशनगढ़ में वंशज, बीकानेर में श्रीयुत नाहटाजी का निजी संग्रह तथा अनूप संस्कृत लाइब्रेरी तथा जोधपुर का प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान। इनमें से मुझे कुछ ही छंद प्राप्त हो सके। इनमें से कुछ तो 'वृन्द विशेषांक' में ही प्रकाशित किये गए थे।

कुल मिला कर, कवि वृन्द ने बहुत अधिक लिखा था, जिसको सुरक्षित रखने का बहुत कुछ श्रेय उनके वंशजों को ही है। वृन्द की रचनाओं में से 'नीति-सतसई' को छोड़ अन्य रचनाओं का प्रसार बहुत नहीं हो सका था। इसीलिए उनकी हस्तलिखित प्रतियाँ भी सर्वत्र नहीं पायी जातीं। वर्तमान वंशजों के पूर्वज वृन्द के समस्त साहित्य को प्रकाशित कराने की योजना बना रहे थे, किन्तु अकाल में ही कालकवलित हो गये। अंततः 'शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु' पत्रिका का 'वृन्द विशेषांक' निकालकर ही संतोष करना पड़ा।

प्रस्तुत कार्य मेरे शोध-प्रबन्ध के लिए आधारभूत सामग्री-संकलन के रूप में सन् १९६० में शुरू किया गया था। पश्चात् सन् १९६५ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से, तीसरी बार राजस्थान की यात्रा करने के बाद वृन्द का सम्पूर्ण साहित्य संगृहीत किया गया। इस प्रकार पाठ-संकलन का कार्य आयोग की आर्थिक सहायता से ही पूरा हो सका। एतदर्थ मैं आयोग का हार्दिक रूप से कृतज्ञ हूँ। अंततः कविवर वृन्द का संपूर्ण लेखन प्रस्तुत 'ग्रंथावली' के रूप में पहली बार एकत्र, क्रमबद्ध होकर प्रकाश में आ रहा है। इति शम् भूयात्।

× × ×

बहुत सावधानी बरतने पर भी कतिपय कारणोंवश मुद्राराक्षस से बचना संभव नहीं हो सका है। अतः पाठकों से निवेदन है कि वे कृपया ग्रन्थावली के अंत में संलग्न 'शुद्धिपत्र' को अवश्य देखें।

जनवरी, १९७०
तिरुपति, (आंध्र)

—जनार्दन राव चेलेर

ग्रन्थ-सूची

संकेत-सारणी

अनूप : अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर। ह० लि० ग्रं० संख्या १६२।

प्रतिष्ठान : राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। ह० ग्रं० संख्या ४६०६।

वंशज : वृन्द कवि के वंशजों के निजी संग्रह से प्राप्त, किशनगढ़

वृं० वि० : शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु पत्रिका का 'वृन्द विशेषांक', जून १६२८।

१

सम्मेत शिखर छन्द

वीर जिनेसर वंदि जनम जग सफल करिज्जै।
करिय पूज रस कजि पुण्य भंडार भरिज्जै ॥
चित्त नरम तजि भरम करम भय दूरि हरिज्जै।
केसर अगर कपूर भाव भरपूर भरिज्जै ॥
सतरै पचीस संवत सरस फागण सुदि तृतिय सु रहिय।
सम्मेत सिखर सोभा सु भरि वृंद सुकवि कीरत्ति किय ॥८॥[1]
इति सम्मेत शिखर छंद समाप्तः ॥

---

१. राजस्थानी भारती—जुलाई-अक्तूबर, १९४६ में श्रीयुत अगरचन्द नाहटा द्वारा उद्धृत। कुल आठ छप्पयों में से अन्तिम पुष्पिका।

२

बारहमासा

मास वसंत मधुर महि सुंदर लाग रह्यो रित सुंदर वानी।
नीली धरा तरु पिक डहकत फूलत पूर महक सुहानी ।।
प्राणी मनोहर केसर घोर कै कंचन मूरत पूज रचानी।
चैत्र के मास मैं आदि जिनेसर पूज रचै कवि वृंद सदानी ।।१।।

वैसाखे वन खंड हरे मधुरी मनु कोकिल कूज रही।
सबरु सरूप वनावणै रस लूटत मंजर में न वही ।।
सखी केसर चंदन पूर कपूर सुघोर करो मिल रंग रही।
इम भास वैसाख मैं आदि जीणेशर वृंद कहै सुषमैण गही ।।२।।

नित घाम तपै घण वायु फुरै रज रुद्धत गैण कुंढारत है।
बहु छांह सुहावत भौन चढौ निस कामनी अंग संवारत है ।।
सखी माल गुलाब गलै प्रभु कें लही चंदन चोप चढावत है।
पुनि जेष्ठ के मास मैं आदि जिनेसर वृंद कहै सुख साजत है ।।३।।

जलधार घुरै धरणीधर ऊपर सीतल मारग चोंप छई।
हरि आलि खुलै तरु नीर झरै मही रूप अनुपम शृंगार लही ।।
सखी नाटक भाव करो जिन आगम पुर रचौ विध भान तई।
पुनि मास आसाढ मैं आदि जीनेशर वृंद कहै नित सुख दाई ।।४।।

वन श्रावण घोर मंडे घन डंबर गाज अवाज करै बहु तारी ।
सब हार श्रृंगार करै सहु माननी खेल करे झमकै सहु नारी ।।
सखी केसर कुंकम चंदन अंग मैं नृत्त करो मनु नेह सहारी ।
श्रावण मास मैं आदि जिनेसर वंदत है कवि वृंद सभारी ।।५।।

भाद्रव मास मैं घुरे धर अंबर बीज खीवै झलकै सघरी ।
झर लागत बुंद परै जुग तै मत रंग अमंडन कीर जरी ।।
भवी पूजत केसर चंदन सै घन धूप उखेवोउ करो सघरी ।
श्री आदि जिनेसर भाद्रव मास मैं पूज रचै कवि वृंद करी ।।६।।

आसुज मास लग्यो ढिग अंबर भामनी भोग रमै रंग राती ।
नलनी बहु फूल रहै तटनी रित सीप उदंगन भूपर साती ।।
पूज रचो भवि सतर प्रकारन भामन भाव करो सुध वाती ।
मास आसोज मैं आदि जिनेसर वंदत वृंद सदा सुहाती ।।७।।

कातिक मास मैं रुद्धत पूरन पर्व बन्यो नित खेल दीवाली ।
सहु हार श्रृंगार परै नग भूषन वेस बनाव कोये सब लाली ।।
....
कवि वृंद प्रभुजि कूं भाव करी रस पूजत आंगर वाली ।।८।।

सीतल मारुत मंद फुरै महरी मन राज वसंत भरी ।
रात मान विहंगन प्रेम भरी उलसी मनुं अंबर ओढ खरी ।।
स्तवना प्रभुजी की करो विध सूं पुनि पूजत प्रेम सुं भेद परी ।
मिगसिर मैं कवि वृंद कहै प्रभु आदि जिनेसर कूं न सरी ।।६।।

अति सीत ठंठार परै बहु पावक तापत नारि वहै विध ही ।
नव निध ही मंगल तूर परंगन नाटक नेह करो सीध ही ।।
....
कवि वृंद कहै जिन राजन कूं सहु वंदन ओपन पाय धरी ।।१०।।

माहज मास मैं आवन मारुत पावक मांनन संघ बरै ।
पत वारी विध बंगन की नित गुंजत कोकिल संघ परै ।।
अति आतुर होय कै पूज रचै घन केसर चंदन आण खरै ।
नित आदि जीनेसर वृंद कहै भवि ध्यान धरै हित नाम करै ।।११।।

फागुण मास मैं फाग रमै कवि वृंद कहै सब नार खरी।
नित आतुर मेनज गावत सुंदर प्रेम पलक्कन में न जरी ॥
घनसारन केसर चंदन बावन बांनी सुषासन आंन बरी।
प्रभु आदि जीनेसर प्रेम बढ्यो नित मंगल पूरित आण धरी ॥१२॥

इम द्वादस मास मैं आदरता सुं ए नेह शृंगार धर्यो मन ही।
नित देव निरंजन ध्यान धरैं धन तें नर मानत अंदर ही ॥
....
सहु सुख मिलै जिन ध्यावन मैं नित पावत सुर्ग निवावर ही ॥१३॥

३

अक्षरादि दोहे

श्री गुरु गनपति के चरन बंदन करि कवि वृंद ।
अक्षर अक्षर ऊपरें बरने दोहा छंद ॥१॥

जो अक्षर जिहिं छंद के छोर पढ़त कवि कोइ ।
सोई अक्षर आदि को इन दोहन मैं होइ ॥२॥

मानसिंघ भूपाल सुत बीर धीर दातार ।
राजसिंघ सब बिधि सरस राजै राजकुमार ॥३॥

बरने ताके हुकम तें चित मैं धरि अति चाव ।
प्रगटत इन दोहान तें सिंघ विलोकन भाव ॥४॥

अ—अति विचित्र सुंदर सुखद नाना रंगी अंग ।
नित्य विहारी ह्वै रहैं ब्रज मैं राधा संग ॥५॥

आ—आवत जाके दरस कौं मुनि धरि प्रेम उदोत ।
सो राधा को देखि मुख मोहन मोहित होत ॥६॥

इ—इक मन करि जाके चरण नमत कोटि सुर आइ ।
सो राधा के पांव परि लेत मनाइ मनाइ ॥७॥

ई—ईश विरंची अनंत गुन गावत जाको गान ।
सो निशि दिन हिय मैं धरत श्री राधा को ध्यान ॥८॥

उ—उत राधे राधे रटत कृष्ण कमल दल नैन।
कृष्ण कृष्ण इत राधिका रटत रहत दिन रैन ॥६॥

ऊ—ऊषन कछुक पियूष के गुन सुनियत है कानि।
दूषत सकल मिठास को सुनि राधे तुव बानि ॥१०॥

ए—एक अनूपम बात सुनि आवत है अति हास।
तू गुनि भार भरी चलति सोतिन बढ़त उसास ॥११॥

ऐ—ऐसा समझि जु कहति है पिय किय अनत विलास।
इक मन हुतो सु तोहि दयो तऊ न जिय विसवास ॥१२॥

अैसी बेर न पाइहो हरिहि सुनइयो जात।
तिय सब राति जगै गई तिय पति गए बरात ॥१३॥

ओ—ओझिल ह्वै मुख चंद कूं चितवन नैन चकोर।
इत चितहैं बत चौंप सौं चंद चकोरन ओर ॥१४॥

औ—औसर दरसन को दई मिलिहै कैसैं जोग।
फूल परैं चौसर करैं ते हैं ब्रज के लोग ॥१५॥

अं—अंजन दे खंजन नयनि किए निरंजन नैन।
मैं जानी तोकूं मिल्यो मनौ महा मुनि मैन ॥१६॥

क—कहैं सदा मुख स्याम गुन रहैं सील सत ठीक।
कलिजुग ही के दौर मैं जे सज्जन तह कीक ॥१७॥

का—काहे कूं लोचन किए अरुन वरन जनु सांझ।
राति न आयो या लिये भूलि पर्‌यो बन मांझ ॥१८॥

ख—खरे अरे चितवन बदन कहा करो जिय आस।
गाय गई बछरा सहित मोहन दुहत अकास ॥१६॥

खल जन के ज्यौं संग तें होत दोष को पोष।
तैसें सज्जन संग तें सब पावैं संतोष ॥२०॥

खा—खाति खवावति है बिरी हसि हसि सौहैं खात।
जिहिं छिन रूसि जुदे रहे तिहिं छिन को पछितात ॥२१॥

ग—गरजत तरकत करत घन कारे पीरे रंग।
जीवन दाता होत नहिं तो को सहत कुढंग ।।२२।।

गा—गावत दादुर मोर गुन घन उपगारी अंग।
लपटत तरु तरु सौं लता नदी नदीपति संग ।।२३।।

घ—घटत न तन तन की कला बढत सरस गुन ओघ।
अद्भुत सज्जन शशि उदित बोलत बचन अमोघ ।।२४।।

घा—घाम हरत छाया करत ताप सहत निज अंग।
फल दाता पक्षीन कूं धनि तरवर सुख संग ।।२५।।

ङ—ङण ङण शब्द सु कहत है जाहि नासिका रोग।
है अनुभव सु हास्य को कहत सयाने लोग ।।२६।।

च—चढत तरुनई चित चढ्यो मनमथ मत आलोच।
वारन जैसें बुधि बढी कुच बढि बढ्यो सकोच ।।२७।।

चा—चाह चढी पिय मिलन की चाहि करत सिंगार।
कहि काहे तैं कामिनी हिय पर धरत न हार ।।२८।।

छ—छवि छायो गुन तैं भर्यो जदपि शुद्ध शुभ सार।
पै पिय हिय तै अंतर परैं तातै धरत न हार ।।२९।।

छा—छाती लखि छाया निरखि चरनाभरन सुधारि।
चलति छबीली छबि भरी उरतैं आंचरि टारि ।।३०।।

ज—जलज जुगल पर हंस हरि कुंत कंबु तिलराज।
बिंदु कुंवद पिक शुक मिरग अलि शशि अहितिय साज ।।३१।।

जा—जाति हुती बन मांह राधा अपने रंग सूं।
छल कर तरवर छांह भीरि लई हरि भरि भुजा ।।३२।।

झ—झलकी दिस मुख अरुनई भई तरुनई सांझ।
झमकि मिले हरि राधिका गोरज गहरी मांझ ।।३३।।

झा—झांकति झझकति झुकति अति सखि सौतिय सतराति।
रहति न हटकी लगन लगि मुख लखि लखि मुसकाति ।।३४।।

अ ङ ण—अ ङ णि यंत हैं प्रक्रिया वैयाकरणहि मांह।
ताकौं पढि समझैं सुबुध पावत सुफल अथाह ॥३५॥

आ—आं आं कहि बालक जबैं रुदन करैं तब मांय।
लै उठाय चुंबन करत देवत दूध पिलाय ॥३६॥

ट—टगुलायैं चितवत खरी धरत मिलन को घाट।
रेनु रंग्यो गइयन लियैं हरि अैहैं इहिं बाट ॥३७॥

टा—टारि सखी निस माजि सखि निकसि चलौं हित काज।
घिरि आई काली घटा मिल्यो मिलनु दिन आज ॥३८॥

ठ—ठमकि ठमकि पग धरि करति झमकि झमकि गृह काज।
आंगन मैं दुलहनि फिरति लियैं हियैं अति लाज ॥३९॥

ठा—ठाट यहैं जिय मैं ठटैं घटैं न घट मैं नेह।
पिय पैं बचन पियूष को हँसि हँसि बरसत मेह ॥४०॥

ड—डरति हुती रति रंग तैं भरति न पिय कूँ अंक।
सौतिनु लगी डरावने अब तिय भई निसंक ॥४१॥

डा—डार गहैं ठाढी रहैं हरि बिन लहैं न चैन।
छिन छिन माँझ घरी निसे ढ़ारति भरि भरि नैंन ॥४२॥

ढ—ढँपि ढँपि आँचर ते कुचनु देति उघारि उघारि।
हिय पर धरति सुधारि कैं हार निहारि निहारि ॥४३॥

ढो—ढीली गति ढहि ढहि परत जानि परे हो ढीठ।
हर हर तिय सनमुख होत हो पैं महि दै दै पीठ ॥४४॥

ण—णण णण णण नूपुर बजैं कबहौं कल धुनि होत।
कबहों कूजत किंकिनी रति रस रंग उदोत ॥४५॥

णट्ठसि सुत्तण तुज्झ तण अज्ज बिदिट्ठ पियेण।
घण थण हर भर बंक मइ गइ मंथर भावेण ॥४६॥

त—तरु तर तर ठाडे रहैं भेटति भरि भरि बाँह।
रंग भरे हरि राधिका रंग करत बन माँह ॥४७॥

ता—तारे उगलति गिलत शशि तम समूह इक साथ।
यह रति गति विपरीत अति राति करी रति साथ ॥४८॥

थ—थर थर काँपत स्वास तें मोर जुगल सुख कंद।
ललित लता ऊपर लसैं रति रस के आनंद ॥४९॥

था—थाकत नाँहिन रस छकी को तेरो यह थाट।
घर कौं आवत घाट तें घर तें जात जु घाट ॥५०॥

द—दरस दिवानी ह्वै रही गनत न ठौर कुठौर।
बूझत अनमिल सी कहै कछू और की और ॥५१॥

दा—दामिनि छिन मैं सघन मैं घन पुनि दामिनि माँह।
माँनहु हरि राधा बहसि हिय भेंटति भरि बांह ॥५२॥

ध—धरति न तिय जिय मैं धरक सुनि गरजन को सोर।
निकसी जाति घरी घरी उन कुंजन की ओर ॥५३॥

धा—धाम न ठहरति वाम छिन मोही स्याम सुभाइ।
डोलति है पीछैं लगी अय चुंबक के भाइ ॥५४॥

न—नए नए कुच उच भए नए सुयंभु सुभाइ।
प्रकटी जमुना स्यामता गंगहि धरी दुराइ ॥५५॥

ना—नांही नांही कै कहैं काहे भए उदास।
याको अरथ बिचारिये करियैं बिबिधि विलास ॥५६॥

प—पढि मत प्रेम पहेलिका परिहैं परवस प्रान।
फल न चढै फल नां लगैं पल ह्वै कलप समान ॥५७॥

पा—पावस आवत ही प्रकट घन लागे घहरान।
हर्‌यो भर्‌यो हिय प्रेम तरु जर्‌यो जवा सो जान ॥५८॥

फ—फल लागे तेरे हियैं अति सुबृत अभिराम।
पिय के हिय के काम के सफल भए मन काम ॥५९॥

फा—फागुन खेलत फागु हरि हिलि मिलि गोपिन संग।
अति गुलाल की धुंधि मैं राधे हिलावति अंग ॥६०॥

ब—बहसि बहसि खेलति हसति खेल न निबरैं लेत।
हारैं दाव हि देत हठि जीतैं जान न देत ॥६१॥

बा—बाला जोवन मद छकी निस दिन रहत निसंक।
रति बिनोद पति सौं करति हँसि हँसि भरि भरि अंक ॥६२॥

भ—भली भई पिय सौं मिली हिलो मिलो दिन रैंन।
लखि जैहैं गुरुजन दई लखि लखि रातें नैंन ॥६३॥

भा—भावति पिय मन रूसिबो छिनक रूसि बलि जाउँ।
अंबुज ऊपर चंद लखि रस करिहैं परि पाउँ ॥६४॥

म—मनमोहन सौं मन मिल्यो मो पैं आवत नाहिं।
पट मैं लपट्यो चुभि रह्यो मुकट चंद्रिका माँहि ॥६५॥

मा—माधव रस बरसत सरस फूली सब बनराइ।
कुहु कुहु पिक कुहुकन लगे भौंर उठे भननाइ ॥६६॥

य—यह काहू देखी सुनी बिन रति रंग तरंग।
चक्र जुगल पर चौंप सौं गुन जुत खेलति गंग ॥६७॥

या—यामैं फेर न सार कछु मदन महीपति आप।
कुच कलसन मैं निधि धरी करी स्यामता छाप ॥६८॥

र—रजनीपति के डर डरी सोवति घर मैं जाइ।
जाल रंध्र मग डारि कर तउ परसत हैं आइ ॥६९॥

रा—राम विजय लंका करी आवत बैठि विमान।
पाज दिखावत सीय को करि करि बहोत बखान ॥७०॥

ल—लखत चौंप सौं शशि मुखी पाजन नैक लखाइ।
झाँकत ही उमगत उदधि लहरिन मैं छिपि जाइ ॥७१॥

ला—लागत ललित लतानि सौं तर्यो नीर निधि नीर।
गहत गिरवर मंद गति आवत श्रमित समीर ॥७२॥

व—वनी भसम तन सुमन रज सुखद मधुप गन साथ।
हिम गिरि जात हरै हरै मलयानिल शिवनाथ ॥७३॥

बा—बात बात मैं हसत है दे दे तारी हाथ।
कुंजन दुरि देषें चलो राधा मोहन साथ ॥७४॥

शा—शारद चंद अमंद छबि पुंडरीक सुख दाइ।
फूल्यो नभ सरवर विषैं भ्रमर स्यामता भाइ ॥७५॥

शु—शुभ सोभा सरवर भरे नीरज छाए नीर।
तहां चलो हरि सूं मिलै परसैं त्रिगुन समीर ॥७६॥

ष—षटपद पक्षि प्रभाव तें भाखि मधुर मुख भाष।
मिलि मिलि सुमन सुरंग सौं पूरत मन अभिलाष ॥७७॥

षा—षा लक्ष्मी कौं कहत हैं एकाक्षर के कोष।
जिहिं बिन देख्यो जगत मैं होत न तन को पोष ॥७८॥

स—समझि दुरावत तिय कुचन कसि बाँधत इहिं भाइ।
स्याम बदन पर हिय हरन तिन को यहैं उपाइ ॥७९॥

सा—साच कहैं गुन संग्रहो गुन तैं सबन सुहात।
गुन जुत हार हियैं लगै गुन हीनौं गिरि जात ॥८०॥

ह—हम तुम सौं साँची कहैं कहत सयाने लोग।
हरि कौं जे राखत हियैं ते हरि ही से होइ ॥८१॥

हा—हाव भाव आनंद मय राग रंग रस चाव।
अैसैं दिन चितवत सदा जैहैं रसिक सुभाव ॥८२॥

क्ष—क्षन क्षन मैं सुधि करि सवरि अहो चतुर चित चेत।
जाही ताही भाँति भरि हरि सूँ करिये हेत ॥८३॥

क्षा—क्षार समद ही मैं पियत सीगी मीठी सीर।
कलि मैं रहि हरि गुन गहैं तैसें सजन सधीर ॥८४॥

सतरै बैतालीस बदि तेरस फागुण मास।
ए औरंगाबाद मैं दोहा भए प्रकास ॥८५॥

४

भाव पंचाशिका

अद्भुत अमित अनंत अति अगम अपार अनूप।
व्यापक दृश्यादृश्य मय जय जय ज्योति सरूप ॥१॥

कवि लोकनि के भाव सुनि कछुक भयो चित चाव।
करी भाव पंचासिका वृंद सुकवि धरि भाव ॥२॥

भाव सहित सोभा लहैं पूजा जप तप मित्त।
यातैं वृंद विचारि कै कीने भाव कवित्त ॥३॥

सतरै तेंतालीस सुदि फागुन मंगलवार।
चौथि भाव पंचासिका [1]अवनि भयो अवतार ॥४॥

उक्ति युक्ति करि कैं कवित्त कीने भाव दुराय।
तैसैं भाव प्रकास कौं दोहा किए बनाय ॥५॥

बाजत ताल मृदंग उपंग महाधुनि तीनहु लोक छई है।
वृंद कहैं सुर नर किन्नर भूत पिशाच पढैं जस जुक्ति नई है॥
नाचत गौरि के हेत लियें सितकंठ हिये अनुराग मई है।
च्यारहु ओर धराधर ऊपर मेघ विना जल वृष्टि भई है ॥१॥

पाठभेद :— १. प्रगटी अवनि उदार

गति अनेक नाचत तहाँ श्री सितकंठ सधीर।
भ्रमरी गति कौं लेत ही प्रसर्‍यौं[१] गंगा नीर ॥१॥

आवत हैं जल न्हावत हैं नर पावत देह हरि हर की जो।
तारनि तीनहु लोक विहारिनि पाप निवारिनि बंछित दीजो ॥
वृंद कहैं सु विवेक विचारि कैं मेरी यहै विनती सुनि लीजो।
केसव मोहि करो जिन गंग ! कृपा करि मोहि सदासिव कीजो ॥२॥

हरि तोकौं पायनि धरी यह कछु और प्रसंग।
हर ह्वै कें राखौं सदा सिर पर तोकौं गंग ॥२॥

रंग भरी रस रूप[२] भरी पिय संगम कौं अँग अँग उमाहै।
इंद्र दिसा मुख पूरन बिंब सुधाधर कौं निज नैननि चाहै ॥
सोचि विचारि कछू डरिकैं तिय चंपक के वन कौं चित चाहै।
वृंद कहैं कहौ कौन सुभाव ? सु भाव कहौ यह चाव कहा है ॥३॥

यह जानी शशि के उदै सबै कमल सकुचाय।
चंपक बन चाहत भ्रमर जिन मुख[३] पर मँडराय ॥३॥

एक समैं मनि मंदिर मैं रस मैं पति काम कथा बहु कीनी।
चातुर केलि कुतूहल मैं रति सी रमनी रति के रस भीनी ॥
कौंन विचार विचारि कै देखि अरी धरि रोस कहा गति लीनी।
वृंद कहैं अपराध बिना सखि ! प्रीतम के तिय लात की दीनी ॥४॥

प्रेम छकी सुधि भूलि कैं निज प्रतिबिंब निहारि।
पर तिय रत पति कौं समुझि दई पाय की नारि ॥४॥

बैठि हिमाचल की तनया पिय सौं हिय सौं न कहौं हित हीनौ।
आए तहाँ भव आनंद सौं मन जोग रु भोग दुहून मैं भीनौ ॥
गंग विलोकि गिरीस के सीस सु मान धर्‍यौ करि भाव नवीनौ।
वृंद कहा जिय गौरि विचारि कहा शिव के तब चुंबन कीनौ ॥५॥

समुझि सौति सम गंग कौं गौरि कोप उपजाय।
सविष[४] कंठ चुंबन कियो विष भक्षन के भाय ॥५॥

पाठभेद :—१. पसर्‍यो　　२. रस रंग; रति रूप
३. परस डराय　　४. सिव कै

कुंभज धीर दयानिधि बीर छुवें न कहूँ कबहूँ छल छाँही।
वृंद कहैं उपगार परायन देव नरायन ध्यान धराँही ॥
पान कियो सगरो मकरालय छाँड दियो बहुरो[1] क्षिति माँही।
जानत हौं बिरही जन की तन की तन वेदन जानत नाँही ॥६॥

पियत उदधि ससिहु पियौ छाँडत उयो[2] अधीर।
यातें मुनि जानत नहीं बिरही जन की पीर ॥६॥

बारद बीतें बिसारद अंबर सारद की निसि मैं हित पोसैं।
सुच्छ अटा पर सैंन कियौ पै खरी अकुलाय भरी अपसोसैं ॥
मानव देव अदेव पयोनिधि सेष सुमंदर की विधि दोसैं।
वार ही वार कहौ इन कौं अब क्यौं सब रैन वियोगिनि कोसैं ॥७॥

सुर असुरनि मिलि दधि[3] मथ्यौ प्रगट कियौ यह चंद।
यातें निंदति सबनि कौं लहि बिरहिनि दुख दंद ॥७॥

आयो वसंत पै आयो न कंत उदंत न तंत न मंत लहा है।
क्षीन भई अति काम तई तनकौं तन को न सरूप रहा है ॥
वृंद कहैं तिय आतुर ह्वै मन मोहन सौं मन मोह महा है।
कूजहु कोकिल गुंजहु भौंर प्रकासै ससि यौं कहै सु कहा है ॥८॥

पिक अलि के अति सोर तैं जानति है अकुलाय।
प्रानपतो[4] सौं प्रान ए मिलैं बेगि दै जाय ॥८॥

राम कुमार खगे मृगया रस नैक रहो बलि जाउँ तिहारी।
बान कबांन धरीक धरौ निरवारहु होत कुलाहल भारी ॥
वृंद कहैं परिरंभन कौं शशि आये समीप सदा सुखकारी।
को हो छुवौ जिन आए कहाँ हो चकी चित बोलति रोहिनि नारी ॥९॥

मृग भाग्यौ मृगया चकित शशि मंडल तै मित्त।
रोहिनि कौं पर पुरुष की संका उपजी चित्त ॥९॥

पाठभेद :—१. बहुर्‌यों
२. उगलत उयो, उगलत उठो
३. नर सुर असुरन दधि
४. प्रान प्रीति

अति तीखे कठोर उतंग कुच द्वय यातें मनोहर तेरो हियो ।
कवि वृंद कहैं पिय के हिय कौं तजि पीठ आलिंगन काहे दियो ।।
सखि मैं रस मैं रदन छद मैं रदन छद दै रस रीझि पियो ।
यह रूसि रह्यौ पुनि मारग ऐबे कौं पाय सुभाय उपाय कियो ।।१०।।

दुपद बैल यह छैल नहिं[1] ताको कियो उपाय ।
तोदन[2] सौं प्रेर्यो चलैं सीधें मारग आय ।।१०।।

कंत विदेश वसंत के आवत काम दशा दस हूँ दिसि[3] जागी ।
बागन बागन बीच इते पर कोकिल हो किल बोलन लागी ।।
वृंद कहैं उनके ढिग जाइ कछू तन पीर मिटावन पागी ।
कंठ मनोगि वियोगिनि नागरि राग[4] अलापनि कौं अनुरागी ।।११।।

मेरी धुनि सुनि सबैं ह्वै हैं लजित अधीर ।
औ[5] सुनि कैं चुप साधि हैं कछु घटि[6] हैं तन पीर ।।११।।

सावन मास भयो मन भावन घोर घुमंड घटा घहराई ।
खेलन कौं वन मांहि चली मिलि संग सखी बनि अंग सुहाई ।।
वृंद कहैं फिरि आवत ही घन की घन बूंदन सौं छिति छाई ।
क्यौं न उताल सुचाल चली वह ? भीजत भीजत गेह लौं आई ।।१२।।

सती पक्ष में—चलत उतावलि बढत श्रम, श्रम तें बढ़त उसास ।
जिन जिय असती जानि हैं ननंद जिठानी सास ।।१२अ।।

असती पक्ष में—चंदन चित्र सिंगार सब मिटे रमत रति चाव ।
गुरुजन जलतें जानि हैं ह्वै है सुरत दुराव ।।१२आ।।

केसरि चंदन चित्र कपोलनि पाय महावर अंजन नैंना ।
प्रात भयें लखि सोति सरूप कहैं कवि वृंद भयौ चित चैना ।।
लाल के लोचन लाल विलोकि लगे पल नांहि जगे सब रैना ।
यौं जिय जानि विषाद भयौ फिर कौंन विचार कहो कवि बैंना ।।१३।।

पाठभेद :—१. दुपद बैल नहिं छैल यह
२. प्राजनं तोदनं तोत्रमित्यमरः मरु देशे 'पुराणी' भाषा—समर्थदान की टिप्पणी
३. दिस हूं दिसि, दिस दिस
४. पंचम राग अलापनि लागि
५. सुनि
६. कटि

प्रात भयें[1] लखि सोति के सबही अमिट सिंगार ।
करी न पति रति जानि कैं आनंद भयो अपार ॥१३अ॥

प्रेम अधिक पिय पाय परि सब निसि रहे मनाइ[2] ।
तऊ न मानी जानि कैं भो विषाद उर आइ ॥१३आ॥

प्रान पती परदेस चले सु भले जु भले कहि बोल निबाहे ।
आये न औधि वितीत भये मदनागि वियोगिनि के तन दाहे ॥
जेतक सीतल हे उपचार तजे अनि तेतक चित्त न चाहे ।
वृंद कहैं सुख कौं अभिलाषि सुधाकर के कर सेवति काहे ? ॥१४॥

और सकल उपचार तें होत विरह हित हानि[3] ।
शशिकर सेवति विरहिनी पिय संवत पहिचानि ॥१४॥

जगि ओर हैं जे प्रिय जोषित तें[4] परिरंभन दै अपने पिय सौं ।
कवि वृंद कहैं चलि कारज कैं फिरि बेग ही आय मिलौ तिय सौं ॥
पिय हौंइ तौ माँगत हौं तुम पैं अति प्यारे हो मो अपने जिय सौं ।
तुव मंगल चाहौं प्रयान समैं जिन मोहि लगावहु जू हिय सौं ॥१५॥

पिय प्यारे बिन ही मिलैं करहु तौ करहु प्रयान[5] ।
हिय लावत ताही समैं निकसि जाय हैं प्रांन ॥१५॥

कोपि कै कंत गयो है कहूं औ[6] गुरुजन सौं सब व्याप[7] रह्यो घर ।
वृंद सनेह सौं गेह सखीनि कै जात है आयो उछाह को औसर[8] ॥
सीस दिनेस है घाम विसेस है पंथी तहाँ किन जात कह्यो कर ।
ग्राम तें उत्तर की दिसि कुंज है सीतल वारि भर्‌यो है सरोवर ॥१६॥

नागरि चतुराई करी ऐसो अवसर[9] पाय ।
पथिकहि[10] देखि सहेट की दीनी ठौर बताय ॥१६॥

पाठभेद :— १. समैं   २. जगाइ   ३. हिय आंनि
४. चलीयैं रहिजे तुम जोषित तें   ५. पयांन
६. सब   ७. व्यापि
८. वृंद समेह सूं गेह सखीन कै जात तहां है उछाह को औसर
९. औसर   १०. पंथिहि

आयो असंत बसंत समैं निज कंत बिदेस दिगंत लियो है।
बागनि बागनि कोकिल कूकि बियोगिनि कौं दुख घोर दियो है ॥
तानि कमान की बाननि सौं हनि कैं तन ब्याकुल काम कियो है।
चातुर नागरि आतुर ह्वै तब काहे मलैगिरि पौन पियो है? ॥१७॥

गिल्यौ भुजंगम गरल जुत उगल्यौ मलय समीर।
पियत छुटै तन बेग ही मिटै बिरह की पीर ॥१७॥

मुख बोलत सत्य न डोलत चित्त लियें सतसील सुभाइ भरें।
स्रुति भाषित रीति हियें ठहराय कें न्याय के पंथ मैं पाय धरें ॥
कबि वृंद बिबेक बिचारि बिचारि गहैं सतसंग कुसंग हरें।
इतने गुन होइ जो मानस मैं तो रमापति को हिय ब्यौम करें ॥१८॥

न्याय चलैं बोलैं भले है याको यह अर्थ।
हरि के हिय की सकल श्री सो नर लैंन समर्थ ॥१८॥

अति क्षाम तिहारे बियोगन[1] बाम अमंगल की बिधि दूर निबारें।
तुव आगम बोलि बतावत बायस पै तिनको बलि भूमि न धारें ॥
दुरि सोचि बिचार कैं भींत के ऊपर देत निसंक ह्वै हाथ पसारें।
कबि वृंद कहैं वह ताहि[2] निहारि कें चंद्रकला सम चित्त बिचारें ॥१९॥

भूमि धरत बलि काग कौं बलय निकसि जिन जाय।
बलय सब्द तें चकित ह्वै अथवा लेत न आय ॥१९॥

सखि सोन को अंक ससंक धर्यौ किसलै अलि तें अति सोभ छयौ[3]।
यह कंबु सुरेखित देखति है कुवलै जुग रंग बधूक लयौ ॥
सुनि कैं धुनि धूत सखी जन कें मुख ब्यंग बिचार बिचार ठयौ।
कबि वृंद कहैं मुगधा तिय कौं सठ[3] बापि सिनान कौं लैहि गयौ ॥२०॥

सखी बचन सुनि कैं स्रवन सठ समुझ्यो मन माँहि।
चिह्न सकल ब्यभिचारि के जल क्रीडत मिटि जाँहि ॥२०॥

दूरि दिगंतर[4] कारिज पाय प्रयान भयौ मन मोहन पी कौ।
मंडि उठे दिगमंडल मैं घन सोर[5] भयौ अति घोर घनी कौ ॥

पाठभेद :—१. वियोग तें २. ठाहि ३. संग ४. दिसंतर ५. घोर

वृंद कहैं गुरु लाज समाज मैं देखि उदास भयौ मन ती को।
नैंन के नीर तैं धीर कहो यह कैसैं बिसीरन भाल कौ टीको ॥२१॥

तपत कुचन पर नैंन जल उठ्यौ धूम भयौ स्वेद।
अलिक तिलक फैल्यौ तबै बिरहिन मन के खेद ॥२१॥

एक सखी सुमुखी बिरहातुर लै कर लेखनि प्रेम उजागर।
वृंद कहैं सिगरी निस जागि कैं लेख लिख्यौ सब सून्य कौ सागर ॥
सो पुनि भेजि दयो पिय पैं पिय चातुर देखत ही वह कागर।
एक ही साथ भयो दुख आनंद पक्षि-पनो चित चाहत नागर ॥२२॥

ऐसी दसा बिचारि कैं जिय दुख पायो पीय।
प्रेम नेम दृढ़ जानि कैं हरख भयो अति हीय ॥२२॥

अति सुंदर अंग लसै तन सुंदरि है रति को मनु रूप हर्‌यो।
हृदयेस्वर प्रीतम ताके समीप चली हिय पूरन प्रेम भर्‌यो ॥
कबि वृंद ततषिन लायक भूषन हैं तऊ कौन बिचार कर्‌यो।
नन अंजन अंजित नैंन किए न तो हार मनोहर कंठ धर्‌यो ॥२३॥

हैं कजरारे सहज ही लोचन बड़े बिसाल।
आँजत होत बिलंब तिहिं अंजन दियो न बाल ॥२३अ॥
पिय हिय सौं अंतर परैं इक तौ यहै बिचार।
कै भुरसै मदनागि तैं तातैं धर्‌यौ न हार ॥२३आ॥

सखि देखि कछूक उयो ससि मंडल सोभित सुंदर मोहि सुहावै।
तरु नूत के नूतन पल्लव सौं अबलोकत आनंद कौं उपजावै ॥
सुखदायक है कबि वृंद कहैं उपमा अति उत्तम मो जिय आवै।
हरि की दिस सुंदरि के मुख को कोउ अंग बिभूषन की छबि पावै ॥२४॥

हरि दिस ललना को मनो सोभित अलक[1] रसाल।
अथवा मनहु सिंदूर कौ तिलक बिराजति भाल ॥२४॥

इत पुष्प सरासन के सर तें अति भिन्न हृदै सुधि हैं धन मैं।
बिरही दिन मध्य मैं प्यास लगी रितु ग्रीषम ब्याकुलता तन मैं ॥

पाठभेद :—१. अलिक

कवि बृंद कहैं भय त्रांत त्रिषातुर धावत है जिय है बन मैं।
तऊ सूको सरोबर देखि सखी किहि कारन मोद भयो मन मैं ॥२५॥

जल अरु जलज अभाव तें भई मदन सर हानि।
बिरही सर सूको लख्यो भयो हरष उर आनि ॥२५॥

जान सुजान हौ प्रान के प्रान हौ बुद्धि निधान हौ[1] वाहि वहै वर।
बृंद कहैं अनुराग तिहारे को नारि कियो हिय[2] मैं अतिसै भर ॥
पांडु परै परिपाक समैं अरु पत्र बिराजत अर्क प्रभा हर।
बात बिचारि निहारि-निहारि कै ऊख कैं बांछति है तरुनी फर ॥२६॥

फलित ऊख उतपात तैं धनि छोडि उठ जाय।
रहै अचल संकेत थल कल चाहत इहिं भाय ॥२६अ॥
होत सफल जब ऊख तब देत किसान जराय।
काम धनुष को छेद सो बिरहिनि कौं सुखदाय ॥२६आ॥

छीन भई तन[3] काम तई जिनके हित बाट इतै दिन हेरी।
आगम जोतिष बूझत हो नित देव मनावत साँझ सबेरी ॥
आए हैं प्रान पती[4] परदेस तैं देहु बधाई कहो सुनि मेरी।
बृंद कहैं सुनि गारि दई पुनि मार निकारि दई उनि चेरी ॥२७॥

पिय को आगम सुनत ही फूली सब तन नारि।
बिरह दसा देखी न पिय यौं खिजि दई निकारि ॥२७॥

देखि री प्रीतम ठाढे समीप ए मान री मान सखी जु कहै है।
क्यों मुँह फेरि रही इहि बेर तू हेर इतै मनि मंदिर मैं है ॥
बृंद कहैं सुनि ए सखि बैंन भरी अति कोपु न उत्तर दैहै।
बार ही बार उदास ह्वै माननि दीरघ उष्ण उसास ही लैहै ॥२८॥

पति के अति अपराध तैं कीनो कोप प्रकास।
ढाँपति पति प्रतिबिंब कौं भरि भरि उष्ण उसास ॥२८॥

बैठी जहाँ बनि बानिक सुंदरि नागर एक तहाँ चलि आयो।
नारि[5] निहारि कैं चित्त बिचारि कैं मोतिन को हिय हार बतायो ॥

पाठभेद :—१. चाहि वहै उर २. अतिसै उर भर ३. तिन ४. पिया ५. बार

वृंद कहैं जिय की समुझी तिय ऐसें ही वाहि सखी समुझायो।
मन ही मन[1] कछु सिर धूनि[2] इतें करतें कच भार दिखायो ॥२९॥

दुहूँन समुझे[3] दुहूँन की बातें परगट[4] कीन।
नागर मन उज्जल कह्यो नागरि कह्यो मलीन ॥२९अ॥

अथवा हिय के हार ज्यौं हिय पर बसिए तीय।
मिलिहूँ कारी रैन मैं जिय के प्यारे पीय ॥२९आ॥

मायके तें कबहौं कितहौं निकसी न सदा घर ही महँ खेली।
वृंद कहैं अब हौं मन भाँवती आई कै खेलि हैं संग सहेली॥
कालि ही कंटक बृक्षन के लगि कंटक अंग कहा गति मेली।
हौं बरजौं चित के हित तै बन कुंजन मैं जिन जाय अकेली ॥३०॥

पति समीप बैठें कही बन खेलन मति[5] जाई।
सखी कुचन नख चिह्न कौं गोपन कियो बनाई ॥३०॥

नैनन अंजन औठन रागत[6] मोर कौ पाय महावर नीकें।
वृंद कपोलन पत्र लता तन चंदन चित्र सदा सबही कें॥
देखत मेरे कहौंक किहीं छिन सास बृथा ही कहै बच फीकें।
सौत ए क्यों दुख पावति हैं अरु बोलति हैं तजि कैं कुल लीकें ॥३१॥

सखि सौं बरनत सुंदरी सबही सोति सिंगार।
यामैं पिय को आप सौं प्रकटत प्रीति प्रकार ॥३१॥

सुन्दर देह विचित्र सखी घन चंदन चित्र महा छबि छाई।
मीठे सुधाधर बिंब से उठत जावक राग रची अरुनाई॥
प्रात समैं जु सिंगार कियो सु तौ हौं समुझी सजनी सुखदाई।
वृंद कहैं यह कौन विचार सुचित्त बिचार करी चतुराई ॥३२॥

असमैं कियो[7] सिंगार यह ताको है यह भाव[8]।
राति सुरत के चिह्न कौं कीनो प्रात दुराव ॥३२॥

पाठांतर :—१. मौन हो मौन २. धून ३. समुझी ४. परतिछ ५. मत जाय ६. रंगन ७. कीध ८. यौ चाव

पीन उतंग घनस्तनि सुंदरि जाहु बिलास निवास के भीतर ।
तोहि बिलोकि अरी अबही जु धरै हिय माँहि संदेह सुधाकर ।।
वृंद कहैं यह कौन बिचार है ऐसो बिचारत है चित अंतर ।
जान कह्यो[१] कि अजान कह्यो[१] समुझ्यो कि नहीं बलमीक मुनीसर ।।३३।।

कुच जुग चकवा ससिहिं लखि नहिं बिछुरै छिन[२] मान ।
राम साप झूठो कह्यो यों बालमीक अयान ।।३३।।

चंद उदै सुख संग समै रस मैं रति रीति रची मन मानी ।
प्रीतम उद्धत काम भयो जब काम कला करिये यह ठानी ।।
वृंद कहैं मनि मंदिर भूमि मैं देखि कछू जिय सोचि सयानी ।
डारि कैं चीर बिचारि कहा वह नारि कहो किहि[३] हेतु लजानी ।।३४।।

ढाँप्यो[४] ससि प्रतिबिंब कौं अंगन गन मन मानि ।
चंद छिपैं तैं चाँदनी छिपि जैहैं यह जानि ।।३४।।

लाल लखी पहलै ही समागम केलि कला मैं प्रबीन है नारी ।
प्रीतम कौं भ्रम सो उपज्यो लखि भीत पै प्यारी करी चित्रकारी ।।
गर्भ ते छूटत ही धसि सिंह गयंद के कुंभ मैं हाथल मारी ।
हेतु कहा कहि वृंद चितैं पिय होय प्रसन्न रच्यौ रस भारी ।।३५।।

चित्र निरखि कैं चतुर पिय समुझ्यौ याकौ भाव ।
तिय प्रबीन रति रंग मैं याको जाति सुभाव ।।३५।।

फटिक रत्न सो निर्मल उज्वल नीर भर्यो सर होइ कहाँ ही ।
ता मधि जो अरबिंद न होय तौ पान करौं जल होय तहाँ ही ।।
हारि निहारि निहारि सुलोचनि मैं बिन कौल कहौं जल नाँही ।
वृंद कहैं यह हेतु कहा सु बिचारि कहो अपने जिय माँही ।।३६।।

देखति देखति है तिया मुख लोचन सर माँहि ।
कहैं कमल जल माँहि है बिना कमल जल नाँहि ।।३६।।

हसि लागौ हियैं फिरि उत्तर देहु सुनावहु बात पियूष मई ।
तजि कोप प्रसन्न भये ही बनै अब चूक अचूक भई सु भई ।।

पाठांतर :—१. कह्यौं २. दिन, निस ३. केहि ४. ढाँक्यो

कबि वृंद कहैं सुनि सासु कहो अहो कोर कहै कहा बात नई।
ए जु सारिका मानवती तिनकौं सुक कैसे मनावति देखो दई ।।३७।।

राति कही सुक दिन कही सासु सुनी मन लाई।
ताकौ कियो दुराव तिय ऐसी जुगति बनाई ।।३७।।

एक समैं मृगया रस खेलि कैं आए हैं राम वही जग तारन।
खेद भयो परस्वेद भयो मुख की छबि देखि लगी जिय बारन ।।
भाँति अनेकन भक्ति करी कवि वृंद कहैं चित प्रीति सुधारन।
पै मनि कंकन मंडित पानि तैं पाय छुए नहिं सो किहिं कारन ।।३८।।

बात अहल्या की सुनी यातैं छुए न पाय।
कंकन के मनि गन परसि जिन योषित ह्वै जाय ।।३८।।

आए बसंत के चंपक अंब घने फल फूलन कुंज सुधार्‌यौ।
ताहि बिलोकन कौं सखि संग गई सब अंग सिंगार सिंगार्‌यौ ।।
रंग भरी छबि देखति-देखति वृंद कहैं कबि नैंन चितार्‌यौ।
लै फल एक बिदारि निहारि कै दर्पन मैं मुख काहे निहार्‌यौ ।।३९।।

सम छबि दसन अनार की कबि उपमा जिय लेखि।
है कि नहीं निहचै कियो दर्पन मैं मुख देखि ।।३९।।

चंद मुखी उजियारी निसा महि काम के बान लगे तन भेदन।
देत है गारि बिधुंतुद कौ ए री ऐसे कहा घटि है घट बेदन ।।
वृंद कहै सुन री सजनी सब तोसौं करौं यह भेद निबेदन।
दोस जितो गिन तू हरि कौ जिन कोपि कीयो इनको सिर छेदन ।।४०।।

होत उदर जो चंद कौं ग्रसत राहु जिहि रैन।
पचि जातो जठरागि तैं उदित न होत अचैंन ।।४०।।

जुद्ध जुरै दुरजोधन सौं, दुहू ओर तैं जोर बिछूटत हैं सर।
एक इतैं उत सत्रु अनेक तऊ सबकौं कलकान करै नर ।।
वृंद पराक्रम देखि सबै सुर धूनत सीस सराहत हैं बर।
पै मुंडमाल[1] उतारत लौं चकि काहे बिलंब कियौ ससि सेखर ।।४१।।

पाठभेद :—१. मुख माल।

सुधा सुधाकर तैं खिरत मुंड सजीवन होय।
यातैं सिर कंप्यौ न सिब यह समुझौ सब कोय ॥४१॥

राम कुमार गये बन मैं मृगया रस खेलन कौं रुचि ठानी।
ह्वै नियरैं जब मारन कौं गहि बान कमान कसीस कै तानी ॥
वृंद कहैं यह कौंन बिचार कहौ हिय मोद भरी मृगरानी।
देखि छकी बिझुकी न झुकी न हली न चली न चकी न डरानी ॥४२॥

रूप देखि मोहित भई जिय समुझी हैं काम।
यातैं डरि भागी नहीं रही अचल मृग बाम ॥४२॥

मोतिन को हिय हार उदार है माँग सँवारी है मोतिन ही तैं।
सेत दुकूल औ चंदन लेप है बेंनी कौं मालति संजुत की तैं ॥
वृंद कहैं सब सेत बनाव सु मैं समुझी सबही निज ही तैं।
तैं मुखतैं सखि जीत्यौ सुधाकर जीत ही चाहत चाँदनी जी तैं ॥४३॥

सेत सरद की चाँदनी तामैं सेत सिंगार।
मैं समुझी चाहत कियौ अति अलषित अभिसार ॥४३॥

तुम पारथ हू तैं बिसेस धनुर्द्धर प्रीति के बेन हियें धरियै।
यह चंद कलंकी करिहै बराबरि मो मुख की दिन क्यों भरियै ॥
कबि वृंद कबान के बान तैं प्रान अहो इनके मृग के हरियै।
पिय प्रात ही चाहत हौ जु प्रयान तौ काम इतौ अबही करियै ॥४४॥

प्रात भयो चाहति नहीं तिय प्रिय को प्रस्थान।
मृग बध तैं निसि ससि रहै थिर ह्वै तिहीं सथान ॥४४–अ॥

अथवा तेरे बिरह तैं तजिहौं निहचै जीव।
मो मुख सम ससि देखियौ मो पाछे तुम पीव ॥४४–आ॥

अति सुंदर चंद समान सखी सब काम कला भरपूर भर्‌यौ।
तिन सौं रति रंग तरंग रच्यौ वह तौ हित काज सबै बिसर्‌यौ ॥
कबि वृंद कहैं सुनि दूति के बेंन न उत्तर दैन को काम पर्‌यौ।
यह कौन बिचार कहौ अपने मुख ऊपर आपनौ हाथ धर्‌यौ ॥४५॥

तरुन चंद सम तैं कह्यौ मो मुख कमल सुभाव।
प्रीति रहित की रीति तहाँ होत प्रीति किहि भाव ॥४५॥

जानकी नाथ अनाथ के नाथ भुजा भुव मंडल भार गहे तें।
बैठे हैं राज सभा महिं आइ मिले पुरलोक बिलोक सहे तें ।।
वृंद कहैं सबही कौं कही यह बात बिबेक बिचार लहे तें।
आजहि तें मेरो नाम पृथीपति कोऊ कहो जिन मेरे कहे तें ।।४६।।

सीता पृथ्वी की सुता सासु भई इहि हेत।
तातैं युक्त न पतिपनौं समुझहु भाव सचेत ।।४६।।

प्रीतम कौं पतियाँ पठई नहि चातुर जानि करंड पठायो।
तापर एक लिख्यौ अहि सुंदर फेरि लिख्यौ सिव जो जिय भायो ।।
चाह सौं चंपक चारु लिख्यौ पुनि ऐसैंहि भेद सबै समुझायो।
वृंद कहैं यह भाव बिचारि कहौ तिय[1] के जिय चाव कहायो ।।४७।।

सिव के उर अहि सोभिजै त्यौं चंपक को हार।
मेरे उर सोभा करै सो भेजहु भरतार ।।४७।।

ग्रीषम बासर अंग बनाय कै प्यारी मनोहर चित्र बनायो।
तामैं लिख्यौ कमला अहि बारुन रुद्र लिख्यौ जिय जैसोहि भायो ।।
बैठे हैं मित्र समाज में प्रीतम लै सखि हाथ दै पीपैं पठायौ।
वृंद कहैं सुबिचार कहौ जु कहा मन मोहन पास मँगायौ ।।४८।।

अंबर बर श्री साप गज एकादस उनमान।
पिय सताब दै भेजियो जो हो चतुर सुजान ।।४८।।

चित उदास न कोमल हास उसास भरै मुख कीने रहै नत।
छीन सखीन के संग न बैठति देखियैं दीन कहैं न सुनैं बत ।।
वृंद कहैं यह भाव कहा अति निंदति है बिधि कौं अपने मत।
याकौं न रोग न पीकौ बियोग न योग कलेस कौ ए री दसा कत ।।४६।।

करिहै दिन दुंइ च्यार मैं पिय परदेस पयान।
सुनत भई ऐसी दसा समुझहु भाव सयान ।।४६।।

प्रानपती के पयान समैं अति काम डरी हहरी हिय मैं घन।
क्यौं जिय धीरज कौं धरिहैं रु कहा करिहैं उपचार सखी जन ।।

पाठभेद :—१. पिय पास कहा यों मँगायौ—समर्थदान की प्रति में।

वृंद कहैं घन घोर उठे करि सोर उठे पिक मोरन के गन ।
यौं तकि संक निसंक भई पुनि सौंपि दियौ मनमोहन कौं मन ।।५०।।

तिय मन दीनौ पीय कौं जब ही कियो प्रयान ।
अब डर कहा मनोज कौं समुझहु बुद्धि निधान ।।५०।।

कीने कवित्त मजूस बराबरि तामैं जवाहर भाव भरे हैं ।
सुच्छ सुदेस सुलच्छन पेखि महा निरदोस खरे सुथरे हैं ।।
ताके दुराव के ताला दये समुझैं बुधिवान दुराइ धरे हैं ।
वृंद कहैं पुनि ताके प्रकास कौं कूँची समान के दोहा करे हैं ।।५१।।

रची भाव पंचासिका वृंद भाव सु बिचारि ।
भूलि चूक कबि कुल सबैं लीजो समझि सुधारि ।।५१।।

गुन सागर सुख सोम सम कासु वासु निधि वाद ।
भई भाव पंचासिका यह औरंगाबाद ।।

गुन=३, सागर=४, सुख=७ और सोम=१

५

नैंन बत्तीसी

सरसति साँमन प्रणम करि बुधि बिमल बरदाय।
सूपसाये भाषा रची कहै कबि वृंद बनाय ॥१॥
राग रंग रस बिरह सुष पंच भाव कौ भेद।
ताको निरनौ वृंद कबि कहत बिचार प्रवेद ॥२॥

प्रथम राग वर्णन

बिरही बिलास सुषी बहुत सुख निधांन कुं
न वे निधांन कुं प्रगट दरसावहै।
बिजौगी कुं आस होवैं जोगी हठ जोग जागैं
रोगी कुं पीर मिटैं निद्रा टुक आवहै।
चतुर कुं हार सम बुधी कुं बुध बहु
ठग कुं ठगाई अधिक ऐसो इह भाव है।
मदन कौ दूत अरु मेघ कौ बिलास रस
नी कुं रस जागैं चित फूलत बिधावहै ॥३॥

पुनः

पंचमो प्रवेद स्यौप याको न अंत पार
बिनोद को बिलास रंग मगन रस रात है।

वृंद कबि राग में रसीयो मदन तुर
आवें अकुलात नैंन पल न मझ ठात है ।।
ताकी रति चपलता नैंना रस लागी रही
कोया सब लालीयु विधांन रंग मात है ।
बिबिध नैंन चरित कर लगन लागी
देह देखी रति नैंन तोरी पिक जात है ।।४।।

दोहा

इह बिध नैंना राग में भीनी जब भरपूर ।
अब गायन बैठी तरुन नैंन चढायतु नूर ।।५।।

सवैया

ताल मृदंग उपंग बजावत तंत्रीय तूर पषावज बाजै ।
तार तुरी सहणाई वीणा (रस) सारंग राग अलापत आजै ।।
वृंद कहै सभी यौं बनयौ पुंन मेघ कौ दूत चिहूँ दिस गाजै ।
राग रसी अषियाँ इह बिधसूं दुष जु दुराय-दुराय कैं भाजै ।।६।।

अथ रंग वर्णन : दोहा

राग रंग में मगनता नैंना रही लुभाय ।
वृंद कहैं अब रंग कौ भेद सुनावत भाय ।।७।।

अंबर आभूषन रंजत मंजन अंजन नैंन ।
ताको प्रथम बिचार कबि कहता है सुध बैंन ।।८।।

अथ मंजन वर्णन

नवन करै अति जुगत सूँ अंजन चाहत नैंन ।
अंबर आभूषन सबै रंग चाहती मैंन ।।९।।

सीस कुं गुंथाय रति राष री सवार बार
अलकां कपोल पर छाकी रस रदन मैं ।
टीली कपोल पर काजर की रेष दई
तीषे तिलोनें यु सलौनें रस मदन मैं ।।

दुलरी चलो री गलैं रही लपट लागी
कंकनन बाजु बंध चुरीयां चगन मैं।
वृंद कबि ताकौ इह निरनौ न पायौ किन
ऐसी रंग माती नैंन मांनू पीक रसन मैं ॥१०॥

अंबर बिबिध बनाय जु राती अंगीयां ऐंन।
वृंद कहत रंग मैं रसी राती राती नैंन ॥११॥

गूंथे बाल ताहु पर फूलन की माल फबै
दतीयाँ दो मेष फूलि जरी है जराव मैं।
नक फूली नीकी फूली फूल कर्णहू के फूले
तिलोना ठोड़ी के बीच फूल्यौ है फलाव मैं॥
आरसी लई हाथ बार बार देषैं नैंन
नलनी सिर धूणैं मोकुं छीनी है छलाव मैं।
वृंद कहैं ऐसें समैं नैंना रंग फूली परी
परी युं जरद गरदन रंग राव मैं ॥१२॥

रंग मैं नैंना रस रही भीनी करत बिलास।
कहै कबि वृंद बनाय कैं कर करलें रस तास ॥१३॥

अथ रस वर्णन

प्रथम पयसिता घोर पीयें गट कें गटी
दुतीय बेर पीय कुं भृंगार रस देत हैं।
अपने मदन की झलक में देषैं प्यारो
ताकुं रस ढारी तेढी छैलै तनु बेत हैं॥
पियकुं पकर उर लपट है दाबै धरै
अपनी जु नैंन पीय कपोल पर पेत हैं।
नैंनन सुं नेह रस पीवत हैं बार बार
मंद मुष पुलक आलिंगन पीय प्रेत हैं ॥१४॥

पलकन के राग सारंग धुनि लेयननि
बिमल पर बान गुन गांन बह रेत हैं।
महर नहीं कहर कहाँ सरल नहीं तेढी परें
बिबिध दुपटां पीर पाटोरी स्वेत हैं॥

मनोगी बिनोवी बरन नहीं मनगकारी
हरन कौ हहरन कछु करन बर वेत हैं।
ऐसै कबि वृंद रंग रस मगन राती माती
बिबिध के रस नैंन रस ई रस लेत हैं ॥१५॥

रस नीको नैंना तणौ रसी रसीली नैंन।
वृंद कबिसर ताहि कौ बरन करत किह बैंन ॥१६॥

अथ बिरह वर्णन

अब बिरहै की रीत कबि कहत बिचार निसंक।
तीन भेद हैं बिरह के कहत न राखूं बंक ॥१७॥

प्रथम नैंन देखन बिरह दुतीय प्रीत कौ ठाम।
रोम रोम कौ बिरह सब भेद सुनाऊँ नाम ॥१८॥

प्रथम : नैंन देखन बिरह

धीठे धीठे नैंना अधीठ पर राखे अन्य
सु बिहांनी यु सुखानी नैंन नैंन मैं।
बहुर कहुं देखै नाह चिहुँ दिस जोवै करै
देखें न कहुँ तहाँ मगन ह्वै मदन मैं।
किनही मिस लेहु बार जाहु दिस घेरैं बिरह
तिय अकुलानी अंबु काढत ढिलन मैं।
वृंद कबि इम कहैं याकौ भाव कैसौ कहूँ
नैंनन कौ विर बहें रीत समझनन मैं ॥१६॥

इह बिध नैंन मिलाप कौ बिरह जगावै ऐंन।
मानी ती बिरहैं मगन अति ही अरीले नैंन ॥२०॥

प्रीत रीत नैंना बिरह बरनहुँ बहुत बिचार।
ताकौ निरनौं वृंद कबि बिरह बरन हित धार ॥२१॥

अपनें सजन करत कर मिलत जु बिछुरैं बांम।
ताको इह सुरतांत सब बिबिध बिचार सुं नाम ॥२२॥

अथ सज्जन विरह

चलत इत उतैं चैंन डोलत न पावैं कहूँ
व पुछैं मेरो सैंन आज कहाँ गयौ प्रात मैं।
कोउ कहै बिदेसी हुवौ तहाँ ढुरै नीर धार
सारी सरद कंचुकि कैं सरद बुंद गात मैं॥
लुषी परैं की की ज्यौति दरसात वै नांही कहूँ
काजर कौ बणाव सौ उतार दीयौ हात मैं।
ऐसें कबि वृंद नैंन बिरह की छकी देषैं
सूझें न कछू न ही[1] गडारत है भीत मैं॥२३॥

दोहा

सजन बिछुरत नैंन इम करत बिरह इह चाव।
अब बिरहौ रस रोम कौ कहत वृंद धरि भाव॥२४॥

अपनौ पति कौ बिछुरनौ देषै तब तिय[2] नैंन।
वृंद कहै सुरतांत सब चाहत कैसौ चैंन॥२५॥

अथ रोम-रोम विरह वर्णन

अंजन कुं धौय डारै अंचुर[3] कुं षौल डारै
फाटे से चिवर सैं अंग लपटांनी है।
सबही आभूषन षौल षौल डारे परे
मंजन न करै अंसा अंस नहीं मानी है॥
कबै ठकै गोडी ढारन षनसैं तुंगी षिणै
चिहुँ दिस अँधेरी जान नैंन धर धांनी है।
कहै कबि वृंद युं सवार के पहुर नैंना
ऐसी बिरहा की भीनी ठाढी दरसानी है॥२६॥

परनारी पर नारकी ढुरती ढुरैं न ठोर।
कलवारी बिकलत भई सई पंषनी कोर॥२७॥

पाठभेद :—१. न गहि डारत २. हिय ३. अंचर

लालन से सबे डोरे सो कारे परे रोम राजी
भ्रू हारे ब लोट थाय अंष मध्य आए हैं।
लाल फीट स्वेतताई कोया बीच दुरै नीर
श्रावण भद आयौ जिम झरैं नीर धाए हैं।।
कीकी की ज्यौति दोढ अंगुरी न सूझै टारी
गुदलो पुंन डोडल चहुइ दीस न्हाए हैं।
कीकी अति नैंन प्यारी फीकी वलि ज्योति धारी
कहै कबि वृंद नैंन बिरह रस पाए हैं।।२८।।

बार बार ऊँची पर चढै जाय अपने पीर
पीवन कुं ज्यौति दरसानी हैं।
डगर की रेष झाँषें मेरो पीव आवै नांहि
लंबे निसास बुंद टलकत चितचानी हैं।।
लंबे निसास लेहु पल पल कुं पलक[1] मोरें
निद्रा की निरासी नैंन संकुची बिहानी हैं।
ऐसैं कबि वृंद युं भानु कें उदें लौं चंद
ताको बिरह तें सो जान में सोही कुमलानी[2] हैं।।२९।।

चसम के तीर सौ तो दूर तै दुराय दीनो
षंत को षंचाव जाय लाग्यौ असमान में।।
नैंनन की चपलताई दई है उरोज हु कुं
देषनो दीयौ जाय चकोरन कुं थलान में।।
संजौगी गुमान देहु विजोगी कौ बिरह लीनौ
पीरन को पीर लई अपनें अंगान में।
नैंना रति प्यासी सो तो बिरह कौ अभ्यास कीनो
वृंद कबि कहैं यु बिरहैं रहैं बिहान में।।३०।।

दोहा

इह बिध नैंना बिरह में भीनी हैं दिन रैंन।
त्रिबिध बिरह की कठिनता रोम रोम रंग नैंन।।३१।।

पाठांतर :—१. गुंमलक २. क्रमलानी

नैंन अटारी अट रहीं कुंडल अपनौ पीव।
जैसें पर नारी परै घन गरजै धर नीव ॥३२॥

पीवत न अंब निरासनी काढै छिन टमकाय।
प्रेम पीयाला नैंन का सबहु मलाने धाय ॥३३॥

बिरह बिथा नैंना लगी ताकी जरी न कोय।
जाकी मूली वृंद कबि सुष कौ ओषद होय ॥३४॥

टंक रोम त्रीय टंक उरज सात टंक कर चूर।
टंक दसी भ्रमु हा तणौ सुष कौ औषद पूर ॥३५॥

बीस टंक पीय मिलन कौ ओषद ल्याई आन।
अंजन के गुण वृंद कबि टुकहि बषानै बान ॥३६॥

अंजन कीनौ नैंन मैं सुष भेषज तिहु वार।
अब नैंना देषो बनीं हीये रें धरौ बिचार ॥३७॥

अथ अंजन सुख वर्णन

बिकसी ललाई गई सब गुडलताई
कीकी सु हारी स्याम दूंनी दरसात हैं।
स्वेत बिच डोरे परे कुंदन की सौभा लगी
भाफ नेबें लोट सौ उलोट धर षात हैं॥
सुष हू कौ काजर सौं तीषौ बन्यो है मानुं
अध षुली पलक सौं प्रफुल्ल डहडात हैं।
वृंद कबि कहै ऐसें औषद को प्रकार देषौ
कैसी बिथा कुं मेट ते ढी रस लात हैं॥३८॥

दोहा

अब उनमादी बस्तु सब ल्यावत अपनी ढूंढ[1]।
नीली नैंन छिनाय कैं केके बस्तु सगूंढ ॥३९॥

मछी की चपलताई नागन की लोट पोट
कोकल को सनेह अंब मंजर पर धाई है।

पाठ :—१. ढुंढ

बीज चंद बकता भ्रमर ही के रोम लीनें
चकोरन की चकोरताई दीनी सब लाई है ।।
सिकरा के परन जैसें सूधे सर लीने छीने
सुकहु की ललाई लेह ठाम दरसाई है।
नैंन को सषाई सौ मदन तब प्रगट्यौ दोर
वृंद कहैं ठगोरी नैंनन की निठुराई है ।।४०।।

अपने पीवन कुं देष लागे दोर पावै जाय
बरजे न माने काहु निडर धोध अटके।
सनन सनन बान वाहै लोकन की न संक जानैं
भरीयैं बाजार बीच घाव देत झटके ।।
सुधा काम प्रेम रस बिरह जोग पंचबान
वाहैं करार मगर माँझ मटके।
वृंद कहै ऐसें नैंन मदन गढ़ी ढाहवै कुँ
चढ़ी चौंप चूंप चेत चरित रस लटके ।।४१।।

मतवाली मृदंग ज्यूँ कुदर में पीव से इपसार रसाल लीयैं।
चकुरान के बान छलाछल वाहत घाव हू धार चिकाय दीयैं ।।
कबि वृंद मनोरथ पूरन यो सुष पाय महाबर पान पीयैं।
चिर जीवो सदा बैहूँ नैंन सदा रंग आनंद मंगल होत हीयैं ।।४२।।

दोहा

सुष उपज्यौ बिरहौ गयौ बिकसें नैंन बिष्यात।
नैंन अटारे गुन बहुत हमसैं कह्या न जात ।।४३।।

चिर जीवौ जुग जुग नयन ज्योति ज्योति रस देह।
सब नैंना के षेल हैं मुदै नैंन गिन लेह ।।४४।।

नैंन झरोषा बदन गढ़ कामदेव की सीष।
सुंदर नगरी बांम[1] की लेत रूप की भीष ।।४५।।

नैंन नैंन तुम कहा कहो नैंन बड़े सुलतान।
नैंन बिचारी नैंन कौ लीयौ रसकनि दान ।।४६।।

पाठांतर :—१. रांम

सोरठा

रसीयौ नैंन सुजान बिन रसीयौ माने नहीं।
भेद पंच परबान भले सुहाई नैंन तुम ।।४७।।

जाने रस में कोय ताकुं नैंन रसील है।
चिर जीवौ ए दोय चाटक चतुर लगावणी ।।४८।।

सार सृंगार बिरह रस सुंदर प्रेम बढ़्यौ ढिग लैंन गती सी।
भाव जु भेद कह्या सब सुंदर सैंण सुं जाणल्यौ षौज इती सी ।।
संवत सतरे तेंतालीस वर्ष सु स्रावण कृस्न जु तीज तिथी सी।
वृंद भनैं सुंगनी[1] नर चाह कें नाम धर्‌यौ ईह नैंन बतीसी ।।४९।।

पाठांतर :—१. सु गुनी

६

श्रृंगार-शिक्षा

परम ज्योति सब मैं प्रगट परमानंद प्रकास।
ता प्रभु कौं बंदन करौं मन क्रम बचन बिलास ।।१।।

अबिचल गढ़ अजमेर मैं परतषि ख्वाजे पीर।
मन बांछित पुरवै सदा धरत ध्यान चित धीर ।।२।।

बखत बिलंद दलेल दिल सब जग करत सराह।
नेक नजर पतिसाह की तहँ महंमद की सलाह ।।३।।

औरंगसाह महाबली महरबान सुबिहान।
सूबै गढ़ अजमेर कौ कियौ कुली दीवान ।।४।।

करत काम पतिसाह के भरत खजानैं दाम।
या महंमद सलाह कैं नेकी ही सौं काम ।।५।।

कवित्त

फैली है सुवास महि मंडल प्रकासमान
भासमान जमी आसमान हू कै घेर मैं।
जहाँ तहाँ देस बिदिसि बिराजमान (बिदिसि)
नरेस सुरेस किंनरेस हू के नेर मैं।।
छहूँ रितु एकसी बहार कबि बृंद कहैं
सोभित सरस सोभा साँझ हू सबेर मैं।

महंमद सलाह जू की नेकी की निकाई ऐसी
फूली है चंबेली जैसी गढ़ अजमेर मैं ॥६॥

दोहा

ताको मिरजा कादरी सब बिधि सरस सुजान।
बीर धीर बानैतबर सुबुधि सुरूप निधान ॥७॥

दाता ग्याता भोगता अति चित परम उदार।
कुलमनि मिरजा कादरी रस-चातुर रिझवार ॥८॥

सरस समझि रस रीति मैं करत प्रीति निरबाह।
राग रंग रुचि रैंन दिन चित चतुराई चाह ॥९॥

कवित्त

कहाँ लौं सराहौं जाके बंस की बड़ाई उर
हीतें चलि आई जाकौं जानत जिहान है।
नेकी की निकाई महिमंडल मैं छाई सु तो
सज्जन सुहाई सब करत बखान हैं॥
राग रंग रस मैं सरस कबि वृंद कहैं
लेत जस देत गुनी लोकन कौं मान हैं।
जैसो मिरजा कादरी को नांव तैसो बड़ो मन
मन जैसी रीझ रीझ तैसो बड़ो दान हैं॥१०॥

दोहा

इहि हेत तैं कादरी करत गुनिन को मान।
गुन सुनिबो अरु रीझिबो पुनि दीबो बहु दान ॥११॥

हित चित ताके हुकुम तैं उर धरि अति आनंद।
यह सिंगार रचना रची यथा समझि कबि वृंद ॥१२॥

रस सिंगार सिंगार की यह रचना अभिराम।
करि 'सिंगार सिच्छा' धर्‌यौ या पोथी को नाम ॥१३॥

रस मधि रस सिंगार जानत रसिक सुजान।
तिहि आलंबन नाइका करियै ताहि बखान ॥१४॥

अथ नायिका-भेद

स्वकिया परकीया बहुरि बारबधू ए तीन।
इनके भेद अनेक हैं जानत हैं जिते प्रबीन ॥१५॥

अथ स्वकीया-लच्छन

ब्याहे पति सौं रति करै रहत एक रस नित्त।
सोई स्वकीया समुझियै चलै न कबहू चित्त ॥१६॥

स्वकीया-चेष्टा

सहज सील गुन बिनय जुत अचल चित्त चल नैंन।
सेबत पति कौं हित सहित छमा लियें मृदु बैंन ॥१७॥

प्रथम ब्याह बिधि कहत हौं कछुक प्रसंगहि पाइ।
जातें उपजत नाइका भेद अवस्था भाइ ॥१८॥

अथ कुल-लच्छन

बिद्या धन परिवार गुन धीर बिनय जुत सोइ।
तिन सौं संबंध कीजियै ज्यौं सुख सोभा होइ ॥१९॥

अथ कन्या-लच्छन

सीलवती सुंदर सरस सुभ लच्छन सब देह।
बहुरि बिचच्छन होइ सो कन्या निहचल नेह ॥२०॥

अथ कन्या गुन

लाँबे लाँबे बार मुख कंज ऐसो सुकुंवार
बड़े नैंन कीर जैसी नासिका सुहाई है।
अधर अरुन दंत उज्जल मधुर बैंन
कंबुकंठी भाई भुज करनि ललाई है॥
छीन कटि तट दहिनावरत नाभि जाकी
रंभा बिपरीत-रुख जंघा छबि छाई है।
कोमल बरन आछी अंगुरी पातरी देह
ऐसी कन्या ब्याहैं ताकौं अति सुखदाई है ॥२१॥

अथ कन्या-दूषण

पिंगल नैंन देह दूबरी असित ओठ
बिरल उरज बहु भोजन करति है।
अति बल नींद अति दुस्सह औ रोगबती
बोलत कपोल जाके गाठ-सी परति है॥
थूल कटि पाइ मध्य अँगुरी न लागैं भूमि
पिसुन सुभाइ गति चल बिचरति है।
घटि बढ़ि अँगुरी अँगूठा घटि पाइ जाके
ब्याहिए न कन्या ए जु दूषन धरति है॥२२॥

अथ वर-गुन

सुन्दर बदन गात जौवन जगमगात
सीलबन्त धनबन्त जिनकौं सराहियें।
दोऊ कुल सुद्ध अबिरुद्ध है सुभाइ मृदु
बोल मुख बोलैं प्रीति रीति थिरता हियें॥
परम पुनीत परिबार सुबिनीत जानैं
नीकें राजनीति साँच बचन निबाहियें।
भोग मैं प्रबीन धीर सब गुन पीन ऐसो
दोष तें बिहीन बर ताकौं कन्या ब्याहियें॥२३॥

दोहा

जाति पाँति आचार सुभ धनवंत बिद्या पाठ।
नीरोगी परिबार जुत अरथी बर गुन आठ॥२४॥

अथ वर दोष

पाप की बुद्धि बसै अति दूर नपुंसक भिच्छुक जाहि सुनीजें।
बृद्ध कवर्य हियें कपटी जाके जीवन-वृत्ति बिदेस की कीजें॥
होइ जो रोगि दुखी रिनिया अति मूरख दुष्ट सुभाव कहीजें।
ए जिनके घट दोष बसें सब ताहि कुमारिका धूलि न दीजें॥२५॥

दोहा

दूषन भूषन ए कहै यह बरनन ब्यौहार।
सनबंध सोई होत हैं जो कीनों करतार॥२६॥

च्यार बरन संसार मैं अपनी अपनी रीति।
जाति पाँति कुल होइ सम ब्याह करत करि प्रीति ।।२७।।

सवैया

गावत मंगलचार के गीत सु प्रीति हियैं धरि मंडप छावैं।
सौंध सुधा सौं सुधारि कै सुंदर चित्रित चित्र बिचित्र बनावैं ।।
दूलह संग बरात के आगम मांनि सबैं मन आनंद पावैं।
अंग उछाह सौं रंग के राह सौं चित्त की चाह सौं ब्याह रचावैं ।।२८।।

अथ दुलही-बरनन

कंकन हाथ दियै महँदी गति देखत ही रति अंगन मैं।
वास तिलौनें ति लौंनी बनी है सलौनी सबै छबि अंगन मैं ।।
रंग भरी नर लोक मैं है सुर लोक मैं है न भु-अंगन मैं।
आनंद सौं उलही उर मैं दुलही फिरै अंगन मैं ।।२६।।

अथ दूलह-वरनन

पाँनि रु पाँइ बिराजत कंकन सुंदरता छबि काम की पावैं।
सोभत फूलन को सिर सेहुरा मंगल गीत गुनी मिलो गावैं ।।
वास बसे जर तार के वास जराव के भूषन जोति जगावैं।
बाजत बाजे बरात लियें संग या बिधि दूलह ब्याहन आवैं ।।३०।।

कवित्त

सब सनबंधी मित्र मंडली कौं संग लै कैं
आवत बरात सनमुख जाइ ल्याइयैं।
सोधि मुहूरत बीस बिस्से सावधान ह्वै कै
अंचल दै गाँठि पाँनि ग्रहन कराइयैं ।।
चँवरी मैं बैठि च्यार फेरे लेत बिधि जुत
द्विज के बचन बाँच लेत गीत गाइयैं।
छाँड़ि हथ-लेवा पाछें पाछे दुलहिनि आवै
आगें आगें दूलह परम सुख पाइयैं ।।३१।।

मधुर मधुर पकबाननि सौं पोष नीकें
बासन बसन बहु भूषन कौं दीजियें।
मीठि मीठि गारि दै प्रगट कीजै मन मोद
कारन सकल सुख कारन के कीजियें॥
दान बहु देकें जस निज गेह आवें
राग रंग रुचि अनुराग रस भीजियें।
रति-सी रमनि रति पति सौं रमन मिलि
नीकें रति-मंदिर मैं रति सुख लीजियें॥३२॥

अथ स्वकीया-भेद

सुकीया तीन प्रकार की जानत हैं बुधिबंत।
मुग्धा मध्या प्रौढ़ा पुनि तिन के भेद अनंअ॥३३॥

अथ नबोढ़ा

बालापन मैं ब्याहियें वहै नबोढ़ा बाम।
अति डर अति ही सकुचि तन नांहि काम सौं काम॥३४॥

अथ विश्रब्ध नवोढ़ा

सौंह बिनय तें कछुक डर तजि पौढ़ें पिय पास।
सो विस्रब्ध नबोढ़ा तिय चकित कछुक बिसवास॥३५॥

अथ मुग्धा

लज्जा भय हैं मुख्य जिंहि सो मुग्धा बिख्यात।
सो अंकुरित जोवना जोवन अंकुर गात॥३६॥

अथ अग्यात जोवना

जोबन आयो नां लषै अपने तन मैं बांम।
सो अग्यात जोबना मुग्धा याको नाम॥३७॥

अथ ग्यात जोवना

अपने तन में जो लषै जोबन आयो बांम।
सोई ग्यात है जोबना अति सुंदर अभिराम ॥३८॥

अथ मध्या

कनक तुला की रीति ज्यौं लज्जा मदन समान।
जामैं ऐसी रीति सो मध्या कहत सुजान ॥३९॥

अथ प्रौढ़ा

कोक कला मैं अति निपुन चाहै नित पति संग।
सो प्रौढ़ा अति प्रेम जुत अति रति रंग तरंग ॥४०॥

आसन आलिंगन बहुरि चुंबन नख रद दान।
अधर पान मर्दन कुचन चाहत चित सुख दान ॥४१॥

रीझि रीझि रति रंग सौं करत सुरति बिपरीति।
कोबिद बचन बिलास मैं प्रौढा की यह रीति ॥४२॥

हिय के परम हुलास तैं प्रकटन प्रेम प्रकार।
तिय अपनैं तन मैं सजत ए सोरह सिंगार ॥४३॥

अथ सोरह सिंगार नाम कथन : छप्पय

प्रथम सकल सुचि[१] समुझि बहुरि करियैं तन मंजन[२]।
बसन[३] महाउर चरन[४] चिकुर रचना[५] मन रंजन ॥
अंगराग[६] भूषन अनेक[७] मुखवास[८] राग[९] पुनि।
अंजन नैंन[१०] चितौंनि[११] मधुर बोलन[१२] सुहसन धुनि[१३] ॥
चातुरी[१४] चलन[१५] पतिब्रतपन[१६] वृंद नियम कबि यह धरत।
जद्यपि अपार सिंगार तऊ तिय सिंगार सोरह करत ॥४४॥

अथ सकल सुचि सिंगार—१

करत सकल सुचि देह की प्रथम यहै सिंगार।
पति हित नीकें रंग कौं करियें बिधि अनुसार ॥४५॥

सुचित एकंत ह्वै कें वासित सुबास लै कें
नासा मुख धारि नीकें संका निखारियें।
जथाजोग जल सौं पबित्र करि हाथ पाय
सुगंध दरब करि धोइकें सुधारियें॥
कीजियें करूरे रूरे क्षामि मुख आखें छाँटि
उज्जल अँगोछा औंछि सुंदर सँवारियें॥
अंतर बहिर ऐसें करियें सरीर सुचि
प्रथम यहै सिंगार सुख कौं सिंगारियें॥४६॥

अथ मंजन सिंगार—२

तन मन उज्जल होत सुख सब आरस मिटि जात।
मंजन द्वितीय सिंगार कौं इँहि बिधि करत सुहात॥४७॥

केसरि अगर घसि चंदन कपूर पूर
सार मृग-सार लै फुलैल मैं मिलाइयै।
चंपक की बेली मन भाँवती सहेलिन के
कोमल कर निकर अंग उबटाइयें॥
वृंद कहि सुंदरी को सुंदर सरीर सब
सुच्छ उसनोदक गुलाब सौं न्हवाइयें॥
आछे आछे उज्जल अँगोछन सौं ओंछि ओंछि
दर्पन सो तन मन रंजन बनाइयै॥४८॥

अथ बसन सिंगार—३

अमल बसन दिसि बिदेस के पति के हित चित चाव।
यह सिंगार है तीसरो करियें अंग बनाव॥४९॥

सारी सेत पीत लाल सबज सुरंगी सूही
बाँधनूँ लहरिया चिनोठी ऊदी सार की।
सेत डोरया की पचतोरिया की कोरदार
तिल्लैकारी छींट की मुकेसी जरतार की॥
लहँगा लसत उर अँगिया अनूप अंग
रूप रंग रुचि रितु रितु अनुसार की।

वृंद कहैं कुसुम सुबासित कैं बनि ठनि
करियैं सरस सोभा बसन सिंगार की ॥५०॥

अथ जावक-सिंगार—४

दीजत पाइ झवाइकैं महा महाउर रंग।
इहिं चौथे सिंगार तैं पियसंग उपजत रंग ॥५१॥

कंचन रजत की अगर की जवाहर की
चंदन की चौकी बैठिन चौंप चित्त लाइयें।
मनके सुभाइन मैं नाइन निपुनता मैं
सनैं सनैं सुखसनैं झवा तैं झवाइयें॥
वृंद कहैं आछे उसनोदक सौं उजराइ
अमल अँगोछें औंछि बिमल बनाइयैं।
पंकज-नयनि ! पुनि पंकज से हाथनि सौं
पंकज से पाइनि महाउर दिवाइयैं ॥५२॥

अथ केसपास सुधारिबो-सिंगार—५

सुचि सुकुवार सिंबार से स्याम सचिक्कन बार।
सोधि सु धूप सुधारिबो यह पँचमौं सिंगार ॥५३॥

सोधन कैं काँक ही तैं ब्यौरि अँगुरिनि
नैंन नीकी नाइन निहारे बार बार हैं।
अगर सौं धूपि पुनि अंबर सौं धूपि ओपि
अंबर सौं अतर फुलेल मेलि सार हैं॥
माँग साधि पाटी पारि बेनी गुन लाल गूंदि
बंदन सौं माँग भरै वृंद सु बिचार है।
छवा छुवैं छूटे सुकुवार सटकारे कारे
ऐसे केसपास को सुधारिबो सिंगार है ॥५४॥

अथ अंग राग सिंगार—६

सब सुगंध इक ठौर करि करत बिलेपन अंग।
इहि छठएं सिंगार तैं होत अनंग उमंग ॥५५॥

मेलि मलयागिरि मैं अतर अगर घसि
सॉनि घन सॉनियै अगर ही को सत हैं।
अतर मिलाइ पुनि अंबर मिलाइ तामैं
एन-सार कुंकुम गुलाब मिलबत हैं।।
वृंद कहैं तन को अतन सोभा होत
करियें अरगजा कि जैसो मनमत हैं।
सुनि हो सुहाग-भाग-भरी ! आछै अंग ऐसो
अंगराग लायें रंग राग उपजत हैं।।५६।।

अथ भूषन सिंगार—७

पाच पेरोजा लर्सानिया मुकता लोला लाल।
पुष्पराग हीरा पनाँ ए नव रतन रसाल।।५७।।

रतन रचित कंकन खचित चित रुचि भूषन धार।
यह सिंगार है सातवौं उर आनंद बिचार।।५८।।

बेनी माँग सीसफूल खुटिला करनफूल
बिदुंली तिलक नक-बेसिर सुचाव के।
पोत कंठ-सरी कंठ-हार उरबसी माला
बाजू-बंध बलया बलय भाव भाव के।।
पहुँची मुद्रिका छुद्र-घंटिका सु जेहरि है
घुंघरू अनौट बाँक बिछिया बनाव के।।
वृंद कहैं कीजै अंग अंग प्रति भूषित ए
जोत भरे भूषन सुरतन रचाव के।।५६।।

अथ मुखवास सिंगार—८

लौंग कपूर इलायची उर आनंद निबास।
यह सिंगार करि आठमों सुखकारी मुखबास।।६०।।

उज्जल बिमल अति सीतल सुगंध मय
होत हैं प्रसन्न ऐसे कपूर बरास तें।

सुखद कुरंग-सार रंग उपजावत है
ललित लवंग रुचि बदन बिलास तैं ।।
जाती-फल जावतरी अमल जुगल एला
चारु दालचीनी परिमल के प्रकास तैं।
वृंद कहैं प्रिय प्रान प्यारी अनयास ही तैं
बसि कर लीजैं प्यारो ऐसे मुखबास तैं ।।६१।।

अथ मुख राग सिंगार—९

मुख सोधन पावन करन क्रमुक चूर्ण कथ जोर।
यह सिंगार नवमौं सुखद सब बिधि सरस तंबोर ।।६२।।

मधुर कसाय कटु तिक्त आदि रस जामैं
गरम नरम रुचिकारी गुन धरियें।
मगही करंज पेंडी गंगेरी कपूर बेलि
परन पुराने पीत मध्य सीक हरियें ।।
काथ केवरे को फूल वासित क्रमुक-फूल
चूनौं चारु चित चातुरी तैं मित भरियें।
वृंद कहैं पीय सुख सदन रिझाइबे कौं
तरुनि तंबोर की बदन सोभा करियें ।।६३।।

अथ अंजन सिंगार—१०

काजर अनियारो अहो अनियारे दृग ठांनि।
कर अ-नियारो लाल चित दसम सिंगार बखानि ।।६४।।

सुंदर सुघर नारि आनंद बिचार अन
दर्पन निहारि मन मैन-रस भीजियें।
तिलौंछि फुलैल सौं गुलाब सौं छिरकि कबि
वृंद कहैं आछे अंगाछें अंगोछ लीजियें ।।
सुछम सुदेस सबिसेस रेखियें सुरेख
अंजन-सलाका सारि अनियारी कीजियें।
मीन मान भंजन से खंजन से नैंननि कौं
पिय मन रंजन कौं अंजन यौं दीजियें ।।६५।।

अथ नैंन चितौंनी सिंगार—११

चख चितवनि सोई जिह चितैं पिय चितवनि बस होत।
यह सिंगार इग्यारवौं जातैं प्रेम उदोत ॥६६॥

अति अभिमान भरी बाँकी बाँकी डीठि करि
सोतिन के मन को गुमांन मींड डारियैं।
प्यार भरी सरल प्रसन्न डीठ सखिन सौं
लाज भरी डीठ गुरुजन सौं बिचारियैं॥
प्रीति रीति भरी रस रंग सौं सलौनी डीठ
तिरछी तरल पीय तन अनुसारियैं।
वृंद कहैं मैंन सैंन दैनी चैंन दैंनी ऐसें
अमल कमल नैंनी नैंननि निहारियैं ॥६७॥

अथ बोलन सिंगार—१२

रीझत जिहि पिय प्रान-प्रिय बोलत सोइ मुख बोल।
इहि सिंगार षट दून तें उपजत प्रीति अलोल ॥६८॥

स्रौनन कौं सुखकारी चित अति हितकारी
मित्त मान मधुर पियूष सम तोलियैं।
भाव भरे चाव भरे चौंप चतुराई भरे
साँच भरे जिनतैं कपट पट खोलियैं॥
बानी के बिबेक चने चीकने सनेह सने
पीय बस होय काही रस में झकोलियैं।
वृंद कहैं ए हो लोल लोचनि! अलोल चित्त
अमल अमोल ऐसे बोलन सौं बोलियैं ॥६९॥

अथ हास्य सिंगार—१३

हास जु च्यार प्रकार को हसि हसि सुखद सुभाइ।
इहि तेरह सिंगार तें लीजें लाल रिझाइ ॥७०॥

अधर कपोल बिकसैं दसन दुति
ऐसें मंदहास भास आनंद बिलसियैं।

वृंद कहैं कछु कछु कल-धुनि होत जहाँ
ऐसे कल-हास कियें पीके चित बसियें ॥
रीझि रीझि दै दै करतारी अतिहास कीजे
काहू समै ए री परिहास कौं उल्हसियें।
रस बरसावन कौं रंग उपजावन कौं
प्रीतम रिझावन कौं ऐसें हास हसियें ॥७१॥

अथ चातुरी सिंगार—१४

चित चतुराई चाव तें चत्रत करि पिय चित्त।
इहि चवदह सिंगार तें निकट राखिहैं नित्त ॥७२॥

प्रथम प्रगट षट भाषा मैं प्रबीन हूजें
बहुरौ सुदेस देस भाषा अबगाहियें।
इंगित आकार तें बिचार गूढ़ जान लीजें
समयो समझि बोलि बचन निबाहियें।
कामकला केलिकला रागकला रंगकला
इत्यादिक चौंसट कला कौं नीकें थाहियें ॥
प्रीतम चतुर को प्रसन्न चित्त करिबे कौं
वृंद कहैं ऐसी चारु चतुराई चाहियें ॥७३॥

अथ गति सिंगार—१५

अरी चलन सोई निरखि हसैं नहि कोइ।
इहि पनरहैं सिंगार तें निहचैं पिय बस होइ ॥७४॥

एहो राजहंस की सी रीति चित राखि राखि
सीधै मग आगै देखि देखि पैंड भरियें।
आतुरी न कीजें एंड़ी बेंड़ी चाल छाँड़ दीजें
कंटकन सौं बचाइ धीरें पाइ धरियें ॥
वृंद कहैं लाज लियें सखी को समाज लियें
काज लियें राह भूलिबे कैं डर डरियें।
चलियें री ! ऐसें जैसें नांऊ न धरत कोऊ
यातैं पनरहैं प्रान प्यारो बस करियें ॥७५॥

पुनः

लाज लपटानी अति वलित ललित बानी
मंद मंद सारस की चाल अनुसारियें।
राजहंस कलहंस मत्त गजराज के से
पाइन की धरनि धरनि पाइ धारियें॥
नूपुर नवल पुनि घूँघरूँ मधुर धुनि
किंकिनी कुनित होत पी पें अनुसरियें।
वृंद कहैं भूषन बसन बनि ठनि ऐसी
गति के गमन मन मोहन को हरियें॥७६॥

अथ पतिब्रत सिंगार—१६

पल पल पतिब्रत राखियें मन क्रम बचन बिचार।
यह सोरहों सिंगार हैं सब सिंगार को सार॥७७॥

पीके जीय जीयें पीय ही को ध्यान हियें
पीय ही सौं प्रेम नेंम लियें पीके गुन कूजियें।
नेंननि तें मन तें प्रतक्ष चित्र सुपने मैं
पीय छाँड़ि और काहू देखियें न छूजियें॥
वृंद कहैं भोजन सयन पिय कियें कीजें
पिय ही की टहल पीय देवता कें पूजियें।
पीय के सुभाइ चलें मनसा न हलें चलें
ऐसो पतिब्रत राखि पतिब्रता हूजियें॥७८॥

दोहा

ए सोरह सिंगार सजि पूरन प्रेम प्रकास।
पिय के संग रति रंग के करत सु बिबिध बिलास॥७९॥

अथ रंग भवन वर्णन

सुधा सौं सुधारि ओपि ओपि किए दर्पन से
चित्रित चरित्रता मैं मन दीजियत हैं।
सुन्दर झरोखा नीकी जालिन के मग मृदु
सीतल सुगंध पौंन सुख लीजियत हैं॥

बिबिध बितांन ताने बिमल बिछौंना ठाने
वृंद कहैं देखि देखि रस भीजियत है।
दीप जोति कौ प्रकास सौंधे की सुबास भास
ऐसे रंग महल मैं रंग कीजियत हैं ।।८०।।

अथ सेज वर्णन

चंदन को पाट सूतबांन को पलिका ढारि
परम नरम सेज ऊपर बिछाइयें।
कलाबूत रेसम के सेजबंध नीकैं कसि
ऊपर उसीसा धरें अति छबि छाइयें ।।
सेबती गुलाब कंज चंबेली के फूलन की
बीनी बीनी पंखुरीनि ऊपर बनाइयें।
तहाँ मिलि दंपति करत बहु भाँति केलि
वृंद कहैं या बिधि सरस सोभा पाइयें ।।८१।।

अथ सेज सौंझ वर्णन

एक ओर पीरे पीरे पान के धरत बीरे
एला दालचीनी लौंग कपूर समेत हैं।
फूलन के हारे बीजनां सँवारि धरे
एक ओर दर्पन निहारबे के हेत हैं ।।
एक ओर सीतल सुगंध जल झारी धरी
अंबर अगर धूप धूपित निकेत हैं।
एक ओर पीकदांनी अतर गुलाब-दांनी
वृंद कहैं ऐसी सौंज कैसी सोभा देत हैं ।।८२।।

अथ राग समाज वर्णन

मुरज मृदंग ताल मिलित सुगंध बाजें
छंद भेद परनि प्रबंध भेद संग को।
धरु धुर पद चिंद गाइन सुघर गावें
करिकैं अलाप तांन तरल तरंग को ।।

ग्राम सुर बीन बाजैं पातर नौ नृत्य नाचैं
भावहि दिखावैं चित चाव अंग अंग को।
सुनि सुनि रीझ कीजैं रीझ रीझ मोज दीजैं
वृंद कहैं ऐसें सुख लीजैं राग रंग को ॥८३॥

अथ रति विलास वर्णन

आपस मैं हाव भाव चौंप चाव दाव पाइ
पीवत अधर ह्वै निसंक अंक भरि भरि।
हसि हसि रीझि रीझि रस रंग भीजि भीजि
प्रेम बसि कबहौं मनाई पाइ परि परि ॥
वृंद कहैं तीक्षन कटाछिन बिलास होत
बचन रचन को हुलास जी मैं धरि धरि।
आछे रति मंदिर मैं आछी सेज सौंज साजि
लेत सुख दंपति सुरत केलि करि करि ॥८४॥

दोहा

सतरै अडताले समैं उत्तम आसू मास।
सुदि पांचैं बुधवार सुभ पोथी भई प्रकास ॥८५॥

७

पवन पच्चीसी

अथ वसंत पवन

पटु पराग पट पीत सुखद सुंदर तन सोहत।
बंसी बंस सुमन खग मृग मन मोहत॥
करि बिलास रस केलि लता ललिता पुंजन मैं।
सदन सदन संचरत धीर बिचरत कुंजन मैं॥
जल न्हात पदमनी बास हर चढ़त सु बिटप कदंब पर।
माधब सरूप माधब पवन कहत वृंद आनंद कर॥१॥

मलयाचल बस बान हौंन पाबन उर अंतर।
गाहत गिरि बन गहन न्हात तीरत्थ निरंतर॥
सुमन सुमन सौं मिलत सहज सीतल सुखकारी।
लिय पराग रस बास भेट धीरज गुनधारी॥
शिवनाथ चरन बंदन करन दरसन बिबिध बिलास कौं।
कहि वृंद परम सेबक पबन जात चल्यो कैलास कौं॥२॥

कुच गिरि चढ़ि संचरत केलि निरंतर।
भ्रमर जंजीरनि जरे झरत मधुभए पटाझर॥
सर सरिता तन मंजि पुहुप रज रंजि उछारत।
मान बिटप झकझोर तोर गहि मूर उखारत॥

बन नगर रौर पारत फिरत मदोन्मत मंथर गबन ।
कहि बृंद मदन महिपाल के ए सिंधुर बंधुर पवन ॥३॥

अरु रूढ़ आरूढ़ सादि आमोद मोद किय ।
भ्रमराबलि गहि बाग प्रबल भुज ताहि ऐंचि लिय ॥
जल थल पर संचरत गहन बन गिरि अबगाहत ।
नीझर जल मुँह फेन खेद मधु स्वेद चुचाहत ॥
कहि वृंद पुहुप रज तें गगन धूरि भूरि पूरित करत ।
ए वाह मदन नर नाह के गंधवाह हठि मन हरत ॥४॥

प्रात समैं रति सदन जाल रंध्रन कैं आवत ।
हरैं हरैं संचरत तुरत दीपक हिवतावत ॥
करि दंपति रति नींद बस भये निहारत ।
प्रफुलित पदम पराग मोह चूरन गहि डारत ॥
करि वृंद सुरत के खेद के स्वेद बूँद मुक्ता हरत ।
चलि आलि आइ मलयागिरि तें पवन चोर चोरी करत ॥५॥

ढिग गुलाब के आय किलक कलिका मुख खोलत ।
परस सरस सुख देत चटक मिस तें हसि बोलत ॥
कहु केतकी कलित बेलि सौं बलित ललित गति ।
मिलत मालती मुदित सेबि सेवती करत रति ॥
पदमनी संग जल केलि जुत कहत चित चैन कौं ।
यह धीर पवन नायक रसिक अति अधीर रस लैंन कौं ॥६॥

बदन कोकनद चूमि चुवत मधु पिबत अधर रस ।
कुच श्रीफल कौं गहत परसि पद पदम होत बस ॥
हरिष वास हठि हरत अंग चंपक आलिंगित ।
जंघ केलि लपटात करत सुख केलि असंकित ॥
रति खेद स्वेद मकरंद जुत मंद मंद अति गति धरत ।
कहि वृंद रसिक जन मैं पवन ए बिलास निसि दिन करत ॥७॥

गहत रूप मंजरहिं चहत रस जुही तन ।
रहत केतकी संग सहत तीछन कंटक तन ॥
करत कमोदिनि केलि डरत नहिं तरत सरोबर ।
भरत अंग बांनरिहि टरत नहिं चढ़त तरोबर ॥

कहि वृंद निरंतर रैन दिन पुहुपबती हिय सौं भिरत ।
यह मलय पवन कामांध जन डारि संक निधरक फिरत ॥८॥

सुभ्र सरोबर भरे हेम कमलन बन छायो ।
मलयाचल तैं चल्यो देखि मन लालच आयो ॥
सुखद बास रस चोरि लेत जिनको झकझोरैं ।
अलि जामिक किय सोर भोर पीछैं उठि दोरैं ॥
कामिनी उच्च कुच गिरि चढ्यो डर्‌यो पर्‌यो गिरि खंज हुव ।
कहि वृंद समीर बसंत को मन्द चलत इहि हेत ध्रुव ॥९॥

कुसुम धूरि धूसरित सारत जल सार लार मुख ।
मंद चलत गिरि उठत होत हिय परस सरस सुख ॥
किय कंठला अलि अबलि निहित किंशुक बधनहियाँ ।
भरत अंक केतकी जुही सेवती उलहियाँ ॥
बजि सुषिर बंस मुख मधुर धुनि रीझत रतिपति रति रवनि ।
कहि वृंद मलयगिरि गरभ तैं वात पोत बिचरत अवनि ॥१०॥

मलयाचल तैं उठ्यो चढ्यो रस लोभ उच्च गिरि ।
बिंध्याचल तलहटी खलित ह्वै तहाँ पर्‌यो गिरि ॥
गिरत मूरछित भयो बेद—न गज उठि धाए ।
दान सलिल तैं सींच कान बीजना हलाए ॥
कहि वृंद सु पुहुप पराग मय औ धूरा मधुपनि मल्यो ।
ह्वै सावधान दच्छिन पवन हरैं हरैं तब उठि चल्यो ॥११॥

मलय मलय भव बिटप गंध बंधुर सोभा सुठि ।
बिषम फनी फन देखि डर्‌यौ थरहर्‌यो चल्यो उठि ॥
केलि कला कुल कुसल करत कौतुक किलकारी ।
कामिनि की कमनीय गुही बैनी किलकारी ॥
अबलोकि वहै भ्रम है भयौ भयौ बनत न टर्‌यौ ।
कहि वृंद हेत इंहि तें पवन मंद मंद गति संचर्‌यौ ॥१२॥

चुबत तुरत मधुपान करत अति बमत बिबस गत।
पुहुपबती जे लता लपकि लम्पट आलिंगित।।
गिरि गिरि उठि संचरत बिसम सम भूपर लेटत।
लियें मधुप गन संग सुमन सौं अंग धुरेटत।।
कुल राह लीक उल्लंघिकै ठोर अगम्या तहँ गमन।
कहि वृंद सुकबि दच्छिन कहत मतबारो दच्छिन पबन।।१३।।

गुंजन अलि अलि गुंज बंस बाँसुरी बजावत।
तार तार तरु पात संग पिक गाइन गावत।।
करत भेटि कचनारि परस कर तरुनि पयोधर।
डारि पराग अबीर नीर नीझर पिचकी कर।।
प्रति कुंज सुमन गन सुमन पै रस फगुवा लै लै घिरत।
कहि वृंद मलय मारुत मनौं सुघर फाग खेलत फिरत।।१४।।

कोस कोस कौं षोलि रंग बास सँभारत।
बलबत चल तरबारि भौंर चौरनि निरबारत।।
नत लषि उन्नत ठबत निरिष—नबाबत।
सुमन प्रफुल्लित करत परसि भोगी सुख पाबत।।
कहि वृंद आन फेरत फिरत बस किय बांम अबाम कौं।
यह मलय समीर बजीर हुब काम नृपति के काम कौं।।१५।।

कोमल सीतल सुरभि परस सुख करत संयोगिनी।
तीछन तपत बिगंध कहत दुख भरन बियोगिनी।।
जिंहि जिंहि बिपिन बिहार भयो तिंहि बास प्रकासन।
फनी भषत भयो हींन पीन बिरहिनी उसासन।।
मुनि गनन परस निरगुन भयो कहत वृंद यह ठीक किय।
जहाँ गयो तहाँ दच्छिन पबन संगति पाय सुभाय लिय।।१६।।

चन्दन बन घन चूरि बकुल कुल मुकुल प्रकासित।
अँबराइन अवगाहि चारु चम्पक किय कम्पित।।
पाटल परिमल बहुल अमल अम्बुज उनमीलित।
चढ़ि चढ़ि बर सिखर झरत झरना जल झीलित।।

मानती मान मोचत फिरत मदन मोद मन मैं भरत।
कहि वृंद दक्ष दच्छिन पवन जोइ भावत सोइ सोइ करत ॥१७॥

त्रिगुन मई ज्यों जगत सजन ज्यों सब सुष पोषन।
पिय ज्यों लागत हीय चोर ज्यों धसत झरोषन ॥
सिव ज्यों भसम पराग भयो बिधि ज्यों कमलासन।
मुनि ज्यों बन माँहि बसत धरत गंधी ज्यों बासन ॥
बिप्र ज्यों सलिल मज्जन करत मंद मंद जति ज्यों गवन।
कहि वृंद रसिक ज्यों लेत रस घन ज्यों दच्छन पवन ॥१८॥

अथ ग्रीष्म पवन

बन बन ब्याकुल फिरत कुंज कुंजन प्रति चपत।
गिरि गिरि चढ़ि गिरि परत कूप बापी सर झँपत ॥
दावानल महि पतत बिरह आतप तन आवत।
जिहिं जिहिं परसत जाय ताप तिहिं तिहिं उपजावत ॥
कहि वृंद रंग रस बास तजि मलिन अंग निस दिन गमन।
सज्जन बसंत बिछुरत भयो बिरही जन ग्रीसम पवन ॥१९॥[1]

तोरि भौंर जंजीर डार आमोद महावत।
पारत बन बन रोरि उर रिपुर घर महि आवत ॥
भयौ धूसरित गात धूर आकास उछारत।
झारत फल दल फुल झपटित समूर उखारत ॥
सर सरित डोहि किय मलिन जल चपल चहूँ दिसि संचर्‌यो।
कहि वृंद बिसम ग्रीसम पवन जनु खुरग बीफर्‌यो ॥२०॥

पाठान्तर :—१. गिर गिर तें चढ़ै गिरत कूप बापी मँह झंपत।
करत उदधि बिस पांन फनी फन दाघ न चंपत ॥
दावानल मह परत बिरह आतप तन लावत।
जिह जिह परसत जाय ताप तिह तिह तन लावत ॥
कहु वृन्द उदास बिराग मय मलिन अंग निस दिन गवन।
सज्जन बसन्त बिछुरत भयौ देखहु बिरही जन पवन ॥१९॥

अथ वर्षा पवन

कुंजर घन पर चढ्यो खड्ग चपला चमकावत।
इन्द्र धनुष धनु गहत प्रजा हित रस बरसावत॥
दल बद्दल छिन जोरि छिनक मैं ताहि बिछोरत।
उदधि हिलोरत चोर बिटप झकझोरत तोरत॥
जिहि दिसि प्रसन्न हुइ संचरत कृषि सज्जन फूलत फरत।
कहि वृंद पाबस पवन भूप रूप सोभा धरत॥२१॥

अथ शरद पवन

प्रात समैं जल न्हात बिमल जल भरित सरित बर।
अमल कमल कुल कलित ललित कमला कमलाकर॥
भयो जहाँ रस बास सहित सहि तन सुख कारी।
अलिहिं बताबत पंथ जात जित जित उपकारी॥
जहँ तहँ बिलास बिलसत बसत परमहंस पद रज परस।
कहि वृंद सरद सम्मीर यह सज्जन सम सोभा परस॥२२॥

अथ हेमंत पवन

ज्यौं ज्यौं आवत निकट कंप त्यौं त्यौं उपजावत।
सकुचावत सब अंग रुचिर रोमांच रचावत॥
अधरहिं खंडन करत नैंन भरि आवत पानी।
सीतकार उच्चार होत मुख गद-गद बानी॥
हठि बसन हरत लागत हियें मान मोच मैमंत कौ।
कहि वृंद कंत तिय सौं मिल्यौ कि चल्यौ पवन हेमंत कौ॥२३॥

फिरत प्रकृति फिरि गई भई बिपरीत गति।
जात किये उपगार तिनहि अपकार करत अति॥
पहिलैं अहि खग पोसि बहुरि पाताल पठाए।
जिन पै लिय रस बास लता तप झपटि जराए॥
पदमनी संग रस मैं रम्यौ ताहि मलिन किय वृंद कहि।
जोइ मारुत संत बसंत मैं सोइ असंत हेमंत महि॥२४॥

अथ शिशिर पवन

चिर परचित दल झारि करत खरौ राज बन।
नव प्रबाल सौं नेल कंप उपजावत तिहिं तन।।
जहाँ दंपति एकंत रचत जल केलिका गुपगि।
तहाँ जात न लजात रहत उर जात गात लगि।।
जे मित्र मित्र जीवन सरन तिन पदमन कौ परम रिपु।
कहि वृंद सिसिर रित पवन यह नीति रीति अनभिग्य नृप ।।२५।।

८

नीति सतसई

श्री गुरुनाथ प्रभाव तैं होत मनोरथ सिद्धि ।
घन तैं ज्यौं तरु बेलि दल फूल फलन की बृद्धि ।।१।।

किए वृंद प्रस्ताव के दोहा सुगम बनाय ।
उक्ति अर्थ दृष्टांत करि दृढ़ कै दिए बसाय ।।२।।

भाव सरस समझत सबै भले लगैं यह भाय ।
जैसें अवसर की कही बानी सुनत सुहाय ।।३।।

नीकी पै फीकी लगै बिनु अबसर की बात ।
जैसे बरनत युद्ध मैं रस सिंगार न सुहात ।।४।।

फीकी पै नीकी लगै कहिए समय बिचारि ।
सब को मन हरषित करै ज्यौं बिबाह मैं गारि ।।५।।

रागी अबगुन ना गनै यहै जगत की चाल ।
देखौ सबही स्याम कों कहत बाल सब लाल ।।६।।

जो जाकौ प्यारौ लगै सो तिहिं करत बखान ।
जैसें बिस कौं बिस-भखी मानत अमृत समान ।।७।।

---

३. इहिं भाय । ६. ऐसे स्याम । ग्वाल गन लाल ।

जो जाको गुन जानही सो तिहि आदर देत।
कोकिल अंबहि लेत है काग निबौरी लेत ।।८।।

अन-उद्यमही एक कौ यों हरि करत निबाह।
ज्यौं अजगर भख आनि कै निकसत बाही राह ।।९।।

हलन चलन की सकति है तौ लौं उद्यम ठानि।
अजगर ज्यौं मृगपति बदन मृग न परतु हैं आनि ।।१०।।

कहा होय उद्यम किए जौ प्रभु ही प्रतिकूल।
जैसें उपजे खेत कौं करं सलभ निरमूल ।।११।।

जाहीं तें कछु पाइयै करियै ताकी आस।
रीते सरबर पै गए कैसें बुझत पियास ।।१२।।

जो जाही को ह्वै रहै सो तिहि पूरै आस।
स्वाति बूँद बिनु सघन मैं चातक मरत पियास ।।१३।।

गुन ही तऊ मनाइयै जो जीवन सुख भौन।
आग जराबत नगर तउ आग न आनत कौन ।।१४।।

रस अनरस समझै न कछु पढ़ै प्रेम की गाथ।
बीछू मंत्र न जानई साँप पिटारे हाथ ।।१५।।

कैसें निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर।
जैसें बसि सागर बिषै करत मगर सों बैर ।।१६।।

कीजै समझ, न कीजिए बिन बिचारि बिवहार।
आय रहत जानत नहीं सिर को पायन भार ।।१७।।

दीबो अबसर को भलो जासौं सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो घन को कौने काम ।।१८।।

अपनी पहुँच बिचारि कै करतब करियै दौर।
तेते पांब पसारिये जेती लाँबी सौर ।।१९।।

पिसुन-छल्यौ नर सुजन सों करत बिसास न चूकि।
जैसे दाध्यौ दूध कौ पीबत छाछहिं फूँकि ।।२०।।

८. हेत। ११. निपजै। १४. औगुन तऊ। गुन ही तें ते मानिये।

प्रान तृषातुर के रहैं थोरेहूँ जलदान।
पाछे जल भर सहस घट डारे मिलत न प्रान ॥२१॥

बिद्या धन उद्यम बिना कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिलै ज्यौं पंखा का पौन ॥२२॥

बनती देख बनाइयै परन न दीजै खोट।
जैसी चलै बयार तब तैसी दीजै ओट ॥२३॥

ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल घटत घटत घटि जाय ॥२४॥

अन-मिलती जोई करत ताही कौ उपहास।
जैसें जोगी जोग मैं करत भोग की आस ॥२५॥

बुरे लगत सिख के बचन हिए बिचारौ आप।
करुवे भेषज बिन पियैं मिटै न तन कौ ताप ॥२६॥

बड़े बड़न को दुख हरत, पै न नीच, यह थाप।
घन मेटत पै ना सरित गिरिवर ग्रीसम ताप ॥२७॥

गुरुता लघुता पुरुष की आस्रय बस तें होय।
करी बूँद मैं बिंध्य सौं दर्पन मैं लघु सोय ॥२८॥

रहे समीप बड़ेन के होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त हैं वृक्ष बराबर बेल ॥२९॥

उपकारी उपकार जग सबसो करत प्रकास।
ज्यों कटु मधरे तरु मलय मलयज करत सुबास ॥३०॥

होय बड़ेरु न हूजिये कठिन मलिन मुख रंग।
मर्दन बंधन छति सहत कुच इन गुननि प्रसंग ॥३१॥

कहूँ जाहु नाहिन मिटत जो बिधि लिख्यौ लिलार।
अंकुस भय करि कुंभ कुच भये तहां नख मार ॥३२॥

---

२८. बृंद। २९. रहत।

बिधि रूठे तूठे कवन को करि सकै सहाय।
बन दव भय जल गत नलिन तहँ हिम देत जराय ॥३३॥

प्रेम पगत बरजी न क्यौं अब बरजत बेकाज।
रोम-रोम बिस रमि रह्यौ नाहिन बनत इलाज ॥३४॥

फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजै ब्यौपार।
जैसें हाँडी काठ की चढ़ै न दूजी बार ॥३५॥

करियै सुख कौं होत दुख यह कहु कौन सयान।
वा सोने को जारियै जासों टूटै कान ॥३६॥

नैंना देत बताय सब हिय कौ हेत अहेत।
जैसें निरमल आरसी भली बुरी कहि देत ॥३७॥

अति परिचै तें होत है अरुचि अनादर भाय।
मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय ॥३८॥

सो ताके अवगुन कहै जो जिहिं चाहै नांहि।
तपत कलंकी बिस भर्यौ बिरहिन ससिहि कहांहि ॥३९॥

सखदाई ए देत दुख सो सब दिन कौ फेर।
ससि सीतल संयोग मैं तपत बिरह की बेर ॥४०॥

बिधि के बिरचे सुजन हू दुर्जन सम ह्वै जात।
दीपहि राखै पवन ते अंचल वहै बुझात ॥४१॥

जासौं जैसो भाव सो तैसो ठानत ताहि।
ससिहि सुधाकर कहत कोउ कहत कलंकी आहि ॥४२॥

आप बुरे जग है बुरो भलौ भले जग जानि।
तजत बहेरा छाँह सब गहत आँब की आनि ॥४३॥

सौं जु सयाने एक मति यहै कहावत साँच।
काँचहि पाच कहै न कोउ पाचहि कहै न काँच ॥४४॥

---

३५. चढ़त एक ही बार।
ज्यौं नाई की। ४१. सुजन जन। ४२. कहत सब बिरहनि मानत नाहि।

भले बुरे जहँ एक से तहाँ न बसिए जाय।
ज्यौं अन्यायीपुर मैं बिकै खर गुर एकै भाय ॥४५॥

भले बुरे सब एक से जौ लौं बोलत नाहि।
जान परतु है काक पिक रितु बसंत के माहि ॥४६॥

भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव।
जो मानो तो देव है नहीं भीत को लेव ॥४७॥

निष्फल स्रोता मूढ़ पैं कविता बचन बिलास।
हाव भाव ज्यौं तीय के पति के अंधे के पास ॥४८॥

न करि नाम रंग देखि सम गुन बिन समझे बात।
गात धात गोदूध तें सेंहुड़ के तें घात ॥४९॥

बिन गुन कुल जाने बिना मान न करि मनुहारि।
ठगत फिरत सब जगत कौं भेष भक्त कौ धारि ॥५०॥

हित हूँ की कहियै न तिहिं जो नर होय अबोध।
ज्यौं नकटे कौं आरसी होत दिखाये क्रोध ॥५१॥

अति अनीति लहियै न धन जो प्यारौ मन होय।
पाए सोने की छुरी पेट न मारै कोय ॥५२॥

मूरख कौ पोथी दई बांचन कौ गुन गाथ।
जैसै निरमल आरसी दई अंध के हाथ ॥५३॥

मधुर बचन तें जात मिट उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सों मिटै जैसें दूध उफान ॥५४॥

जासों रक्षा होत है ह्वै ताही सों घात।
कहा करै कोऊ जतन बारि ककरिया खात ॥५५॥

सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग कौं दीपहि देत बुझाय ॥५६॥

कछु बसाय नहिं सबल सों करै निबल पर जोर।
चलै न अचल उखारि तरु डारति पवन झकोर ॥५७॥

---

४८. बकता बचन बिलास। ५५. जबै।

समय समझ कै कीजिये काम वहै अभिराम।
सैंधव माँग्यौं जेंवते घोरा कौ कहा काम ॥५८॥

जो जाही सों रमि रह्यौ तिंहि ताही सों काम।
जैसे किरवा आक कौ कहा करै बसि आम ॥५९॥

जिय चाहै सोई मिलै जियत भलौ हिय लागि।
प्यासौ चाहत नीर कौं कहा करै लै आगि ॥६०॥

जिय पिय चाहै तुम करौ घन चंदन उपचार।
रोग कछू औषध कछू कैसें होत करार ॥६१॥
बिरह तपन पिय बात तें उठत चौगुनी जागि।
जल के सींचे बढ़त है ज्यों सनेह की आगि ॥६२॥

रोस मिटै कैसै कहत रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आग मैं कैसें आग बुझात ॥६३॥
अति हठ मत कर, हठ बढ़ै बात न करिहै कोय।
ज्यौं ज्यौं भीजै कामरी त्यौं त्यौं भारी होय ॥६४॥

लालच हू ऐसौ भलौ जासौं पूरे आस।
चाटेहू कहुँ ओस के मिटै काहु की प्यास ॥६५॥

विष हू ते सर सी लगै रिस में रस की भाख।
जैसे पित्त ज्वरीन कौं करवी लागति दाख ॥६६॥

जो जेंहि भावे सो भलौ गुन को कछु न बिचार।
तजि गजमुक्ता भीलनी पहरति गुंजा हार ॥६७॥

हरि रस परिहरि बिषय रस संग्रह करत अयान।
जैसें कोऊ करत है छाँड़ि सुधा बिस पान ॥६८॥

कुल मारग छोड़ै न कोउ होहि बृद्धि कै हानि।
गज इक मारत दूसरो चढ़त महाबत आनि ॥६९॥

---

५८. सबै। ५९. आक नीब सबही सुखी कहा करै लै आंब।
६०. तासु रहियै लागि। ६१. जो जिय चाहै सोई करौ। ६९. होइ किते की हानि।

जासों निबहै जीबिका करिए सो अभ्यास।
बेस्या पालै सील तौ कैसें पूरे आस ॥७०॥

दुष्ट न छाड़ै दुष्टता कैसें हू सुख देत।
धोएहू सौ बार कै काजर होए न सेत ॥७१॥

कहुँ अबगुन सोइ होत गुन कहुँ गुन अबगुन होत।
कुच कठोर त्यौं हैं भले कोमल बुरे उदोत ॥७२॥

असुभ कहत सोइ होत सुभ सज्जन बचन अनूप।
स्रवन पिता दिय दसरथहि स्राप भयो बर रूप ॥७३॥

एक भले सब कौ भलौं देखौ सबद बिबेक।
जैसें सत हरिचंद के उधरे जीब अनेक ॥७४॥

एक बुरे सब कौ बुरौ होत सबल के कोप।
अबगुन अर्जुन के भयौ सब क्षत्रिन कौ लोप ॥७५॥

बड़ेन पै जाँचै भलौ जदपि होत अपमान।
गिरत दंत गिरि ढाह तैं गज कै तऊ बखान ॥७६॥

अबगुन करता और ही देत और कौं मार।
जो पहुँचै नहि रुद्र कौ जारत बिरहिनी मार ॥७७॥

मान होत है गुननि तें गुन बिन मान न होइ।
सुक सारी राखैं सबै काग न राखैं कोइ ॥७८॥

आडंबर तजि कीजिए गुन संग्रह चित चाय।
छीर रहित गउ ना बिकै आनिय घंट बँधाय ॥७९॥

जैसौ गुन दीनौ दई तैसौ रूप निबंध।
ए दोऊ कहँ पाइयै सोनौ और सुगंध ॥८०॥

अभिलाषी इक बात के तिन में होय बिरोध।
काज राज के राजसुत लरत भिरत करि क्रोध ॥८१॥

जो जाकौ चाहै भलौ सो ताही की पीर।
नीर बुझावै आग कौं सोखै ताहि समीर ॥८२॥

---

७६. बडकन। ७९. आनों। ८२. भीर।

अहित किएहू हित करै सज्जन परम सधीर ।
सोखे हू सीतल करै जैसें नीर समीर ॥८३॥
ह्वै सहाय हित हू करै तऊ दुष्ट दुख देत ।
जैसें पावक पवन कौं मिलै जरायै लेत ॥८४॥
अपनी अपनी ठौर पर सोभा लहत बिसेष ।
चरन महावर ही भलौ नैंनन अंजन रेख ॥८५॥
जो चाहौ सोई करौ मेरो कछु न कहाव ।
जंत्री के कर जंत्र है भावै सोइ बजाव ॥८६॥
जाको जैसो उचित तिहिं करिए सोइ बिचारि ।
गीदर कैसे ल्याइहै गज-मुक्ता गज मारि ॥८७॥
जुदे न जैसे लहत हैं मिले बिरंगहु रंग ।
काथ संग चूनो परत होत लाल मिलि संग ॥८८॥
नहिं इलाज देख्यौ सुन्यौ जासों मिटत सुभाव ।
मधुपुट कोटिक देत तउ बिष न तजत बिषभाव ॥८९॥
जाकौ जासों मन लग्यो सो तिहि आवै दांय ।
भाल भस्म बिस मुंड सिव तौऊ सिवा सुहाय ॥९०॥
होय कछू समझै कछू जाकी मति बिपरीत ।
कनक भखी जैसे लखै स्याम सेत कौं पीत ॥९१॥
प्रेम निबाहन कठिन है समुझि कीजियै कोय ।
भाँग भखन सुगम है पै लहर कठिन ही होय ॥९२॥
कोउ बिन देखे बिन सुनै कैसें कहै बिचार ।
कूप भेख जाने कहा सागर को बिस्तार ॥९३॥
देव सेव फल देत है जाको जैसो भाय ।
जैसौं मुख करि आरसी देखौ सोइ दिखाय ॥९४॥
कुल बल जैसो होय सो तैसी करिहै बात ।
बनिक पुत्र जाने कहा गढ़ लैबे की घात ॥९५॥

जाकी ओर न जाइयै वैसे मिलिहै सोइ।
जैसें पच्छिम दिसि गए पूरब काज न होइ ।।९६।।

जैसो बंधन प्रेम कौ तैसो बंध न और।
काठहि भेदै कमल कौ छेद न निकरै भौंर ।।९७।।

जे उदार ते देत हैं रीझत जिंहि तिहि चाल।
गाल बजाए हू करैं गौरीकंत निहाल ।।९८।।

अपनी अपनी गरज सब बोलत करत निहोर।
बिन गरजै बोलै नहीं गिरबरहू कौ मोर ।।९९।।

जो सबही कौ देत है दाता कहियै सोइ।
जलधर बरषत सम बिसम थल न बिचारत कोइ ।।१००।।

तिन सों बिमुख न हूजियै जे उपकार समेत।
मोर ताल जल पान करि जैसें पीठ न देत ।।१०१

जो समझै जा बात कौं सो तिंहि कहै बिचार।
रोग न जानै जोतिसी बैद्य ग्रहन कौं चार ।।१०२।।

नबल नेह, आनँद उमँग, दुरै न, मुख चख और।
तब ही जान्यौ जात है ज्यौं सुगंध कौ चौर ।।१०३।।

प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिलते न मिलाय।
दूध दही तें जमत है काँजी तें फटि जाय ।।१०४।।

बात कहन की रीति मैं है अंतर अधिकाय।
एक बचन तें रिस बढ़ै एक बचन तें जाय ।।१०५।।

एक बस्तु गुन होत है भिन्न प्रकृति के भाय।
भंटा एक कौं पित करत, करत एक कौं बाय ।।१०६।।

सुख मैं होत सरीक जो दुख सरीक सो होय।
जाकौ मीठौ खाइयै कटुक खाइयै सोय ।।१०७।।

स्वारथ के सबही सगे बिन स्वारथ कोउ नांहि।
सेवें पंछी सरस तरु निरस भए उड़ि जांहि ।।१०८।।

जो लायक जिहिं भाँति कौं तासों तैसी होय।
सज्जन सो न बुरी करै दुरजन भली न कोय ।।१०९।।

सुख बीते दुख होत है दुख बीते सुख होत।
दिबस गए ज्यों निसि उदित निसि गत दिबस उदोत ।।११०।।

जो भाखै सोई सही बड़े पुरुष मुख बानि।
है अनंग ताकौ कहैं महा रूप की खानि ।।१११।।

दोष भरी न उचारियै जदपि यथारथ बात।
कहै अंध कौ आँधरौ मानि बुरौ सतरात ।।११२।।

पर घर कबहुँ न जाइयै गए घटत है जोत।
रबि मंडल मैं जात ससि छीन कला छबि होत ।।११३।।

उर ही तें कोमल प्रकृति सज्जन परम दयाल।
कौन सिखाबत है कहौ राजहंस कौं चाल ।।११४।।

सज्जन अंगीकृत कियौ ताकौं लेत निबाहि।
क्षयी कलंकी कुटिल ससि तउ सिब तजत न ताहि ।।११५।।

जनि पंडित बिद्या तजहु धनि मूरख अबरेख।
कुलजा सीत न परिहरै कुलटा भूषित देख ।।११६।।

एक दसा निबहै नहीं जनि पछिताबहु कोय।
रबि हू की इक दिबस में तीन अबस्था होय ।।११७।।

नर सम्पत दिन पाइके अति मत करियो कोय।
दुर्योधन अति मान तें भयो निधन कुल खोय ।।११८।।

होय सुद्ध मिटि कलुषता सत संगति कौं पाय।
जैसें पारस को परसि लौह कनक ह्वै जाय ।।११९।।

ब्रह्म बनाए बन रहे ते फिर और बनै न।
कान कहत नहिं बैन ज्यौं जीभ सुनत नहिं बैन ।।१२०।।

जाहि पर्‌यौ जैसौ ब्यसन ता बिन रहत न सोय।
सुरा सुरापी ना तजै जदपि बिकल गति होय ।।१२१।।

---

११२. प्रकासियै। ११४. औरहि तें। ११५. राखि कलंकी। ११६. मूरष धन अबिरेष। ११७. एक सदा।

जे चेतन ते क्यौं तजैं जाकौ जासों मोह ।
चुंबक के पीछैं लग्यौ फिरत अचेतन लोह ॥१२२॥

घटति बढ़ति संपति सुमति गति अरहट की जोय ।
रीती घटिका भरति है भरी सु रीती होय ॥१२३॥

प्रापति तैसी होति है जिहि जैसी लौ भाइ ।
भाजन मित भर सरित में जल भरि भरि लै जाइ ॥१२४॥

उत्तम जन की होड़ करि नीच न होत रसाल ।
कौवा कैसे चल सकै राजहंस की चाल ॥१२५॥

उत्तम जन के संग मैं सहजै ही सुख भास ।
जैसें नृप लावै अतर लेत सभा जन वास ॥१२६॥

या जग की बिपरीत गति समझौ देखि सुभाव ।
कहैं जनार्दन कृस्न कौं हर कौ संकर नांव ॥१२७॥

भले लगै सब कौं कहौ कोऊ हित के बैन ।
पिय आगम के काग बच बिरहिन कौं सुख दैन ॥१२८॥

जो जाके हित की कहै सो ताके अभिराम ।
पिय आगम भाखी भलौ बायस, पिक किहि काम ॥१२९॥

कोऊ कहै हित की कहै ह्वै ताही सों हेत ।
सबै उड़ावत काक कौं पै बिरहिनि बलि देत ॥१३०॥

को चाहे अपनो तऊ जा सँग लहियै पीर ।
जैसें रोग सरीर तें उपजत दहत सरीर ॥१३१॥

एक बिरानौ ही भलौ छिंहिं सुख होत सरीर ।
जैसें बन की औषधी हरत रोग की पीर ॥१३२॥

जो पावै अति उच्च पद ताकौ पतन निदान ।
ज्यौं तपि तपि मध्याह्न लौं अस्त होतु है भान ॥१३३॥

---

१२४. लाभाइ । १२६. धारैं अतर ।

अनुचित अति बल आपनौ कहे अनादर होय।
संग्रह कियौ न नृप दुहिन रुन का गयौ पति खोय ॥१३४॥

कलुष भाव देखैं जहाँ उत्तम जन न रहायँ।
पावस मैं सर तजि अनत राजहंस उड़ि जायँ ॥१३५॥

जेहि चाहै सोई लहै यौं सुख होइ सरीर।
ज्यौं प्यासे जिय कौं मिलै निरमल सीतल नीर ॥१३६॥

मन-भावन के मिलन बिनु यौं जिय होय उदास।
ज्यों चकोर की दिन दसा चकवा चंद प्रकास ॥१३७॥

जिहिं प्रसंग दूषन लगै तजिए ताकौ साथ।
मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ ॥१३८॥

जाके संग दूषन दुरै करिए तिहिं पहिचानि।
जैसें समुझौं दूध सब सुरा अहीरी-पानि ॥१३९॥

जिहिं देखैं लांछन लगै तासों दृष्टि न जोर।
ज्यौं कोऊ चितवै नहीं चौथ चंद की ओर ॥१४०॥

मूरख गुन समझै नहीं तौ न गुनी मैं चूक।
कहा भयो दिन को बिभौ देखै जो न उलूक ॥१४१॥

खल जन सों कहियै नहीं गूढ़ कबहुँ करि मेल।
यौं फैलै जग माँहि ज्यौं जल पर बूँद कि तेल ॥१४२॥

एकहि गुन ऐसौ भलौ जिहिं अवगुन छिपि जात।
बारिद के ज्यौं रंग बद बरसत ही मिटि जात ॥१४३॥

मूढ़ तहाँ ही मानिए जहाँ न पंडित होय।
दीपक कौं रबि के उदैं बात न पूछै कोय ॥१४४॥

बिन स्वारथ कैसें सहै कोऊ करुए बैन।
लात खाय पुचकारियै होय दुधारू धैन ॥१४५॥

सज्जन तजत न सजनता कीनेहू अपकार।
ज्यौं चंदन छेदैं तऊ सुरभित करत कुठार ॥१४६॥

---

१४२. गुप्त। बुंदक तेल। १४६. कीन्हेउ दोष अपार।

दुष्ट न छाँड़ै दुष्टता पोखै राखै ओट।
सर्पहि केतौ हित करौ चपै चलावै चोट ॥१४७॥

धन संच्यौ किहि काम कौ खाउ खरचु हरि प्रीति।
बँध्यौ गंधीलौ कूप जल बढ़ैं बढ़ै इहि रीति ॥१४८॥

करैं बुराई सुख चहै कैसे पावै कोइ।
रोपै बिरबा आक कौ आम कहाँ ते होइ ॥१४९॥

होय बुराई तें बुरौ यह कीनौ निरधार।
खाँड़ खनैगो और कौं ताकौं कूप तयार ॥१५०॥

दिये सहस गुन देत सो पावै यह सब बात।
बीज देत तिहिं कर सिरी और देत तिहि दाँत ॥१५१॥

एक भेष के आसरे जाति बरन छिप जात।
ज्यौं हाथी के पाँव में सबकौ पाँव समात ॥१५२॥

जाको जहँ स्वारथ सधै सोई ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चाँदनी जैसी कारी रात ॥१५३॥

जैसी हो भवितव्यता तैसी बुद्धि प्रकास।
सीता हरिबे तें भयौ राबन कुल को नास ॥१५४॥

निहचै भावी कौ कहौ प्रतीकार जौ होइ।
तौ नल-से हरिचंद-से बिपत न भरते कोइ ॥१५५॥

कछू सहाय न चलि सकै होनहार के पास।
भीस्म जुधिस्ठिर से जहाँ भो कुरुबंस बिनास ॥१५६॥

अति ही सरल न हूजियै देखौ ज्यौं बनराय।
सीधे सीधे छेदियै बाँकौ तरु बच जाय ॥१५७॥

बहुतन कौं न बिरोधियै निबल जान बलबान।
मिलि भखि जाँहि पिपीलिका नागहि नग के मान ॥१५८॥

बहुत निबल मिलि बल करैं करैं जु चाहैं सोय।
तिनकन की रसरी करी करी निबंधन होय ॥१५९॥

---

१४७. चुपै। १५३. प्यारी। १५४. राबन कौं कुलनास।

दुरजन के संसर्ग तैं सज्जन लहत कलेस।
ज्यौं दसमुख अपराध तैं बंधन लह्यौ जलेस ।।१६०।।

सुजन कुसंगति संग तैं सज्जनता न तजंत।
ज्यौं भुजंग गन संग तउ चंदन बिस न धरंत ।।१६१।।

कष्ट परेहूँ साधु जन नेंक न होत मलान।
ज्यौं ज्यौं कंचन ताइयै त्यौं त्यौं निरमल बान ।।१६२।।

जे उत्तम ते असम सौं धरत न रिस मन माँहि।
घन गरजै हरि हुंकरै स्यार बोल सुनि नाँहि ।।१६३।।

खल बंचित नर सजन कौं नहि न बिसास करेहि।
डहक्यौ उडु प्रतिबिंब तैं मुकुता हंस न लेहि ।।१६४।।

मिथ्या-भाषी साँच हूँ कहै न मानै कोय।
भाँड़ पुकारै पीर बस मिस समुझौ सब लोय ।।१६५।।

सदा समै बलबान पै नाँहि पुरुष बलबान।
काबरि लरि गोपी लई बिरंथ भये रथबान ।।१६६।।

कन कन जोरैं मन जुरै काढ़ें निबरै सोय।
बूँद बूँद ज्यौं घट भरै टपकत बीतै तोय ।।१६७।।

थोरे ही गुन तैं कहुँक प्रगट होत जग माँहि।
एक हि कर तैं जय करी करी सहस कर नाँहि ।।१६८।।

ऊँचे बैठे ना लहैं गुन बिन बड़पन कोइ।
बैठो देवल सिखर पर बायस गरुड़ न होइ ।।१६९।।

दुख पाए बिनहूँ कहूँ गुन पावत है कोइ।
सहैं बेध बंधन सुमन तब गुन संजुत होय ।।१७०।।

निपट अबुध समुझै कहा बुध जन बचन बिलास।
कबूँ भेक न जानई अमल कमल की बास ।।१७१।।

बिनसत सतगुन गुनिन के अगुन पुरुष के पास।
ज्यौं अंजन गिरि चंद कर नैंकु न होत प्रकास ।।१७२।।

---

१६०. सहत । १६१. दोष तैं । १६२. निरमल जान । १६७. खाते निबरै ।

साँच झूठ निरनै करै नीति-निपुन जो होय।
राजहंस बिन को करै छीर नीर कौं दोय ॥१७३॥

इक समीप बसि अहित कर, इक हितकर बसि दूर।
हँस बिनासै कमल दल अमल प्रकासै सूर ॥१७४॥

दोषहि को उमहै गहै गुन न गहै खल लोक।
पियै रुधिर पय ना पियै लगी पयोधर जोंक ॥१७५॥

भलौ न होवै दुष्ट जन भलौ कहै जो कोय।
बिष मधुरौ मीठौ लबन कहै न मीठौ होय ॥१७६॥

कारज करत असाधु के सब मैं साधु कहाय।
जैसें सीत हेमंत कौ बन जन देत जराय ॥१७७॥

एक उदर वाही समय उपज न इक से होय।
जैसे काँटे बेर के बाँके सीधे दोय ॥१७८॥

हरत दैबहू निबल अरु दुरबल ही के प्रान।
बाघ सिंह कौ छाँड़ि कै देत छाग बलिदान ॥१७९॥

जिहि जासों मतलब नहीं ताकी ताहि न चाह।
ज्यों निसप्रेही जीव के तृन समान सुरनाह ॥१८०॥

जे पर ते पर यह समझ अपनौ होय न कोय।
पालै पोसै काग तउ पिक-सुत काग न होय ॥१८१॥

दीजै सीख अजान कौ मानै सीख सुजान।
टारहि ताजन मारियै ज्यौं काँपे के कान ॥१८२॥

उद्यम कबहुँ न छाँड़ियै पर आसा के मोद।
गागरि कैसे फोरियै उनयौ देखि पयोद ॥१८३॥

कारज धीरै होतु है काहै होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै केतक सींचौ नीर ॥१८४॥

जो पहिलै कीजै जतन सो पाछै फलदाय।
आग लगे खोदै कुआँ कैसे आग बुझाय ॥१८५॥

होत सिद्धि जैसौ समय तैसौ ही अभिलाख।
कौड़ी बिन जात न लियो करी लेत वै लाख ॥१८६॥

क्यौं कीजै ऐसे जतन जातैं काज न होय।
परबत पै खोदै कुँआ कैसें निकसै तोय ॥१८७॥

साँची संपति और की और भागवै जाय।
कन संग्रह चैंटीन कौं ज्यौं तीतर चुगि जाय ॥१८८॥

सेयौ छोटौ ही भलौ जासौं गरज सिराय।
कीजै कहा पयोधि कौं जातैं प्यास न जाय ॥१८९॥

स्रम ही तैं सब मिलत है बिन स्रम मिलै न काहि।
सीधी अँगुरी घी जम्यौ क्यौं हू निकरै नाँहि ॥१९०॥

कहियै बात प्रमान की जासौं सुधरै काज।
फीकौ थोरे लौन तैं अधिकै खारौ नाज ॥१९१॥

कहै रसीली बात सों बिगरी लेत सुधारि।
सरस लौन की दाल मैं ज्यौं नीबू रस डारि ॥१९२॥

जो चाहैं सोई करैं बड़े असंकित अंग।
सबके देखत नगन हर धरत गौरि अरधंग ॥१९३॥

बड़े सहज ही बात तैं रीझि देत बकसीस।
तुलसी दल तैं बिस्नु ज्यौं आक धतूरे ईस ॥१९४॥

बड़े कहैं सो कीजियै करैं सु करियै नाँहि।
हर ज्यौं पंचन मैं फिरैं और जो बिकत कहाँहि ॥१९५॥

काहू कियौ न कीजियै तिय जिय कौ बिस्वास।
गौर धरी अरधंग हर हरि घर घर में बास ॥१९६॥

सुधरी बिगरै बेग ही बिगरी फिर सुधरै न।
दूध फटे काँजी परे सो फिर दूध बनै न ॥१९७॥

न कछु, तऊ जाकी तलब ताही की मनुहार।
तिलक समय नृप लेत हैं तृन हू हाथ पसार ॥१९८॥

गुनी तऊ अबसर बिना आदर करै न कोइ।
हिय तें हार उतारियै सयन समय जब होइ ॥१९९॥

---

१९६. कह्यौ। १९८. आग्रह।

जदपि आपनौ होय तउ दुख मैं करत न सीर।
ज्यौं दुखती अँगुरी निकट दूसरि ताहि न पीर ॥२००॥

बिद्या मिलै अभ्यास तें सुजन सुभाव मिलै न।
सौत बिपुल काननि करे बिपुल न ह्वै हैं नैन ॥२०१॥

काम समै पावै सु दुख जे निबलन के संग।
मरदन खंडन सहत हैं ज्यों अबला के अंग ॥२०२॥

यह कहवत, जैसौ करै तैसौ पावै लोय।
औरन कौ आँधे करै आँधी कहियत सोय ॥२०३॥

छोटे नर तें रहत हैं सोभायुत सिरताज।
निरमल राखै चाँदनी जैसें पायंदाज ॥२०४॥

हित हू भलौ न नीच कौ नाहिन भलौ अहेत।
चाटि अपावन तन करै काटि स्वान दुख देत ॥२०५॥

सहज रसीली होय सौ करै अहित पर हेत।
जैसें पीड़ित कीजिये ऊख तऊ रस देत ॥२०६॥

कर बिगरी सुधरै बचहिं जैसें बनिक बिसेख।
हींग मिरच जीरौ कहै हग मर जर लिख लेख ॥२०७॥

अरि के संग कुटुंब लखि जिय उपजत है त्रास।
बेंसौं लगै कुठार कौं तब बनराइ बिनास ॥२०८॥

कबहुँ कुसंग न कीजियै किए प्रकृति की हानि।
गूँगे कौं समझाइबो गूँगे की गति आनि ॥२०९॥

कोऊ काहू कौं बुरौ करै परै तिहिं धाम।
काटे पर की नाक कौं नकटी रानी नाम ॥२१०॥

कहा करै कोऊ जतन प्रकृति न बदलै कोइ।
सानैं सदा सनेह मैं जीभ न चिकनी होइ ॥२११॥

जदपि सहोदर होय तउ प्रकृति और की और।
बिस मारै ज्यावै सुधा उपजै एकहि ठौर ॥२१२॥

---

२०२. जस निर्बल के अंग। २०९. कबहूँ संग। २१२, जीवै।

डरे न कबहूँ दुष्ट सौं जाहि प्रेम की बान।
भौंर न छाँड़े केतकी तीखे कंटक जानि ।।२१३।।

बहुत किएहू नीच कौं नीच सुभाव न जात।
छाँड़ि ताल जल कुंभ मैं कौवा चोंच भरात ।।२१४।।

चतुर कूर इक से गनैं जाके नाँहि बिबेक।
जैसें अबुध गँवार कौं पाँच काँच हैं एक ।।२१५।।

कूर न होवै चतुर नर कूर कहै जो कोइ।
मानौ काँच गँवार तउ पाँच काँच नहिं होइ ।।२१६।।

कैसें हू छूटत नहीं जा मैं परी कुबानि।
काग न कोइल ह्वै सकै जो बिधि सिखवै आनि ।।२१७।।

भेष बनावै सूर कौ कायर सूर न होय।
खाल उढ़ावै सिंह की स्यार सिंह नहिं होय ।।२१८।।

धन बाढ़ै मन बढ़ि गयौ नाहिन मन घट होय।
ज्यौं जल सँग बाढ़ै जलज जल घटि घटै न सोय ।।२१९।।

सब तें लघु है माँगिबौ जा मैं फेर न सार।
बलि पै जाँचत ही भए बावन तन करतार ।।२२०।।

बड़े न लोपैं लाज कुल लोपैं नीच अधीर।
उदधि रहै मरजाद मैं बहै उलट नद नीर ।।२२१।।

नाम भलौ होत न भलौ भाग जिहिं भाल।
लच्छि नाम माँगत फिरै भूखौ नाम भुवाल ।।२२२।।

उत्तम पर कारज करै अपनौ काज बिसार।
पूरै अन्न जहान कौं ता पति भिच्छाधार ।।२२३।।

देवन हू सौं देव प्रभु कहा सुरेस नरेस।
कीनौ मीत धनेस तउ पहरैं चर्म महेस ।।२२४।।

सब इक से होत न कहूँ होत सबन मैं फेर।
कपरौ खादी बाफतौ लोह तवा समसेर ।।२२५।।

---

२१३. काहू। २१७. कोइल ज्यों खें।

अपनौ समै बिचारि कैं अरि जीतिए अचूक ।
दिबस काग घूघहि हनै कागहि निसि ज्यौं घूक ।।२२६।।

छल बल समय बिचारि कैं अरि हनिए अनयास ।
कियौ अकेले द्रोन-सुत निसि पांडब कुल नास ।।२२७।।

काम परे ई जानिए जो नर जैसौ होय ।
बिन तायैं खोटौ खरौ गहनो लखै न कोय ।।२२८।।

जैसी संगति तैसियै इज्जत मिलि है आय ।
सिर पर मखमल सेहरै पनहो मखमल पाय ।।२२९।।

अनघर सुघर समाज मैं आय बिगारै रंग ।
जैसें हौज गुलाब कौ बिगरै स्वान प्रसंग ।।२३०।।

अनमिल सुमिल समाज सों होत गए उठि चैन ।
जैसें तिन पर देत दुख निकसै बिकसै नैन ।।२३१।।

चतुर सभा मैं कूर नर सोभा पावत नाँहि ।
जैसें बक सोहत नहीं हंस-मंडली माँहि ।।२३२।।

रसिक सभा में निरस नर होत होत रस हानि ।
जैसें भैंसा ताल परि मलिन करत जल आनि ।।२३३।।

मिल्यौ दुस्ट नाहिन भलो उपजत मिलै अहेत ।
ज्यौं काँटौ गड़ि देह मैं अटकि खटकि दुख देत ।।२३४।।

दोख धरैं निरदोस कौं जे नर होय सदोस ।
घटि उदार दाता कहै जाहि न जिय संतोस ।।२३५।।

होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसंग के थान ।
गंधी और लुहार की देखहु बैठि दुकान ।।२३६।।

भले बचन मुख नीच के नाहिन होत प्रकास ।
हींग लसुन में ना मिले घन कस्तूरी बास ।।२३७।।

सुधरै बिगरि कुसंग तैं सत संगति कौं पाय ।
बास बसी कर हींग की जीरा सँग मिटि जाय ।।२३८।।

---

२३८. बासहि सीकर ।

नीच सुसंगति हू मिलैं करत नीच सौं प्यार।
खर कौं गंग न्हवाइयै तऊ न छाँड़ै छार ।।२३९।।

बिगरौ होय कुसंग जिहिं कौन सकै समझाय।
लसुन बसाए बसन कौं कैसें फूल बसाय ।।२४०।।

ह्वै है बड़े बड़ेन सों होय न छोटे काज।
गहे बिटप जु फनीन कौं गहि न सकै गजराज ।।२४१।।

अजुगत लखि नर नीच की काहू कौं न सुहात।
दाख बिरानी खात खर को न देखि अनखात ।।२४२।।

छाँड़ि सबल अरु निबल की कबहुँ न गहिए ओट।
जैसें टूटी डार मों लगै बिलंबै चोट ।।२४३।।

प्रेम छके मन कौं हटकि रखि न सकै कुल लाज।
कमल नाल के तंतु सों को बाँधे गजराज ।।२४४।।

बात प्रेम की राखिए अपने ही मन माँहि।
जैसे छाया कूप की बाहर निकसै नाँहि ।।२४५।।

ताकौं त्यौं समझाइए ज्यौं समझे जिहिं बानि।
बैन कहत मग अंध कौं ज्यौं बहरे कौं पानि ।।२४६।।

बिपत परे सुख पाइए ता ढिंग करिए भौंन।
नैन सहाई बधिर के अंध सहाई स्रौंन ।।२४७।।

हीन अकेलौ ही भलौ मिले भले नहिं दोय।
जैसें पावक पवन मिलि बिफरै हाथ न होय ।।२४८।।

जैसौ थानक सेइयै तैसौ पूरै काम।
सिंह गुफा मुक्ता मिलै स्यार खुरी खुर चाम ।।२४९।।

बाँके सीधे को मिलन निबहै नाँहि निदान।
गुन-ग्राही तौऊ तजत जैसे बान कमान ।।२५०।।

क्यों करिए प्रापति अलप जामें स्रम अति होय।
कौन जु गिरिबर खोदि कै चूहौ काढ़ै जोय ।।२५१।।

---

२३९. मिलै सुसंगति उच्चहू। सुसंगति नीच हू मिलै करत नीच सु प्यार।

होय पहुँच जाकी जिती तेतौ करत प्रकास।
रबि ज्यौं कैसे करि सकैं दीपक तम को नास ।।२५२।।

जहाँ चतुर नाहिन तहाँ मूढ़न कों ब्यबहार।
बर पीपर बिन हो रहे ज्यौं एरंड अधिकार ।।२५३।।

होय न कारज मो बिना यह जु कहै सु अयान।
जहाँ न कुक्कुट सबद तहँ होत न कहा बिहान ।।२५४।।

उत्तम को अपमान अरु जहाँ नीच कौ मान।
कहा भयौ जु हंस की निंदा काग बखान ।।२५५।।

जथाजोग की ठौर बिनु नर छबि पावै नाँहि।
जैसें रतन कथीर मैं काँच कनक के माँहि ।।२५६।।

बिपति बड़ेई सहि सकैं इतर बिपति तें दूर।
तारे न्यारे रहत हैं गहैं राहु ससि सूर ।।२५७।।

ठौर छुटे तें मीत हू ह्वै अमीत सतरात।
रबि जल उखरे कमल कौं जारत गारत जात ।।२५८।।

होत बहुत धन होत तउ गुन जुत भए उदोत।
नेह भर्‌यौ दीपक तऊ गुन बिनु जोति न होत ।।२५९।।

कहा भयौ जो धन भयौ गुन तें आदर होइ।
कोटि दोइ धारी धनुस गुन बिन गहत न कोइ ।।२६०।।

जात गुनी जात न तहाँ आडंबर जुत सोइ।
पहुँचे चंग अकास लौं जौ गुन संजुत होइ ।।२६१।।

गुनबारौ संपति लहै लहै न गुन बिन कोइ।
काढ़ै नीर पताल तें जो गुन-जुत घट होइ ।।२६२।।

को करि सकै बड़ेन सौं कबहूँ प्रति उपकार।
गिरि सुर नर राख्यौ न दधि मुनि अँचयो जिहिं बार ।।२६३।।

बिद्या गुरु की भगति सों कै कीन्हे अभ्यास।
भील द्रोन के बिन कहै सीख्यौ बान बिलास ।।२६४।।

---

२६३. सुर तरु।

गुरुहु सिखावै ग्यान गुन सिस्य सुबुद्धि जो होय।
लिखै न खरदरि भीत पर चित्र चितेरौ कोय ॥२६५॥

पंडित पंडित सो मिलै संसै मिटत न बेर।
मिलै दीप दुहुँ दुहुंन कौं होत अँधेर निबेर ॥२६६॥

उद्दिम बुधि बल सों मिलै तब पावत सुख साज।
अंध कंध चढ़ि पंगु ज्यों सबै सुधारत काज ॥२६७॥

जाको हृदय कठोर तिहिं लगै न कोमल बैन।
मैंन बान ज्यों पथर मैं क्यौं हू किए भिदै न ॥२६८॥

सबको रस मैं राखिए अंत लीजिए नाँहि।
बिस निकस्यो अति मथन तैं रतनाकरहू माँहि ॥२६९॥

फल बिचारि कारज करौ करहु न ब्यर्थ अमेल।
तिल ज्यौं बारू पेरिए नाहिन निकसै तेल ॥२७०॥

पीछे कारज कीजिए पहिले पहुँच बिचार।
कैसे पावत उच्च फल बावन बाँह पसार ॥२७१॥

दुस्ट निकट बसिए नहीं बसि न कीजिए बात।
बदली बेर प्रसंग तैं छिदै कंटकन पात ॥२७२॥

तिनके कारज होत हैं जिनके बड़े सहाय।
कृस्न पच्छ पांडव जयी कौरव गए बिलाय ॥२७३॥

पुन्य बिबेक प्रभाव तैं निहचल लच्छि निबास।
जौं लौं तेल प्रदीप मैं तौं लौं जोति प्रकास ॥२७४॥

नर कारज की सिद्धि लौं करै अनेक प्रकार।
छूटै रोग सरीर तैं को ढूंढ़े उपचार ॥२७५॥

अरि छोटौ गनिए नहीं जाते होत बिगार।
तून समूह कौं छिनक मैं जारत तनक अँगार ॥२७६॥

छोटे अरि पै चढ़हु सजि सुभट सस्त्र तन त्रान।
लीजै ससा अखेट पर नाहर कौ सामान ॥२७७॥

---

२७७. छोटे अरि पर चढ़त हू सजै सुभट तनत्रान। ससक सिकार पर।

गुन त संग्रह सब करैं कुल न बिचारै कोय।
हरि हू मृगमद को तिलक करत लेत जग मोय ॥२७८॥

बुरौ होय तउ सुकुल कौं तासों बुरी न होय।
जदपि धुआँ है अगर को करत सुगंधित सोय ॥२७९॥

ताकौ अरि कहा करि सकै जाके जतन उपाय।
जरै न ताती रेत सौं जाके पनही पाय ॥२८०॥

पंडित जन कौ स्रम मरम जानत जे मतिधीर।
कबहूँ बाँझ न जानई तन प्रसूत की पीर ॥२८१॥

सूर बीर की संपदा कायर लै नहिं जाय।
निहचै जानौ सिंह बलि स्यार न कबहूँ खाय ॥२८२॥

भूपति के सँग सुभट गन आपस मैं यह रीत।
बन अभीत ज्यौं सिंह तैं बन तैं सिंह अभीत ॥२८३॥

जाय दरिद कबि जनन कौं सेये राज समाज।
सिंह तृपित तब होतु है हाथ चढ़ै गजराज ॥२८४॥

बीर पराक्रम ना करै तासों डरत न कोइ।
बालक हू कौ चित्र कौ बाघ खिलौना होइ ॥२८५॥

बीर पराक्रम तैं करै भुब मंडल कौं राज।
जोराबर यातैं करत बन अपनौं मृगराज ॥२८६॥

जोराबर अरि साधियै बुध बल कियै उपाय।
कालयमन कौ ज्यौं किसन, पट मुचुकुंद उठाय ॥२८७॥

राजा के बल लोक सब फिरैं घिरैं चहुँ ओर।
ज्यौं बन मैं छूटैं चरैं बाँधे हद के जोर ॥२८८॥

नृप प्रताप तैं देस मैं रहै दुस्ट नहिं कोइ।
प्रगटैं तेज दिनेस कौं तहाँ तिमिर नहिं होइ ॥२८९॥

यहै बात सबही कहैं राजा करै सु न्याब।
ज्यौं चौंपर के खेत मैं पासौ परै सु दाब ॥२९०॥

---

२८०. जातौ। २८१. परम। है

कारज ताही को सरै करै जु समै निहारि।
कबहुँ न हारै खेल जो खेलै दाँउ बिचारि ॥२९१॥

सब देखै पै आपनौ दोष न देखै कोइ।
करै उजेरौ दीप पै तरे अँधेरौ होइ ॥२९२॥

संत कस्ट सहि आपुही सुखि राखै जु समीप।
आप जरै तउ और कौं करै उजेरौ दीप ॥२९३॥

मारै इक रच्छा करै एकहि कुल कौं होय।
ज्यौं कृपान अरु कबच ये एक लोह सों दोय ॥२९४॥

अपनी अपनी ठौर पर सबकौं लागै दाव।
जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी पर नाव ॥२९५॥

मुनि मन सुथिर कुबात तें कैसें राखे कोइ।
जल प्रतिबिंबत बात बस थिर हू चंचल होइ ॥२९६॥

जो हाजिर अबसान पर सोई सस्त्र प्रमान।
दाभहि तें बलदेव ज्यौं हरे सूत के प्रान ॥२९७॥

बड़े अनीति करें तऊ बुरो कहै नहिं कोय।
बालि हन्यो अपराध बिनु ताहि भजें सब कोय ॥२९८॥

नीति निपुन राजानि कौं अजुगत नांहि सुहाय।
करत तपस्या सूद्र कौं ज्यौं मार्यौ रघुराय ॥२९९॥

लघु मिलिए गरुबे जदपि बड़े कछू लै नांहि।
गिरिबर आने कपिन के ज्यौं मकरालय मांहि ॥३००॥

भले बुरे छोटे बड़े रहैं बड़ेनि पै आय।
मकर असुर सुर गिरि अनल दधि मधि सकल बसाय ॥३०१॥

'बड़े भार लै निरबहैं तजत न खेद बिचारि।
सेस धरा धरि भूधरैं अब लौं देत न डारि ॥३०२॥

बुरी करैं पर जे बड़े भली करैं हित धारि।
जैसें दधि बाँध्यौ तऊ कपि दल दियौ उतारि ॥३०३॥

उत्तम जन सौं मिलत ही अवगुनहूँ गुन होय ।
घन सँग खारो उदधि मिलि बरसै मीठौ तोय ।।३०४।।

काहू सौं नाहीं मिटै अपरापत के अंक ।
बसत ईस के सीस तउ भयो न पूर्न मयंक ।।३०५।।

कोऊ दूर न करि सकै बिधि के उलटे अंक ।
उदधि पिता तउ चंद को धोय न सक्यो कलंक ।।३०६।।

गहिए ओट बड़ेन की जहाँ मिटै दुखदंद ।
उदधि सरन मैनाक को कछु करि सक्यो न इंद ।।३०७।।

छल बल धर्म अधर्म करि अरि साधिए अभीति ।
भारत में अरजुन किसन कहा करी युध रीति ।।३०८।।

गाहक सबै सपूत के सारै काज सपूत ।
सबको ढंपन होत है जैसे बन कौं सूत ।।३०९।।

आप कस्ट सह और कौं सोभा करत सपूत ।
चरखी पींजन चरन खिंच जग ढाँकन ज्यौं सूत ।।३१०।।

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात तै सिल पर परत निसान ।।३११।।

सुख दिखाय दुख दीजियै खल सौं लरियै नाँहि ।
जो गुर दीने ही मरै क्यों बिस दीजै ताहि ।।३१२।।

बिन बूड़ो ही जानिए बुध मूरख मन माँहि ।
छलकै ओछे नीर घट पूरे छलकत नाँहि ।।३१३।।

सहज संतोस है साध कौं खल दुख दैन प्रबीन ।
मछुवा मारत जल बसत कहा बिगारत मीन ।।३१४।।

सुंदर थान न छोड़ियै जौ लौं मिलै न और ।
पिछलौ पाँउ उठाइयै देखि धरन को ठौर ।।३१५।।

फिर पीछे पछताइयै सो न करै मति सूध ।
बदन जीभ हिय जरत हैं पीवत तातौ दूध ।।३१६।।

को सुख, को दुख देत है देत करम झकझोर।
उरझे सुरझे आप ही धुजा पबन के जोर ।।३१७।।

सब सुख है संतोस मैं धरियै मन संतोस।
नेंक न दुरबल होत है सर्प पबन के पोष ।।३१८।।

पाँय परेहू पिसुन सौं बिससि न करिए बात।
नमत कूप को डोल ज्यौं जीबन हर लै जात ।।३१९।।

सबल न पुस्ट सरीर को सबल तेज युत होय।
हृस्ट पुस्ट गज दुस्ट ज्यौं अंकुस के बस होय ।।३२०।।

कायर नर को देख रन मुख फीकौ दरसाय।
काँचो रँग ज्यौं धूप मैं झटक चटक उड़ि जाय ।।३२१।।

दोस धरै गुनि को पिसुन इह डर गुन न बिसारि।
जूँ के भय ते बसन को देत कहा कोउ डारि ।।३२२।।

भली करत लागत बिलम बिलम न बुरे बिचार।
भौन बनाबत दिन लगैं ढाहत लगति न बार ।।३२३।।

सोई जानो आपनो रहै निरंतर साथ।
होत परायो आपनो सस्त्र पराए हाथ ।।३२४।।

बिनसत बार न लागई आछे जन की प्रीति।
अंबर डंबर साँझ के ज्यौं बारू की भीति ।।३२५।।

करिए बात न तन परस खल ढिग जैए नाँहि।
कटुक नीम तर जात ही मुख करुऔ ह्वै जाहि ।।३२६।।

निपट अमिलती बात कों कैसे करिहै कोइ।
बसन नील के माट मैं कबहूँ लाल न होइ ।।३२७।।

देखि ठिकानौ माँगिए माँगे मिलै जु होइ।
मुनि घर भीतर कांगही ढूँढ़ै लहत न कोइ ।।३२८।।

कहे मूढ़ की बात को करिए जो हित होय।
सौंह दिबाए और के परे अगिन में कोय ।।३२९।।

---

३२१. रंग पतंग ज्यौं। ३२४. सोई अपनो। ३२६. प्रात के। ३२९. जो चित होय।

झूठहु ऐसो बोलिए साँच बराबर होय।
ज्यौं अँगुरी सों भीत पर चाँद बतावै कोय ।।३३०।।

समझै अनसमझै कछुक कहिए मीठी बात।
बालक के सुनि सुनि बचन जैसें स्रवन सुहात ।।३३१।।

सुबुध बीच परि दुहुँन कौं हरत कलह रस पूर।
करत देहरी दीप ज्यौं घर आँगन तम दूर ।।३३२।।

अधिक दुखी लखि आप तें दीजै दुख बिसराय।
धरम सुअन बन दुख हर्‌यौ मुनि नल बिपति बताय ।।३३३।।

होत बुरे हूँ तें भलो काहू समै प्रकास।
अधिक मास तें ज्यौं मिट्यौ पांडब फिर बनबास ।।३३४।

एक अनीति करै लहै संगी दुख सुख नाँहि।
भीम कीचकन कौं दिए मारि चिता के माँहि ।।३३५।।

बड़े बिपत मैं हूँ करें भले बिराने काम।
किय बिराटपति की बिजय अरजुन करि संग्राम ।।३३६।।

बड़े बड़े हू काम करि आप सिहाबत नाहिं।
जय जस उत्तर कौं दियो पथ बिराट के माहिं ।।३३७।।

बड़े बचन पलटैं नहीं कहि निरबाहैं धीर।
कियो बिभीसन लंकपति पाय बिजय रघुबीर ।।३३८।।

बुरी करैं तेई बुरे नाँहि बुरो कोउ और।
बनिज करै सो बानिया चोरी करै सो चोर ।।३३९।।

झूठ बसे जा पुरुष मैं ताही की अप्रतीति।
चोर जुआरी सों भले यातें करत न प्रीति ।।३४०।।

कुल सपूत जान्यौ परै लखि सुभ लच्छन गात।
होनहार बिरबान के होत चीकने पात ।।३४१।।

जनमत जननी उदर मैं कुल को लेत सुभाव।
उछलन सिंहनि को गरभ सुनि गरजन घनराब ।।३४२।।

---

३३१. सवें सुहात। ३४२ लषियत। नियमित। होत वियत घनराव।

बिना सिखाए लेत है जिहि कुल जैसी रीति ।
जनमत सिंहनि कौ तनय गज पर चढ़त अभीति ।।३४३।।

सत्य बचन मुख जो कहत ताकी चाह सराह ।
गाहक आवत दूर ते सुनि इक सब्दी साह ।।३४४।।

प्रेम पगन जासों भई सुख दुख ताके संग ।
बसत कमल अलि बास बस स-कमल भखत मतंग ।।३४५।।

चहल पहल अबसर परे लोक रहत घर घेर ।
ते फिर दृष्टि न आवहीं जैसे फसल बटेर ।।३४६।।

बुद्धि बिना बिद्या कहो कहा सिखावै कोइ ।
प्रथम गाँव ही नाहिं तौ सींव कहाँ ते होइ ।।३४७।।

बहुत न बकिए कीजिए कारज औसर पाय ।
मौन गहे बक दाँब पर मछरी लेत उठाय ।।३४८।।

भजत निरंतर संत जन हरि पद चित्त लगाय ।
जैसे नट दृढ़ दृस्टि करि धरत बरत पर पाँय ।।३४९।।

का रस मैं का रोष मैं अरि ते जिनि पतियाय ।
जैसै सीतल तप्त जल डारत आगि बुझाय ।।३५०।।

चप चप करती ना रहै नर लबार की जीह ।
चल-हल दल जैसे चपल चलत रहै निसि दीह ।।३५१।।

जैसो प्रभ तैसो अनुग होय सुबात प्रमान ।
बाबन कर की लष्टिका बढ़े चढ़ी असमान ।।३५२।।

बढ़ै न ऐसो कौन है दान मान को पाय ।
पाय धरा बामन भए सीस स्वर्ग धर पाय ।।३५३।।

अपनी कीरति कान सुनि होत न कौन खुस्याल ।
नाग मंत्र के सुनत ही बिस छाँड़त है ब्याल ।।३५४।।

बिद्या याद किए बिना बिसरत इहिं उनमान ।
बिगर जात बिन खबर के ढोली कैसो पान ।।३५५।।

सबै धकाबै निबल कौं सबल पुरातन पाठ।
डारै जारि बहाय दै अनिल अनल जल काठ ॥३५६॥

अंतर अँगुरी चारि कौ साँच झूठ मैं होय।
सब मानै देखी कही सुनी न मानै कोय ॥३५७॥

निबहै सोई कीजिए पन अपने उनमान।
वैसें होत गरीब पै राजा कौ सौ दान ॥३५८॥

जोर न पहुँचै निबल कौं जो पै सबल सहाय।
भोडर की फानूस कौं दीप न बात बुझाय ॥३५९॥

कारन बिन कारज नहीं निहचै मान बचन्न।
करै रसोई जौ मिलै आग ज्वलन जल अन्न ॥३६०॥

परी बिपत तें छूटियै करियै जोर उपाव।
कैसें निकसै जतन बिन परी भौंर मैं नाव ॥३६१॥

दुख सुख दीबे कौं दई है आतुर इहिं ठाट।
अहि करंड मूसा पर्यौ भखि निकस्यौ उहि बाट ॥३६२॥

प्रेरक ही तें होत है कारज सिद्ध निदान।
चढ़ै धनुष हू ना चलै बिना चलाए बान ॥३६३॥

होय भले कैं सुत बुरो भलौ बुरे कै होय।
दीपक कैं काजर प्रगट कमल कीच तें होय ॥३६४॥

हार बड़े की जीत है निबल न जानहु तास।
बिमुख होय हरि ज्यौं कियौ कालयमन कौ नास ॥३६५॥

होय भले चाकरन तें भलौ धनी कौ काम।
ज्यौं अंगद हनुमान तें सीता पाई राम ॥३६६॥

सबकी समै बिनास मैं उपजति मति बिपरीति।
रघुपति मार्यौ लंकपति जो हरि लै गयो सीति ॥३६७॥

जो धनबंत सु देय कछु देय कहा धनहीन।
कहा निचोरै नगन जन न्हान सरोबर कीन ॥३६८॥

---

३६०. इंधन। जलन। ३६४. जोय। ३६५. मार बड़े की हार है। मानैतास।

मुख सज्जन के मिलन कौं दुरजन मिलै जनाय ।
जाने ऊख मिठास कौं जब मुख नीम चबाय ।।३६९।।

होत चाह तब होतु है प्रेम सु सज्जन संग ।
पास दियै बिन बाँस पर चढ़ै न गहरौ रंग ।।३७०।।

जाहि मिलैं सुख होतु है ता बिछुरैं दुख होय ।
सूर उदै फूलैं कमल ता बिन सकुचैं सोय ।।३७१।।

झूठे ही करियै जतन कारज बिगरैं नाँहि ।
कपट पुरुष ज्यौं खेत पर देखत मृग भज जाँहि ।।३७२।।

प्रेम नेम के पंथ कौ है कछु अद्‌भुत रूप ।
पिय हिय लागै लगत ज्यौं सरद जोन्ह सी धूप ।।३७३।।

दुखदाई सोइ देतु सुख सुखदाई सँग जात ।
घट जल भींजे चीर कौं लागि लूअ सियरात ।।३७४।।

सम सहाय के बिन मिले सुखदाई दुख देइ ।
भिंजे चीर बिन घट सलिल लागत तपत करेइ ।।०७५।।

कारज सोई सुधरिहै जो करियै सम भाय ।
अति बरषै बरषै बिना जौ करिसन कुम्हिलाय ।।३७६।।

सज्जनता ना मिलै कितौ जतन करौ किन कोइ ।
ज्यौं कर फार निहारियै लोचन बड़ौ न होइ ।।३७७।।

बिन बनाव बानिक बने ताही के कुबखान ।
दगले पर ज्यौं अरगजौ मीठे पर ज्यौं स्वान ।।३७८।।

तन बनाय उपजाय रुचि ठानत मान निदान ।
ज्यौं पंचामृत छाँड़ि कै करत तपत जल पान ।।३७९।।

तनको देतन तनत जो मन मिलयो तजि लाज ।
ज्यौं अंकुस कौं नटत कोउ दै गिरि सौं गजराज ।।३८०।।

छोटे मन मैं आइहै कैसं मोटी बात ।
छेरी के मुँह में लियौ ज्यौं पेठा न समात ।।३८१।।

---

३७२. धन खेत पर । ३७३. सरद जौन । ३७८. गदले पर । मीठे पर तनत्रान ।

होत निबाह न आपनौ लीने फिरत समाज ।
चहा बिल न समात है पूँछ बाँधिए छाज ।।३८२।।

रहै प्रजा धन यत्न सौं जहँ बाँकी तरबार ।
सो फल कोउ न लै सकै जहाँ कटीली डार ।।३८३।।

जासौं परिचै होय सो पावै तिहिं उनमान ।
रुपिया कौं खोटौ खरौ कैसें कहै अजान ।।३८४।।

बिना प्रयोजन भूलिहू ठटिए नाहीं ठाट ।
जैबो नहिं जा गाँव कौं ताकी पूछ न बाट ।।३८५।।

आपुहि कहा बखानियै भलौ बुरौ कौ जोग ।
ऊढ़े घन की बान कौं कहैं बटाऊ लोग ।।३८६।।

इंगित तें आकार तें जानि जात जो भेट ।
तासौं बात दुरै नहीं ज्यौं दाई सौं पेट ।।३८७।।

जानै सो बूझै कहा आदि अंत बिरतंत ।
घर जनमे पसु के कहा देखत कोऊ दंत ।।३८८।।

कहिबौ कछु करिबौ कछू है जग की बिधि दोय ।
देखन के अरु खान के और दुरद रद होय ।।३८९।।

आप कहै नाहीं करै ताकौं है यह हेत ।
आप जाय नहिं सासुरै औरन कौं सिख देत ।।३९०।।

जो कहियै सो कीजियै पहिलै करि निरधार ।
पानी पी घर पूछिबौ नाहिन भलौ बिचार ।।३९१।।

पीछे कारज कीजियै पहिलै जतन बिचार ।
बड़े कहत हैं बाँधियै पानी पहिले बार ।।३९२।।

अरिहू बूझै मंत्र तौ कहियै साँच सुनाय ।
ज्यौं भीसम पांडबन कौं दीनौ मरन बताय ।।३९३।।

कहियै तासौं जो हितू भली बुरी हू जायि ।
चोर करै चोरी तऊ साँच कहै घर जायि ।।३९४।।

---

३८२. लगावै । ३८५. चलियै जाँही गाम कौ वहै पूचियै बाट । ३८५. बात कौ ।

संपत बीते बिलसिबौ सुख कौं चाहे कोइ।
रूख उखारे फूल फल कहु धौं कैसें होइ ॥३९५॥

रन सनमुख पग सूर के बचन कहैं तें संत।
निकष न पीछे होत हैं ज्यौं गयंद के दंत ॥३९६॥

आय बसें जिहिं दिन सुछिन जे सज्जन चित माँहि।
चित्र महाबत दुरद पर ज्यौं चढ़ि उतरै नाँहि ॥३९७॥

बिन बूझे ही कहत हैं सज्जन हित के बैन।
भले बुरे को कहत हैं ज्यौं तमचुर गत रैन ॥३९८॥

बिछुरे गए बिदेस हू सज्जन बिछुरे नाँहि।
दूर भए ज्यौं कुरज को सुरति सुतन के माँहि ॥३९९॥

बसियै तहाँ बिचारि कैं जहाँ दुष्ट गति नाँहि।
होत न कबहूँ भंवर डर ज्यौं चंपक बन माँहि ॥४००॥

दान देत धन हीनता होत तथापि बखान।
दुरबल तऊ सराहियै दुरद झरत जब दान ॥४०१॥

ठीक कियै बिन और की बात साँच मत थाप।
होत अँधेरी रैन मैं परी जेंबरी साँप ॥४०२॥

झूठ बिना फीकी लगै अधिक झूठ दुख भौन।
झूठ तितौ ही बोलियै ज्यौं आटे में लौन ॥४०३॥

ठौर देखि कैं हूजियै कुटिल सरल गति आप।
बाहर टेढ़ौ फिरत है बाँबी सूधौ साँप ॥४०४॥

एकत हू रह सजन खल तजत न अपनौ अंग।
मनि बिसहर बिस-कर सरप सदा रहत इक संग ॥४०५॥

भले बुरी जौ आदरें कौन सकें निरबारि।
सीत बिमल पावन करन चलत नीच गति बारि ॥४०६॥

दोऊ चाहें मिलन कौं तौ मिलाप निरधार।
कबहूँ नाहिन बाजिहै एक हाथ सौं तार ॥४०७॥

---

४०२. थर्प। सर्प।

हिए दुष्ट के बदन तें मधुर न निकसै बात ।
जैसे करुबी बेल के को मीठे फल खात ।।४०८।।

रूखे बचन मिलाप मो कहत होत रस भंग ।
बीन बजत ज्यौं तार के टूटे रहत न रंग ।।४०९।।

आप अकारज आपनौ करतु बुबुध के साथ ।
पायँ कुल्हारी आपने मारतु मूरख हाथ ।।४१०।।

ताही कौ करियै जतन रहियै जिहि आधार ।
को काटै ता डार को बैठे जाही डार ।।४११।।

न्याय करत बिगरै कछू तौ न करहु अपसोस ।
धार परत जौ राजपथ तौ न देत कोउ दोस ।।४१२।।

भले भली ही कहत हैं पै न कहत हैं दोष ।
सूरदास कह अंध कौं उपजाबत हैं तोष ।।४१३।।

सदा सुथान प्रधान है बल न प्रधान बताव ।
नाग डराबत गरुड़ कौं हर उर हार प्रभाव ।।४१४।।

जामें बिद्या नारदी बिगरन देत न लाग ।
पैस चोर, भुँसि स्वान कौं कहत धनी सौं जाग ।।४१५।।

भाग हीन कौं ना मिलै भली बस्तु कौ भोग ।
दाख पके मुख पाख कौ होत काग को रोग ।।४१६।।

सब कोऊ चाहत भलो मित्र मित्र की ओर ।
ज्यौं चकई रबि कौं उदै ससि कौं उदै चकोर ।।४१७।।

भले बंस संतति भली कबहूँ नीच न होय ।
ज्यौं कंचन की खान मैं काँच न उपजै कोय ।।४१८।।

सूर बीर के बंस मैं सूर बीर सुत होय ।
ज्यौं सिंहनि के गरभ मैं हिरन न उपजै कोय ।।४१९।।

करै न कबहूँ साहसी दीन हीन कौ काज ।
भूख सहै पर घास कौ नाँहि भखै मृगराज ।।४२०।।

---

४१९. ज्यों हिरनी के गरभ मैं सिंह न उपजै कोय । ४२०. बनराज ।

मान धनी नर नीच पै जाचै नाहिन जाय।
कबहूँ न माँगै स्यार पै बरु भूखौ मृगराय ।।४२१।।

छोटे नर सों बडिन कौं कबहूँ बुरौ न होय।
फूस आगि करि ना सकै तपत उदधि कौं तोय ।।४२२।।

नीचहु उत्तम संग मिलि उत्तम ही ह्वै जाय।
गंग संग जल निंद्य हू गंगोदक के भाय ।।४२३।।

अधिक चतुर की चातुरी होत चतुर के संग।
नग निरमल के डाँक ते बढ़त जोति छबि रंग ।।४२४।।

परतछ नीके देखिए कहू बरने कोउ ताहि।
कर कंकन कौ आरसी को देखत है चाहि ।।४२५।।

सहज सील गुन सजन के खल बुधि होत न भंग।
रतन दीप की ज्यों सिखा बुझत न बात प्रसंग ।।४२६।।

रति रस स्त्रुति रस राग रस पाय न चाहत और।
चाखत मधु अरबिंद को लै न ईख-रस भौंर ।।४२७।।

मोह महा तम रहत है जौं लौं ग्यान न होत।
कहा महा-तम रहि सकै आदित भए उदोत ।।४२८।।

सुबुध अबुध की सेव कौ यह सरूप जिय थाप।
थल में रोपित कमल ज्यों बधिर करन मैं जाप ।।४२९।।

यों सेवा राजान की दीनी कठिन बताय।
ज्यों चुंबन ब्याली बदन सिंह मिलन के भाय ।।४३०।।

पंडित अरु बनिता लता सोभत आस्रय पाय।
है मानिक बहु मोल को हेम-जटित छबि छाय ।।४३१।।

इक गुन तें सोभा लहैं इक औगुन अबरोह।
सोभ उरोजन पीनता त्यों कटि क्रुसता सोह ।।४३२।।

सुजन सुजन के दरस ही पावत जिय संतोष।
लहत कच्छ के बत्स ज्यों सोम-दृष्ट तें पोष ।।४३३।।

---

४२१. बलि। ४२२. ओछे। ४३०. नीकी कठिन।

सब संपति फल करत है सुहृद जनन को हेत ।
दूरहि सूरज उदित ज्यों कमलन कौं सुख देत ।।४३४।।

ऊँचे पद को पाय लघु होत तुरत ही पात ।
घन तें गिरि पर गिरत जल गिरिहूँ तें ढरि जात ।।४३५।।

अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय ।
बेस्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय ।।४३६।।

अपने लालच के लिये दुखहू आवै दाँय ।
कान बिंधावै खाय गुर पहिरैं बीर बधाय ।।४३७।।

धनी गुनी कौ न्याय ही धन अरपैं धरि हेत ।
सगुन पात्र को कूपहू मिलतहि जीवन देत ।।४३८।।

गुन सनेह जुत होतु है ताही की छबि होत ।
गुन सनेह की दीप की जैसे जोति उदोत ।।४३९।।

सुनि मुख मीठी बात को को चाहत कटु बात ।
चाखि दाख के स्वाद को कौन निबौरी खात ।।४४०।।

रस की कथा सुनी न तिहिं कूर कथा की चाहि ।
जिन दाखैं चाखी नहीं मिष्ट निबौरी ताहि ।।४४१।।

प्रेमी प्रीत न छाँड़ही होत न प्रन तें हीन ।
मरे परे हू उदर मैं ज्यों जल चाहत मीन ।।४४२।।

अति उदारता बड़ेन की कहँ लौं बरनै कोय ।
चातक जाचै तनिक घन बरस भरै घन तोय ।।४४३।।

बड़े जु चाहैं सो करैं करन मतो उर धारि ।
हरि गिरि तारे जलधि पर करी सिला तें नारि ।।४४४।।

अवसर बीते जतन को करिबो नहिं अभिराम ।
जैसे पानी बह गये सेतुबंध किहि काम ।।४४५।।

दुष्ट संग बसिये नहीं दुख उपजत इहिं भाय ।
घसत बंस की अगिन तें जरत सबै बनराय ।।४४६।।

---

२३४. शिव संपति । ४३७. बलाय । ४४०. सुनि सुनि । ४४१. सुनत नहिं । न सुनत तिहिं । ४४३. महि तोय ।

करैं अनादर गुनिन कौ ताहि सभा छबि जाय।
गज कपोल सोभा मिटत ज्यों अलि देत उड़ाय ॥४४७॥

कहूँ कहूँ गुन तें अधिक उपजत दोष सरीर।
मधुरी बानी बोलि कै परत पींजरा कीर ॥४४८॥

भले बुरे निबहैं सबै महत पुरुष के संग।
चंद सर्प जल अगिन ये बसत संभु के अंग ॥४४९॥

बिना कहे हूँ सत पुरुष पूरें पर की आस।
कौन कहत है सूर को घर घर करत प्रकास ॥४५०॥

कछु कहि नीच न छोड़िये भलो न बाको संग।
पाथर डारे कीच मैं उछरि बिगारै अंग ॥४५१॥

हीन जानि न बिरोधियै वहै होत दुखदाय।
रजहू ठोकर मारिये चढ़ै सीस पर आय ॥४५२॥

नाहिं करत उपकरन तें काज सिद्ध बलबान।
मुनि बन बसिबौ संग मृग किय अगस्त दधि पान ॥४५३॥

बिना दिए न मिलै कछू यह समझौ सब कोय।
देत सिसिर मैं पात तरु सुरभि सपल्लव होय ॥४५४॥

यह निहचै करि जानिये जानहार सो जाय।
गज के भुक्त कपित्थ के ज्यों गिरि बीज बिलाय ॥४५५॥

जो सेबक कारन करै होत प्रभू को नाम।
तरत नील कर तें पथर कहत तिराये राम ॥४५६॥

दूर कहा नियरे कहा होनहार सो होय।
धुर सींचे नारेल के फल मैं प्रगटे लोय ॥४५७॥

आये आदर ना करैं पीछे लेत मनाय।
घर आये पूजैं न अहि बाँबी पूजन जाय ॥४५८॥

---

४५१. न कछु नीच को संग। कबहू। ४५२. वह तो तन दुखदाय। ४५३. सिद्धि। ४५३. बसयौ। ४५४. होत सिसिर। ४५७. जड। आयो नाग न पूजई।

कहूँ अनादर पायकै गुनी न करहु अँदेस।
बिद्या है तौ करहिंगे सब कोऊ आदेस ॥४५९॥

अपने अपने समय पर सबकौं आदर होय।
भोजन प्यारौ भूख मैं तिस मैं प्यारौ तोय ॥४६०॥

होय सो होय हिसाब सों बिन हिसाब नहिं होय।
भषै बदन तें अन्न ज्यों नाहिं नाक तें कोय ॥४६१॥

जिहिं डर डरि करिये जतन उपजत सोइ अमेट।
लगै दूखती चोट ज्यों होति कनौड़े भेट ॥४६२॥

मीठी कोऊ बस्तु नहिं मीठी जाकी चाह।
अमली मिसरी छाँड़िकै आफू खात सराहि ॥४६३॥

बड़ी बड़ाई नीच कौं दीजै अपने काम।
खर हूँ कौं बोलत पथिक कहत बिनायक नाम ॥४६४॥

कहा भयो जो नीच को देत बड़ाई कोय।
कहत बिनायक नाम पै खर न बिनायक होय ॥४६५॥

भले बुरे कौ जानिबौ जान बचन के बंध।
कहै अंध को सूर इक कहै अंध को अंध ॥४६६॥

जान बूझिकै करत नर अपने हेत अहेत।
झूठी साँची बात पर दोउ मुचलका देत ॥४६७॥

चिरजीवो तनहू तजै जाकौ जग जस बास।
फूल गयेहूँ फूल की रहै तेल मैं बास ॥४६८॥

बहुत भये किहिं काम के भार निबाहक एक।
सेष धरै बर सीस पर मेढ़क-भखी अनेक ॥४६९॥

बृद्धि न ह्वै है पाप तें बृद्धि धरम तें धार।
सुन्यो न देख्यौ सिंह के मृग को सो परिवार ॥४७२॥

---

४५९. मुद्रा। ४६८. गये तें। रहत। ४७०. वृद्ध, वृद्ध।

देखत कियो कछु नहीं मुख पै. खल की प्रीति ।
मृगतृस्ना में होति है ज्यों जल की परतीति ।।४७१।।

ऊपर दरसै सुमिल सी अंतर अनमिल आँक ।
कपटी जन की प्रीति है खीरा की सी फाँक ।।४७२।।

निबल सबल के पक्ष तें सबलन सों अनखात ।
हनत हिमायत की गधी ऐराकी कौं लात ।।४७३।।

दोष लगावत गुनिन को जाको हृदय मलीन ।
धरमी को दंभी कहैं छमियन को बलहीन ।।४७४।।

द्वै ही गति है बड़ेन की कुसुम मालती भाय ।
केसव के सिर पर रहैं कै बन माँहि बिलाय ।।४७५।।

सब बिधि डरिये दुष्ट सों रहिये जतन समेत ।
संभु सुधाकर सिर धर्‌यौ बिस बिसधर के हेत ।।४७६।।

खाय न खरचै सूम धन चोर सबै लै जाय ।
पीछे ज्यों मधुमच्छिका हाथ मलै पछिताय ।।४७७।।

जगत बहुत जन तदपि मन बिन सज्जन अति दीन ।
ससि तारा निसि हैं तऊ रबि बिन नलिन मलीन ।।४७८।।

कोऊ कहै न जानिये जोतिबन्त सुनि कोय ।
हाथ दिया लै देखिये ऐसी आग न होय ।।४७९।।

खल निज दोष न देखई पर के दोषहि लागि ।
लखैं न पग तर सब लखैं परबत बरती आगि ।।४८०।।

जैसो जैसो अधिक गुन तैसी ठौर मिलाय ।
अहि-उर विष-गल अनल-चख सिब ससि-सीस बसाय ।।४८१।।

भाग-हीन को दैबहूँ देत सु लेत बनै न ।
दीठ परै जहँ बस्तु तहँ जलै मूँदिकै नैंन ।।४८२।।

---

४७१. देखत को पै कछू नहीं । ४७३. परस तें । देति ४७८. जन देखि, देखत ।

दिन भले तें बिगरे न कछु रहौ निचीते सोय।
आवै चोरी करन को चोर आँधरो होय ॥४८३॥

दान दीन को दीजिये मिटै दरिद की पीर।
औषध बाको दीजिये जाके रोग सरीर ॥४८४॥

सबसों आगे होय कै कबहुँ न करिये बात।
सुधरे काज समाज फल बिगरे गारी खात ॥४८५॥

आबत समै बिपत्ति के मित्र सत्रु ह्वै जाय।
दुहत होत बछ बँधन कौं थंभ मातु कौं पाय ॥४८६॥

उत्तम बिद्या लीजिये जदपि नीच पै होय।
पर्‌यो अपाबन ठौर मैं कंचन तजत न कोय ॥४८७॥

बैर भाव तहँ भूलिहू मिलन न करिये कोय।
मूसे और बिलार मैं कबहूँ प्रीति न होय ॥४८८॥

निहचै कारन बिपति को किये प्रीति अरि संग।
मृग के सुख मृगराज कौं होत कबहुँ तन भंग ॥४८९॥

जौ घर आबत सत्रु हू सुजन देत सुख चाहि।
ज्यों काटै तरु-मूल कोउ छाँह करत रह ताहि ॥४९०॥

ताको बुरो न ताकिये जासों जग ब्यवसाय।
छाँह फूल फल देत तरु क्यों तिहि कटन कराय ॥४९१॥

दुस्ट भाब हिय मुख मधुर तासों करहु न प्रीति।
भीतर बिस पय घट भर्‌यो ताहि न छुइ इहि रीति ॥४९२॥

दुस्ट न छाँड़ै दुस्टता बड़ी ठौर हू पाय।
जैसे तजत न स्यामता बिस सिब कंठ बसाय ॥४९३॥

बिन उद्यम मसलत किये कारज सिद्ध न ठाय।
रोग न जाबत औषधी जानें, खाय तौ जाय ॥४९४॥

---

४९४. रोग तजत न औषधी जानें खायें जाय। जाइ जो खाय।

नृप अनीति के दोस तें चूकै मंत्र प्रयोग।
करै कुपथ ता पुरुष कौं कौन न उपजै रोग ॥४९५॥

कहा करै आगम निगम जो मूरख समझै न।
दरपन को दोस न कछू अंध बदन देखै न ॥४९६॥

दया दुस्ट के चित्त मैं कबहूँ उपजै नाँहि।
हिंसा छोड़ी सिंह यह क्यों आवै मन माँहि ॥४९७॥

प्रीति टुटेहु सजन के मन तें हेत छुटै न।
कमल नाल को तोरिये तदपि सूत टूटै न ॥४९८॥

सज्जन के प्रिय बचन तें तन संताप मिटाय।
जैसे चंदन लेप तें तापन तन को जाय ॥४९९॥

सजन बचन दुरजन बचन अंतर बहुत लखाय।
वे सबकों नीके लगैं वे काहू न सुहाय ॥५००॥

धन अरु गेंद जु खेल कौं दोऊ एक सुभाय।
कर में आवत छिनक मैं छिन मैं कर तें जाय ॥५०१॥

प्रभु को चिन्ता सबन की आपु न करिये ताहि।
जनम अगाऊ भरत है दूध मातु थन माँहि ॥५०२॥

धन अरु जोबन कौ गरब कबहूँ करिये नाँहि।
देखत ही मिट जात हैं ज्यों बादर की छाँहि ॥५०३॥

नृपति चोर जल अनल तें धनि को भय उपजाय।
जल थल नभ मैं मास कौं झख केहरि खग खाय ॥५०४॥

बड़े, बड़े कौं बिपति तें निहचै लेत उबारि।
ज्यों हाथी कौं कीच तें हाथी लेत निकारि ॥५०५॥

बड़े कस्ट हू जे बड़े करैं उचित ही काज।
स्यार निकट तजि खोज कैं सिंह हनै गजराज ॥५०६॥

जिहिं जेतौ उनमान तिहि तेतौ रिजक मिलाय।
कन कीड़ी कूकर टुकर मन भर हाथी खाय ॥५०७॥

---

४९५. क्यों नहिं उपजै रोग। ४९९. मन चिंता। मन संताप। नीर तें।

बहु गुन स्त्रम तैं उच्च पद तनिक दोष तैं पात ।
नीठ चढ़ै गिरि पर सिला टारत ही ढुरि जात ।।५०८।।

छोटे अरि को साधिये छोटौ करि उपचार ।
मरै न मूसा सिंह तैं मारै ताहि मजार ।।५०९।।

बड़े, बड़े सौं रिस करैं छोटे सों न रिसाय ।
तरु कठोर तोरै पवन कोमल तृन बचि जाय ।।५१०।।

सेवक सोई जानिये रहै बिपति मैं संग ।
तन छाया ज्यों धूप मैं रहै साथ इकरंग ।।५११।।

बुरौ तऊ लागत भलौ भली ठौर पै लीन ।
तिय नैंननि नीको लगै काजर जदपि मलीन ।।५१२।।

जोराबरहूँ कौं कियो बिधि बस करन इलाज ।
दीप तमहिं अंकुस गजहिं जलनिधि तरनि जहाज ।।५१३।।

दुस्ट रहै जा ठौर पर ताको करै बिगार ।
आगि जहाँ ही राखिये जारि करै तिहि छार ।।५१४।।

बिना तेज के पुरुष की अबसि अबग्या होय ।
आगि बुझैं ज्यों आग को आनि छुवै सब कोय ।।५१५।।

पाय प्रकृति बस कीजिये करि बुधि बचन बिबेक ।
लष्ट पुष्ट सों एक कौं यष्ट मुष्ट सों एक ।।५१६।।

नेह करति तिय नीच सों धन किरपन घर माँहि ।
बरसै मेंह पहाड़ पै कै ऊसर बरसाहिं ।।५१७।।

जहाँ रहैं गुनबंत नर ताकी सोभा होत ।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत ।।५१८।।

खाली तजि पूरन पुरुष जिहिं सब आदर देत ।
रीतौ कुआँ उसारिये ऐंच भर्यो घट लेत ।।५१९।।

सब आसान उपाय तैं तुरत फुरत फल देत ।
मथि अरनी अरु काठ तैं आग प्रगट करि लेत ।।५२०।।

जाकी प्रापति होय सो मिलै आप तें आय।
मेवा कोस हजार को किहि किहि ठौर न पाय ॥५२१॥

मोह प्रबल संसार मैं सबको उपजै आय।
पालै पोसै खग-बचन देहै कहा कमाय ॥५२२॥

खल सज्जन सूचीन के भाग दूहूँ सम भाय।
निगुन प्रकासैं छिद्र कौं सगुन सु ढापत जाय ॥५२३॥

तुला सुई की तुल्यता रीति सजन की दीठि।
गरुबे दिसि नै जाति है हरुवे कौं दै पीठि ॥५२४॥

भले बुरे सों एक-सी मूढ़न की परतीति।
गुंजा सम तौलत कनक तुला पला की रीति ॥५२५॥

जिहि दिसि भय तिहिं दिसि कबहुँ ना जैयें करि चोज।
गज तिहिं मग पग ना धरै जहाँ सिंह कौं खोज ॥५२६॥

सिद्ध होत कारज सबै जाके जिय बिस्वास।
पूजत ऐपन को हथा तिय जिय पूरै आस ॥५२७॥

बहुत द्रब्य संचै जहाँ चोर राज भय होय।
काँसे ऊपर बीजुरी परति कहैं सब कोय ॥५२८॥

जानि बूझि कै अजुगत करै तासों कहा बसाय।
जागत ही सोवत रहै तिहि को सकै जगाय ॥५२९॥

जहँ तहँ सजन मिलै नहीं गुन गरुबे जग माहिं।
जोति भरे पानिप भरे प्रति गज मुक्ता नाहिं ॥५३०॥

बिद्या बिन न बिराजहीं जदपि सरूप कुलीन।
ज्यौं सोभा पावै नहीं टेसू बास बिहीन ॥५३१॥

एकहि भले सुपुत्र तै सब कुल भलो कहाय।
सरस सुबासित बृक्ष तै ज्यों बन सकल बसाय ॥५३२॥

गुरुमुख पढ़्यौ न कहत है पोथी अर्थ बिचारि।
सो सोभा पावै नहीं जार गरभ जुत नारि ॥५३३॥

---

५२७. पूजत आनें कूँ हथा। ५२८. तहाँ चोर भय होय।

जाकौ बुधि बल होत है ताहि न रिपु कौं त्रास ।
घन बूँदें कह करि सकें सिर पर छलना जास ।।५३४।।

छमा खड़ग लीने रहै खल को कहा बसाय ।
अगिन परी तृन रहित थल आपहिं ते बुझि जाय ।।५३५।।

एकै थल बिस्राम कौं ताकौ तजि कहँ जाय ।
ज्यों पंछी सुजहाज कौ उड़ि उड़ि तहाँ बसाय ।।५३६।।

जिहिं जैसो अपराध तिहिं तैसो दंड बखानि ।
थाप ककरिया चोर को धन चोरहिं जिय हानि ।।५३७।।

ओछे नर के पेट मैं रहै न मोटी बात ।
आध सेर के पात्र मैं कैसे सेर समात ।।५३८।।

चलिये पैंडे साँच के साईं साँच सोहाय ।
साँचो जरै न आग तैं झूठौ ही जरि जाय ।।५३९।।

गूढ़ मंत्र तौ लौं रहैं करें जु मिलि जन दोय ।
भई छकानी बात तब जानि जात सब कोय ।।५४०।।

गूढ़ मंत्र गरुवे बिना कोऊ राखि सकै न ।
कनक पात्र बिन और मैं बाघिन दूध रहै न ।।५४१।।

बहुत जु बीतें तनिक धन संचै सजन करै न ।
मनन हानि ऊपज तहाँ कन कन कबहुँ भरै न ।।५४२।।

भिरत भार सब ते उतरि धीरहिं पर ठहरात ।
नीर निचानहिं पाइये ज्यों बीते बरसात ।।५४३।।

सील करम कुल स्रुत चतर पुरुष परिच्छा जान ।
ताड़न छेदन कस तपन इनतें कनक पिछान ।।५४४।।

जो पै जैसो होय तिहिं हित सों मिलि है आय ।
गाँठी चोरा चोर को साहै साह मिलाय ।।५४५।।

---

५३४. छजना । ५३६. एकौ, एकहि । सो बिछुरे कहँ जाय । ५३७. तन हानि ।
५४१. धातु पात्र बिन हेम को । ५४२. बहु धन बीतें । ५४३. गिरही पर ।

कबहूँ रन बिमुखी भयो तौ पुनि लरैं सिपाह ।
कहा भयो काहू समय भाग्यो तऊ बराह ॥५४६॥

कबहूँ प्रीति न जोरिये जोरि तोरिये नाहिं ।
ज्यों तोरे जोरे बहुरि गाँठ परति गुन माहिं ॥५४७॥

अंतर तनिक न राखिये जहाँ प्रीति ब्यबहार ।
उर सों उर लागै न तहँ जहाँ रहति है हार ॥५४८॥

निरखत पलक न मारिये सज्जन मुख की ओर ।
उदय अस्त लौं एकटक चितबत चंद चकोर ॥५४९॥

सेबक साहिब के बढ़े बढ़ैं बड़ाई ओज ।
जेतो गहिरो जल चढ़ै तेतो बढ़ै सरोज ॥५५०॥

ओछे नर के चित्त मैं प्रेम न पूर्‌यो जाय ।
जैसे सागर को सलिल गागरि मैं न समाय ॥५५१॥

जे न होंय दृढ़ चित्त के तहाँ न रहै सटेक ।
ज्यों काँचे घट में सलिल ठहरत नहिं छिन एक ॥५५२॥

रस पोषे बिन ही रसिक रस उपजावत संत ।
बिन बरसे सरसै रहैं जैसे बिटप बसंत ॥५५३॥

मन भावन के मिलन के सुख को नाहिन छोर ।
बोलि उठै नचि नचि उठै मोर सुनत घन घोर ॥५५४॥

बिरही जन के चित्त कौ नाहिं रहतु बुधि बोध ।
थिर चर कौं बूझत फिरे राघब सीता सोध ॥५५५॥

जहाँ सजन तहँ प्रीति है प्रीति तहाँ सुख ठौर ।
जहाँ पुस्प तहँ बास है जहाँ बास तहँ भौंर ॥५५६॥

जो प्रानी परबस पर्‌यो सो दुख सहत अपार ।
जूथ बिछोही गज सहै बंधन अंकुस मार ॥५५७॥

गुनी होय स्रम कस्ट करि लहै राज दरबार ।
बेध बंध मुक्ता सहै तब उर हार बिहार ॥५५८॥

मन प्रसन्न तन चैन जहँ स्वेच्छाचार बिहार ।
संग मृगी मृग सुख सबै बन बसि तृन आहार ।।५५९।।

रहनहार जाइ न बसत जदपि जतन बिबहार ।
देखौ सब के देखिये काहे द्वार बिचार ।।५६०।।

है पाँसे के दाँब पर कहाँ जीति कहँ हारि ।
सारि उठै यों चौकसी छक पौ उठै न सारि ।।५६१।।

सबकौ ब्याकुल करति है एक जठर की आगि ।
परैं किलकिला जलधि मधि जल जलचर डर त्यागि ।।५६२।।

उदर भरन के कारनै प्रानी करत इलाज ।
नाचै बाँचै रन भिरैं राचै काज अकाज ।।५६३।।

दुरभर उदर न दीन कौं होत न तन संताप ।
तौ जन जन कौं को सहत तरजन गरजन ताप ।।५६४।।

उदर धरन नर तें भलौ रहिय उदर तें हीन ।
कबहूँ नाहिन होतु है जन जन को आधीन ।।५६५।।

करी उदर दुर भरन भय हर अरधंगी दार ।
जौ न होय तौ क्यों रहै अब लौं तनय कुमार ।।५६६।।

भरत पेट नट निरत कै डरत न करत उपाय ।
धरत बरत पर पाँय अरु परत बरत लपटाय ।।५६७।।

एक एक कौ सत्रु है जो जातें बलबंत ।
जल अनलहिं जलहिं पबन सरप जु पबन भखंत ।।५६८।।

एक एक तें देखिये अधिक अधिक बलबंत ।
सेस धरा धर गिर धरै गिरिधर हरि भगबन्त ।।५६९।।

देत न प्रभु कछु बिन दिये दियैं देत यह बात ।
लै तंदुल धन दुर्जहि मुनि तृपत किये भखि पात ।।५७०।।

---

५६६. दुइ भरन भय । ५६८. जलहिं अनल अनलहिं पवन सरप जु पवन भखंत ।
५६८. जलहि अनल अनिलहि सरप सरपहि गरुड़ भखंत ।

जथासक्ति ही दै सकै जो कछु जाके पास।
ब्राह्मन कन चाबल दिये श्रीपति धन आबास ।।५७१।।

जोराबर को होत है सबके सिर पर राह।
हरि रुक्मिनि हरि लै गयो देखत रहे सिपाह ।।५७२।।

अगम पंथ है प्रेम को जहँ ठकुराई नाहिं।
गोपिन के पीछे फिरे त्रिभुवन पति बन माहिं ।।५७३।।

बचन रचन कापुरुष के कहे न छिन ठहरायँ।
ज्यों कर पद मुख कच्छप के निकसि निकसि दुरि जायँ ।।५७४।।

कबहूँ झूठी बात कौं जो करिहै पछपात।
झूठौ सँग झूठौ परत फिर पाछैं पछितात ।।५७५।।

कुल कुपुत्र किहिं काम कौ जिहिं सुख सोभा नाहिं।
ज्यौं बकरी कै कंठ थन दूध न जल तिहिं माहिं ।।५७६।।

बिगरनबारी बस्तु कौं कहौ सुधारै कौन।
डारै पय औटाय कै मिसरी भोरै नौन ।।५७७।।

काहू कौं हँसिये नहीं हँसी कलह कौ मूल।
हाँसी ही तैं है भयो कुल कौरब निरमूल ।।५७८।।

दुरजन गहत न सुजनता जतन करौ किन कोइ।
जो पै जौ कौ रोपिये कबहूँ सालि न होइ ।।५७९।।

जग परतीति बढ़ाइये रहिये साँचे होय।
झूठे नर की साँचहू साखि न मानै कोय ।।५८०।।

बड़े बड़ाई के जतन वहैं बिरद की लाज।
भये चतुरभुज चोर तैं नृप कन्या के काज ।।५८१।।

है अयुक्त पै युक्त है करिये बहै प्रमान।
ब्राह्मन सों गुरुजनन सों हारे होत बखान ।।५८२।।

---

५७८. ह्वै गयो। कुल पांडव। ५७८. अति ही हाँसी तैं हुओ कौर पांडव निरमूल। हाँसी ही तैं है भये कुर पांडव जिरमूल। ५८१. गहैं।

जामैं हित सो कीजिये कोऊ कहौ हजार।
छल बल साधि बिजै करी पारथ भारथ बार ॥५८३॥

सुनिये सबही की कहो करिये स्वहित बिचार।
सर्ब लोक राजी रहैं सो कीजै उपचार ॥५८४॥

प्रापति के दिन होत है प्रापति बरंबार।
लाभ होत ब्यौपार मैं आमंत्रन अधिकार ॥५८५॥

अपरापति के दिनन मैं खरच होत अबिचार।
घर आबत हैं पाहुनो बिन जन लाभ लगार ॥५८६॥

दीन धनी आधीन ह्वै सीस नबाबत वाहि।
मान भंग की भूमि यह पेट दिखाबत ताहि ॥४८७॥

रूखे सूखे उदर कौं भरै होतु संतुष्ट।
ये मन लाख करोर के पायें तुष्ट न दुष्ट ॥५८८॥

एक एक के काम को रचि राखै जगदीस।
जैसे भरिये पेट कौं सबको निहुरै सीस ॥५८९॥

भली किये ह्वै है बुरी देखो बिधि बिपरीति।
भक्ति करी द्विज जमदग्नि अरजुन करी अनीति ॥५९०॥

कहे बचन पलटैं नहीं जे सतपुरुष सधीर।
कहत सबै हरिचन्द नृप भर्यो नीच घर नीर ॥५९१॥

मति फिर जाय बिपत्ति मैं राव रंक इक रीत।
हेम हिरन पाछैं गये राम गँवाई सीत ॥५९२॥

जानहार सो जाय अरु होनहार ह्वै आय।
राबन तैं लंका गयी बसे बिभीषन पाय ॥५९३॥

अनउद्यम सुख पाइये जो पूरब कृत होय।
दुख को उद्यम को करत पाबत है नर सोय ॥५९४॥

प्यारी अनप्यारी लगै समै पाय सब बात।
धप सुहाबै सीत मैं सो ग्रीषम न सुहात ॥५९५॥

---

५८५. आन मंत्र। ५८६. बनिज न। ५८७. नाहिं।

जनमत ही पावै नहीं भलो बुरी कोउ बात।
बूझत बूझत पाइये ज्यों ज्यों समझत जात ।।५९६।।

भये ग्यान अग्यान नहिं है अग्यान नहिं ग्यान।
भानु उयौ तौ तम नहीं है तम उयौ न भान ।।५९७।।

सत पुरुषन तें उतरि कैं होत नीच अधिकार।
यह खटकत रबि से असित तम कौ जगत प्रचार ।।५९८।।

हरवी गरुवे के हिये ठहरति नाहीं बात।
तूँबी जल मैं दाबिये ज्यौं ऊपर ही जात ।।५९९।।

पावत बहुत तालस तें कर तें छूटी बात।
आध मैं टूटी गुडी को जाने कित जात ।।६००।।

पिय के बिछुरे बिरह बस मन न कहूँ ठहरात।
धरनि गिरन बिच ही पिरत पर्यौ भँभूरे पात ।।६०१।।

होत अधिक गुन निबल पै उपजत बैर निदान।
मृग मृगमद चमरी चमर लेत दुष्ट हति प्रान ।।६०२।।

आप तरै तारै अबर काठ नाव चित चाब।
बूड़ै बोरै और को ज्यों पाथर की नाब ।।६०३।।

जूआ खेले होत है सुख संपति कौ नास।
राज काज नल तें छुट्यौ पांडव किय बनबास ।।६०४।।

धन गुन जोबन रूप मद दुरै न एकौ संच।
ज्यौं हाँसी खाँसी बहुर रोके रहत न रंच ।।६०५।।

सरसुति के भंडार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यौं खरचै त्यौं त्यौं बढ़ै बिन खरचे घटि जात ।।६०६।।

यह अनखौंही बात पर को न देखि अनखात।
नकटी बूची इकनयनि पान खाय मुसकात ।।६०७।।

देखा देखी करत सब नाहिन तत्व बिचार।
याकौ यह अनुमान है भेड़-चाल संसार ।।६०८।।

---

६०७. इह अनखीली। खाति।

काज बिगारत और को इक निज काज सुधारि।
कियो मंत्रि मिलि राज नृप सुरथहिं दियो निकारि ।।६०९।।

काज बिगारत आपनौं एक और के काज।
बलहिं निबारत नैन को हानि सही कबिराज ।।६१०।।

एक आपनौ और कौ साधत काज सतोल।
अंगद अपने राम कौ कीनो सभा सु बोल ।।६११।।

एक बिगारत आपनौ और परायो काज।
राबन को अरु आपनौ किय घननाद अकाज ।।६१२।।

देखन कौं सुंदर लगें उर मैं कपट बिषाद।
इन्द्रायन के फलन सम भीतर कटुक सवाद ।।६१३।।

बिरहानल ब्याकुल भये आयो प्रीतम गेह।
जैसे आवत भाग तें आग लगे पर मेह ।।६१४।।

खरचत खात न जात धन औसर किये अनेक।
जात पुन्य पूरन भये अरु उपजै अबिबेक ।।६१५।।

चले जु पंथ पिपीलिका समुद पार ह्वै जाय।
जौ न चलै तौ गरुड़हू पैंड़हु चलै न पाय ।।६१६।।

भले बुरेहू सों करत उपकारी उपकार।
तरुबर छाया करत हैं नीच न ऊँच बिचार ।।६१७।।

एक एक अच्छर पढ़े जाने ग्रंथ बिचार।
पैंड़ पैंड़ हू चलत जो पहुँचै कोस हजार ।।६१८।।

सजन करत उपकार को बित माफिक जग माहिं।
गहरे गहरी छाँह तरु बिरले बिरली छाँहिं ।।६१९।।

बिन देखे जाने परै देखै जहाँ निसान।
दीप धरै धन लाख पर कोर धुजा फहिरान ।।६२०।।

भले बंस कौं पुरुष सो निहुरे बहु धन पाय।
नबै धनुस सदबंस कौ जिहि द्वै कोटि दिखाय ।।६२१।।

---

६१२. इंद्रजित कियौ। ६१४. बिरह पीर।

एक एक सौं लगि रहैं अन्नोदक संबंध।
चोली दामन ज्यों रच्यौ जगत जँजीरा बंध ।।६२२।।

नेगी दूर न होतु हैं यह जानो तहकीक।
मिटत न ज्यों क्यों हू किये जे हाथन की लीक ।।६२३।।

चिदानंद घट मैं बसै बूझत कहाँ निबास।
ज्यों मृगमद मृग नाभि मैं ढूँढ़त फिरत सुबास ।।६२४।।

कै सम समें कै अधिक सों लरिये करिये बाद।
हारे जीते होतु है दोऊ भाँति सबाद ।।६२५।।

निबल जानि कीजै नहीं कबहूँ बैर बिबाद।
जीते कछु सोभा नहीं हारे निंदा बाद ।।६२६।।

सज्जन सों रस पोखियै त्यों त्यों बढ़त हुलास।
जेतो मीठो बस्तु मैं तेतो अधिक मिठास ।।६२७।।

करिये सभा सुहाबतो मुख तैं बचन प्रकास।
बिनु समुझे सिसुपाल को बचनन भयो बिनास ।।६२८।।

जासो पहुँच न पाइये तासों बहस न ठान।
गई प्रतिस्ठा रुकम की फिर न बसे पुर आन ।।६२९।।

सब काहू की कहत है भली बुरी संसार।
दुरयोधन की दुस्टता बिक्रम कौ उपकार ।।६३०।।

जोति-सरूपी हिय बसै सब सरीर मैं जोति।
दीपक धरिये ताक में सब घर आभा होति ।।६३१।।

वय समान रुचि होत है रुचि प्रमान मन मोद।
बालक खेल सुहाबही जोवन बिसय बिनोद ।।६३२।।

दान मान औसर उमँग अपनी अपनी बान।
छोटै छोटी गत कही माटै माटी मान ।।६३३।।

भले बुरे दोऊ रहौ चिरंचीब संसार।
जिनतैं गुन अरु दोष कौ जान्यौ परत बिचार ।।६३४।।

---

६२९. करन। ६३३. दान मान सनमान अरु। छोटी छोटी गति कही। गति भई।

सरस निरस नर होत है समय पाय सब कोय।
दिन मैं परम प्रकास रबि चंद मंद दुति होइ ।।६३५।।

बाँके नर तैं होत है बंदनीक सब लोय।
नमत दुतीया चंद कौं पूरन चंद न कोय ।।६३६।।

करिये तहँ पैसार जहँ जो जानिये निसार।
चक्रब्यूह अभिमन्यु कौ सुन्यो सबन संसार ।।६३७।।

अधिक अधिक जन फोरि कै कंस हत्यो ब्रजराज।
चढ़ते चढ़ते मोल ज्यों दरसें बसन बजाज ।।६३८।।

परुष बचन तैं रोष हित कोमल बचन समाज।
रजक पछार्‌यौ कूबरी राखि लई ब्रजराज ।।६३९।।

सुदृढ़ सूर नाहिन चलै कायर लगि रन घात।
देवल डिगै न पवन तैं जैसे ध्वज फहरात ।।६४०।।

मित्र मित्र के काम कौं देत बिभव करि हेत।
जैसे चंद प्रकास करि रबि मंडल तैं लेत ।।६४१।।

तन धन हू दै लाज के जतन करत जे धीर।
टूक टूक ह्वै गिरत पै नहिं मुख फेरत बीर ।।६४२।।

भले बुरे गुरुजन बचन लोपत कबहूँ न धीर।
राज काज को छाँड़ि कै चले बिपिन रघुबीर ।।६४३।।

बिपति समय हू देत हैं सतपुरुषन के काम।
राज बिभीषन को दियो वैसी बिरियाँ राम ।।६४४।।

लोकन के अपबाद कौं डर करिये दिन रैन।
रघुपति सीता परिहरि सुनत रजक के बैन ।।६४५।।

भले भले बिधिना रचे पै सदोष सब कीन।
कामधेनु पसु कठिन मनि दधि खारो ससि छीन ।।६४६।।

जैसो कारन होत है तैसो कारज थाप।
कर सर धनु प्रानी हनत कर माला हरि जाप ।।६४७।।

---

६३८. बंस। ६४४. बिपत परेहू।

इनकौ मानुष जन्म दै कहा कियो भगबान ।
सुंदर मुख बोल न सकै दै न सकै धनबान ॥६४८॥

कहा कहौं बिधि की अबिधि भूले परम प्रबीन ।
मूरख कौं संपति दई पंडित संपति हीन ॥६४६॥

वह संपति किहि काम की जनि काहू पै होय ।
नीठ कमाबै कस्ट करि बिलसै औरहि कोय ॥६५०॥

नर भूषन सब दिन छमा बिक्रम अरि घन घेर ।
ज्यों तिय भूषन लाज है निलज सुरति की बेर ॥६५१॥

यों निबाह सब जगत कौ रस रिस हेत अहेत ।
एक एक पै लेत है एक एक कौं देत ॥६५२॥

तृन हू तैं अरु तूल तैं हरुबो जाचक आहि ।
जानत है कछु माँगिहै पबन उड़ाबत नाहिं ॥६५३॥

नृप गुरु तिय बिहिन सेइयै मध्य भाग जग माहिं ।
है बिनास अति निकट तैं दूर रहें फल नाहिं ॥६५४॥

देखत है जग जातु है तऊ ममता सों मेल ।
जानतु हौं या जगत मैं देखत भूलौ खेल ॥६५५॥

भले बुराई तैं डरें राख्यो चाहैं सोय ।
जानत हैं पै दुस्ट के अबगुन कहत न कोय ॥६५६॥

गुन तैं अबगुन होतु है लिखे मिटत नहिं अंक ।
बढ़ति जाति ज्यों ज्यों कला त्यों त्यों ससि सकलंक ॥६५७॥

निस दिन खटकत तनक तृन परइ जु आँखिन माहिं ।
तिनमें सज्जन राखिये सो छिन खटकतु नाहिं ॥६५८॥

सजन बचाबतु कष्ट तैं रहैं निरंतर साथ ।
नैन सहाई ज्यों पलक देह सहाई हाथ ॥६५६॥

धनी होत निरधन बहुरि निरधन तैं धनबान ।
बड़ी होति निसि सीत रितु ज्यों ग्रीसम दिनमान ॥६६०॥

---

६५०. नित्य । ६५४. सेइम नृप गुरु तिय अनिल ।

सबही कुल मैं होत है एक एक सरदार।
गज ऐरावत सुर सुरिंद तरुबर मैं मंदार ॥६६१॥

जहाँ सनेही रहत तहँ भ्रमत भ्रमत मन आय।
फिरत कटोरी मंत्र की चोरहि पै ठहराय ॥६६२॥

प्रान पियारे के दरस हिय तैं बढ़त हुलास।
फैलत लगै बयार कै ज्यों फूलन मैं बास ॥६६३॥

सुनत स्त्रवन पिय के बचन हिय बिकसै हित पागि।
ज्यों कदंब बरषा समै फूलत बूँदनि लागि ॥६६४॥

ज्यों ज्यों छूटै अयानपन त्यों त्यों प्रेम प्रकास।
जैसे कैरी आँब की पकरत पकै मिठास ॥६६५॥

चोरा चोरी प्रीति के कीने बढ़त हुलास।
अति खाये उपजै अरुचि थोरी बात मिठास ॥६६६॥

नीति अनीति बड़े सहैं रिस भरि देत न गारि।
भृगु उर दीनी लात की कीनी हरि मनुहारि ॥६६७॥

रहैं न कबहूँ दोय खल एक सदन के माहिं।
एक म्यान मैं द्वै छुरी जैसे भावै नाहिं ॥६६८॥

पर धन लेत छिनाय इक इक धन देत हसंत।
सिसिरि करतु पतझार तरु गहिरे करतु बसंत ॥६६९॥

जो न परत किहि बात मैं तिहिं मनुहारि न गारि।
ऐसी खेल न खेलिये जामैं जीति न हारि ॥६७०॥

गहत तत्व ग्यानी पुरुष बात बिचारि बिचारि।
मथनिहार तजि छाछ कौं माखन लेत निकारि ॥६७१॥

मात पिता के पच्छ के पुरुषहि प्रगट प्रभाव।
जामदग्नि मैं देखिये सम रस बीर सुभाव ॥६७२॥

गुरु बच जोग अजोग हू करिये भ्रम बिसराय।
राम हते जमदग्नि के बचन सहोदर माय ॥६७३॥

---

६६१. सुरप।

पिता भगत सुत होय तौ पितु के चलत सुभाय।
राम राज सुख छाँड़ि कै बनबासी भये जाय ॥६७४॥

ओछी मति युबतीन की कहैं बिबेक भुलाय।
दसरथ रानी के बचन बन पठये रघुराय ॥६७५॥

पूजनीक गुन तैं पुरुष बयस न पूजित होय।
यग्य तिलक किय कृस्न को छाँड़ि बड़े सब कोय ॥६७६॥

स्रबन करी त्यों कीजिये मात पिता की सेब।
काँधे काँबर लै फिर्यौ पूज्यो जैसे देब ॥६७७॥

बड़े जिती लघुता करैं तिती बड़ाई पाय।
काम करैं सब जगत के तातैं त्रिभुबन राय ॥६७८॥

अरि के कर मैं दीजिये अबसर को अधिकार।
ज्यों ज्यों द्रब्य लुटाइयै त्यों त्यों जस बिस्तार ॥६७९॥

जा लायक जिहि होय सो ताही ठौर मनोग।
चंदरीपति क्यों बरै रुक्मिनि स्रीहरि जोग ॥६८०॥

घनघेरे कौ मिलन सुख होत भरोसो नाहिं।
होय न होबै चाँदनी जैसे पाबस माहिं ॥६८१॥

बड़े भले सब लच्छ तैं नहिं बिन लछ के जोग।
राम लखन धनु धरि बिपिन कहत पारखी लोग ॥६८२॥

ता बिन होत न काज सिधि जासों लागी बात।
गुड़ बिनु होय न चौथ ब्रत दूलह बिना बरात ॥६८३॥

प्रभु सों बात दुरी न तउ करिये अरज मुखेन।
रुक्मिनि आतुरता लिखी हरि कह जानत हे न ॥६८४॥

कठिन कला हू आइहै करत करत अभ्यास।
नट ज्यों चालत बरत पर साधे बरस छमास ॥६८५॥

जहँ उपजै सोई करैं जिहि कुल जो अभ्यास।
छोटे मच्छहु जल तिरैं पंच्छी उड़ैं अकास ॥६८६॥

बिद्या लच्छमी पुरुष पै होय नहीं इक ठाँय ।
नाहिन सुख द्वै सौति मैं पिय पै एकहि जाय ॥६८७॥

गुन प्रगटै अवगुन दुरै जाके कमला साथ ।
तिय मारी परिहरी तउ कृस्न त्रिलोकीनाथ ॥६८८॥

मिलै दियो पूरब जनम न दिये न मिले सोइ ।
कौन सयाने धन कियो किन अयान दियो खोइ ॥६८९॥

जाको न्योत जिमाइये ताही की मनुहारि ।
परनै सोई गाइये बचन सुधारि सुधारि ॥६९०॥

निरस बात सोई सरस जहाँ होय हिय हेत ।
गारीहू प्यारी लगै ज्यों ज्यों समधिन देत ॥६९१॥

जो जिहिं कारज मैं कुसल सो तिहि भेद प्रबीन ।
नद प्रबाह मैं गज बहै चढ़ै उलट लघु मीन ॥६९२॥

जो जैसे तिहि तैसियै करिये नीति प्रकास ।
काठ कठिन भेदै भ्रमर मृदु अरबिंद निबास ॥६९३॥

इन लच्छन तैं जानिये उर अग्यान निबास ।
ऊँघै कथा पुरान सुनि बिकथा सुनै हुलास ॥६९४॥

उर उछाव हित धरम सों असुभ करम की हानि ।
मन प्रसन्न रुचि अन्न सों ज्यों ज्वर छूटै जानि ॥६९५॥

जपत एक हरिनाम तैं पातक कोटि बिलाय ।
एकहि कनिका आगि तैं घास ढेर जरि जाय ॥६९६॥

जो समरथ सब बात मैं तिहिं भजिये तजि संक ।
करैं रंक तैं राब हरि अबर राब ते रंक ॥६९७॥

गरब प्रहारी हरि सही यामें नहिं संदेह ।
जरे लंक के लाख ज्यों लाख लाख के गेह ॥६९८॥

कहा बड़े छोटे कहा जहँ हित तहँ चित लागि ।
हरि भोजन किय बिदुर घर दुरजोधन कौं त्यागि ॥६९९॥

पर जन सो मनसो करै परिहरि हरि सौं प्रीति ।
झूठे सो मानें हरष अहो जगत बिपरीत ॥७००॥

अहै अवधि अबिबेक की देखि को न अनखाय ।
काग कनक के पींजरा हंस अनादर खाय ॥७०१॥

मूरख कौं हित के बचन सुनि उपजतु है कोप ।
साँपहि दूध पिबाइये ज्यों केवल बिस ओप ॥७०२॥

गुन गरुवो लघुता गहै तिहिं सनमानत धीर ।
मन्द तऊ प्यारौ लगै सीतल सुरभि समीर ॥७०३॥

बड़ी ठौर को लघु लहै आये आदर भाय ।
मलयाचल की ज्यौं पवन परसे मंद सुहाय ॥७०४॥

महिमा जुत कौं देत ही लेत न तन सकुचाय ।
लेत भात जगनाथ कौं नृप हू सीस चढ़ाय ॥७०५॥

धन पूरन धनवान पै बिन दीने न लहात ।
ज्यौं बिन बरसे सघन जल लियौ पयोधि न जात ॥७०६॥

इक बिन माँगे ही लहै माँगे एक लहै न ।
घन जल सर सरिता भरै चातक चोंच भरै न ॥७०७॥

बड़कन की संपत्ति सबै लघु बिलसंत अनंत ।
दधि-जल घन घन-जल धरा धर-जल जग बिलसंत ॥७०८॥

जिहि जेतो निहचै तितौ देत दई पहुँचाय ।
सक्कर खोरे कौं मिलै जैसे सक्कर आय ॥७०९॥

जिय संतोष बिचारिये होय जु लिख्यौ नसीब ।
खल गुर काच कथीर सौं मानत रली गरीब ॥७१०॥

जथा जोग सब मिलत है जो बिधि लिख्यो अकूर ।
खल गुर भोग मँवारनी रानी पानि कपूर ॥७११॥

समै सार दोहानि कौं सुनत होय मन मोद।
प्रगट भई यह सतसई भाषा वृन्द बिनोद ॥७१२॥

संवत ससि रस बार ससि कातिक सुदि ससिबार।
सातैं ढाका सहर मैं उपज्यौ इहै बिचार ॥७१३॥

अति उदार रिझबार जग साह अजीमुस्सान।
सतसैया सुनि वृन्द कौं कीनो अति सनमान ॥७१४॥

६

बचनिका अथवा रूपसिंह की वार्त्ता

गाहा छंद

संडा डंड प्रचंड गुंजै अलि भ्रुंड तुंड रसलुब्धं ।
गणपति गुण भंडारं पाणि मुकर जोडि बिमल बर कज्जं ।।१।।
बाँनी ब्रह्मबिताँनी आगम निगम अगम अरुभ्राँनी ।
बरबाँनी बर बाँनी दीजै जगदंब कमल भवतनया ।।२।

बचनिका

जय जय लंबोदर । बर बरद बरद । सुखद सारद सारद बिसारद । जन अरज सुनि मानि लीजै । कृपा दृष्टि कीजै । बर दीजै । बर पाइ महाराज श्रीरूपसिंह जू को जस सरस बरनीजै । अंग उमंग धरूँ । ताके बंस कौ बरनन करूँ ।३।।

प्रथम ही राठौर बंस । अवतंस राजहंस । जगत प्रसंस । कमधज्ज कनवज्जतें अबीहसीह राव सीहा आयौ । परकाजकूं धायौ । राव लाखो फूलानी मारि बिरद पायो । पर भौमि पंचाइन कहायो । तिन अपने तेजबर तपबर भुजबर करिबर बर । मुरधर धर सुद्ध कर । बंस बीज बायो । नवकोट गढ़ मढ़ । नगर नगर बगर बगर । घर घर पहार पहार । झार झार संतति गन तंतु अरुझायो । प्रकर कर बिस्तार पायो । दल फूल फल जस वास । प्रकास तैं महि मंडल मंडप छायो ।।४।।

राव सीहा कें राव आसथान । बलवान बुद्धिबाँन । जोधविद्या सावधाँन । करधर कृपाँन । षेडपति प्रतापसी प्रतापबाँन । तिनसूँ करि

घमसाँन। गोहिलों कौं मारि कीने कतलाँन। बड़े बड़े बिरद पाए। तहाँतें धेडेवे राठौर कहाए ॥५॥

आसथाँनकै राव धूहड। धरखंभ नरथंभ। आरंभ अचंभ। दलन दुर्जन दलवंभ ॥६॥

राव धूहड कें राव रायपाल। सुपक्ष प्रतिपाल। प्रतिपक्ष साल। अरिहर उथाल। सिरदार झुझार। वाहडमेर मार। जीते पमार। संसार सधार। भयौ 'महिरेलन' दातार ॥७॥

राव रायपाल कें कान्ह राव सिरदार। अभिनव श्री कान्ह ही कौ अबतार ॥८॥

राव कान्ह कें राव जाल्हण। जगप्रसिद्ध। आखाडसिद्ध ॥९॥

राव जाल्हणकें राव छाड़ा। तिन सतदत साहस कबहूँ न छाडा। खत्रीधरम धारी। बापके बैर भीनमाल मारी ॥१०॥

राव छाडाकें राव टीड़ा। तरवार बहादर। परकाज सादर ॥११॥

राव तीडाकें राव सलाखा। राजै पाजरखा। लाजरखा सुरसखा॥१२॥

राव सलखाकै बीरम बरियाँम। धरम धीरज धाँम। पातिसाही दल सौं, करि संग्राम। कारवाँन लूट किए भले भले कांम ॥१३॥

राव बीरम कैं, राव चौंडा बीरबर। गढ़ मंडोवर राजधर। करिबर बल तोर। असुरदल मोर। लीयौ पातसाही नगर नागोर ॥१४॥

राव चौंडा कै राव रिणमल। प्रबल भुजबल। दलन खल दलबल। करन उथल पुथल। मेदपाट पति की पति राखी। सब जगत कीयौ साखी ॥१५॥

राव रिणमल कै राव जोध जालिम। मही मंडल मालिम। साहस सधीर। धीरबीर। आजानुबाहु। बीरबराह। मेबारधर मारि। जारि उजारि। जरा मूल डारी उखारि। गढ़ जोधपुर बसायौ। देसदेस बेस बेस। प्रताप तेज छायौ ॥१६॥

राव जोधा कैं राव सूजा सिरदार। कुल छल बल भार भुज सहार। मुलक मारवारि कौ रखवार ॥१७॥

राव सूजा कैं राव बाघा । बानैंत । बिरदैत ॥१८॥

राव बाघा कैं राव गांगा । गंगेव गहपूरति । साहसीक सूरति ॥१६॥

राव गांगा के राव मालदे छितपति छात्रैत । साथ सूर सावैंत । जाकै असी हजार पवंग पखरैत । जंग जुरि जहाँ तहाँ पाई जैत । जाके डर देस देस थरहरैं । अडंडी अरिडंड भरैं । अनेक देस के देसपति सेब करैं । दाँन कृपाँन तैं जगत जीति जग हथकूं धरैं ॥२०॥

राव मालदे कैं राजा उदैसिंघ अभिनब आदीत । अहनिस अभीत । गई भूमि बाहरू । पुन्यपन पाहरू । कमधज कुलभूषन । दुर्जन गन दूषन । अकबर जलालदीन साहिब किराँन । हजूर बुलाए भेजि फरमाँन । मुखजबाँ फुरमाया । 'मोटा राजा' कहि बतलाया । बौहत सनमाँन कीया । देस मुरधर गढ़ जोधपुर दीया ॥२१॥

सवैया

जाके उदै भयौ देस उदोत सुबंस उदोत छत्री ध्रम धारी ।
राज के काज बड़ौ सिरताज बड़े पुरुषाँन की लाज सुधारी ॥
दाँन कृपाँन पराक्रम के बल भागबली सब बात बधारी ।
आदि बराह धरा उधरी त्यौं गई धर कौं उदैसिंघ उधारी ॥२२॥

बचनिका

राजा उदैसिंघ कै राजा सूरजसिंघ राजा किसनसिंघ दोऊ सूरज समाँन । प्रतापबाँन । मुरधर देस के रिछपाल । प्रजा प्रतिग्या के प्रतिपाल ॥२३॥

दोहा

सूरजसिंघ अरु किसनसिंघ कुलमंडन कुलमौर ।
गहरैं पौरस गहभरैं ठहरैं क्यौं इकठौर ॥२४॥

जैसैं एकै म्याँन मैं खडग न मावै दोय ।
तैसैं एकै राज मैं राजा दोय न होय ॥२५॥

जैसैं एकै देह मैं आतम दोय न होय ।
तैसैं एकै राज मैं राजा दोय न होय ॥२६॥

कियें अकस बरकस कियें सकस भयौ सिरताज ।
असि तरकस को बंड कसि किसन राज कै साज ।।२७।।

आप अदब अग्रज अदब माँन धर्‌यौ अभिमाँन ।
देस कोस गढ़ स-बलदल सब बिधि भयौ समाँन ।।२८।।

जोध बसायौ जोधगढ़ जैसैं अपने नाँम ।
किसन बसायौ किसनगढ़ आप नाँम अभिराम ।।२९।।

संवत सोरह अठसठै सुभ मुहरत सुभ थाँन ।
किसन बसायौ किसनगढ़ सुथिर सुमेर समाँन ।।३०।।

सवैया

साधि अभीच अराध गनेस सदा थिरभाव महूरत लीनौ ।
बेद की सासन की बिधि सूँ करि होम सुदाँन द्विजातन दीनौ ।।
नीनगमैमधिनायक ज्यौं नरनायक कौं सुखदाय प्रबीनौ ।
त्यौं नवकोट मुरधर मैं दसमौं गढ़ श्रीनृप केहर कीनौ ।।३१।।

कोऊ करै इक लाख पसाव तौ कोरिक सोच बिचार हिये हैं ।
हो कलि में कलपद्रुम सो कबि के दुख दारिद दूरि किये हैं ।।
को करै किम्मत हिम्मत की नृप केहरि यौं जस बास लिये हैं ।
लाख गुनी जन साख भरै दिन एक मैं बारह लाख दिये हैं ।।३२।।

कवित्त

कोप अति आँना मेदपाट पति सो रिसाँना
चढ़ी जब सेना जहाँगीर जमराँना की ।
थहराँना अमर समर मैं न ठहराना
बाँना-बिसराँना सुनि धमक निसाँना की ।।
छोड़ि-छोड़ि थाँना रहा छपन मैं छाँना छाँना
दाँना खाँना की न सुधि रही हैं खजाँना की ।
कोप कै किसन खैग खुरन सौं खूँदि खूँदि
दाँना दाँना सब करि डारी धर राँना की ।।३३।।

बचनिका

संवत सोरेह् सै बौहत्तरै। पातिसाह् जहाँगीर। आए अजमेर। जाकौ मन ऐसौ थिर। जैसौ गिरमेर। जाकैं आगैं बकरी से होय जाय सेर। थहराँने मेर। चीते सचिते भये तिहिबेर। हाथ नगी समसेर। हुकम डारैं फेर। तिन कौं मार डारैं घेर घेर। केते जालमौं कौं कीए जेर। हुकम कीया। महाराजा किसनसिंघ कौं भाटी गोइंददास मारनै का बीड़ा दीया। बीड़ा उठाइ सिर चढ़ाइ लीया। तिसही बखत कीनी असबारी। कुछ और न बिचारी। ऐसी तरवार मारी। जाँनत है खलक सारी। गोइंददास कौं मारा। जगत मैं जस बिसतारा ।।३४।।

कवित्त

साह् कौ हुकम पाय लौंन की सरम गाजि
केहरी ज्यौं केहरी चढ़ौ है कोप करि कैं।
सूरसिंघ बंधु कौ बिचार न बिचार्‌यौ एक
स्वाँम ही के काँम कौ बिचार उर धरि कैं ।।
गढ़ अजमेर घनघाइन सौं घेर घेर
ढेर कीने अरि समसेरन सौं लरिकैं।
जस बिसतारी भाटी गोइंद कौं मारि
देवलोक जाइक कीनौं देवंगना बरिकैं ।।३५।।

बचनिका

राजा किसनसिंघ कै सहसमल जगमल भारमल हरीसिंघ। सिंघ के से भुजबल। एई च्यारि पुत्र रतन। जैसे राजा दसरथ कैं च्यार सुतन। रामचन्द्र भरथ लषमन सत्रुघन ऐसे बिराजमाँन। जिनकौं जाँनै जहाँन। राजस्थाँन। राजा सहसमल। सहसदस खलदल। दलन भुजबल। सतदत साहस की सूरति। अभिराँम काँम मूरति। गहपूरति। जाकैं जय जस ही की जरूरति। प्रभाकरि सौ प्रतापी। अवसाँन थाँन पाइ तापी। राजा सहसमल के पीछै राजपाट के अधिकारी। इंद्र अवतारी। राजा जगमाल। पातिसाहौं की पनाह कौं ढाल। सत्रुन के हियै मैं ऐसैं खटकट जैसैं नटसाल। चित्त उदार ऊंची चाल। मौजां बगसि बगसि अनेक कबि लोगन कौं किए निहाल। जिस बखत पातिसाही फौजैं खुरम के पीछैं धाईं। साहिजादे

परबेज लीनी लड़ाई। पटाछूट जटाजूट हाथी रौर पारी। फौज बिचलाय डारी। भार पर्‌यौ भारी। तिस बखत राजा जगमाल कुंभी के कुंभाथल मैं साँग मारी। खुरम की फौज सिकस्त पाई। पातिसाही फौज फते पाई ॥३६॥

तिसमैं की पैडी

मालिम जग सालम जगमल्ला कुल बडा कुदरत्तीदा।
लष्षाँ बगसन लष्षाँ लायक नायक बंस दुछत्ती दा।
लडे षुर्‌म परबेज लड़ाई छल देष्षाँ छत्रपत्ती दा।
जटाजूट सौं जोधा जुट्‌या धुज्या पिंडर धत्तीदा॥
केहर हुंदा जेहा केहा केहर खेसि वसमारत्ती दा।
सैल धमकै हत्थल मारी फट्‌या कुंभह सत्तीदा॥
जिस भीतर तै रत्त बिछट्‌या भभक्या भकभक भत्तीदा।
निकस्या फोडि पाहाड किनारा पूर मनूं ? सत्तीदा॥३७॥

कवित्त

छूट्‌यौ जटाजूट जब सुंड और भुसुंडन सौं
भारी रौर पारी दलथल बिचलायौ है।
साहस की सींव इत राजा जगमाल आयौ
भुजबल भींव जिम भारमल आयौ है॥
कोपि गजकुंभ मधि बज्र ज्यौं चलाई सेल
सूल ज्यौं चलाई असि हटकि हटायौ है।
मानूं पर्बतारि धायौ परबत पछारबे कौं
मानूं संभु दिग्गज पछारबे कौं धायौ है॥३८॥

दाँन परवाह करि चित्त जस चाह करि
करत निदाह नरनाह पुन्यपन कौ।
अरि सर अरि करि जलमद सोखिबे कौं
प्रबल प्रताप जैसौं तपत तपन कौ॥
जहाँ जोध जंग करैं छोह धरि लोह लरैं
भार परैं गाढ़ परैं गाढ़ भरे मन कौ।

लाजभार राजभार जयभार जसभार
भारमल सीस सोहै भार भलपन कौ ॥३९॥

बचनिका

एक दिन मोहबत खाँन का बेटा अमाँनुला ऐसो नाम। काहू राजपूत सौं ह्वै आई खाँनाजंगी की धूमधाँम। तहाँ करि संग्राम। आए काँम। निहचल राख्यौ नाँम ॥४०॥

कवित्त

काहू राजपूत सूं ह्वै आई षाँनाजंगी जब
आयौ दल उलट अमाँनुला असुर कौ।
तब राजा जगमाल भारमल जोराबरी
रंग कियौ जंग कियौ संग कियौ सुर कौ।
केते षलमले दलमले षग चोटन सौं
भीर परै भीर करै है सुभाब धुर कौ।
किए परकाज राषी आपनी बिराँनी लाज
भए सिरताज राज पायौ सुरपुर कौ ॥४१॥

दोहा

सोल पिच्यासी माह सुद बारस कर पर काँम।
जगमल भारहमल जुगल कमधज आए काँम ॥४२॥
पातसाह टीकौ दियौ हरीसिंघ के भाल।
देस कोस घर पुर प्रकर रैतराज रिखपाल ॥४३॥

कवित्त

केहर किसनसिंघ नंद हरीसिंघ सिंघ
उरहोते गाढ़ो मन गाढ़े गुन गहे है।
खातर मैं आबै सोई हुकम बजाय ल्याबै
जंग कै बिनाँही कई दौरि अरि दहे है॥
दाँन किरपाँन बाँम बिद्या के बिनाँन
करि केती दिलवरी कै सुभाव साहि सहे है।

और पातिसाहन के मन हाथ लियै रहै
पातिसाह जाकौ मन हाथ लियै रहै है ॥४४॥

जा दिन जरायत कौ कछुक बिगार भयौ
सबसौं भई ही इत राजी पातिसाही की।
चाकर कौ काहूकर काहू सिर काट दियौ
चूके उमराव दाव नैंक न पनाह की॥
मान्यौ न हुकम कम कियो न धरम क्रम
साँची तरवारि हरीसिंघ नरनाह की।
निजपनि राख्यौ सरनागत कौ तन राख्यौ
गाढ़ करि राखी रजपूतन की गाह की ॥४५॥

बचनिका

ऐसें राजा हरीसिंघ। निस्संक अंग। जैसें सिंघ। जाके मुंह आगें। जोति उद्योत जागें। सूरज बंस मैं सूरज सरभर। राजभार धुरंधर। बिराजमाँन। राजा भारमल नंद रूपराजांन। ताकौ जनम तें लेकैं अवसाँन परयंत। सब कहूँ बिरतंत ॥४६॥

दोहा

सोरह सै पिच्यासियै सुदि बैसाख सुजाँन।
अति सुभ दिन एकादसी जनम रूप राजाँन ॥४७॥

बचनिका

बैसाख मास में जनम भयौ। तातैं बैसाख ही सरभर कौं उदयौ। उर आनंद भरै। कवि बर्नन करै ॥४८॥

पद्धडिका

लखियत बनत तरवर नगर लोग।
सब हरभरे गहरे सभोग॥
सुक सारिक पिक जाचक सहेत।
दल फूलि फूलिफल तिन्है देत ॥४९॥

गुनि घन मधुकर मधु करत गाँन । रस वास लेत करि करि बषाँन ।
गुनि नरबर सरबर गुन गहीर । अति निमल अमित आनंद नीर ।।५०।।

हिय-कमल कमल-मुख कमल-हत्थ । अति उल्हसि बिकसि बकसंत अत्थ ।
भइ घर घर बंदन माल भास । बन बन प्रत तरबर बर बिलास ।।५१।।

बचनिका

बहुरौ रूप । कैसौ सरूप । जैसी दुतीया कौ चंद । जगत बंद । आनंद कंद । देखत ही निजनंद । दाँन तरंग तै उमगत राजा भारमल समंद । कबि चन्द सरभर करै । तहाँ अनेक उपमा कौं धरै । वह सोरह कला कौ भरै । यह बहुत्तर कला कौ अनुसरै । वाकी छबि दिन में रहै दबि । याकी निसदिन छबि रहै फबि । बाकी कला घटिबढ़ता कौं गहै । याकी कला निरंतर ही रहै । बाकै सत्रु मित्र सौं वक्रता । याकै सत्रु सु बक्रता मित्र सौं सरलता । कहै कबिता । वह संकलक । यह निकलंक । वह राह सौं ससंक । यह दोऊ राह सौं निसंक । वाकै उदैं कुमुदगन फूलैं । याकै उदैं सुहृदजन फूलैं । वाकै एक पच्छ उज्जल । याके दोऊ पच्छ निरमल । वाकै दिन दिन बपु रूप लावन्य गुन की वृद्धि कौ उदोत । तैसें याही कै बपु रूप लावन्य गुन की वृद्धता होत । कबिबर बखांनै । जे नर सयाँनै । ते याके भाव-भेद जाँनै माँनै ।।५२।।

पद्धडिका

सिसुता सुभाव सोभा समृद्ध । बपु बचन कला गुन होत बृद्ध ।
चटसाल पठन किय चित्त वाह । आनंद सहित कीनौ उछाह ।।५३।।

गुरु परम भक्त अनुरक्त भाव । सारदा पूजि गनपति सुचाव ।
मातृका पाठ पाठ मूलि मंत्र । सुर ब्यंजन अच्छर पर सुतंत्र ।।५४।।

बावन बरन अनेक बाँन । जय सबद ब्रह्म ब्यापक जहाँन ।
ब्रह्मादिक हे अनादि बेद । भनि पिंगल कहि सब छंद भेद ।।५५।।

ब्याकरन सबद साधन बिलास । निज कोष नाम निर्णय निबास ।
अत्रिय बैद्य सासत्र धार । किय कपिल सुमुनि धर्म्माधिकार ।।५६।।

रचि ब्रह्म भरंत संगीत रीति । निर्णीत बृहस्पति राजनीति ।
प्रगटे अगि अष्टादस पुराँन । बिदग्धनि कला रचना तान ।।५७।।

बिस्तरित गनित जोतिष बिचार। सचि अलंकार साहित्यसार।
परब्रह्म सब्द कौ अगम पंथ। गुनि सुने सुचित केइ पढ़े ग्रंथ ॥५८॥

निस दिबस चिर रुचिर नबीन। पढ़ि भए रूप भूपति प्रबीन।
पुनि उदित सस्त्र बिद्या अभ्यास। बरबीर करत भुजबल बिलास ॥५९॥

समबंस सुभट सुत वै समाँन। सजि संग अंग बिक्रम सयाँन।
बलवाँन मिलित मन बुद्धिवाँन। सुचित उचित संदर संथान ॥६०॥

कर जोर जुक्तकर गहि कमाँन। अभ्यस्त नित्य गति आँन आँन।
दिढ़ मुष्टि दृष्टि गुन बाँन ताँन। निरखंत लक्ष्य वेधत्त निदाँन ॥६१॥

गहि करत खाक तूदे गरक्क। धुनि सुनि दुयन छाती धरक्क।
फिरि फुरति बाँन चहुँ ओर फेरि। राखति बिहंग आकास घेरि ॥६२॥

जल भरित फिरत घट भेदि जाय। चूके न हदफ दुहुँ दिसि चलाय।
बर बृत्त (?) वा भेदत कड़ाह। राजाँन रूप आजाँन बाह ॥६३॥

बारीक बार सर गिरह भेदि। छूटंत जाइ सर जिरह छेदि।
लषि लेत उचकि सर दीप लोइ। हठि स्रवति स्रोत सर पार होइ ॥६४॥

धर सुधर काच सीसी धराइ। जिहिं राषि अनाँमति भेदि जाइ।
बटपत्र चित्र सूरति बनाव। संग्रहित सब्दबेधी सुभाव ॥६५॥

ऊँचै उछारि गंदुक प्रकास। ताकि आवत भेदात बाँन तास।
इम सीखे बाँन बिद्या अनूप। संसार बिदित अर्जुन सरूप ॥६६॥

षनकंत करिय षाँषरन षेल। सामहै लेत कर झेल सेल।
सजि सुदिढ़ मूठि सहनेस तोल। अभ्यास करत करि मन अडोल ॥६७॥

प्रथमे तनई करि करि पगार। बदि बार करत तिहि बार बार।
रचि रोस रौस चाहंत रूक। चौरंग घाइ एकै दु टूक ॥६८॥

आरोप पच्छ मच्छका ओट। चित धीर करत बंदूक चोट।
मारै अचूक पारै न षोट। लाँगत होय भुंइ लोट पोट ॥६९॥

कबि बाँक फुल तापट ? फेर। आघात बक्रा वै चरु मेर।
अभ्यस्त जोध बिद्या अनेक। अधिपति रूप अधितिय एक ॥७०॥

परभात जागि जपत परमेस। ब्यायाम नित्त कीजै बिसेस।
स्रमजित सुभाव छलभल सभेद। खेदंत रिपुहि पावै न खेद ॥७१॥

हय सार सार हय दोष हीन। चाबष असि बारन सौंप दीन।
आवगी फेर कीने अनूप। सुष मुष सतेज नट गति सरूप ॥७२॥

तलवाग दुहुँ रुष फेर तंत। फबि फेर थार महीयाँ फिरंत।
ए बाजि साज असि बार होय। सजि साथि सुभट सोभित सकोय ॥७३॥

आसतैं प्रथम गति आँन आँन। धरि षुरी तुरी करि सावधाँन।
भरि लीह बाह बे बाह भत्त। धम धमैं पाइ धूजै धरत्त ॥७४॥

गहि करत कुंडली तेज गत्ति। परि बेष रेष जाँनी परत्ति।
फेरत पलहि करि अति फुरत्ति। जनु दुहूँ और मुहुँ इहीं जुगत्ति ॥७५॥

आसैं धसैं पोईय आँन। बदि वाह वाह कीजै बषाँन।
थाप लै कंध थुथुकारि थंभि। बारियैं लौंन उपजै अचंभ ॥७६॥

चढ़ि चंचल चंचल अचल चित्त। नृप रूप रमैं चोगाँन नित्त।
सम सुगम भूम सोभित सुदेस। स्रम उपसम क्रम मोहित सुरेस ॥७७॥

संग सुभट दुहूँ दिसि सावधाँन। धर धीर बीर छल बल निधाँन।
सजि छरी हरी पियरी सुरंग। गुजकुंभ बटा अंकुसि सुचंग ॥७८॥

सदबृत्त बटा सज्जन समाँन। रागी जन जैसे रागबाँन।
यह बटा किधौं जड़ भरथ अंग। संगृहित अनिछित होत संग ॥७९॥

संप्रति सुवृत्त मुनि मनस सोभ। छल षेद सहत माँनै न छोभ।
मिलि सकल छरिन की करत मार। हठ ढीठ भयौ माँनै न हार ॥८०॥

सजि बाजि चित्त करि करि सचेत। सब सुभट सुमन लोचन समेत।
सँग घिरत घिरत सँग जात जात। जनु बसीकरन जानत बिष्यात ॥८१॥

मन तुरी दृष्टि करि ताल मेल। षितिपाल रूप जीतै सु षेल।
नोसाँन बजत आवत नरेस। पूरन प्रत्तापजुत पुर प्रवेस ॥८२॥

दुति रूप भूप मुख देषि देषि। बरनत अनेक ओपम बिसेसि।
उच्चास इंद्र आरूढ़ एह। समतास किधौं सूरज सदेह ॥८३॥

बचनिका

ऐसे अभ्यास करत करत रूप राजाँन। अनेक बिद्या मिताँन। बिधि बिधाँन बाँन। साधि साधि भए साबधाँन ॥८४॥

दोहा

सतरै से बैसाख सुद आठम तिथ अभिराम।
हरीसिंघ सुरलोक मैं बासि कियौ बरियांम ॥८५॥

पद्धडिका

सतरैसै सई कै जेठ मास। पच्छ बहुल पंचमी तिथि प्रकास।
थिर लगन मुहरत सुद्ध थाप। आनंद कर बाँनी अलाप ॥८६॥

अति उद्दित मंगल बिधि अनेक। राजाँन रूप राज्याभिषेक।
बपु आँबर आभसन बनाय। चाव किय तिलक अच्छत चढ़ाय ॥८७॥

नागनेचि देबी नमस्कार। पूजन बिधाँन नाना प्रकार।
सुप्रसन्न होइ दिय खडग सिद्धि। सुप्रसिद्ध राज संतति समृद्धि ॥८८॥

आचार सुद्ध द्विज करि उवाच। बिध बेद उक्त किम स्वस्ति वाच।
सोभायमान सोभा सँभार। भारमल नंद सिर राजभार ॥८९॥

वचनिका

यह बात सुनी साहब किराँन। साहाँनसाह पातिसाह स्री साहजहाँन। सरै आँम खास मैं बिराजमान। जहाँ हाथर जोरै ठाढ़े खाँन सुलतान। राव उमराव हिंदू मुसलमाँन। देखि देखि पातिसाही कै साँन। केते होय हैराँन। केते भूल जायँ अवसाँन। तहाँ सुने महाराजा रूपसिह के बखाँन। तब फुरमाया। लिख भेजौ फरमाँन। अब रूपसिंघ हझुर आबै। मुरातब मनसब पाबै। हम फरमावै। सो हुकम बजाय लावै। राजा रूप हजूर आया। हजरत देख मनसब फुरमाया। दोय हजारी दोय हजार असवार। जड़ावरसों जड़ित खंजर तरवार। तेग दे तोल बधाया। प्यार करि किन्या। मजबूत पाया ॥९०॥

दोहा

संवछर पुन अयन रितु मास पच्छ दिनवार।
नच्छत्र जोग पुन करन गन कहौं नाम फलसार ॥६१॥

छप्पय

सोरह पिच्यासियै समै ईस्वर संवछर।
उतरायन ग्रीसम हि सुरति बैसाख मास बर॥
सुदि पच्छ एकादसी बरन सनि हस्त नच्छत्रहिं।
ब्रज जोग बरन निज करन गन देवगनिज्जहिं॥
पूरनमल जनम सुनाँम प्रभु भारहमल गृहजनम भुव।
सुप्रसिद्ध नाँम संसार सिर रूपसिंघ राजाँन हुव ॥६२॥

वचनिका

अथ प्रथम ईस्वर नाम संवछर। तातै ईस्वर कै समबर। बरनत है कबिबर ॥६३॥

लीलावती छंद

कोपानल प्रबल ज्वाल कालानल दुयन गहन वन दहन कियं।
परतापबाँन गुनबाँन धरन गन हरषबाँन हितबाँन हियं॥
कुल कला कुसल कुल बिमल सील जुत भागबाँन उणाह भरियँ।
ईस्वर संवछर जनम रूपइल ईस्वर सरभरु अवतरियँ ॥६४॥

अथ उतरायन कौ फल

दिन प्रतदिन बृद्धि बृद्ध बपु दिन प्रत लच्छन छिन छिन बृद्धि लियं।
संतत सुप्रसत्ति चित्त उद्दित अति सुत कलत्र संतोष कियं॥
उद्दार परम आचार परायन धीर धरायन धरम धरं।
उतरायन जनम रूपसिंघ अधिपति देब नरायन भगति भरं ॥६५॥

अथ ग्रीषम रितु कौ फल

ऐस्वर्यबाँन धनबाँन दाँन मनि बिद्याबाँन बषांन बरं।
महि भोगबाँन बच अमल कमल-मुख केलि कुसल जल केलि करं॥

अरि तरवर सोखि सोखि अरि सरवर अरि फल पाँनप हठि हरियं।
ग्रीषम रितु जनम रूप राजेसर ध्रुव गुन ग्रीषम फल धरियं ॥९६॥

अथ बैसाख मास कौ फल

लच्छित परतछ सुछ सुभ लछन परम बिबच्छन लच्छ परं।
भूदेव भगति पुन देव बिसंभर सेवत मत कृत भेव भरं॥
प्रफुलत बनराय राइ मन प्रफुलित कामित फलदल फलित कियं।
बैसाष जनम नृप रूप बीरबर भारहमल नंद नंदन भनियं॥९७॥

अथ सुकल पच्छ कौ फल

देदीप्यमाँन अति अमित उदित द्युति दीपति कीरत दिस बिदिसं।
स्त्री सहित सहित सतसील सहित हित नृमल कांति कृत निसि दिवसं॥
नित नीत निपुन सु बिनीत रीत नित मन समंद आनंद मयं।
पछ स-कल जनम गुन सुकल पच्छ सम रूपसिंघ राजाँन रयं॥९८॥

अथ एकादसी तिथि कौ फल

आचार निपुन उपगार निपुन सुबिचार निपुन करतार कियं।
हरि अरचा निपुन निपुन द्विज अरचा हरिगुन चरचा निपुन हियं॥
सतकरम निपुन सतधरम निपुन पुनि परम निपुन अघ धरम हरं।
एकादसि जनम रूपसिंघ अधिपति ब्रत एकादसि अमिट बरं॥९९

अथ सनिवार कौ फल

चित्त छितिपति सुथिर सुथिर छितिपति हरि भगति सुथिर चित्त संभरियं।
संपति धरी सुथिर सुथिर संतति नित सुथिर पुन्यपन अनुसरियं॥
गजराज सुथिर बरबाजि सुथिर महि राज सुथिर महाराज कियं।
जगि सुथिर रूप जस सुथिर जगमगति थाबर बार जनम थपियं॥१००॥

अथ हस्त नच्छत्र कौ फल

दातार धीर उद्दार बार वर हृदय सदय पर पीर हरं।
नय बिनय बिहित द्विज देव भगतिरमय जय जय जय जय उदय करं।
कमलाकर कमल बसै कमला ज्यौं त्यौं कमलाकर कमल बसै।
हुव हस्त नच्छत्र नृप रूप जनम ध्रुव बलित ललित गुन ए बिलसै॥१०१॥

अथ बज्र जोग कौ फल

बर बुद्धि बिमल गुन बृद्धि बिमल बल तेज प्रबल झलमलति तनं।
उचरत बच साँच साँच बच इछ करत न परिच्छत कतरत रतनं॥
भूषन मनि मुक्त जुक्त तन भूषन कुल भूषन दूषन दुयने।
जिहि दिवस रूपसिंघ भूप जनम जगि बज्र जोग ए जोग बने॥१०२॥

अथ वनज करन कौ फल

छत्र बाट हाट बाजार षेत षित तेग तराजू हाथ धरै।
करि धराधरी घर निकर घरी भरि कनकन अरि करि गंज करै॥
मनसब बहु लाभ लाभ महिमंडल जस अगनित धन भरत जमैं।
इहि बनिज रूप बहु अर्थ उपार्जित बनिज करन जस जनम समैं॥१०३॥

अथ देवगन कौ फल

सुर मधुर मधुर बय उकति सरलममति सुलप सुभोजन भोज्य करं।
सुगुनग्य तग्य सरवग्य हेत कृतजग्य हेत नित बित्त बितरं॥
उत्तम आवास बास अति उत्तम कुसुम सुबासित बास तनं।
नरदेव देव देवाधि सेव करि रूप भूप निज देव गनं॥१०४॥

रूप नगर-सोभा बरनन

सुन्दर समाज राज भवन बिराजमान
सुधा तें रवन सुरपुर सरभर को।
उज्जल अवास आसपास च्यारों बरन के
भासत बिमान सौं सुरूप घरघर को॥
चहुं ओर फूले फले हरे भरे तरबर
सब सुख देखें जल भरे सरबर को।
ऐसे रूप नगर नगर रूप सौहै तहाँ
राजें राजा रूपसिंघ रूप सुरधर को॥१०५॥

जहाँ ब्रह्म ब्रह्म करतूत मैं निपुन पुनि
बेद धुनि करैं ध्यांन धरैं धुरधर को।

जहाँ छत्री छत्री के धरंम सावधाँन कर गहै
किरपाँन तातें अरि उर धर कौ ॥
जहाँ बैस साँच व्यवहार मैं सुजाँन
करै सूद्र द्विज भगति हुकम पुरधर कौ ।
ऐसौ रूपनगर नगर रूप सौहै जहाँ
राजै राजा रूपसिंघ रूप मुरधर कौ ॥१०६॥

पद्धड़िका

कहुँ बचत भागबत रचत कित्ति । हरि भक्त सुनत हरि भक्ति नित्ति ।
कहुँ परमारथ भारथ प्रकास । कहुँ ब्रह्म ब्रह्म बिद्या बिलास ॥१०७॥

कहुँ धर्म्म कथा बरनत बिसाल । कहुँ कथा कुतूहल रस रसाल ।
कहुँ दवन दुरत नित हवन होति । कहुँ जगत जगत जगमगत जोति ॥१०८॥

धम धमति धाँम कहुँ अगर धूप । आरती करति कहुँ जन अनूप ।
घर घर घमंड कहुँ घंट घोष । प्रति पर्ब दिवस द्विज छ रस पोष ॥१०९॥

कहुँ देत सदा ब्रत अन्न दाँन । कहुँ ब्रत उद्यापन जुत बिधाँन ।
कहुँ रचित रंग रुचि रागरंग । सतसंग सभा कहुँ अंग उमंग ॥११०॥

परपीर हरन पुरजन प्रबीन । नित नित हरष घरघर नवीन ।
नृप रूप राज यह राजनीत । रस रसित कहत यह सुकबि श्रीत ॥१११॥

अथ राजनीत बरनन

गुन पाइ बक्रता धनु गहंति । अरु लच्छ पाइ सर बधत अंति ।
दल देखि धनुष जुधि पीठ देत । लगि सरल बाँन हरि प्राँन लेत ॥११२॥

हठि छिद्र तकित पोषंत हार । हार ही रह्यो यह कंठ हार ।
सदबृत्त सुछ गुनबंत होइ । बिन हार गरै नहिं परत कोइ ॥११३॥

इक अधोगमन तरु जर अनेक । आभूषन हंसक नतहि एक ।
बृच्छ नहीं कंटक जग बिख्यात । इक मुरज बदत दुहुँ बदन बात ॥११४॥

सर्प्प मुख दोइ जीहा सँपेखि । पुरबी मध्य उर तिमिर देखि ।
महि खडग गाढतर बद्ध मुष्टि । उपगार दाँन तप की अतुष्टि ॥११५॥

चोरियहु एक प्रानेस चिह्न। तोरियहु रोर जोरियहु बिह्न।
बंधियै कबित्त छंद प्रबंध। बेधियहु मनी छेदियहु बंध ॥११६॥

परनारि पकरि संसार साख। रस देत बैद एकंत राखि।
नीचाँन गमन इक करत नीर। सम बिषम ठोर बिचरत समीर ॥११७॥

दीसंत त्रदंडी हाथ डंड। माँननी होय इक माँन खंड।
चल दल धूजहि चपल देखि। बिपरीत रीति इक रति बिसेसि ॥११८॥

अपमारग की रचि रुचि अछेह। मेटत सतमारग बरसि मेह।
सोखंत एक दीपक सनेह। छीलर जल छिपमहि देत छेह ॥११९॥

दोहा

कलुष भाव अंतह करन तहाँ इक धरत न टाक।
परम बियोगी होत है निसही मैं चकवाक ॥१२०॥

तजत नेह खलता गहत इक तिलही तिहि ठौर।
परबस चाक कुलाल कै भ्रमत रहत नहिं और ॥१२१॥

बिभव पाय दीन पाइ कै कुचही होत कठोर।
दारू गोली कौं गहत इक बंदूक बरजोर ॥१२२॥

करत एक अपमाँन कौ उत्तम जन अपमाँन।
इत उत कौं सिर धार धर खैंचत है खरसाँन ॥१२३॥

कवित्त

बात परजात यह रात थहरात तरुपात पै
न गात थहरात उतपात काहु भूप कै।
घर पुर पर एक घन घोरि गाजै परि
अरि न सकल गाजि कारे पीरे रूप कै॥
करति चकित चित चमकि चमकि बीज
रिपु कौ न ताप एक ताप तन धूप कौ।
इति की न भीति भीति देखियें अँगारन की
ऐसी रीत राजनीत राजै राजा रूप कौ ॥१२४॥

सवैया

दांन दया सतसील समेत प्रजाजन पूरब पुन्य उदै-सौ।
चारहु बरन सुधर्म्म में धीर करै सुभ कर्म्म कह्यौ बिध तैसौ॥
ईति अनीति उपद्रव हान सुभिच्छ सदा सुख संपत जैसौ।
भूप सिरोमनि भूपति रूप कौ राजत राज जुधिठ्ठर कैसौ॥१२५॥

इति राजनीति।

अथ बिसेस बिधिक्रम बरनन

बचनिका

अरि तरबर कौं जैसौ करबर। अरि करबर कौं जैसौ केहर। अरि केहर कौं जैसौ घन। अरि घन कौं जैसौ तन पवन। अरि पवन कौं जैसौ सहसफन। अरि सहसफन कौं जैसौ गरुरतन। ऐसौ अरिगन गंजन। अरि मांन भंजन। पातिसाहौं मन रंजन। प्रतिभट भय भंजन। ऐसी उत्तरोत्तर उपमा सौं बिराजमांन। राजाधिराज रूप राजाँन॥१२६॥

अथ अरि तरबर कौं जैसौ करिबर: कवित्त

कर करबर गहि धाय कै धकधकाइ पेड तै
हल हलाय कै धुजाइ डारे हैं।
झुकि झहराइ सत साष कौं मरौर तोर
दल फूल फल झकझोर जोर झारे हैं॥
फोर आलबाल कौं बहोर पच्छीजाल कौं
मिलाए ऐसे हाल कौं सु षलक निहारे हैं।
रूपसिंघ भूप गजराज के सरूप गाजि
अरि तरबर सर मूल सौं उषारे हैं॥१२७॥

अथ अरि गजराजन कौ जैसौ मृगराज: कवित्त

छहुँ रितु छाके ताके आपनैं मता के
ताके मद गारिबे कौं जाकी गहरी अवाज है।
हाथल हथ्यारन सौं मारि सीस फार फार
लेत है निकास जस मुकता समाज है॥

छोरि छोरि थाँन तोरि तोरि लाज लंगरन
भाजि जात जानि जीय जीवन इलाज है।
गाढ़ गहै ऐसे गाढ़े अरि गजराजन कूं
महाराजा रूप महाबली मृगराज है ॥१२८॥

अथ सत्रुजन केहरि ताकौं घन सरभरि : कवित्त

सुनि सुनि गाज की अवाज सोस धुनि धुनि
उछरि उछरि गिरै होत कलकाँन है।
पाइकौं पछारै पंजा भूमि गहि मारै ले
जंभाइ मुह फारै हीय हारे हलकाँन है।
नाँही कल परे हरि हेरि थरहरै धरपरै
तरफरै डरै परिहरै प्राँन है।
सत्रु सारदूलन मैं ऐसे हाल होत जाँनि
राजा रूपसिंघ देव सघन समाँन है ॥१२९॥

अथ अरि घन कौं जैसौ तन पवन : कवित्त

तौलौं चहुं ओर घेर कें करत सोर
तौ लौं कारे पीरे दल बादल सरस हैं।
तौ लौं बीज बीज तरकत नर तर पर
तौ लौं सर बुंद भर मंडित अरस हैं॥
तौ लौं नाना रङ्ग कौ रँगीलौ चाप चमकत
देखियत तौ लौं ही सजीवन दरस हैं।
तौ लौं रिपुघन की सघनताई जौ लौं रूप
भूप तन पवन कौ होत न परस है ॥१३०॥

अथ अरि पवन कौं सहसफन : कवित्त

तेज गति लीनै बन गहन बसन कीनै
काहू तें बस न कीनै बाँकी बाँकी ठौर के।
दिस दिस धावें रस बास लै लै आवै
पुन कंप उपजावै नर तर पुर पौर के॥

कबहू बिषम भूमि कौ न भय मानै ऐसे
बुरजन पवन अति दारुन कु दौर के।
महाराजा रूपसिंघ मनिधर फनिधर को
पकरि कीए सब एक एक कौर के ॥१३१॥

अथ अरि फनधर ताकौ गरुड़ समबर : कवित्त

टेढ़े गात टेढ़ेई चलात टेढ़े तुम कियै जाके
आगे सोधी गति को न अनुसरयौ है।
बिष भरे कारे कारे षरे बिकराल भारे
जाकौ नाँम मुनि निरष बिष पद धरयौ है ॥
जाके पच्छबात तै थरहराइ मुरिझाइ सिर
नउढ़ा इम कैरो सम नमस्यौ है।
ऐसौ कौन अरि फनधर कहबाइ राजा
रूपसिंघ गरुड़ के डर तै नमस्यौ है ॥१३२॥

इति बिसेष बिधि क्रम

अथ प्रताप बरनन

परम प्रकास महि मंडल मैं भासमाँन
आसपास त्रास अंधकार कौं हरत है।
अरि कै सनेह सोखि जोति कौ उद्योत करै
कज्जल तै अरि मुख मलिन करत है ॥
अमित अखंड दुष्ट बात तै बितात नाँही
राति दिन दूंनी दूंनी छबि कौं धरत है।
राजा रूप ऐसौ तेरौ प्रबल प्रताप दीप
तामै परे दुयन पतंग ज्यौं जरत है ॥१३३॥

सवैया

जांनत है जग मांनत है जग खग्ग के पाँनिप सौं लपट्यौ है।
बैरि बधू चख नीर प्रवाह सौं होत है बृद्धि पै नाँहि घट्यौ है ॥
बृंद यहै उनमांनि कहै कबि ठीक लहै उपमाँन ठट्यौ है ॥
भूपति रूप तिहारौ प्रताप बड़े बड़वानल तै प्रगट्यौ है ॥ १३४ ॥

अथ दान बरनन : कवित्त

काहू कह्यौ मेरौ एक कन्या कौ बिबाहू कीबौ
काहू कह्यौ सुत कौं जनेउ दीबौ आयौ है।
काहू कह्यौ बेद पढ़्यौ दीजै गुर दच्छिना कौं
काहू आन कासी बेद पढ़िबौ बतायौ है।।
काहू कह्यौ ब्रह्म भोज करन उछाहू चाहू
काहू कह्यौ साहू माँगै करज सतायौ है।
जोहि जिहि माँग्यौ आय ताही छिन दीनौं ताहि
भूप रूपसिंघ बीर बिक्रम कहायौ है ।। १३५ ।।

काहू कह्यौ मेरी बनता कै काच भूषन है
मनिन के भूषन कौं कन में उमाहियें।
काहू कही भूँपरी पुराँनी टपकत पाँनी
तहाँ राजमंदिर को बाँनी ठाँनी चाहियें।।
काहू कही गजबाजि चढ़िबे की हौंस मेरें
गाँम ठाँम दीजें पन पूरन निबाहियें।
रूप भूप सबके मनोरथ के पूरन कौं
कैसी कैसी दाँन की उदारता सराहियें ।। १३६ ।।

दोहा

सतरै सैरु बिड़ोतरै रूपसिंघ राजाँन।
बलंक मुलक की मुहम कौं भेजे साहिजहाँन ।। १३७ ।।

बचनिका

साहाँनसाह साहिजहाँन पातिसाह। आलमपनाह। नजर महंमद पातिसाह पर कोप कर उमराव बिदा किए। मनसब सिरोपाव दिए। बलख कौं जाइ घेरी। नजर महंमद काल की लपट सी हेरी। दोंनू फौजें मुकाबलै भईं। कायरन की सुधि उड़ि गई। सूरबीर भए साबधाँन। छूटन लगे कमाँन बाँन। छायौ आसमाँन। भभक्यौ सोर चार्‌यौं ओर। जंग जुरे जोर। हरौल होइ महाराजा सार बजायौ। नजर महंमद पातिसाह कूँ भगायौ। फते कौ बिरद हाथ आयौ। लोक लोक जस गायौ ।। १३८ ।।

कवित्त

कोप्यौ साहजहाँ जहाँ तहाँ जिन फौजैं पेली
जब तलाबेली मेली गत्तर तलक में।
रूप भूप रूप तब सब तें अगाऊ ह्वै कै
पल निखराव कीने सुनी है पलक में।।
काढ़ि समसेर झुकि झपकें झलमलाइ
चपला-सी चपल चलाई है ललक में।
कीनौ घमसाँन केते कीने कतलाँन
ऐसें बलकैं हलहलाई बलक पलक में।।१३९।।

दुसह उदासी दसा बिन चंद्रिका-सी निसा
झुरसी लतासी भासी कोपागि झलक में।
कल नाँहीं पल नाँहीं परे पल नाँही माँही
पल जल भरि जाँही पलक पलक में।।
हियैं धक धकी लियैं खाइ न कछु न पियैं
हाल हाल उचकत हिलकी हलक में।
राजा रूप तेरे डर अरिन के घर घर
ऐसैं हाल बाल अरु बालक बलक में।।१४०।।

पातिसाही मद पातिसाही के सिपाही मद
गढ़ मद गाढ़ मद गाढ़ गहि गारे हैं।
संपद कौ मद पद मद सरहद मद
रद करि डारे भारमल नंद भारे हैं।।
तेज के तुरंग मद जोर मद सोर मद
गज के-से मद ज्यौं उतारे हैं।
रूपसिंघ सिंघ मारि करज प्रहारन सौं
नजर महंमद के मद मींड़ि डारे हैं।।१४१।।

बलक सौं जेते उमरांव लचि लालच कौं
डरि उठि आए घरि हुकम कौं लोपि कें।
मन सबही सौं पातिसाँह कै बिराजी भयौ
मनसब तब छीन लीन अति कोपि कें।।

उत इत राजी फुरमाई साहजहाँ गाजी
इत राजी ह्वै कैं जर भूषन सौं ओपि कैं।
दीने गज बाजी ऐसें कह्यौ राषी साजी बाजी
रूप राष्यौ रूप पर धर पग रोपि कैं ॥१४२॥

बचनिका

षलक मैं अरिन सौं अरि अरि। लोह लरि लरि। धीर उर धरि धरि। जंग जैत करि करि। हुकम सौं आए हजूर। पौरस पूर। मुजरा किया। पातिसाह बौहत प्यार किया। मनसब दिया। देस कौं हुकम दिया। ब्रज मंडल मैं आया। स्रीनाथ का दरसन पाया। मन भाया। उर आनंद छाया ॥१४३॥

दोहा

सतरै से चतुरोतरै ब्रज मंडल मैं आइ।
निहचल मन हरि नाँम सौं पग्यौ परम सुख पाइ ॥१४४॥

नृमल मंत्र हरि नाँम कौ दीनौ गुरु उपदेस।
उपज्यौ भगति उदोत सौं पूरन प्रेमाबेस ॥१४५॥

कवित्त

गाइन के पुंजन सौं अलिगन गुंजन सौं
बन घन कुंजन सौं कुंज के बिहारी सौं।
ब्रजरज मंजन सौं मुनि मन रंजन सौं
भव भय भंजन सौं राधा रिझवारी सौं॥
जमुन तरंगन सौं सुमन सुरगन सौं
हरि जन संगन सौं अति हितकारी सौं।
निज भाग जाग्यो आन धरम भरम भाग्यो
रूप मन अनुराग्यो गिरिबरधारी सौं ॥१४६॥

दोहा

दियौ दरस आग्या दई सुपने मैं सुख साँनि।
पधराए स्रीनाथ जी रूपनगर मैं आँनि ॥१४७॥

कवित्त

आप गिरधारी गोपी गाइन उधारी ब्रज
मंडल बिहारी इहाँ प्रेम बस आयो है।
धेनु धौरी धूंवरी बुलाँहीं मुहुबरि गौरी
कपिला किसोरी सूं धरक छबि छायो है ॥
घोष ज्यौं घमंड घने घुमंत मथाने घोष
ब्रह्म घोष ब्रह्म पढ़ि हरि गुन गायो है।
नाथ जू सौं मन कौं मगन करि रूपसिंघ
ब्रज को बनाव रूप नगर बनायो है ॥१४८॥

सिसिर बसंत पुनि ग्रीषम सघन सुनि
सरद हिमंत मैं अनंत सुख छाए हैं।
जैसे जैसे रितु के बिलास तहाँ तैसे तैसे
हिय के हुलास सौं प्रकास दरसाए हैं ॥
भाव करि चाव करि सुखद सुभाव करि
रूपसिंघ जू कै गिरिधारी जिय भाए हैं।
देखि देखि जन मन मोद होत चहूं कोद
ब्रज के बिनोद रूपनगर बनाए हैं ॥१४९॥

अथ सरद रितु रास समैं कौ कवित्त

मोर कौ मुकुट कटि पीतपट बंसीबट
बिधि सूं बनाइ नटवर के बपुष कौं।
राधिका रसीली संग गोपिका सजीली रचि
भूषन बसन मन मोहन की रुख कौं ॥
राग रंग कौं उचारैं गति की तरंग धारैं
कोटि काँमु रति बारैं देखि दुहुँ मुख कौं।
सरद मैं सेत चाँदनी मैं चाँद चाँदनी मैं
राजा रूप लेत रास मंडल के सुख कौं ॥१५०॥

अथ अंन्नकूट समैं कौ कवित्त

उत्तम अनेक अंन्न बिबिध बिबेक सिन्न
भिन्न-भिन्न ढेर करि-करि कैं धरत हैं।

मेवा पकवांन फलदल आंन आंन पांन
आंनि आंनि राखे सोभा कही नां परत हैं ।।
ब्यंजन बिनांन नाना भांति के संधांन
दधि दूध मिसरी सौं सांनि भाजन भरत हैं ।
राजा रूप प्रीति रीति पागौं नाथ जू के आगें
कातिक में अंन्नकूट उछव करत हैं ।।१५१।।

अथ नौधा भगति नाम कथन : छप्पय

प्रथम बिस्नु गुन स्रवन करहि हरि कथा कीरतन ।
पूजन हरिपद पदम सदा हरि नांमहिं सुमिरन ।।
चित हित सेवन चरन बार बहुधां अभिबंदन ।
दासभाव पुनि सखा भाव आतमां निबेदन ।।
हरि भक्त नित्त अनुरक्त हिय खीर नीर जैसें खगति ।
नृप रूप करत स्रीनाथ की भाव सहित नौधा भगति ।।१५२।।

अथ स्रवन भगति : बचनिका एवं कवित्त

प्रथम स्री गिरिधारी जू की स्रवन भगति । जैसें करी परीच्छत । हित चित । तैसें राजा रूपसिंघ हरि गुन करत निति निति ।।१५३।।

सागर सुधा कौ हरि जस कौ उजागर है
निर्मल रतन गुन आगर धरत है ।
ताप हरै पाप हरै बिषय बिलाप हरै
कलि के कलाप हरै आनंद भरत है ।।
स्रवन सुबरन के कटोरन सौं भरि-भरि
अंचवत अति हिय हौंस न हरत है ।
भूपति परीच्छत ज्यों भूप रूप नित प्रति
भगति सूं भागवत स्रवन करत है ।।१५४।।

अथ गुन कीरतन भगति

दूजें भगति स्री नारायन गुन कीरतन । तासौं जाकौ निहचल मन पूरन ताकौ कीजै बरनन ।

आतम तरन परमातम करन सम
महातमहरन महातम बतायो है ।
असरन सरन सरन ताकैं कोऊ आँन
धरनि धरन हू न जाकौ पार पायौ है ॥
पल पल छिन छिन प्रतिदिन प्रति रैंन
सुपन सुपन हू मैं भुलि न भुलायौ है ।
रूप भूप भगति सूँ भागवत सुनि सुनि
सुक मुनि की सी धुनि हरिगुन गायो है ।१५५॥

अथ पूजन भगति

एक भगति हरि पद पंकज कौ पूजन । ताहि करै भक्त जन । जैसें राजा पृथु भगति करी । तैसैं राजा रूप चित्त मैं धरी ॥

एनसार घनसार कुंकम उबटि अंग
गंगजल सौं न्हवाइ तामैं मन दीनौ है ।
बसन बनाइ गन भूषन बनाइ तन
चंदन चढ़ाइ रुचि रुचि रस भीनौ है ॥
पुहुप चढ़ाइ बनमाला पहिराइ धूप
दीप दरसाइ बाल भोग आगै कीनौ है ।
पृथ्वीपति पृथु जैसे प्रभु पद पूजि पूजि
रूप भूप पूजन भगति फल लीनौ है ॥१५६॥

अथ सुमिरन भगति

और एक भगति हरि सुमिरन । तामैं दीजै मन । जैसे सावधाँन भए प्रहलाद । तैसें राजा रूप पायौ भक्ति सुधा कौ सवाद ।

गुरु उपदेस पाइ और बिसराइ ताहि
बिसरयौ न छिन हिय पाटी माँहि मढ़यौ है ।
करि मन मनका सुरति सूत सुद्ध करि
ब्रह्मगाँठि दै कै करी माला चाउ चढ़यौ है ।
रैंन दिन रस रसी रसनातें छिन छिन
फेर फेर फिरि फिरि यहै रट रट्यौ है ।

रूप प्रह्लाद जैसें धरि धर हरि और
नाँम परहरि गिरिधर नाम पढ्यौ है ॥१५७॥

अथ चरन सेवन भगति

और एक भगति चरन सेवन करन । सुष करन । दुष हरन । ताकौ जैसें कमला कें पन । तासौं तैसें अनुरागी भयौ राजा रूप मन ॥

करि थिरताई परहरि कें अथिरताई
सेवत सदाई सुष बेद मुष भाष्यौ है ।
परम सुबास परिपूरन प्रकास बसि
ताही मैं बिलास और कौन अभिलाष्यौ है ॥
कोमल अमल प्रेम रस सौं सरस भरे
सोई रस अमित सुचित चित चाष्यौ है ।
भप रूपसिंघ कमला ज्यौं कमलापति के
चरन कमल के सरन मन राष्यौ है ॥१५८॥

अथ बंदन भगति

बहुरौ एक बंदन भगति । अति हित सहित । अलस रहित । जैसें करी अक्रूर नितप्रति । तैसें राजा रूप करी दंडवत जुगति ॥

तन करि मन करि बचन रचन करि
नयन निहारि अनुहारि चित्त धरी है ।
पद जानु उर सिर भूमि सौ छुवाइ अति
मूरति मधुर सौ सुमति अनुसरी है ॥
प्रभुपद पंकज परसि कर कंजन सौं
जैसें दंडवत रचि रचि रुचि भरी है ।
पूरि पूरि हित नित प्रति ही अक्रूर जैसें
भूप रूप बंदन भगति भली करी है ॥१५९॥

अथ दास भाव की भगति

और एक दास भाव की भगति । जे हैं दास जग तिनकौ अति नीकी लगति । जैसें करी हनुमाँन सुमत्ति । तैसें राजा रूप कें निरन्तर सौं सुरति अति ॥

प्रात उठि आइ भाइ भरि हरि मंदिर मैं
प्रेम पद गाइ कैं जगाइ छबि छायौ है।
न्हाइकैं न्हवाइ तन बसन बनाइ गन
भूषन रचाइ चोवा चंदन चढ़ायौ है ।।
नाना भाँति भोग भुगताइ घन वीरा दै कै
....
आग्याकारी दास हनुमाँन जैसे नाथ जू सो
रूप भूप ऐसें दास भाव दरसायौ है ।।१६०।।

अथ सषाभाव की भगति

एक भगति सषा भाव की । चित हित चाव की । केवल स्रीनाथ ही अनुग्रह धरैं । ताही सौं सषा भाव करैं । जैसें अरजुन सौं कियौ । तैसे राजा रूपसिंघ जी कौं स्रीनाथ जी अपनो करि लियौ ।।

बिबिध बिलास मैं रहसिरहासन मैं
गोपी रस रासन मैं बात न छिपाइ की।
गढ़ गिरि घाटन बिसम सम बाटन मैं
थिर चर थाटन मैं नैक न जुदाइ की ।।
वन घन कुंजन मैं गन जन पुंजन मैं
हरि करि गुंजन मैं आइकैं सहाइ की।
अरजुन ज्यौं नाथ जू कैं निरंतर संग रह
रूप भूप जाँनि है भगति सषा भाइ की ।।१६१।।

अथ सर्बस्वात्म निबेदन की भगति

और एक भगति सर्बस्वात्म निबेदन । जातैं तन मन धन स्री नरायन ही कौं अरपन । जैसें राजा बलि कीनौ समरपन । तैसें दाजा रूपसिंघ हू कैं यहै पन ।।

वाही के निमित्त तन वाही के निमित्त मन
वाही के निमित्त जन वीति नित प्रति की।
बेद बिधि धारिन कौं ब्रज के बिहारिन कौं
धर्म्म अनुसारिन कौं संपति सुमति की ।।

सब धन धाँम काँम काँमना समरपन
हरि ही के नाँम थित छिति छितिपति की ॥
बलि जैसें नाथ जू के रूप बलिहारि रूप
सरबस आतम निबेदन भगति की ॥१६२॥

बचनिका

जैसें नवधा भगति मैं प्रबीन। स्त्रीनाथ जू सौं करि मन लीन। सुनि सुगीता। भागवत गीता। स्त्रवन कीनौ भारथ। तातें साधि लीनौ स्वारथ परमारथ। बैस्नव मारग के अनुसारी। हरिजन हितकारी। परम उपगारी। अंबरीष अवतारी। सारी बसुधा के रूप। अनूप भूप राजा रूप ॥१६३॥

दोहा

संवत सतर छहौतरें धरी मुँहम खंधार।
राजा रूप बिदा किए पातिसाह करि प्यार ॥१६४॥

साजि हेम नग साज सूँ बाजिराज गजराज।
दिए षंधार बिदा किए साहजहाँ सिरताज ॥१६५॥

बचनिका

एक लाष असी हजार असबार। नबाब मुकरब षाँन नबाब किलीचषाँ से सिरदार। भले भले उमराव भए ताबीनदार। गहै सार। मजल दर मजल जाइ पौंहते षंधार। दुहूँ तरफ भइ बाँनन की मार। हाँ हुँसियार। मरदो षबरदार षबरदार। बोले बीर बार बार। मार देते देते भए षंधार पार। बीच ही किजलवास की फौजें धाईं। लड़ें षूब लड़ाई। जुदे जुदे हथियारन की मार मचाई। भले भले यारन यारन की फते पाई ॥१६६॥

सवैया

पौंन प्रताप के जोरन सौं झकझोर हलोरन मारि हलाई।
पारि महा भय भौंरकें भौंमरें चाक फिरे तिहि ताक फिराई ॥
भूपति रूप जहाँ बिचर्यौ अरि की सुधि बुद्धि सबें बिसराई।
षग्गकी धार मैं डारि धकाई षंधारी समेत षंधार बहाई ॥१६७॥

दोहा

सतरै सै सतहोतरै आए साह हजूर।
साहिजहाँ नृप रूप सौं प्यार कियौ भरपूर ॥१६८॥

बचनिका

महाराजा रूप हजूर आया। हजरत फुरमाया। अरज कीजै। जु चहियै सु लीजै। पातिसाह प्यार की नजर धरी। तब कर जोरि अरज करी। षातर बीच आवै तौ सबलसिंघ भाटी जैसलमेर पावै। अरज माँनी। बात जगत जाँनी। जेती राजधाँनी। जेते षाँन षवानी। तिनके मुंह याही बाँनी। मरदो उपगार कीजै तौ कीजै। जस लीजै। जैसा राजा रूपसिंघ उपगार कीया। जस लीया ॥१६९॥

कवित्त

आवत ही पास नरबर सौं निवास दियौ
ऐसौ प्यार कियौ चाही सोई बात लही है।
पीछे पातसाह सौं बजिद ह्वै अरज करी
साहजहाँ सबही अरज करी सही है॥
रावल कहायौ गोरहरा गढ़ पायौ लोक
लोक जस गायौ रबितल बात रही है।
भाटी सब ले समाड देस कौ नरेस भयौ
क्यौं न होइ भूप राजा रूप बाँह गही है ॥१७०॥

छप्पय

तरबर तर लगि तंतु लता पसरंत सिषर लग।
जलज बीज जल मूल जलहि परमाँन बिदित जग॥
बाँमन कर कौ बंस बढ़्यौ ज्यौं बढ़त बिस्नु बप।
सदगुरु निकट सु सिष्य जड़ सुसम हौंहिं ग्यान जप॥
रूपसिंघ संग त्यौं सबलसिंघ पुहँवि भयौ जदुबंस पति।
संवत बड़न तेई सदा बड़े हौंहि यह बचन सति ॥१७१॥

अथ चंद्रायन कुण्डलिया : भाषा मारवाड़ी

जलह प्रमाँणै पाइणी कुलह प्रमाणै मत्ति।
ज्याँ जेहा नर सेवियाँ त्याँ तेहा फल पत्ति॥

तेहा फल पत्ति सांप्रति देखौ तह्रति ।
भारमल नंद उपगार कृत तेण भति ॥
सबल नृप किय भूप भाटी सबल ।
तिती पोइन बधै जितौ परमाँन जल ॥१७२॥

दोहा

सतरै सै रुनबोतरै दूजी बार खंधार ।
राजा रूप बिदा किए संक बधी सिरदार ॥१७३॥

गहर सहर लाहोर मैं लहर बहर जय लाह ।
महर नजर मनसब दियौ साहिजहाँ नरनाह ॥१७४॥

कवित्त

जब फरमावै तब बाँकी ठौर दौरि जावै
बोलबोला करि आवै साहि बात चाही कौ ।
मालिम जगत अरि जालिम करत जेर
सालिम सरस जस जपै जग ताही कौ ।
गाढ़े काँम करिबे कौ लोह छोह लरिबे कौ
आवै पातिसाह कौं भरोसौ एक याही कौ ।
तिहजारी जानि दै हजार तीन असबार
नौबत दै कियो रूप रूप पातिसाही कौ ॥१७५॥

साहि सकुचाँनौ औ सिपाह सकुचाँनौ सब
जीय मैं नजक सह हीय मैं हलचली ।
भूले सुधि भूले बुद्धि भूले षाँन भूले पाँन
भूले अभिमाँन तन मन मैं कलकली ॥
बाँके असबारन सौं बाँकी तरबारन सौं
है की षुर तारन सौं दबटि दलमली ।
कोप करि रूप चढ़्यौ सुनि कै षंधार बीच
जाँनी हैं षलक परी षलकें षलभली ॥१७६॥

दोहा

फेरि घेरि षंधार कौं फौज फेरि चहुं फेर ।
झेरि झेरि समसेर सौं जेर करी बिन झेर ।।१७७।।
कायम करि गज तोल कौं तह तिसरस किय तोल ।
कियौ रूप पतिसाह कौं ऊपर बोल अडोल ।।१७८।।
तरबारिन सौं तोरि अरि फेरी आँन अनूप ।
पेसकसी ले अरिन पैं आए राजा रूप ।।१७९।।
पाइ हुकम पतिसाह कौ आइ कियौ उछाह ।
सतरसै नव ऊपरै तीज दिवस सुदि माह ।।१८०।।

कवित्त

जैसें राव जोध जोधपुर कौं सुबस कीनौ
जैसें राव बीकै बीकानेर नाँव ठायौ है ।।
जैसें महाराजा कुल भूषन किसनसिंघ
....।।
तैसे भारमल नंद इंद इंदपुर सम
साहिजहाँ पातिसाह आप फुरमायौ है ।।
आप ही के नाँम अभिराँम नाँम राषिवे कौं
राजा रूपसिंघ रूपनगर बसायौ है ।।१८१।।

दोहा

सतरै सै दाहोतरै मुहम तीसरी बार ।
तोरि बाँन तरबारि सौं ख्वार करी खंधार ।।१८२।।
सतरै इग्यारोतरै दिल्लीपति दरगाह ।
तेज झलाहल तप प्रबल साहजहाँ पतिसाह ।।१८३।।

सवैया

स्वामि के काँम कौ पास दयौ है षंधार से माट मैं जंग जमायौ ।
दुरजन के मुष कौ जल घोरि कै षग्ग के घाइन जोरि घुमायौ ।।
छोह सौं लोह के बोह दीए अरु नेह दै दै चटकीलौ बनायौ ।
छत्रिय धर्म कौं भूपति रूप भलौ रंग तीसरी बार चढ़ायौ ।।१८४।।

कवित्त

साहिजहाँ पातिसाह राँना सौं रिसाँना
तब बदन तै रोस भरे बचन बगबगे।
बैठे आँम षास बौले मुहीम कबूलौ कोऊ
सबही के मन बात सुनि कै डगडगे ॥
जाके धर बर गिरबर लसकर बर
सोच ही मैं रहि गए लोचन टगटगे।
हाँ कही न नाँही कही सब ऐसें भए जैसें
चित्र के से लिषै किधौं काहूक ठगठगे ॥१८५॥

दोहा

सजि पौरिस दिल्लीस सौं करी अरज कमधज्ज।
कज्ज सुधारै स्वाँमि के लीनें भुज रज लज्ज ॥१८६॥

कवित्त

पाँऊँ जौ हुकम तौ न लाँऊँ बार एक पल
जहाँ पाँऊँ तहाँ तें ली आँऊँ हेरि हेरि कै।
धर चूरि गिर चूरि तरल सकर तोरि
सीधे करि डारौं गज बाजि पेरि पेरि कै ॥
सदन तें बन माँहि बन तें छपन माँहि
छपन तैं घेरि घाटिन मैं घेरि घेरि कै।
रूप कहै खग तें खूमाँन कौं खिसाँनौ करि
फिरकी फिरत त्यौं फिरऊँ फेरि फेरि कै ॥१८७॥

दोहा

ठौर ठौर की ठौर कौं करौं और की और।
एक दौर के दौर मैं चौर करौं चीतौर ॥१८८॥

बचनिका

यह अरज सुनि च्यार हजारी का मनसब किया। माँडलगढ़ बतन करि दिया। पर भूमि जाइ डंका बजाया। बंस कौं पाँन चढ़ाया। सुभ

साइत पाई। तब ही करी चढ़ाई। गढ़ पर चढ़ि नौबति बजाई। सजना बाँटी बधाई। दुसमनाँ दहसत पाई ॥१८६॥

कवित्त

सुनत अबाज रिपु राज तजि लाज तजि
राज साज तजि बंधु जन बिछुरत है।
चमकि चमकि जागै जागि जागि उठि भागै
भागि भागि गिरि बन घन मैं दुरत है।
भारमल नंद इंद महाराजा रूपसिंघ
जय जस जुत कबि बचन फुरत है॥
अरिन के उर पर घन के-से घाइ घुरै
घन की-सी धुनि तेरी नौबति घुरत है ॥१६०॥

महाराजा भारमल नंद राजा रूपसिंघ
एक अद्‌भुत बात सुनी चित्त चाह तैं।
नई नई गति तेरी नौबति बजति जब
निपट निसंक अंक डंका डंक आह तैं॥
दूरि दूरि दुरि रहैं तऊ खन घाइन तैं
अरिन के हीय घट फूटैं ठीक ठाह तैं।
जन जन बन ताकें के तिनकी सु बनिता कें
नीर कौ प्रवाह बहै नैंनन की राह तैं ॥१६१॥

आयौ रूपसिंघ गढ़ माँडिल बतन पायौ
पलक मैं अरि तन करि है पुलक मैं।
जाकौ लहसकर दरबार सरबर जल
सोषि लैहै कुंभज ज्यौं एक ही चुलक मैं॥
षेग षुर तारन सौं चूरि है पहारन कौं
राँना का षजाँना षैंचि भरि है गुलक मैं।
पुर पुर पौरि पौरि घर घर दौर दौर
ठौर ठौर बातैं भईं मेवारै मुलक मैं ॥१६२॥

पात मैं दुरायै गात पाइ लपटायै पात
पातन के छतनाव नाय सीस छये हैं।

पात ही मैं साक पात षातू कहूँ पात ही मैं
पाँनी पीयैं पात ज्यौं कँपात हीय हये हैं ।।
पात ही के सेज पर परे तरफरे रात
षेद सेद हरिबे कौं पात बात लये हैं ।
राजा रूपसिंघ तेरे त्रास बस बन बसि
डरि अरि डार-डार पात-पात भये हैं ।।१६३।।

कहौं छोरे हाथी कहौं छोरे घोरे ताती अरु
कहौं छोरे साथी[1] जोरे हाथी जन-जन मैं ।
कहौं छोरे बास कहौं छोरे हैं सुबास कहौं
छोरे हैं निवास सोच कीने मन-मन मैं ।।
कहौं छोरे बाँना कहौं छोरे हैं षजाँना कहौं
दाँना कहौं षाँना कहौं छोरे धन-धन मैं ।
महाराजा रूपसिंघ तेरे डर तैं डराँना
फिरत दिवाँना भये बैरी बन-बन मैं ।।१६४।।

दोहा

माँडलगढ़ की तलहटी फली फौज सओज ।
अबलिया पिय कौं कहत है कछुक बात मैं चोज ।।१६५।।

सवैया

हौ तुम सूर सधीर हौ पै मुँह तैं जिन जुद्ध की बात कढ़ौगे ।
भूपति रूप जहीं बिरच्यौ तिनके षग तेज के दाह डढ़ौगे ।।
क्यौं अनुकूल पनो रहिहै तुम और ही के मनमोह मढ़ौगे ।
कै हौं सुजाँन अपछर के बर नाह निदाँन बिमाँन चढ़ौगे ।।१६६।।

दोहा

कह्यौ न माँन्यौ तीय कौ गयौ रंग रन पीय ।
माँन बुझावत मोह बस दे उराँहनौं तीय ।।१६७।।

पाठांतर—१. हाथी होत होरे हाथी ।

सवैया

जाइकैं भूपति रूप सौं नांहि मिलौं लरिहौं कबहौं नांहि भागौं।
यौं कहि सार की धार प्रहार तें भूझि परे निबह्यौ अनुरागौं ॥
मेरे कहे जिय मांनि बुरौ कहा सोइ रहे मैं पिय जागौं।
जोई भई सु भई अब हमन मांन कौ छांड़ि बियै किन लागौं ॥१९८॥

दोहा

रूप बिरत्ता राठबर[1] प्रगट रहि सकै नांहि।
हिम्मत हारै दोइ है[2] रांना छप्पन मांहि ॥१९९॥

दोहा

रांन राज हैरांन करि चढ़ि चित्तौर करि चूर।
आए राजा रूपसिंघ स्रीपति साह हजूर ॥२००॥

बचनिका

एक बषत बिलंद बषत। साहिजहाँ पातिसाह बैठे हे तखत। मुख पर नूर बरखत। सबके मन करषत। हियैं हरषत। भले-भले मरदौं की हिम्मत कौं परखत। कसै हैं जैसें दरियाब गहर। लेत लहर। जिस पर महरबांन तिस पर महर नजर। जिस पर नाँ महरबांन तिस पर कहर नजर। ऐसें परै जैसे बजर। किसी पर निमाँसाँम किसी पर फजर। एते बीच कछूक चूक पर परुष रुष हेरि काढ़ि समसेर। साहि सनमुष धायौ जस रूप। तिन्है मारि पायौ जस रूप ॥२०१॥

कवित्त

साहन के साह साहजहाँ पातिसाह बैठे
हुते आँब षास सीस छत्र छबि छायो है।
तहाँ जसरूप तिहि बेर रोष रुष हेरि
गहि समसेर साहि सनमुष धायो है ॥
षाँन मीर राव उमराव दाब चूके सब
राजा रूपसिंघ कैं बिरद हाथ आयो है।

पाठांतर—१. बीर राठौर है। २. यों रहै।

मारि तरबारि अरि मारि उर बार राष्यौ
ऐसौ कियौ बार-बार पार पहुंचायो है ।।२०२।।

सवैया

साहिजहाँ दरबार कियौ जहाँ ठाड़े हैं ठट्ट हजारी सदी के ।
साहि सनमुष लै तरबारि धस्यौ जस रूप बिचार बदी के ।।
वृंद कहै न लषो किनहू पतिसाह लषे भए टूक जदी के ।।
तेज कृपाँनी तें दुष्ट के देह के रूप किए तट दोइ नदी के ।।२०३।।

कवित्त

बैठे आँब षास साहिजहाँ सु बिहाँन ताकी
देषि कै करूर दीठ ढीठ मन लहिगौ ।
वृंद कहै सबन कौं छेकि जसरूप जब
साहि सनमुष करबाल कर गहिगौ ।।
ऐसी लघु लाघबो सौं कमध कृपाँनी ठाँनी
साहि लौं न जाँन पायौ बीच ही सु रहिगौ ।
देष्यौ पातिसाह स्वामि द्रोही के सरीर पर
रूप स्वाँमि धरमी कौ अदृष्ट, चक्र बहिगौ ।।२०४।।

बचनिका

आँब षास मैं जस रूप कौं मारि । बर बीर बैर संभारि । डेरौं आइ मूंछौं बल भरराइ । पाग मसकाइ । बाँह चढ़ाइ । सबकौं सुनाइ । कोप सौं ओपि बचन बोले सोच संकोच के कपाट षोले ।।२०५।।

कवित

सोई रजपूत है सपूत भूप रूप कहै
जामैं अंग रंग रजपूती कौ उदोत है ।
जैमल लीए हे राव माल के नगारे भारे
सारे जग अजौं ऐसी बातन कौ सोत है ।।
छोह छक लोह छक-छक पाइ क्यौं हौं बैर
लीबे कौ धरम कहा और कहा गोत है ।

कहबत सुनी रन बैर न पुरानै होंहि
सौ बरस बीतें जाकें एक दाँत होत है ।।२०६।।

बचनिका

यह बात कही। सब उमरावौं सुनि करी सही। फौजबंधी की मसलति करते थे। जुद्ध की बात चित मैं धरते थे। एते बीच। चाहते थे सोई पातिसाह फुरमाया। आगै सिंघ भुषा था ही अर भष पाया। सब उमरावौं अरज करी महाराजा सलाँमत। चाकरा कौ सिरपाव दीजै। दुसमन के सिर पाव दीजै। अब बिलंब न कीजै। जुद्ध कीजै। अचलदास कौं मारि बैर लीजै। बड़े लोक कहते हैं। पंथ पाए बैरी धाए। लीजै चाट चढ़ाए ।।२०७।।

छंद नीसाणी

साहि हुकुम स्त्रीनाथ देह थमत्थै धारै।
राजा बोल रहावणे इहु बोल उचारै।।
क्या भाई संबंध की क्या बंधु पियारे।
बीराँ अग्गैं बैर दै सब लग्गै खारे ।।२०८।।

वे कहै बरियाम है जिन बैर बिसारे।
महासिंघ रघुनाथ दा जोधा जोधारे।।
जिती गल्लाँ अष्षियाँ कित्ती सब आरे।
अचला उप्पर भेजिया दे ल्हसकर लारे ।।२०९।।

अग्गैं भी दृदा हरे स (?) यौं दे भारे।
बल भरिए बल छल भरे बिष भरिए भारे।।
रूप बिस्ता पंष राव चित्त बेघ चितारे।
जाइ घेरी पिपलाज नू तत घेरे सारे ।।२१०।।

अचला भीतर आहु रे करि बंध करारे।
गोले छुट्टे नालि दे दोडे दिसि च्यारे।।
सोर भभक्के सोर सौं हुब घोर अँधारे।
कोट ढहे इक चोट मैं पड़ गए बगारे ।।२११।।

बान बिछुट्टे एहड़े झड़ तुट्टे तारे।
यौं तारे भल्लाँ पहाँ हल्लाँ हलकारे॥
सूरा पूरा सत्थियाँ हत्थी हथियारे।
सार संबाहैं सामुहै बाहैं बाकारे॥२१२॥

झडफड षग्गां औ झंडाँ झँडिपडि झूझारे।
हत्थाँ बत्थाँ लत्थ पत्थ जुडि जत्थ जुहारे॥
कर सिर पै धड़ कटि परे भटघट भंभारे।
कित्ता षेत भयाँबणा बहि सहिरौं नारे॥२१३॥

धाए पलचर मेटि षष आभिष आहारे।
जिता भारमल नंद जंग अणभंग अषारे॥
मेडतिए थे जो मरद सो रद करि डारे।
करि फत्ते जिहि मालदे लित्ते नग्गारे॥२१४॥

कवित्त

साहि के हुकम पर धरि इक तारी और
कछु न बिचारी है मदति साहि दल की।
स्वाँमि धर्म धारी रूप जाँनै पातिसाही सारी
कहाँ लौं बड़ाई कीजै भारी भुजबल की॥
कलह करारी बार कीरति कौं बिसतारी
खोदि खोदि खुरनि उखारी जर खल की।
अचल समेत पिंपलाज चढ़ि मारी पुनि
ठौर करि डारी चल बिचल अचल की॥२१५॥

छते ति हजारी चौहजारी औ पंचहजारी
हफत हजारी हू राठौर साहि दल मैं।
काहू सिरदार ऐसी बात न बिचारी भारी
लरि बैर लीजै नाँऊ कीजै रबितल मैं॥
बैरी कौं बराह रूपसिंघ नरनाह दुहूँ
राह मैं सराह जाकैं जोर बाहुबल मैं।
नाहर की डाढ़ मैं तें गाढ़े गढ़ गाढ़ मैं तें
लीने राव माल के नगारे एक पल मैं॥२१६॥

अरि सेना दही डारि रन भूम थाँनी बीचि
उनही के मुष कौं उतारि डार्यौ पानी है।
बुधिबल नेता तरबारि रई गहि लई
नई नई गति चहूँ तरफ फिराँनी है॥
घाइन घुमाइ हाथ चपल चलाइ मथि
माँषन सुजस लीनौ बात जग जाँनी है।
भारमल नंद इंद राजा रूपसिंघ ऐसे
बैरिनि बिलोइ राषी कलि मैं कहाँनी है॥२१७॥

महाराजा रूप भुज बिक्रम अनूप रूप
ऐसौं कौंन भूप सरभर कौं बिचारियें।
कोपु करि उर पर पर पुर है उजारे
जारे पर पुर जैसें भुंपरी कौं जारियें॥
मारि तरबारिन सौं अरिन के तोरे गाढ़े
गढ तोरे ज्यौं खिलौना तोरि डारियें॥
बर की-सी जर जेवे जबर सबर अरि
ऐसैं ते उखारे जैसे मोथ कौं उखारियें॥२१८॥

दोहा

सतरै बारह जेठ बारसि दिन सु प्रमाँन।
पींपलाज फत्ते करी रीझे साहिजहाँन॥२१९॥

बचनिका

पींपलाज फत्ते पाई। गढ़ माँडिल आई नौबति बजाई। भादव सुदि तीज पुत्र जनम भयौ। माँनूं आदीत उदयौ। ताकौ नाँम माँनसिंघ दयौ। महाराजा रूप कें मन आनंद छयौ। अति उछाह कीयौ। अनेक द्विज जाचकन कौं दाँन दीयौ। जस बास लीयौ॥२२०॥

कवित्त

बरन बरन पट मंडत बिताँन सोई
नाना रंग बादर सरूप दरसायौ है।
बाजत अवाज अति गहरे नगारे सोई
गाजत गहर सुर सघन सवायौ है॥

मोहरें रुपयैन कौं भूमि भर लायौ द्विज
जाचक पपीहा मोर बोलि जस गायौ है ।।
महाराजा रूपसिंघ मौंनसिंघ के जनम
इंद्र अवतारी इंद्र की-सी छबि छायौ है ।।२२१।।

बचनिका

वाही संबछर मैं बिजै दसमी के दिन । कुल देब्या कौ करि पूजन । जलूस करि । आनंद उर धरि । रूप भूप आइ बैठे सिंघासन ऊपरि । छत्र चबर । असिबर । हयबर । गयबर । नगारे नीसाँन । राज लच्छ के कीए बेदोक्त पूजन बिधाँन । तिस समैं सुरिंद्र समाँन । बिराजमाँन । रूप राजाँन । तहाँ दीए अनेक इनाँम । इकराँम ।।२२२।।

कवित्त

जहाँ राजैं हंस बंस जहाँ सोम बंस अंस
मंगल करन जहाँ मंगल प्रमाँन है ।
जहाँ बुध जहाँ गुरु जहाँ कबि जहाँ ब्यास
परम प्रकास बिधि सिव कौं बिधान है ।।
जहाँ मंजुघोषा उरबसी औ सुकेसी मिलि
नाचत बजावत करत गुन गाँन है ।
महाराजा इंद्र के समाँन राजा रूपसिंघ
इंद्र सभा जैसौ जाकी सभा कौ बषाँन है ।।२२३।।

बकसीस बरनन

जगमग जोति भरे षासे सिरोपाव नव
अछी अछी बरछीनौ अनीयारी सार की ।
आरबी ऐराकी रंग रंग के तुरंग नव
हेम नग बारीनौ कटारी तेज धार की ।।
बिजै दसमी के दिन जोधा जस करन कौं
बिसेष बधारैं दई रेष नौ हजार की ।
भूप रूप करी है अनेक बकसीस तामैं
एक एक ऐसी बकसीस एक बार की ।।२२४।।

पत्थर की लागैं ताकौं दोइ सै कौ गोली लागैं
रुपीए हजार कौ इजाफा करै भाव कौं।
तीर लागैं ताकौं द्वै हजार कौ बधारा सेल
लागैं तिहजार कौ बधारा देत चाव कौं ॥
षरग कटारी लागै च्यार पाँछ हजार की
रेष कौं बिसेष करै दै कै सिरोपाव कौं।
कीजै चाकरी तौ रूप भूप ही की कीजै जाकैं
चाकरी की दादि दीजै ऐसैं उमराव कौं ॥२२५॥

जंग जुरैं पत्थर की लागैं ताकौ सौ रुपैए
गोली लागै दोइ सौ इजाफै कीजियतु है।
तीर लागैं तीन सौ रुपैए तरबार लागैं
रुपैए हजार यौं बधारै लीजियतु है ॥
एते पर जाकौ जैसौ तोल जाकौ तैसी रीझ
प्यार की नजर देखि देखि जोजियतु है।
कीजै चाकरी तौ भूप रूप ही की कीजै जाकैं
चाकर कौ चाकरी की दादि दीजियतु है ॥२२६॥

बचनिका

एक बखत बब्बर हमाँऊ अमीर तैमूरलंग के बंस अंस तखत दिली। बखत बली। साहिब किराँनसाँनी। मेरमाँन माँनी। साहाँनसाह। साहजहाँ पातिसाह। आफताब से बिराजमाँन। उदै अस्त लौं बखाँन। जाकौ तेज प्रताप प्रकासमाँन। सारे जहाँन। मग्गह बंगाल। कामरू नेपाल। चीन महा-चीन भुटंत। कासमीर कांबोज परजंत। उजबक ईराँन। तुरक्क तूराँन। खुरासाँन। रूम साँम। तहाँ तक नाँम। किजल बास किलमाक। आरब्ब ऐराक। तहाँ तक जाकी धाक। बंगस। हबस बलंदेज। फिरंग अँगरेज। सोरठि गुजरात। संक संकात। बगलाँना। थरहराँना। कुंकन कुमिलाँना। लाट कणाट लटपटाँना। तिलंग अंग कुसंग। तहाँ परै भंग। टगटगे सूपकन इक रंग। बाँनूं लष मालव औ सहस मेबार। नवकोटी मारबार। ढूढार नागर चाल। मेवात बहुत्तरि पाल। देस देस जाकी आँन दाँन। माँनै हींदू मुसलमाँन। मुगल पठाँन। ईराँनी तूराँनी। खुराँसानी। खूब-खूब

खाँन खवाँनी । हबसी अरमनी । रूमी रूहिल्लेपनी । हाजरि रहैं छोड़ि छोड़ि मनमँनी । दीवाँन बकसी । मौजूद मुनसी । हिंदुस्थाँनी । राजधानी के धरनहार । सिरदार । छत्रीस बंस के मौर । भले भले राठौर । सीसौ-दिए गौर । कछवाहे तेगबाहे । सोलंषी पमार हाडे । काँम की बार आवै आडे । तूँबर चहुआँन । लीनें किरपाँन । सदी तें लैकै जहाँ तक नौ सदी ले कै हजारी जहाँ तक हफत हजारी । राँना राजा राव ऐसे-ऐसे उमराव । निजूमी हकीम । जौहरी मुकीम । नजरबाज । गोलंदाज । छत्र बरदार । चँवर बरदार । तरबार बरदार । बरछी बरदार । ढाल बरदार । गुरज बरदार । तबलदार । परदार । छड़ीदार । इतमाँम के करनहार । अपने-अपने औहेदे सें खबर-दार । अपनी अपनी मिसल ठाढ़े । गाढ़े गढ़ कोट ढाहिबे कौं गाढ़े । हजरत के हरदम । हुकम हुकम । हाथ जौरें । मूढ मरद के माँन मोरें । आलम पनाह के मुख नूर । भरपूर । जागै । जोति जगर जगर । सब देखि रहे टगर टगर । सौंधे सुवास अतर । खिवै ऊँद अतर । अगर तगर । फैली सुवास नगर नगर । एक ऐसे हैं जिनके आगें दुसमन होइ जाइ जैसे सगर । एक ऐसे हैं जैसें जल अनल के बीच कगर । एक ऐसे हैं जालिमौं कौं दबटि मारें । जैसें लवा कौं झपटि पछारें । लगर झगर । नौबति बाजती है । घन की-सी तरह गाजती है । ऐसे आँब खास मैं हजरत । पातसाही के हजरत । साहिजादा दारासिकोह हजूर । तिस सौं पातिसाही का मजकूर । साहिजादा सूजा सकस । जिन पूरब करी बस । गुजरात मैं मुराद बकस । धरकस । सबसौं करें बरकस । दखिन मैं औरङ्ग साह । रत्ता के एक रहमाँन के राह । पातिसाहन की न धरै चाह । हाथ तसबी गजगाह । राखै सिपाह । मुलक-मुलक के नलुबे आवते थे । हजरत कूँ हकीकत गुदरावते थे । देस-देस कूँ फरमाँन भेजते थे । डाकचौकीए चलते जाते थे । मुजरे पर एक कूँ मनसब देते थे । तकसीर पर एक का मन सब छीन लेते थे । करते थे अदालत । अदल ईमाँन मैं साबत । पातिसाही मैं सबकूँ आँराँम था । जैसा बसंत का आराँम था ।

एते बीच रित सौं पलटि गई । किधौं इधर की छाँह उधर छई । डाकचौकी बर-खबर आई । सो हजरत नैं पाई । स्याहजादे बागी हुए । जुध के सामान किये । हजरत यिनकी फिकर करते थे । जुध की ततबीर जिय मैं धरते थे । हजरत दारासाह कौं कही । और लोगौं ने नाँ लही । एते बीच साहूकारौं के खबर आई । सो साहूकारौं घर बिध की बिधूबकसी पास

अरज कराई। मूढ़ लोगौं नहीं पाई। अली ऊपर सौं बकसी अरज पहुंचाई। इसारत जताई। हजरत सलाँमत। च्यार सेर बच्चे पालि कीए थे दुरस्त। तिन मैं तीन भेजे थे गस्त। ते हाथ तैं छूटि भये मस्त। चलावते हैं दस्त। भए जबरदस्त। इनका इलाज कीजै न कीजै दरगुजस्त। राखियै जेर दस्त। तिन मैं एक तौ सेर की ठौर आइ बैठा। सब के दिल मैं डर पैठा। तिस सेर का बाट अटकाया। और ही बाट चलाया। गजराजकूँ बिसतारता है। जिसके जेई पाँनि तेई पाव तिसकू पारता है। जैसी खबर आई। तैसी गुदराई। पीछैं हुकम इसारत पाई। यह फुरमाई खूब इलाज करूँगा। घेरि कैं जंजीरौ के बीच जरूँगा। सब उमराव रुकसद किए। साहिजादा दारासिकोह। महाराजा जसवंत सिंघ। मिरजा राजा जेसिंघ। इनकूँ गुसलखाँनैं बुलाइ लिए। फुरमाया 'हकीकत पाइश' 'हाँ, हजरत सलाँमत।' 'कुछ दिल बीच आई' ? 'कुछ न आई'। महाराजा अरज करी 'हजरत सलाँमत। इस बात कौ क्या चित्त बीच ल्यावै। जिस चाकर कौ फुरमावै सोई जङ्ग करि पकरि ले आवै। या पीछे ही कूँ हटावै। हजरत सलाँमत। इस बात का ऐसा ही खेल है। पातिसाही के लियै मेल ही मैं अमेल है।' जैसी हुई आई। तैसी ही कहि बताई ॥२२७॥

पैडी छंद

लडिके किधाँ तिय लई नेस तैं निकारे।
राम गरीब नवाज सौं सुग्रीव पुकारे।
बंधु बिरोधी बालि के हरि प्राँन प्रहारे
रज्ज पियारा रज्जियाँ भाई दु पियारे ॥२२८॥

बली बिभीषन बंधु के सम्बन्ध बिसारे
आइ मिले रघुनाथ सूँ घर छिद्र उघारे।
राघव कुंभकरन से रावन से मारे
रज्ज पियारा रज्जियाँ भाई दु पियारे ॥२२९॥

कौरव दुरजोधन किए अपकज्ज अपारे
पासे छल छलि पंडवाँ बनबास बिहारे।
पारथ भी भारथ पथ छोहणि खैकारे
रज्ज पियारा रज्जियाँ भाई दु पियारे ॥२३०॥

अचरिज क्या इस बातदा अग्गे चलि आई
वहि वहि लेहिं बुराइयाँ भूलि जाँहि भलाई ।
जिन्हों लालच तिन्हौं क्या संबंध सगाई
रज्ज पियारा रज्जियाँ भाई दु पियारे ॥२३१॥

जडता अग्गें जोक ज्यूं कुछ बुज्झै नाँहीं
बिषदा लग्या घाव सो फिरि रुज्झै नाँहीं ।
कम्म कमाए पावदे ज्यौं गुज्झै नाँहीं
लालच अग्गे लोगनूँ त्यौं सुज्झै नाहीं ॥२३२॥

वचनिका

यह सुनि फरमाँन भेजि सताब । ठौर ठौर के बुलाए राजा राव नवाब । फरमाँन तें पहलें ही समैं पाइ महाराजा रूप आँनि पहुँचे । आवत ही पंच हजारी के मरातब कूँ पुँहचे । पातिसाह राजा जेसिंघ कौं पूरब कौं बिदा कीया । साहिजादे सलेमा सकोह के साथ दीया । भले भले दाँने मरदाँने उमराव ताबीन लै कै नगारे पै डंका दै कै चले । खल दल खलभले । साह सूजा के पुहची खबर । ले चला लसकर सबर । इधर सें यह गया । उधर सें वह आइ मुकाबलै भया ॥२३३॥

पद्धडिका छंद

सूरति सकोह सलेमा सकोह । छाहे छछोह जेसिंघ छोह ।
पातिसाह हुकम पौरिस्स पूर । सन्नाह सजे गजवाह सूर ॥२३४॥

उस तरफ साहि सूजा अबोह । दुँहुं ओर नगारे धुरे दोह ।
उड़ि सोर अराबा आसमाँन । अरराान लगे धर गिरि अमाँन ॥२३५॥

छुट्टंत बाँन तनत्रान छेद । छुट्टंत प्राँन अरि धर बिछेद ।
हुइ जुद्ध क्रुद्ध हुइ बीर हाक । छकि भिरैं गिरैं भट लोह छाक ॥२३६॥

दूसरौ माँन राजा दुबाह । अरि हराँ हरै गहरै उछाह ।
हथवाह करै कछवाह हत्थ । तारीफ करै भट जत्थ तत्थ ॥२३७॥

साँमुहै लरैं सूजा सरोस । जुरि जंग अंग सूरत्त जोस ।
तत बीर तेज गति बहै तोर । धरपरै एक इक धरै धीर ॥२३८॥

हथबत्थ होइ करि करि हमल्ल । चल्ल सौं करैं जुरि जुद्ध मल्ल ।
मह्हि रची परसपर खग्ग मार । मँडि रही धरनि नभ खग्ग मार ॥२३६॥

सावंत सूर बाहंत सेल । उर बार पार डारैं उथेल ।
गहि गहि गरूर बाहैं गुरज्ज । भुज टूटि परैं मानूँ भुरज्ज ॥२४०॥

उलटे पातिसाही दल अपार । भट लरत भिरत पर परैं भार ।
सुलतांन फते जैसिंघ सत्थ । सूजै सिगस्त खाई समत्थ ॥२४१॥

बचनिका

एते बीच यह अरज पहुँचाई । हजरत सलाँमत । ऐसी खबर आई । पातिसाही दल फते पाई । सूजे सिकस्त खाई । यह सुनि पातिसाह खुस भए । खुस बखत । आइ बैठे तखत ॥२४२॥

पैडीं छंद

साहिजहाँ जेहा सुरिन्द एहा अवतारी
बषत बली बैठा तपत छत्रपति छत्रधारी ।
जोति जगमगैं नग जगे जगमग जरतारी
हथ जोड़ें ठाड़े जहाँ पंच हफत हजारी ॥२४३॥

बंकी रत्ती बजर-सो करि नजर करारी
सबनुँ हलल सुनाइ कैं इह गल्ल उचारी ।
जित्ती धर औरंगजैबे कित्ती असबारी
दिल्ली उप्पर दौर किले लसकर लारी ॥२४४॥

महाराजा उस साँमुहैं तुम करौ तयारी
है तुमसाँ खातर जमाँ हर भाँति हमारी ।
हौण न दीज्यों हुकम है नरबदा बारी
सार गहौ सिरदार हौ यह बार तुम्हारी ॥२४५॥

महाराजा अरज

दिल्ली सरहंदा हुकम सिर उप्पर ठाँऊँ
बाँकी ठौर जहाँ भेजै तहाँ जाऊँ ।

आइ न सबके बार जेहि फिरि पार पुछाऊँ
फुरमावै पतिसाह तौ दरगाह पठाँऊँ ॥२४६॥
करि लित्ती में लज्ज कज इह अरज अगाऊँ
सनमुख औरंगजेब सूँ रन जंग रचाऊँ ।
हूँ हुकमी हजरत दाट्टक सारति पाऊँ
तो गोसे बिच्च कमाँन दे गहि एँचि लि आऊँ ।२४७॥

पातिसाह बचन

अग्गे भी इस बंस में अवतंस अछेहा
राणा रयण राय ढाल रिणमाल अड़ेहा ।
बंध्या जस हथ मालदे गरुवत्तन गेहा
महाराजा इस बातदा अवचंभा केहा ॥२४८॥

बचनिका

आँब खास में जाइ यह फुरमाय । षिल बषत में जाय महाराजा कौं लीने बुलाय । एकांत फुरमाया । यह बोल जताया । जो वह तुम्हारा लसकर सामाँ निसाँन देषि फिर जाय तो जानै दीज्यौ । तुम सौं मिलि जुज्ज लोक लार लै आवै तौ आवनै दीज्यौ । ऐसा न होय कि जंग में जाया होय । फरजंदी का दुष दुगुन होय । ईजत भंग न होंन पावै । ईजत भंग ज्यौ होंन पावै तो सलातीन का कुरब जावे । तुम अपनी ठौर कायम रहियो । वह आइ लरै तो लरियो । तब उसकी फौज तोप षाँने सौं उड़ाबौ । जुज लोग रहै तब मिलन का पैगाम कराबौ । तुम अपनी ठौर कायम होय लरौ । घोर वाहने की दिल मैं जिन हार न करौ । तद दारासिको अरज करी । हजरत कैसी मसलत दिल में धरी । तब पातिसाह फुरमाया । तुम्हें बिरादरी का इषलास है जाद । हमैं फरजंदीनहि आती याद । यह पातिसाहनैं किन्ना किया । महाराजा को उस ही मसलत का हुकम दिया । तद महाराजा अरज करै हैं । हमारै हिवबी मसला मसूर है । सोई होता है यह काँम । दुबिध्या मैं दोऊ गए माया मिली न राँम । लराई के दरम्याँन लरना अरु अबब करना यह मसलत सौंदूर । आज यह सुनि हजरत के हजूर । हमकौं तिस ही भाँति फुरमावेंगे । जिसहि भाँति हुकम बजावेंगे । पै हरगिज

यह मसलत नाँही। हजरत जाँनै मन माँही। पातिसाह फरमाया यही मसलत करौ। लोहा गहि सिरदार होय लरौ ॥२४६॥

छंद मुमिल

देब प्रसन्न ब्रह्म बर दीनौ। नीति म्रजाद लोप नह कीनौ।
छल बल बुद्धि बिबेक सौं छाए। माँनि अदब हनुमाँन बधाए ॥२५०॥

बचनिका

और हमारे हुकम पर नजर धरियो। हम फुरमाया सोई करियो। जैसे तुम्हारे राँम बचन। कीया अंगद लच्छमन ॥२५१॥

मुरि छंद

अंगद राँम बचन उर धारे। मंदोदरि सिर चिहुर उघारे।
मन बच करम स्वाँमि ध्रम मंडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खंडै ॥२५२॥

कह्यौ राम सुइ लछमन कीनौ। दिन बनबास जानकहि दीनौ।
छिन भर सत साहस नहिं छंडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खंडै ॥२५३॥

बुरौ भलौ जिय कछु न बिचारै। धरम अधरम भरम नहि धारै।
डंडै जिहि जुइ होइ अडंडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खंडै ॥२५४॥

राजनीति यह रीति रहाबै। दिल मैं कछू कछू दरसाबै।
ज्यौं गजदंत दोइ बिधि दौरै। खैबें और दिखैबें औरै ॥२५५॥

वचनिका

यह मसलति ठहराइ। आँब षास के बीच आइ। महाराजा कौं बाजिराज गजराज साज साजि दीए। बड़ी फौज के सिरदार करि रुकसद कीए। दे दे सिरोपाव। ताबीन कीए भले भले उमराव। राजा राव जे जाँनै जुद्ध के दाव घाव उपाव। लीनैं सतसील साहस के सुभाव। जुद्ध की बेर जिनके चल हाथ अचल पाव। रीझि रीझि कीए लाख पसाब। बगतर ससतर के करि करि बनाव। चले षलभले षलभले। अचल चले। सेस सलसले। कमठ कलमले। जहाँ जहाँ करे पड़ाव। तहाँ तहाँ आगले कूँ पाँनी पिछले कूँ कीच। ऐसे होइ जाइ तलाब। ऐसे आवते हैं जैसा पट्टा उलट्टा दरियाव।

गति ललित मद गलित गजराज। पर सेत लाल रंग के निसाँन। जस प्रताप के निसाँन। जानै जिहाँन। खाँन सुलतान। जलेब मैं सोने रूपे जराब के। साज बनाब के। रंग रंग के तुरंग। उतंग सबज लाल सकलात मुखमल के जीन। नबीन नबीन। जरबफत के जीनपोस कीने। नट की सी गति लीनें। चलते हैं। दुयन कू ँ दलते हैं। अराबाँ के सामाँन लियै। बैहरखैं लिए ँ। बंदूकची आगै कियै। धर चतुरंगिनी सेन। आइ डेरे दिए उजेन। उस तरफ आए साहिजादा औरंगजेब। हाथ तसबी कितेब। साथ लसकर अकबर बब्बर की सी जेब। भले भले उमराब लागे रकेब। आतसबाजी जबर जंग। जंबूर तुफंग। पषरैत बाँनैंत। असबार अपार। आइ परे नर-बदा पार। जासूस भेजि षबर मँगाई। दल देषि आइ गुदराई। आलमपनाँ सलाँमत। ऐसी षबर है। लसकर जबर है। हकीकति सुनि पाई। दिल बीच ऐसी मसलति आई। मुराद साह सूँ मिलि कीजै लराई। यह ठहराई। लिषि भेजियै कौल करार। जिसतैं आबै उनकौं इतबार। तब षासे इतबारी चाकरौं अरज करी। हजरत कौल करते हैं। पातिसाहत की न दिल बीच धरते हैं। यह क्या तब कही। तुम समझते नाँहीं। जो बुजरगौं फुरमाई ॥२५६॥

छप्पय

मित्त भाव मंडियै चित्त बिस्वास अचल्लै।
देस नेस दिज्जियै कोस पिज्जियै कबल्लै॥
पच्छिभेद पारियै मुलक मारियै घेरि घर।
क्रुद्ध जुद्ध किज्जियै बीर लज्जियें दुगुन बर॥
करि दाब घाव उप्पाव करि राज सचाबन रित्तियै।
यह राजनीति अवरंग कहि हर प्रकार अरि जित्तियै ॥२५७॥

घट करि पूरित धिरत बाहु षिप्पिय लिय बाहिर।
तिल भाजन महि डारि जिते लग्गै तिल जाहिर॥
तिते दाबत बिकयै सोच संकोच न किज्जै।
बोल कौल दे बाँह दगा दुसमन कौं दिज्जै॥
औरंगजेब मसलति अगम आरम्भ चित्त अचित्तियै।
यह राजनीति बिबहार है हर प्रकार अरि जित्तियै ॥२५८॥

सुइ सयाँन हर भाँति काज आपनै सुधारै ।
यह अयान बंस बिबस बहसि निज काज बिगारै ।।
पुहबि काज पंडवनि किए कल छल बल केते ।
राजनीति यह रीति जगै जुध जेता जेते ।।
मिलि कागल छल बल मेल करि लै मुराद आगैं लरूं ।
अवरंग कहैं चहुं चक्क इम करि धमचक्क फते करूं ।।२५९।।

दोहा

कागज साहि मुराद कौं भेजे औरंगजेब ।
कीया कौल करार है हम तुम बीच कितेब ।।२६०।।

दुहुँ तरफ की षातर जमाँ के कौल का दोहा

बैठे पतिसाही करौ छत्तर सीस पर धार ।
अंमल करौ बरतौ अदल हम तुम यहै करार ।।२६१।।

पवंगम छंद

दूरि रहै दुइ एक एकही देषियें
लगैं एक पें एक इग्यारह लेषियें ।
हम तुम सामिल होइ जंग जौं किज्जीयें
लगि फौजें बरजोर फते करि लिज्जियें ।।२६२।।

आया साह मुराद तेज असबारियाँ
धरि आडंबर चंबर छत्र सिर धरियाँ ।
निहचल औरंगजेब सु फौज निहारिकें
चकतैं पाया चैन सुं कौल चितारि कें ।।२६३।।

बचनिका

एते महाराजा दूत भेजि कहाया । जोम दिषाय आगैं मत आवौ । पीछे ही फिरि जावौ । पातिसाह फुरमाया है । इस बासतैं हम तुम कौं कहाया है । एते पर आवौगे तौ पीछैं ही पछितावौगे । हम लरेंगे । मारि तरवारि दूर करेंगे । तब औरंगजेब कही । यह बात सही । पै हम फिरि जावें । तौ जेब न पावें । यह कहि दूत कौं रुकसद कीया । यह रुका दीया ।।२६४।।

छप्पय

तुम सु एक सिरदार इते असबार ल आए।
हम सहजादे दोइ वुगुन लसकर वरसाए।।
सीस छत्र हम धरें हुकम जुइ करें सु होई।
कयँ अदब नहि कमी सबा हुकमी सह कोई।।
सम बलन मुरातब बुद्धि सम गरबत्तन पद हम गहैं।
जसबंत जंग जय किहिं जुगति कहौ हमैं औरंग कहैं।।२६५।।

महाराजा कौ ज्वाब

एकै सीह अबीह गाजि भंजै कुरंग गन।
एकै इन उद्योत उडप खद्योत जोति अन।।
बाघ दोइ के बीच पियै बाराह ऐक पय।
दोइ अयोधन बीच होइ हीरान होइ छय।।
भय कहा तुम जु साँमिल भऐ जंग जोरि जय जोरिहौं।
तरवारि मारि अरि तोरिहौं साह हुकम नहि मोरिहौं।।२६६।।

बचनिका

यह ज्वाब भेजि महाराजा दीवान किया। लायक लायक उमराब बुलाइ लिया।।२६७।।

छंद पद्धडिका

महाराज आज राठौर मोर। आचार सार सरभर न और।
जसबंतसिंघ अनभंग जंग। सावंत सूर साबंत संग।।२६८।।

रिनमाल जोध राधंत रेष। बानैंत जैस ऊंदा बिसेष।
चक्रवत्ति चित्त चाँदा बिचित्र। चतुरंग चाव चाँपा चरित्र।।२६९।।

प्रारम्भ पूर पाताँ प्रसिद्ध। सूरत नराँ आखाड सिद्ध।
बीरम्म बीर कूंपाँ कंठीर। साहस्स सीह बाला सधीर।।२७०।।

भाइल्ल धबेचे बड़े भींच। सचै सुजस्स नित दाँन सींच।
नवु सहस मुरद्धर देस नाह। संग्राम सिद्ध लीनै सिपाह।।२७१।।

राठौर बंस राजा रतंन। जग जेठ करै जस के जतंन।
भुज लियै सज्ज कुल लज्ज भार। उद्दार चित्त ऊँचै अचार ॥२७२॥

निहचल मन माधौसिंघ नंद। मार की फौज हाड़ा मुकंद।
पाँचू सबंधु भुजबल प्रचंड। खग बाहि करै खल खंड खंड ॥२७३॥

गह गात गहै अरजन्न गौर। गज थट्ट सुभट की करै गौर।
उमराब मिले तहाँ आँन आँन। बीरत्ति बत्ति सूरत्ति बाँन ॥२७४॥

रत्ते रुहिल्ल गोरे मुगल्ल। सीदी असेत किलमाक सेत।
भूरे पठाँन लीनै भुथाँन। तानंत तीर मोहंत मीर ॥२७५॥

मसलत्ति करी उमराब मेल। खेलियै मरद्दो खग्ग खेल।
उन कही एक कीजै उपाइ। दीजियै दाइ आबै जुदाइ ॥२७६॥

राखियै नरबदा घाट रोकि। बन गहन बिषम घाटी बिलोकि।
मोरचे बाँधि कीजियै सुमार। औरंग मुराद आबै न बार ॥२७७॥

करि सकै न मसलति ठीक काइ। उतरे नदि रेबा बार आइ।
जोरै मुराद औरंगजेब। फंद जुद्ध बंध जानै फरेब ॥२७८॥

वह कले चले आगें खद्द। संभले सोर बल घोर सद्द।
गज सुतर नालि गाजै गहबिक। झिल मिले पेस खाँने झमबिक ॥२७९॥

है जहाँ मँडे झंडे हजार। बिस्तार बस्त उरदू बजार।
दाखिल भए डेरौं दिल दराज। अरराति तोषपखाँनै अबाज ॥२८०॥

बचनिका

साहिजादे डेरौं दाखिल भए। उमराब सब मुजरा करि करि अपने अपने डेरौं गए। महराजा षबरि पाइ। उमराब लीए बुलाइ। सिलह सस्त्र दीए। जुद्ध के सामाँन कीए। सबसौं कही। अब मसलति यही। यह उज्जैन अबंतिका पुरी अभिराँम। इहाँ कीजै संग्राँम। रहै तिसकौ रहै नाँम। जे आबै काँम। ते पाबै हरि धाँम। तब उमराबाँ कूं अलाहदे ले कै कही राजा रतंन। महाराजा के कीजै जतंन ॥२८१॥

उमड़ि उमड़ि दोऊ दल आबत। हार जीति हरि हाथ बताबत।
कही सुनी यह आदि कहाबत। राजा राषि रमैं सुइ राबत ॥२८२॥

धरि छल बल पैदल धुरि आवत। लरै भिरै जिय नहिं ललचावत।
बीच परै सह लगैं बचावत। राजा राषि रमैं सुइ रावत ॥२८३॥
पैदल पिछा पाव न ठावत। पुंहचैं पार मंत्रि पद पावत।
राज काज फिरि आइ रचावत। राजा राषि रमैं सुइ रावत ॥२८४॥

बचनिका

सब मिलि अरज करी। भाय भरी। हमकूं बिदा कीजै। सामान दीजै। एक बेर हम लरें। जो भार परें। तौ महाराज हमारी मदति करें। महाराजा न मांनी। साथ ही असवार भए इस बांनी ॥२८५॥

छप्पय

महाराज जसराज पाज सिरताज मुरद्धर।
स्वांमि काज ले साज बाज गजराज लसक्कर॥
राज राज से राजराज सुर राज सरम्भर।
सोभित राज समाज संग भुज लाज आज भर॥
गहि गाज दराज कि अरि गंजन गजन नंद मृगराज गति।
करि कोप चढ़यौ ध्रम पाज कजि पच्छ राज अहिराज प्रति ॥२८६॥

बचनिका

गजराज सुतरसाज। बने बाज। बरकंदाज। आसतबाजी के सामांन लायै। हरौल गोल चंदौल दोऊ बाजू की तजवीज कीयै। इधर सूं इस ही तरह दोऊ तरफ सौं साहजादे आए। औरंगजेब महाराज के लसकर पर नजर धरता है। दिल बीच यह फिकर करता है ॥२८७॥

छप्पय

मंडि मंडि अति मेह एक क्यांमति के आए।
किधौं कहर दरियाव लहरि धरि धर पर धाए॥
जम जमाति सी जाति किधौं जग जंत अंत कर।
या षुदा य क्या किया गजब भेज्या कि मुज्ज गर॥
करि फते पातिसाही करूं यह उमेद संदेह किय।
अवरंग देषि जसवंत दल ए बिचार जिय उप्पजिय ॥२८८॥

अथ क्रूर जुद्ध बरनन

महि रचे दुहुं दिसि मोरचे। खल वलन दल निहचल षचे।
गजर सुतर असि नर गज्जए। सब साज कटि तटि सज्जये ॥२८६॥

छुटि नालि गोले छुट्टियं। फिरि तरित घर तुट्ठियं।
आतस भभूके उट्ठियं। बरि बजर ओले उट्ठियं ॥२६०॥

धर सु गिर अंबर थरहरे। जल जलधि छिल थर थरहरे।
पर परसपर हित परहरे। भुकि समर सर भर भर हरे ॥२६१॥

उस तरफ छुट्टै तोप ए। कमधज्ज लरैं सक्कोप ए।
जो तोपखाना साज के। ताबीन था महाराज के ॥२६२॥

ताका दरोगा चाह सौं। मिल रह्या औरंग साह सौं।
खाली अबाजैं छोरयं। बिन तीर भभकत सोरयं ॥२६३॥

ज्यौं सरद घन करि सोर कौं। बरसै न जल कहि ओर कौं।
उस तरफ गोले छूटहीं। इस तरफ भट घट फूटहीं ॥२६४॥

तब अरज की महाराज सौं। सब सूर धीर समाज सौं।
हुइ हुकम घोरे बाहियें। अवरंग कौ दल गाहियें ॥२६५॥

कछु करौ धीरज जंग कौं। अब पकरि लै अवरंग कौं।
पतिसाह रुकसद के समैं। जो कछुक फरमाया हमैं ॥२६६॥

वह कह्यौ जात न बोत है। हर समैं आडा होत है।
तब लोक अषताय कैं। अहिराज ज्यौं बल षाय कैं ॥२६७॥

सौ सौ पचास पचास के। करि तुंग सजि सजि त्रास के।
अरि फौज मैं अस डार तैं। के उड़े गोलनि मारतैं ॥२६८॥

के पुंहचि प्रतिभट जूह सौं। भट लरत सुभट समूह सौं।
भच भच्च भाले भूचकैं। हिच हिच्च हठि हठि हूचकैं ॥२६९॥

जुरि सेल करबर जोरए। पर जिरह पंजर फोरए।
तरबारि अरि धर तोरए। मेछांन दल बल मोरए ॥३००॥

कोतह हथ्यार कटारियां। धर उबर बिहरि दुधारियां।
पगि अडिग लरि लरि धरपरैं। धर सिर परैं हू धर लरैं ॥३०१॥

इक मार मार उचारहीं। हुसियार ह्वै हलकारहीं।
सै हथी एक सँभारहीं। दलि उबर करत दुसारहीं ॥३०२॥

खग खेल सुभट खिलावहीं। मद मरद गरद मिलावहीं।
इक घाव अरि सिर घल्लहीं। झुकि झपकि झटके झल्लहीं ॥३०३॥

खिलि परि उथल्ले खाइकें। उठि लरत फिरि फिरि आइकें।
इक दंत गहि गहि तारियाँ। कर कटें लरत कटारियाँ ॥३०४॥

जौ धराधर परि जावहीं। चपि चरन सेल चलावहीं।
सिर टोप पेटी सज्जहीं। भच भच्च भटघट भज्जहीं ॥३०५॥

लगि लपटि लटि लटि फिरि लरें। पग हाथ सिर कटि कटि परें।
तब महाराजा सोचहीं। मसलत चूक सकोचहीं ॥३०६॥

पतिसाह जो मसलत कही। बिगरी लराई बेगही।
भट काँम आए काम के। थोरे रहे हैं नाम के ॥३०७॥

अब काम निहचै आइयें। तौ पुहमि बिसोभा पाइयें।
महाराज अस चढ़ि मोहए। सजि सिलह आवध सोहए ॥३०८॥

मारे किते दल मेछ के। छल स्वाँमि पौरस तें छके।
सजि राग सिंधू सज्जए। बीरत्ति नौबति बज्जए ॥३०९॥

जसवंत रबि सम रंजियं। भट तिमिर लसकर भंजियं।
औरंग मुराद कि राहु ए। रोके दुहूँ मिलि राहु ए ॥३१०॥

सत्रु दाँन दाँन समप्पियं। ग्रहराज ग्रह उग्रह कियं।
सुलताँन सिंघ समाँन ए। बाराह राजा बाँन ए ॥३११॥

धर समर असुर बिधुंसियं। पौरस्स जगत प्रसंसियं।
नैठाह अंक निसंक ए। बंका निकासै बंक ए ॥३१२॥

उमराव मसलत में भले। ते बाग गहिले नीकले।
डाढार हाथ दिखाइ कै। आथाँन बैठौ आइकै ॥३१३॥

सवैया

साहि मुराद औ औरंगजेब ए नाहर ठाहर ठीक सु ठाँई।
देखत ही खग दाँती लै सूर धरयौ गहमूर मुरद्दर साँई॥

खेग खुरीन सूँ खूँदि खरे खल ऊख उखारि-उखारि कें खाई ।
यौं निज ठौर निबाह् गयौ रनबार बिरोरि बराह् की नाँई ।।३१४।।

महिरतन रतन महेस का । आभरन कुल ऊ देस का ।
खग बाहि खल दल खंडियं । मिलि अछर सुरपुर मंडियं ।।३१५।।

अरजन्न गौर अभंग ए । जहाँ परे करि करि जंग ए ।
हाडा मुकंद सुहत्थ ए । संघार किय रिपु सत्थ ए ।।३१६।।

महि मोहन डोहन रन समुद्र । रिपु प्रलय करन अवतार रुद्र ।
दलमले दुयन चंचल दबट्टि । खग झाट मेछ मारे झपट्टि ।।३१७।।

सूरत्त देखि औरंग साह । स्याबास देत करि करि सराह ।
पाए तृपति पल चार प्रेत । षगबाहि रहे उज्जेन खेत ।।३१८।।

सिब काँन्ह पूजे मुंडसूँ । झूझार झूमइयौ झुंड सूँ ।
घट घाव भक भक घोषए । पल रुहिर पलचर पोषए ।।३१९।।

रहे सतरसै राठौर ए । उमराब केतक और ए ।
ठहरे उजेनी ठाँम ए । करि जुद्ध आए काँम ए ।।३२०।।

कवित्त

मार तरवार साह बचन चितारि जब
पार भयौ सिरदार बार सब तन कौ ।
भार परै भारथ कौ भार निज भुज परयौ
छोह् भर भरयौ करयौ लालच न तन कौ ।।
लोहा गहि लरयौ टूक टूक ह्वै कै परयौ ताहि
अपछरा बरयौ हेत खेत मैं पतन कौ ।
नाँहि नैं रतन निज तनकौ जतन कियौ
रतन जतन कियौ सुजस रतन कौ ।।३२१।।

बचनिका

साहि मुराद औरंगजेब फते पाई । करि लराई । सह दाँने बजाए । दिल्ली पर चलाए। तब अरज बेगी पातिसाह जी सूं अरज करी । जरूर के कांम मौकूप भुकांम । कूच दरकूच करते । पातिसाही पर दाबा धरते ।

साहिजादे चले आवते हैं। किसी कौं षातर बीच न ल्यावते हैं। सेर पर भए सेर। गहै समसेर। ऐसी खबर सुन। पातिसाह भए दुमन। उमराव मुजरे कूं गए। हाथ जोरि ठाढ़े भए। साहिजादा दारा सकोह कौ पातिसाह फुरमाया। हमारे दिल यह आया। हम उनकी तरफ जावैं। पकरि ल्यावैं। तुम इहाँ रहौ। कछु फेर मत कहौ। तब फुरमाया न किया। पातिसाह कूँ फिरि उत्तर दिया। तब खलक लोक बातैं करते हैं ॥३२२॥

पैडी छन्द

भाइयाँ नाचह भाइयाँ छुटि प्रीति बिछुट्टी
फिरे लुटेरे चक्क फिरि लसकर घर लुट्टी ॥
फैली तल्लाँ ठौर ठौर ई हुगल्लाँ फुट्टी।
साहिजहाँ पतिसाह दी खट्टी निधि खुट्टी ॥३२३॥

दोहा

यौं जन जन कन कन भई कहै न ऐसौ कौंन।
ज्यौं बन बन पन पन भयौ दरसै परसै पौंन ॥३२४॥

पैडी

मसलति चुक्का पातिसाह अति आकल ओई।
खटी कमाई खुट्टियाँ अक्कल भी खोई ॥
जो सहजादा जेर था सेर कित्ता सोई।
होणी होइ सु हर तरह होई पै होई ॥३२५॥

जिसनूँ भेजा जिस तरफ फिर बैठा सोई।
साजी बाजी पातिसा सैं हाथों खोई ॥
हल्लाँ करता तखत बैठि क्या तरता कोई।
होणी होइ सु हर तरह होई पै होई ॥३२६॥

सही सलामत पातिसा खग लियें खडोई।
जिसनूँ अख्खै हुकम सो मन्नै नह कोई ॥
हालन हिम्म्मति हौस हिय करि सकै न सोई।
ज्यौं दीपक दिन है छता पै तेज न होई ॥३२७॥

बचनिका

ऐसी अनैसी खलक अबाज । रूपसिंघ महाराज । राजा जसबंतसिंघ । जोधपुर आए । समाचार पाए । सुनी लोकीक । हकीकत तहकीक । भई अलोकीक । बात बारीक । अब पातिसाह के कांम आबै । जौ स्वाँमि धरमी कहाबै । इह रित पर तौ पति पाबै । यह करि बिचार । महाराजा रूप आए पातिसाह दरबार । स्वाँमि धरम सौं भरो । अरज करी ॥३२८॥

छप्पय

चित उछाह न चाह आज दरगाह उदासी ।
राग न रंग न रीझ रौस रस हौंस न हासी ॥
कहौ हेत संकेत आज कछु देत न उत्तर ।
तुम दिल्लीस जगदीस किए तुम सौं कहा दुत्तर ॥
हुकमी अनेक हाजरि जु हम गनत गनत न जात गने ।
आलमपनाह पतिसाह तुम आज कहा मन उनमने ॥३२९॥

पातिसाह बचन

पलट्यौ सूजा प्रथम धूम पारी धर पूरब ।
ठौर ठौर ठिक ठई और की और अपूरब ॥
पछिम दछिन पलटि उलटि आई सिर ऊपर ।
सामिल दारासाह देत उत्तर प्रति उत्तर ॥
तन मुज्झ बीच चार्‌याँ तरफ गह्यौ कलह आतस गरम ।
इस बषत तषत अरु बषत की कौन भाँति रहि है सरम ॥३३०॥

महाराजा बचन

रोम रोम रमि रह्या लौंन तर बषत तुम्हारा ।
अब मुजरा लीजियैं हाथ देखियै हमारा ॥
हमहि हुकम किज्जियै आज आड़े हम आबै ।
समर आँच हम सहै तुमहि तन ताप न ताबै ॥
नरनाह रखौ खातर निसाँ निमक हलाली करि लरैं ।
छत्रपती सलाँमत हम छतैं कहा फिक्कर एता करैं ॥३३१॥

बचनिका

यह बात पातिसाह के दिल बीच आई। तब महाराजा रूपसिंघ कौं सब सरम भलाई ॥३३२॥

कवित्त

साह की सरम दोऊ राह की सरम गज
गाह की सरम तोहि सरम सिपाही की।
तषत की सरम या रषत की सरम या
बषत की सरम जाहि दई तिहि ताही की।
भारमल नंद राजा रूप कु भलाई अब
तुम कौं भलाई हैं बड़ाइ आ निबाही की।
और काहि दीजै दारा साह की सरम पाति-
साह की सरम और सरम पातिसाही की ॥३३३॥

बचनिका

सब सरम भुलाई। मेहरबाँनगी फुरमाई। पाँच सौ बगतर समसेर है हाथी सिरोपाव दिए। महाराजा रूपसिंघ कौं साहजादे दारा साह के सामिल किए। रुकसद हुइ डेरा आए। ऐसी छबि छाए ॥३३४॥

महाराजा रूप की सोभावन : छंद मधुभार

राजाँन रूप। उद्दित अनूप। भरयंभ भूप। स्रीपति सरूप ॥३३५॥
राजाधिराज ज्यौं इंद्रराज। सुरभट समाज रिधि राज राज ॥३३६॥
पषि धरम पाज। कृत स्वामि काज। लिय बंस लाज। अबतंस आज ॥३३७॥
गह सिंघ गाज। दिल अति दराज। बाँनिक बिराज। बर ज्यौं बिराज ॥३३८॥
धीरत्त धीर। धरि बुद्धि धीर। पाँनिप पंडीर। ध्रुव जेम धीर ॥३३९॥
तीरत्थ तीर। सारथ सरीर। बिक्कम्म बीर। बिक्रम सधीर ॥३४०॥
समपै सुबर्ण बरनै सुबर्न। करदाँन कर्न। किरि बाँनि कर्न ॥३४१॥
सतसील संग। आग्या अभंग। रस रास रंग। उर धरि उमंग ॥३४२॥
हरि भक्ति पीन। नित हित नबीन। पाबन प्रबीन। लछिनाथ लीन ॥३४३॥
संग्रहित सार। भुज राज भार। है गै हजार। पैहै न पार ॥३४४॥

सज्जन सधार। दुर्जन बिदार। औपम अपार। अबिनी अधार ॥३४५॥
करिबर कुठार। सुज कर सहार। अट्टार भार। परबन प्रहार ॥३४६॥
ऊँचै अचार। सच बच्च सार। हरि चंद बार। रामाबतार ॥३४७॥
बिधि के बिचार। नाना प्रकार। ब्रज के बिहार। नित के निहार ॥३४८॥
उज्जल उदार। हिम के पहार। जल गंग धार। चंद्रक प्रचार ॥३४९॥
पय अक उपार। हर हंस हार। मंदार डार। पुहबी प्रचार ॥३५०॥
बिस्तार बार। सज सुजस सार। मनि मारबार। सब जग सिंगार ॥३५१॥
आरंभ राम। उद्दाम धाँम। थिरि अस्व थाँम। सम सजि संग्राम ॥३५२॥
गुन गाँम गाँम। ध्रुब धाँम धाँम। कर स्वामि काम। बर साम दाँम ॥३५३॥
कुल कुमुद चंद। आनंद कंद। साहस समंद। भारमल नंद ॥३५४॥

अथ दरबार बरनन : पद्धडिका छंद

उमराब जुरे दरबार आइ। बर बीर बीर बाँनिक बनाइ।
रिनमल्ल मेले रिन मल्ल रूप। आषाड़ जोध जोधे अनूप ॥३५५॥

बाँकि सु बीर बीके बषाँनि। काँधिल्य धीर लीनें कृपाँनि।
रज बट्ट लियै भट आइ मलौत। कमधज्ज लज्ज भुज करम सोत ॥३५६॥

जुध करन जैत जोधार जैत। दीपै उदाब्रत सु बर दैत।
जोरबर मिले जहाँ जैम लौत। आहाब अभंग भड ईसरौत ॥३५७॥

चाँपाबत चाँदाबत सु चाब। भारमल जगमल सु भाव।
पाताबत रूपाबत प्रसिद्ध। रनधीर रूप रनधीर रिद्ध ॥३५८॥

बीरत्तिबाँन चहुवाँन बाँन। पंमार गौर हाड़ा प्रमाँन।
सीसौदे कूरमबंस सूर। सोलंकी तूंबर जुद्ध सूर ॥३५९॥

छत्तीस बंस साबंत छत्ति। दरबार सोह सूरत्ति दत्ति।
राजाँन रूप राजाँन रूप। भारत्थ भार भुज धरत भूप ॥३६०॥

बचनिका

दरबार करि साहनी बुलाए। देखिबे कूँ घोरे मँगाए। कैसे कैसे। रबि रथ जैसे। उतंग अंग के। अनेक रंग के। मतंग मोल के। करते अलोल के। लेखिनी काँन के। बीरत्ति बाँन के। निर्मांस मुख के। दैनहार सुख के।

सालिग्राम नैंन के। ऐराक ऐंन के। निरदोष लछन के। प्रतिपच्छी पछिन के। बादी पवन के। दुर्जन दवन के। चंचल गवन के। भूषन भवन के। नट की सी गति के। मोहन मनमति के। सावधान सुरति के। तुरत फुरति के ॥३६१॥

तुरंग बरनन : छंद गीया

ताजी तुरक्की उज्जबक्की थेट काबिल थाँन के
महूबा मुसक्की जेवलक्की बारि तरके बाँन के।
मुबलक मुलक्की अब्बलक्की साज बाज सुहावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३६२॥

ऊँचे ऐराकी दे फराकी अंग उज्जल आनियं
मत्ते मजन्नस पूर पौरस षुरजेषुर सानियं।
कूदंत कछी ओप अछी धाप धरि धर धावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३६३॥

आने अरब्बी गै गरब्बी मैंन मूरति मोहने
धाटी अधीरे धूम धीरे मूर सूरति सोहने।
नीके न बल्ले जे अबल्ले धींग धाइ धकावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३६४॥

मत्ते उमत्ते तेज तत्ते हत्थ सारति हल्लने
चाहै चकत्ते रंग रत्ते झूझ सारति झल्लने।
धर धम धमत्ते पै धरत्ते धू गिरिंद धुजावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराजि रिझाँबने ॥३६५॥

साँचै सु ढारी देह सारी मित्र जैसे मित्र के
चित चित्रकारी चित्रकारी चित्रि कीने चित्र के।
षासे षंधारी है हजारी पच्छि सोभा पावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिंझावने ॥३६६॥

दौरैं सजोरैं जेब जोरैं पौन पाछैं देत हैं
मृग मान मोरैं चित्त चोरैं चित्त जीतैं लेत हैं।
कपि डाँन थोरैं होड छोरैं बैनतेय बतावने
ऐसैं अनूप रूप भूप बाजिराज रिझावने ॥३६७॥

संजाब अबलष स्याह अबलष सुरंग अबलष सोह ए
कुमैत अबलष समंद अबलष लषी अबलष लषि लए।
संदली अबलष रंग सबलष भाँति जिय के भावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३६८।।

मिट्टि बा नीले हरे नीले बोज सुरषा जुत्तए
काँनू समंद संदली कुल्ला और तासिर गावए।
सुनहरा संग्रहि किसमिसो केहि फिर कुमैत कहावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३६९।।

कहि स्याह मंदली लाल संमिली रंग ए फुल बारियं
बिल्लौर गरडे और ताजी चीनी ओ मुलतानियं।
सूरति सुदेसी सुद्ध देसी पाइ ठिम ठिम ठावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३७०।।

नीके नबीने जीन कीने बिबिध रंग रंगबानी के
मुषमल मिहीने मोल लीने तास रंग बानात के।
लागे नगीने रंग भीने जोट जोति जगावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३७१।।

रहबाल चालदु गाँम गाँम सुए बियाँ गति गौंन के
छरे छरे आध सिपोई या धसि चारु नैंन चितौन के।
छिति घुंद करते लोह भरते बाह बाह कहाँबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३७२।।

मन होत राजी लेत बाजी फूल झरीसो छोरए
फेरै कलाई गति सुहाई चलत करत मरोर ए।
निरदोस लछन जे बिचछन जंग रंग जितावने
अैसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ।।३७३।।

अथ गजराज बरनन : छंद गीया

झारे पषारे जेसबारे बीर बेष बनाइ के
किय रंग कारे अंग सारे सुंडि लाल सुभाइ के।
दीरघ दंतारे कपिल बारे कौंम नंद कलिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ।।३७४।।

सोभा सिंदूरे पीत पूरे रंग जंगाली रेखियै
सोहै स नूरे रूप रूरे दंत बंगरी देषियै।
संग्राम सूरे है करूरे कलभ जाति करिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७५॥

मद नीर झरने दाँन झरने मत्त बारह् मास के
बर सबर बरने स्याम बरने बाघ सिंघ बिलास के।
घर धीर धरने घात धरने गात भाँति गिरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७६॥

झूलें झिलम्मल बीज बद्दल गाज गह्री गज्जए
बक दंत उज्जल घंट नद कल सोर दद्दुर सज्जए।
किय रंग कज्जल झरत मदजल एह् मेह् सुरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७७॥

जकरे जंजीरैं चलत धीरैं पग अंगूठनि पेलतैं
उलटैं अधीरैं पलटि पीरैं मत महावत मेल तैं।
नित रह्त नीरैं भौंर भीरैं बास बस मधु बिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७८॥

तरु तोरि डारैं लैं उषारैं सबर गहि गहि सुंड तैं
गढमढ पगारैं ढाहि डारैं धाय रद धर सुंड तैं।
छिति रज उछारैं रौर पारैं असनसर अरबिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७९॥

भुइ चप्प चरषी सोर बरषी छुटत झपटत झूंमि कै
गडदार घेरैं नीठ फेरैं घिरत घूरत घूंमि कै।
लगि लोह् लंगर घंट घुघ्घर अंग भंग अरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८०॥

बनि सीस बंदन षौरि चंदन असन मोद कमोद सुं
आनंद नंदन दुष निकंदन बिबिधि बीर बिनोद सुं।
जनु गौरि नंदन बिस्व बंदन अंग ढंग अनिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८१॥

मजबूत मूसरसे दंत सर कलित तेज कटारियाँ
धरि सिरी सिर पर पीठ पष्षर बंधि झुम तरबारियाँ।
गहि सुंडि संकर अति भयंकर रन बिरोर नरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८२॥

कवित्त

मछी कै से गात दरिया बरन पैरि जात
ऊपर तें पीन तरे पतेरे चरन के।
भारी धर सुंड के प्रचंड सुंडा डंड के सु
बड़ी घरि बड़े पीत बाँन के धरन के॥
पेट लंक लीयै मयमंते औ पलक दंते
पलक पलक चल करन करन के।
भारमल नंद महाराजा रूपसिंघ जब के
गाजत मतंग ऐसे बारिद बरन के ॥३८३॥

अथ तरबारि बरनन

मिसरी मगरबी जे जनूबी इलैमानी ओपए
अति इलैमानी गोल आनो ध्रुब हजारा घोपए।
अँगरेज धर की भुज नगर की भिरत खल दल भंजनी
ऐसी कृपाँनी जगत जानी रूप भूपति रंजनी ॥३८४॥

ऊँनी पुराँनी माँन माँनी घाट सुंदर जे घरी
सादी सिरोही साज सोही पाँन पाँनिप सूँ भरी।
सूधौ टबंकी अंक अंकी गरब भरि अरि गंजनी
ऐसी कृपाँनी जगत जानी रूप भूपति रंजनी ॥३८५॥

असिजे असिल्ली फेरि सिल्ली धार धुज्जाँ किज्जियै
षर साँन झेरी जे उजेरी लज्ज कज्जाँ लिज्जियै।
रचि मूठि रूरी लोह पूरी माँन अरि मन भंजनी
ऐसी कृपाँनी जगत जानी रूप भूपति रंजनी ॥३८६॥

जम जीभ जैसी तड़ित तैसी तरत बीजल सार की
धरनी उधरनी धीर धरनी फूल धार सुधार की।

जय सिद्धि करनी सकति बरनी संग संगर संजनी
ऐसी कृपाँनी जगत जानी रूप भूपति रंजनी ॥३८७॥

अथ कटारी बरनन

फरभरे बर की दोइ फर की कितक कोतह खानियं
इक डार घरि घरि बाढ़ धरि धरि अबल करि करि आनियं।
झननंत झल्लरि रहत सुर भरि साज बाज सु धारियाँ
मन रूप माँनी ओप आनी कमर सोह कटारियाँ ॥३८८॥

षिलचीपुर की रामपुर की थेथ बुंदी ठाहियाँ
बुरहानपुर की जोधपुर की सबर राजा साहियाँ।
जीहाज षाँनी जे बषाँनी तरह बिधि बिधि तारियाँ
मन रूप माँनी ओप आनी कमर सोह कटारियाँ ॥३८९॥

सादी सुनहरी जे रुपहरी बेलि बूंटेबाँन की
निरदोस नगगन कलित कुंदन अमित छबि उपमान की।
नीकी नबीना मिलित मीना स्याह ताब सबारियाँ
मन रूप माँनी ओप आनी कमर सोह कटारियाँ ॥३९०॥

नेजे बरछी तिछ अछी करद फरस कुठारए
गुजरै गुपती तबल कत्ती ओप चुग्ग अपारए।
बुगदा भयंकर बाँक षंजर परिघ पट्टि सपेषियं
आयुध अनेके जुद्ध जैके बीर धीर बिसेषीयं ॥३९१॥

अथ कमान बरनन

कहूँ छबि बषाँनि कमाँन की। तूजी घरी मुलतान की।
गुजरात धुर लाहौर की। ठिक रहत ठौर सु ठौर की ॥३९२॥

बर बरनि बिधि बिधि बाँन की। बैठक बनी गुनबान की।
पीयरी हरी भर पै भरी। कज्जल कलित उज्जल करी ॥३९३॥

लषि ललितइक रंग लाल की। जगमगति जोति जंगाल की।
कहूँ सबज बूटि लाल की। कहूँ लाल जाल जंगाल की ॥३९४॥

छप्पय

धीर धीर धारीयै रहे ताजी सिरताजी।
हुवै अधीर अकुलाइ जीति हारीयै न बाजी।
जीतै सोई जुद्ध ठीक ठाह पग ठावै।
हारै सोई तहति धारि पहिलैं बिस खावै।
यह अरज मांनि लीजै अबसि साहि काज सब सुद्धरै।
रक्खीयै पीठि पग रोपीयं करै जुद्ध फत्ते करैं ॥४१९॥

प्रथम पी तप करै गेह तजि रहै गहै बन।
सीत धूप समीर नीर तीख भूख सहै तन।
बहुरि राज पद लहै बाजि गजराज बिभूषन।
सुंदर बपु सुंदरी दरस मंदिर निरदूषन।
भट लरै झूझि जब भू परै भोग बिबिधि सुर पुर भजै।
बर बीर सुनहु नालिक बचन सुष्ष न दुष बिन संपजै ॥४२०॥

कूप लनत जल काज बहुरि जल जंत्र बनाबत।
सात बार धर सोधि बीज क्यारिन मैं बाबत।
प्रति बासर प्रति रैंन बृषभ संग फिरि फिरि पाबत।
काटि गाहि कन लेत कस टंके ते तहाँ पाबत।
करसनी अन्न को ठार भरि पुनि प्रसन्न सन पेषीयै।
बर बीर सुनहु नालिक बचन दुष बिन सुष्ष न देषीयै ॥४२१॥

दारासाह बचन

छत्रपती तुम छतैं चित्त निहचिंत चगत्ता।
तुम गाढ़े अरि गढ़ किबार भंजन अरि मत्ता।
तुम पतिसाही थंभ सबर थंभनन पतिसाहत।
रहैं रहैं गिरि परैं गढ़ै ज्यौं अचइ बारत।
भुज लज्ज गहे की लज्ज कुँ लोह लज्ज जस लिज्जीयै।
क्या कहैं बहुत रिनमल किसन करि आए त्यौं किज्जीयै ॥४२२॥

तुम दिल्ली आड़े किबार रष्षन ध्रम रत्ते।
तुम चाकर तषत के सदा इतबार सपत्ते।

तुम जिसही की तरफ होंइ पल्ला सोई भारी ।
तुमहि दई पतिसाह हत्थ सब सरम हमारी ।
दल रूप रूप दुज्जन दलन दिल दलेल पन विज्जीयै ।
क्या कहैं बहुत निरमल किसन करि आए त्यौं किज्जीयै ।।४२३।।

दोहा

यह कहि सुनि सुलतान सु ँ रूपसिंघ राजान ।
उमरावाँ कूँ आइ कैं सौंपे जुद्ध सामाँन ।।४२४।।

छप्पय

चिलतह बगतर झिलम टोप हथ बास राग बर ।
ससत्र कटरी षडग ढाल को बंड सेल सर ।
साज सहित बंदूक रामचंगी बहु रंगी ।
गुपती षंजर गुरज चुग्ग कत्ती अति चंगी ।
चंचल तुरंग रंग चित्त के अंग उछाह करि प्यार अति ।
अधिपति रूप बकसे इते एक एक उमराव प्रति ।।४२५।।

बचनिका

जुद्ध सामाँन दीए । अनेक दिष्टांत दे सब के मन दृढ़ कीए । बचन उचारि इहि प्रकार ।।४२६।।

छप्पय

त्रीया पतिब्रत धरम राखि पति अपत उधारै ।
इकपतिनी ब्रत धरम पुरुष सब काज सुधारै ।
छत्री छत्री धरम राखि सरनागत रष्षै ।
प्रेम नेम पन पकरि चित्त धीरज रस बष्षै ।
त्यौं स्वामि धरम सेवक धरै जीय लालच तजि सजि लरै ।
जीवै त सुनै सुजस्स स्रवन झूझि परै सुर सुष करै ।।४२७।।

सुनि भारथ यह सुन्यौ निमल करि चित्त निरंतर ।
कथा पुब्ब मुनि कही चरन एक हे बिसंभर ।
लोह छोह नर लरै तुट्टि सिर परै तत्तर ।

सहिर खाल बिकराल लुत्थ पर लुत्थ लरत्थर।
बेताल ताल काली किलक बीर हक्क सूं ध्वजे।
तहाँ इक्क चरन आगे धरत अस्वमेध फल उप्पजे ।।४२८।।

सगग बाँन संचार अगग अररात तोप तहाँ।
होत सोर चहुँ ओर घोर अंधार जोर जहाँ।
सार मार मुख मार मारत तन बार तरप्फर।
करै बीर किलकार झपटि पल चार झरप्फर।
जहाँ बिषम बार कबि वृंद कहि सीस हार संकर सजे।
तहाँ इक्क चरन आगे धरत अस्वमेध फल उप्पजे ।।४२९।।

बचनिका

महाराजा के बचन सुनि। अनी पाँनी के धरनहार। स्वामि के काँम करनहार। जस भंडार के भरनहार। एक तरफ एक एक तरफ होई अनेक। तौ भी न छाँड़ै अपनी टेक। ऐसे ऐसे सिरदार। एक तें एक सरस उमराब। बोले जुद्ध ही के लीये चाब ।।४३०।।

छप्पय

साहिजहाँ से स्वामि रूप राजा से सेबक।
तुम से स्वाँमि सु तहाँ हम सु सेबक हक लेबक।
तुमहि हुकम पतिसाह कीयौ तुम करहु तयारी।
हमहि हुकम तुम करहु उमगि किज्जहि असबारी।
इक मनौं सिद्धि ह्वै है अबसि करहु भरोसा कौन कौं।
संकलप देह हित स्वाँमि कै दिज्जै बदला लौंन कौं ।।४३१।।

बचनिका

तहाँ बीर बाँनैत। बोले महासिंघ मछरैत। महाराजा सलाँमत। जुद्ध कीजै। हुकम दीजै। ज्यौं गजघंटा बिदारि। भट घट्ट संघट्ट संघारि। ऐसै लरै। जु औरंगजेब के हाथी कुं जाइ लोह करै ।।४३२।। एते बीच।

रिनछोड़ दास। पौरिस प्रकास। माँनसिंघ का बेटा। लाज लोह सुं लपेटा। तरबारि तोल। बोले ऐसे बोल। महाराजा सलाँमत रन दरियाब

मैं किलकिला ज्यौं कूदि परैं। तरबारिन सु अरिन के तन टूक टूक करैं। ऐसे हाथ दिखावैं जु औरंगजेब से सिरदार की सुद्धि भूलि जावैं ॥४३३॥ एते बीच।

बोले रेबत सिंघ माँनाबत। रनथंभ राबत। महाराजा सलाँमत। किलकार करि लोह मेलैं। सेल पेलैं। सेल झेलैं। असुर भर उथेलैं। ऐसा खेल खेलैं। तौ तुम्हारे रजपूत ॥४३४॥ एते बीच

हरि करन करन रन। लीनै पन। बोले ऐसे बचन। महाराजा सलाँमत। इक मने हुइ घोरे डारैं। ऐसा लोहा मारैं। जु अरिन की फौज बिचलाइ डारैं ॥४३५॥ एते बीच

केसौदास जगन्नाथ सुतन। कहे कैसे कथन। महाराज सलाँमत। अनीधार प्रहार के सनमुख धसाबै। लोह बजाबै। अरिन कौ मारि हटाबै। औरंगजेब के हजूर तरबारिन की झराझरी का झर लगाबै ॥४३६॥ एते बीच

बोलि उठा जगनाथ का कान्ह। बीर बाँन। महाराजा सलाँमत। ऐसा कीजै घमसाँन। तोरि डारीयें रिपुन के तनत्रान। निकस जाइ दुसमनौं के प्राँन। देषि कैं औरंगजेब होइ हैराँन ॥४३७॥

इस ही तरह रामसिंघ भाटी। यही बात ठाटी। मनोहर दास सोनिगरा। जुद्ध कौ मनगरा। गिरधरदास नरुका। चित चाब न चूका। प्रोहित नरू। स्वाँमि सूँ सदा सुरख रू। बारहट ठाकुरै सी जालपदास। दसौंधी भगौतीदास। एई कथन कबूल कीए। सूरबीरौ के बिरदाब दीए ॥४३८॥

इस बंस मैं। महाराजा सलाँमत।

इस बंस मैं। राब सीहा सीह। भए अबीह ॥४३९॥

इस बंस मैं। राब रायपाल। अरि थल उथाल ॥४४०॥

इस बंस मैं। राब रिनमाल। सत्रुन कौ साल ॥४४१॥

इस बंस मैं। राब जोध जालिम। मही मालिम ॥४४२॥

इस बंस मैं। राब मालदे महीप। भयौ सातौं दीप कौ दीप ॥४४३॥

इस बंस मैं। राजा उदैसिंघ उद्दार। देस देस मैं उदै के करनहार ॥४४४॥

इस बंस मैं। राजा किसनसिंघ कुलमौर राठौर। मालिम ठौर ठौर। जाकी सरभर कौं आबै न और ॥४४५॥

इस बंस मैं। राजा सहसमल। राजा जगमल। राजा भारमल। राजा हरिसिंघ दिगपाल से चारचौं बीर। साहस सधीर बीराधिबीर। दातार झूझार। पातिसाह दरबार के सिंगार। जस जंग के जैतबार। भए ऐसे ऐसे सिरदार ॥४४६॥

तिन के पाटि महाराजा रूप। पातिसाही के रूप। दिल्ली की साहिबी के थंभ। इंद्र के से आरंभ। ऐसी बात न थापै तौ दूसरौ कौन थापै। सब बात मैं दाँन कृपाँन ही की बात सरस। जिसतैं जहाँन मैं रहै जस ॥४४७॥

महाराजा अनेक दाँन दीए। जुद्ध कीए। जस लीए। तैसै महाभारथ कीजै। जस लीजै। महाराजा उमराबौं के बचन सुनि कपूर पाँन दीए। सब उमराबौ अपने अपने डेरौं जाइ राग रंग आनंद उमंग अराँम कीए ॥४४८॥

राजंत राजा रूप के। उमराब भाव अनूप के।
चित करन रत अति चाह के। बाँने उछाह कि ब्याह के ॥४४६॥

कहुँ अबल केसरि आनीयं। कहुँ औरि अबर छानीयं।
रचि बसन केसरी रंग के। आरंभ जंग उमंग के ॥४५०॥

कहुँ बिरकि केसरि छाँटने। बर बीर बागे बपब बने।
कहुँ करी पागे केसरी। भर रंग छबि गहरी भरी ॥४५१॥

कहूँ अरगजा फुरमाईयै। घनसार सहित घसाइयै।
मृगमद गुलाब मिलाईयै। बागे बनाब बनाईयै ॥४५२॥

कहुँ अतर मलय गुलाब के। सब अंग रचित सिताब के।
कहुँ रचित चोवा चाब सुँ। बने बीर बिचित्र बनाब सुँ ॥४५३॥

आरासि करीयै अंग की। जीय सुरति धरीयै जंग की।
कहुँ अमल करत उमंग सुँ। कहुँ राग सुनीयत रंग सुँ ॥४५४॥

कहुँ देत दूहे मार के। साबंत सार संभार के।
कहुँ रीझि मौजे कीजियै। कहुँ दाँन बिज कौं दीजियै ॥४५५॥

कहुँ सस्त्र सार संभारियै। कहुँ तीर साँचै ढारीयै।
कहुँ पहुँरि बगतर पेषीयै। कहुँ बीर बिरद बेसेषीयै ॥४५६॥

छंद पद्धडिका

परभात रूप राजा प्रबुद्ध। कृत प्रात कृत्य सजि देह सुद्ध।
पावन्न दंत धावन सपूर। कीय मुख पषारि कुररे कपूर ॥४५७॥
निरमल मंगाइ कै गंग नीर। सजि मज्जन कीय पाबन सरीर।
बप पहरि सुबासित धौत बास। नित दाँन कीयौ सोभा निबास ॥४५८॥
कृष्णागर चंदन कस्तूरि। कुम कुमानीर कर्पूर पूरि।
केसर घसि द्वादस तिलक कीन। पूजन बिधाँन पूरन प्रबीन ॥४५९॥
त्रैलोक नाथ स्रीनाथ नाथ। हित चित सहित पूजे सुहाय।
झननंत झलरि घन घंट नद्द। संभाबि आरती जय सबद्द ॥४६०॥
अन्नेक भोग भुगताइ अन्न। पायौ प्रसाद कीय मन प्रसन्न।
कर जोरि अरज कीय रूप राज। लछिनाथ राषीयै आज लाज ॥४६१॥
बानिक केसरि के अंग बास। बप महमहंत अति अतरबास।
ध्रुब तुलसी मंजरि सीस धारि। जस तिलक भाल सोभा सु धारि ॥४६२॥
निरषीयै नयन लज्या निवास। तंबोल बदन पूरन प्रकास।
जपि नाथ नाथ स्रीनाथ जोह। उर ध्याँन धारि गिरधर अबोह ॥४६३॥
उरबसी स्याँम मनि की अनूप। उर बसी स्याँम मूरति सरूप।
भुज दंड अभय धुज धरत भूप। रिच्छपाल प्रजा राजान रूप ॥४६४॥
कर धरत सस्त्र संग्राम काज। सजि कमर कटारी षडग साज।
सोभित सुढाल ढलकंत ढाल। चालंत रूप कुल बट चाल ॥४६५॥
धरि रोम रोम मैं स्वाँमि धर्म। संग्रहित अंग भारथ सर्म।
रोमंच अंग मुष चढ़े रंग। उछाह न मावै रूप अंग ॥४६६॥

दोहा

किही भट केसरि बसन कीय किही सज कीए सनाह।
जुद्ध करन मन कुद्ध जुत चढ़े रूप नर नाह ॥४६७॥

बचनिका

अवसाँन सिद्ध। बचन सिद्ध। खडग सिद्ध। संग्राम सिद्ध। सौं बिराजमान रूप राजाँन। इंद्र अबतारी। करी असबारी ॥४६८॥

सवैया

सज सज्जि कमद्धज रूप चढ़यौ चतुरंग चमू चय संग लई।
हय की खुर तार लतारन सुं छिति छार अपार अकास छई॥
तिनकी छबि देखि बिसेषि यहै उपमा कबि वृंद दई।
जनु सूर तुरंग चलै निरधार सु खेद निबारन भूमि भई ॥४६९॥

कवित्त

भारमल नंद महाराजा रूपसिंघ चढ़यौ
भारथ करन अंग पौरस अपार सौं।
हय गय पय हर बर दरबर दोरे
मूरछित भई छिति लातन लतार सौं॥
जमुना उछारि बारि बार बार छिरकन
कीनौ दिगपाल पौंन बैरष हजार सौं।
वृंद कहैं धसी उड़ि धूरि दिब मंडल मैं
बूझन इलाज मानु अस्विनी कुमार सौं ॥४७०॥

महाराजा रूप कमधज चढ़यौ कोप करि
धरि अभिलाष घमाघम घमसाँन के।
पैदल प्रबल चले चंचल चपल भले
हले हैं हरोल हाथी सोहत निसाँन के॥
बृंद कहैं धूजी धर धूरि धसी ऊरध कौं
धाइ कै धुरटे हैं बिमाँन आसमाँन के।
आनि मघबाँन नैंन ढाँपे चित्रभानजू के
चित्र माँन ढाँपि लीने नैंन मघबाँन के ॥४७१॥

दोहा

तिहिं छिन पठई उरबसी गिरिधारी की भेट।
मनु कहन परचाकिा मुकरित लाप सहेट ॥४७२॥

बचनिका

इस तरफ सौं बिजाइ पातिसाह। दारासाह। पातिसाही की चाह। लायै दिल्ली दरगाह के सिपाह। केते हिंदू मुसलमान मनसबदार। सिरदार हरौल गोल चंदौल जरंगाल बरंगाल। फौज बनाइ। जबर जंग। तुफंग तुंग। ताते तुरंग। माते मतंग। अपने अपने नाना रंग के निसान फरमाइ रहे हैं। नौबति के निसान घहराइ रहे हैं। जिस बषत सूरबीरों के बदन पर रंग। कायरौं रंग भंग। जिस बषत महाराजा रूप कौं हरौल ठहराए। उस तरफ सुं मुरादसाह औरंगसाह इस ही तरह फौज बनाइ आए। दोनूं फौजें तुलि रही हैं। तब महाराजा रूप के उमरावौं ने यह बात कही है ॥४७३॥

दोहा

एई साह मुराद है एई औरंगजेब।
ऐसा लोहा मारीयै भूलि जाइ सब जेब ॥४७४॥

कमधज कुल उजल करैं माया धरैं न मोह।
पुरजे पुरजे अरि करैं हरैं लोह छबि छोह ॥४७५॥

काढ़ि काढ़ि करबाल कौं करते बाट बषाँन।
एक घाव दुइ टूक का आइ लगा अबसाँन ॥४७६॥

पाए हैं पतिसाह पैं है हाथी सिरपाव।
कुंभ बिदारैं सिंघ ज्यौं दे हाथी सिर पाव ॥४७७॥

सतरै सै राठोड़ सजि आए काम उजेन।
बैर बहोदैं बीर वर सार बिहादै सैंन ॥४७८॥

अथ जुद्ध बरनन : नगय छंद

चढ़े मतंग रूपसिंघ जंग रंग चाव सुं
बिराजमाँन अंग बाँन सस्त्र के बनाव सुं।
किधौं रिभुच्छ बज्र लै पहार पच्छ छेद कौं
भए सदंभ जंभ के असंभ दंभ भेद कौं ॥४७८ अ ॥४७९॥

लीयै सधीर सूर बीर जे जीहाज लाज के
कीए सरीर पोषि पोषि स्वामि काम काज के।

कहैं न झूँठ भूलि हूँ बहै बिरद्द बंस के
बहै सुभाइ पाइ कैं सु भाइ राइ हंस के ॥४७६॥
उमंड़ि मंडि मेघ की घटा कटक्क आईयं
छुटंत नालि सोर जोर धूम द्योम छाईयं।
झपक्कि ज्वाल जाल डाल बीज ज्यौं झपक्कयिं
धवा धरी ध्रुवे धरा धरा धरा धसक्कीयं ॥४८०॥
सलक्कि सेस नेस तैं जलं डलक्कि सायरं
अकंप बीव पाय आय कंप काय कायरं।
बरार पारंती[1] जहीं छुटी हजार बंगरी
परै जहाँ तहाँ तहाँ परै हजार बुंबरी ॥४८१॥
धराइ इक लोह के धुबंत धूवि धूनियं
धसै जहाँ तहाँ करै कटक्क धूरि धाँनीयं।
जुराइ तीर लोह के जंबूर जोव जोरए
फिरंग की छुटैं तुफंग फौज तुंग फोरए ॥४८२॥
छछोह छोह लोह के कुहक्क बाँन छुट्टहीं
फसै जहीं मतंग के उतंग अंग फुट्टहीं।
पहै भंभार देखीयै अकास बार पार मैं
गए कि सिद्ध फोरिकैं परी दरी पहार मैं ॥४८३॥
चलंत हुंग चंगीयाँ बंदूक राम चंगीयाँ
जराइ अंग धाइ संग तंग हाल जंगीयाँ।
उछट्टि छुट्टि गोलियाँ लगंति आइ आइ कैं
खरैं खरैं लरैं गिरैं उथेल खाइ खाइ कैं ॥४८४॥
अगनि कोट लोह कोट कोट मत्त दंति के
उछेदि भेदि जाइ लींन अस्व बार अंति के।
तहाँ हजार मीर बीर को कहै सु मार कौं
सु सार के प्रहार कौं सहै समारि सार कौं ॥४८५॥
बषाँन रूप भूप के चढ़े तुरंग बाँन के
बिराजमाँन भासमाँन भासमाँन भान के।

पाठान्तर—१. पंगती ?

दुबाहु के सुभाइ के जि दौइ हाथ देषीयैं
लरैं जहीं तहीं तहीं हजार हाथ लेषीयैं ॥४८६॥

भिरंत भूप रूपसिंघ बीरभाव भाव सुं
घने घने अरीनि कौं हने अनेक घाव सुं।
अजाँन बाहु बाँन बाहु ठीक ठाहु ठाव सुं
अमाँन माँन सुं लरैं सुपत्थ के सुभाव सुं ॥४८७॥

कमाँन ताँनि पाँन पानि बाँन काँन लौं लए
निसंक अंक जोहु सु मतंग अंग मैं हुए।
छछोहु उच्च लाल लाल रत छुछ उछली
सु बिंध्य के पहार मैं प्रबार डार सी भली ॥४८८॥

सपक्ष तच्छ नाग सेस पच्छबान सार के
बिपच्छ पच्छ लच्छ भेदि प्रान के प्रहार के।
जहीं तहीं तनत्र भेदि तेज तीर जात हैं
परंत मीर तीर तीर होत पीर गात है ॥४८९॥

निकारि लेत एक आँत उभरे पछारि कैं
इकेक सेल पेलि झेलि लेत हैं उछारि कैं।
झपक्कि झुंडि तुट्टि मुंडि खग्ग झाट सु झरी
पतंग रंग सुं भरी परी कि जाँन तुवरी ॥४९०॥

धकाइ धाइ धाइ देत सेल की धमाधमी
घुमाइ घेरि होत घाइ खग्ग की घमा घमी।
दबाइ जाइ ताकि ताकि झाक झीक दीज्जीयैं
करंत कीक ठाक ठीक हाक हीक कीजीयैं ॥४९१॥

तरक्कि तुट्टि सुंड मुंड तुंड की तरातरी
झरप्फि लेत होत ग्रिज्झ झंड की झराफरी।
कराकरी कटंत कंध झाट कै झराझरी
दरादरी परैं किसीस खेल के दरादरी ॥४९२॥

कटार मार षग्ग मार मारीयाँ कटारीयाँ
कुठार मार चुग्ग मार तोरि डारि तारीयाँ।

अपार बार मार मार मारहीं उचारीयाँ
तरप्फरा तगातथे देत बीर तारीयाँ ॥४६३॥

लरत्थरैं थरत्थरैं अरब्बरैं परैं लरैं
अनेक तुच्छ अंभ कच्छ मच्छ ज्यौं तरप्फरैं।
पियें रगत्त पूरि पत्त जत्थ जुत्थ जोगिनी
पलास आस पूरयति भूरि भोग भोगिनी ॥४६४॥

दबाइ कै हरौल कौं धक्यट्ट गोल मैं दए
हटाइ गोल फौज के चंदोल टोल मैं हुए।
इके घमाइ दोइ दोइ दूक रूक सौं करे
समत्थ सत्थ रूपसिंघ सत्रु संघ संघरे ॥४६५॥

छंद भुजंगी

लरैं धीर औरंग के मीर लोहैं
छुटैं हाथ तें लोह छोहैं छछोहैं।
फिरंगान के ज्वान जंगी फिरंगी
सजे सीस टोपी कलंगी सुरंगी ॥४६६॥

रेजे रेज ह्वै कै गिरै अँगरेजी
किलक्कंत बैताल भक्खै करैंजी।
परी खोपरी बीखरी भाजि भेजी
भरी भात हंडी मनूं खेत भेजी ॥४६७॥

बलंदेज तेनेज अंगेज बाहैं। जोई राह राहैं सु राहै सुराहैं।
रुहिल्ले लरैं रोह के रोह रत्ते। तवे लोह के सेकि ए आगि तत्ते ॥४६८॥

पगट्टे इकट्टे जिपट्टे पठानं। भरे बाँन भू थाँन कट्ठीक मानं।
महातेज तें ताकि कै तीर मारै। परे जाइ पारे न भीजे पंखारे ॥४६९॥

तके दक्खिनी कोप कै धोप तोलैं। बके टाक दे टाक ए ताल बोलैं।
कलकंत लंगूर से रंग काले। भिरैं आइ मारैं भजाभच्च भाले ॥५००॥

हकारै बकारै करै जोध हल्ला। हटाबै फटाबै तबल्ला हमल्ला।
बहै बाट चाढ़ी गहै गाढ़ गाढ़। कटारी दुधारी उरा पार काढ़ै ॥५०१॥

फसे खंजरा पंजरी पुंज फोरैं। तही 'कुंजरा संजरा' संज तोरैं।
झबक्की जनूबी सीवी सीस झारयौ। परी बीजरी जॉन बैसा पछारयौ।।५०२।।

बरच्छी तिरच्छी करे रूप बाँही। हन्यौ है हबस्सी धसी तुंद माँहीं।
छछोही जुलोही नकी धार छूटी। भरी लाष कै रंग पष्वाल फूटी ।।५०३।।

गही मार चुग्गं कुठारं गुरुज्जं। परै मीर ह्वै कै पुरज्जं पुरज्जं।
दवट्टै धरै धोप षंडा दुधारं। उलट्टं सुलट्टं करै दोइ बारं ।।५०४।।

धबा धच्ची मत्ती गुपत्ती धुवत्ती। झबा झब्बि कत्ती झुकत्ती झपत्ती।
हवा थब्बि हत्थं समत्थं समत्थं। लथापत्थि लुत्थं अमत्थं समत्थं ।।५०५।।

लगे घंमनै घायलं लोह लागै। जिमाए बराती मनूं राति जागै।
परे खेत जोधा रजे धार पूरे। परे साथ रे पाथरे खेत पूरे ।।५०६।।

बने रूप राजाँन आजान बाहं। लरै साहि औरंग सौं लच्छिलाहं।
हठी रूप राजा करै लोह हत्थं। थभै सूर सूरत देखे सुरत्थं ।।५०७।।

बिमानं चढ़ी रंभ देखैं सु वेषं। बरं बछली रूप रूपं बिसेषं।
करै साहि औरंग सच्ची सराहं। रहै न्याय तेरी भुजा दोइ राहं ।।५०८।।

दोहा

धर गिरि अंबर धरहरे सिलगि सोर लगि सोर।
थर थर कायर थरहरे जुद्ध घोर भय जोर ।।५०९।।

लरैं सुभट घट नीसरैं साह दारा सिरदार।
कहै कहा जानी भले जौ परै बींद मुष लार ।।५१०।।

दारा और जु देत है पीयहिं माँन करि पीठ।
ईहिं दारा मन माँन तजि दई पीठ अरि दीठ ।।५११।।

दारा दहसल खाइ कै गयौ खेत सत खोइ।
कहा करै लसकर जबर हौनी होइ सु होइ ।।५१२।।

हीर छंद

बीर लरहिं धीर धरहिं तीर करहिं छोरहीं
भीर परहिं भीर करहिं मीर परहिं कोरहीं।

सेल चलहिं भेल भलहिं खेल खलहिं मारहीं
भेल भिलहिं मेल मिलहिं ठेलि दलहिं पारहीं ॥५१३॥

एक धसहिं एक हसहिं एक खसहिं जाइकें
एक फसहिं एक चसहिं एक ससहिं धाइकें।
एक डरहिं एक लरहिं एक मरहिं मारि कें
एक भिरहिं एक घिरहिं एक फिरहिं फारि कें ॥५१४॥

एक अरहिं आइ करहिं खाइ गिरह पेचहीं
एक तकहिं एक चकहिं एक छकहिं देचहीं।
एक बकहिं मारि सकहिं एक थकहिं छोह सुं
एक बकहिं मारि सकहिं एक थकहिं लोह सुं ॥५१५॥

फोरत बर जोरत कर तोरत धर ताकि कें
छोरत सर मोरत भर छोरत थर छाकि कें।
खंजर करि पंजर अरि कुंजर घरि फोरहीं
गंजन हरि भंजन करि अंजन गिरि तोरहीं ॥५१६॥

सूरन चक चूरन कोय पूरन बल सार कै
सज्जित बल गज्जित गल भज्जित थल मार के।
स्वारथ परमारथहिं यथारथ ध्रम रूप के
भारथ क्रम पारथ सम सारथ भुज रूप के ॥५१७॥

दोहा

रूप साथ उमराब भट पौरस प्रबल प्रचंड।
ललकि लोह गहि कें लरें खेत परे रिपु खंड ॥५१८॥

महासिंघ रघुनाथौत कौ कवित्त

दिल्ली दल जोर दुहुं ओर जुद्ध मच्यौ घोर
ललकि ललकि लोक लरै लसकर कौ।
तीरन की तार तरबारिन की मार तहाँ
देख्यौ सही सावत सबर भुज बर कौ॥
अरि के जिरह फोरे कर धर सिर तोरे
मारि कै कृपाँनी पाँनी राख्यौ मुरधर कौ।

रघुनाथ नंद महासिंघ राजा रूप साथ
गयौ सुरपुर भयौ वर अपछर कौ ॥५१६॥

रिणछोड सिंघ मानसिंघौत कौ कवित्त

देखि दल दुज्र्जन के अर्ज्जुन समाँन बाँन
बाँनन की आँच मैं धरयौ है धीर धरि कै।
बहसि बहसि कै कमाँन कौ कसिस कसि
मारे तीर बीर रस पारे मीर अरि कै॥
मानसिंघ नंद मरदाना बीर बाँना लीनें
कीनौ घमसान हथबाह करि करि कै।
राख्यौ जग नाम रनछोड़दास जोध नाँम
काँम आयौ स्वाम कै सिधायौ धाम हरि कै ॥५२०॥

रेवतसिंघ मानसिंघौत कौ सवैया

दुहुं ओर जुध मच्यौ घोर जहाँ आतस सोर जोर अररावत।
सहि सहि लोह कोह बच कहि कहि गहि गहि षग्ग धीर जहाँ धावत॥
छुट्टत सर फुट्टत फर बगतर टुट्टत धर सिर झुकत झुकावत॥
मारे किते मरद मानावत झुझ्यौ खेत रेवतसिंघ रावत ॥५२१॥

हरिकिरन जगनाथौत कौ कवित्त

उमड़ि घुमड़ि दल बादल समड़ि आए।
बरसत झर सर बुंदन सघन मैं।
गाढ़े गज ढाल पर बगतर ढाल पर
चपला कृपाँनी चमकत जैसें घन मैं॥
रुहिर के खाल वहै परे बिकराल बहैं
मांस मिलि कीच मच्यौ घोर जन गन मैं।
दुर्जन के तन निज तन कन कन करि
झूझ्यौ जगनाथ कौ हरि करन रन मैं ॥५२२॥

केसवदास जगनाथौत कौ कवित्त

ज्वानी के जगत लें कृपाँनी हरि मंदिर कुं
ढाहत हौ मीर ताहि मारयौ हित नाथ कै।

ता दिन जिवायौ जगदीस याही औसर कौ
खल दल दलिबे कौ छल बस पाय कै ।।
सार के प्रहार मारि असुर अपार मारे
भूभि परचौ खेत मैं बजाइ लोह हाथ कै ।
आदि अंत जोध कुल राह को निबाह कीयौ
राख्यौ जस बास केसोदास जगनाथ कै ।।५२३।।

कान्ह जगनाथौत कौ कवित्त

स्वाँमि काम करिबे कौ बीर हनुमान सम
लरत भिरत एक लाखन मैं लेख्यौ है ।
सेल सूल सहै फूल धार मैं घजन मारि
पार निकसत बार करत बिसेख्यो है ।।
जंग रंग रत्ता लोह छोह मद मत्ता चित
चकित चकत्ता अबरंग अवरेख्यौ है ।
कै तौ देख्यौ काँन्ह घमसाँन ही करत कै तौ
कान्ह जगनाथ कौ बिमान चढ़चौ देख्यौ है ।।५२४।।

सूरसिंघ द्वारिकादासौत षगरौत कौ कवित्त

जाकौ जैसौ धनी कौ भरौसौ हुतौ तैसी करी ।
जुद्ध ही की बेर आयौ दूरि तै चलाइ कै ।
आवत ही सूरसिंघ रावत संभार्यौ लोह
डार्यौ रंगभूमि मैं तुरंग खमसाइ कै ।।
धीर बीर दाँने दाँने मीर मरदाने मारे
दाँने दाँने करि डारे घाइन घुमाइ कै ।
कूरम खंगार कुल द्वारिका दास कौ नंद
चढ़चौ है बिमाँन बाँन बंस कौ चढ़ाइ कै ।।५२५।।

छंद पद्धडिका

बानैत बिहारी मेर मन । कुल रतन रतन सुंदर सुतन ।
घमसाँन कीयौ करि खग्ग घाव । रत भूभि रह्यौ राव मराव ।।५२६।।

कलि मूल किसन करि उबर कुद्ध । जुरि जोध अचल दासौत जुद्ध ।
मारे अनेक करि खग्ग मार । बाघावत झूझ्यौ बीर बार ।।५२७।।

चत्रभुज सुतन माधब सु चंग । ऊदावत झूझ्यौ रन अभंग ।
रघुनाथ भोज सुत बाहि रूक । अबसाँन करमसी कुल अचूक ।।५२८।।

करमसी बंस भट कुभक्रंन । मछरीक मनोहर अडिग मन ।
आस उत असुर मारे अभंग । सुर थाँन गए नृप रूप संग ।।५२९।।

जैतसिंघ लर्यौ जसवंत जाँम । चाँदावत राख्यौ चाँद नाँम ।
संभारि सार सुत दुइ समेत । खल असुर मारि भट परे खेत ।।५३०।।

जेसिंघ सुत केसब करिय जंग । रन रहे बीक पुर चढ़े रंग ।
मोहन सुत केसब लरि मरद । बर सिंघ बंस लीने बिरद ।।५३१।।

कुल सताज सानंदन कल्यान । भारथ झूभि गय भेदि भाँन ।
ऊदल बनमाली सुत अभंग । सजि जैम लोत भढ पंच संग ।।५३२।।

अनेक असुर मारे उदाम । करि संगर आए स्वाँमि काम ।
ठाकुर सोसा दूलौत ठीक । जगमाल बजाई लोह झीक ।।५३३।।

भीव सुत राँम भाटी सुभाव । दलमले दुयन करि खग्ग दाव ।
सोनगिरौ मनोहर सुत दयाल । खल मारि बहाए रुहिर खाल ।।५३४।।

धनराज देई दासौत धीर । झुभि गौंन झूकौ समर बीर ।
अनभंग जंग भढ अषैराम । रन चंग रचायौ रिदैरांम ।।५३५।।

गोरधन लरै गहि गहि गरूर । नरूकै चढ़ायौ बंस नूर ।
चत्रभुज सुतन ए सूर सचेत । खल मारि किते निठ परे खेत ।।५३६।।

गिरधर सुजान सुत बडे गात । बर बीर गोरधन जग बिख्यात ।
खग बाहि नरूका दुयन खंडि । मडि रहे खेत पग अडिग मंडि ।।५३७।।

रोहितास परस सुत जागौ जंग । रन रह्यौ नरूकौ राखि रंग ।
काधू सुतन कल्यान दास । जुरि जुद्ध रह्यौ रन सुजस जास ।।५३८।।

रंग रोस बिराज्यौ महारूप । रन रत्त तर्यौ तहाँ महारूप ।
चूकौ न नरूकौ चाव चेत । जेसिंघ सु जा बखित परे खेत ।।५३९।।

सादूल सुतन भढ सहसमल । जुरि जंग रहे रब जैतमाल ।
जोगी भिरंत जोगी सु जाब । चूहड़खाँ राख्यौ अगत चाब ।।५४०।।

हाडौ गरीबदासौत रूप। रिपु षंडि रह्यौ रन राषि रूप।
नीबाँबत मन करि पर निबाह। चहुबाँन सु झूझ्यौ सुजस चाह ॥५४१॥

मंडि कलौ भलौ भड सुत महेस। दलि दुयन सूर झूझ्यौ सुदेस।
प्रोहित नरू सजि सिलह पोस। रानाबत राज गुरु धरीय रोस ॥५४२॥

षगबाहि कीए रिपु षंडि षंडि। मंडि रह्यौ षेत मरजाद मंडि।
लाषाबत जालप लीयँ लोह। छिलि मछर बारहठ अति छछोह ॥५४३॥

सूरत्ति सूर पूरत्ति सचेत। षल षंडि षंडि निठ परे खेत।
बारहठ जसाबत बीर बाँन। बीसोतर ठाकुर सी बषान ॥५४४॥

अरि सर मारि मारे अभीत। रन झूझि परे राबत्त रीत।
सजि सिलह भगौती रूप साथ। हरि राम नंद षगबाहि हाथ ॥५४५॥

थिर थंभ भयौ मधि सुभट थाट। भरिदी दसौंधि रन झूझि भाट।
साबंत सूर हठि करिह मल्ल। भाटी षबास झूझ्यौ सु भल्ल ॥५४६॥

सहसाबत रूपौ साबधाँन। कोठारी झूझ्यौ गहि कृपाँन।
षग षूब लर्‌यौ तहाँ बलोषाँन। पर्‌यौ झूझि अलाबल सुत पठाँन ॥५४७॥

सजि दादनौत लंघा सरोस। जुध जुर्‌यौ सुजाबल षग्ग जोस।
महदली भली की षग्ग मार। धसि गयौ सामुहौ सार धार ॥५४८॥

पटदार करीय इतमाम पार। झूझि गौ तषतषाँ कौ झूझार।
करि जुद्ध हमिदा किरनदार। रन झूझि पर्‌यौ करि मन करार ॥५४९॥

तखतखाँ दमामी खगतोल। सजि बंब झूझि राख्यौ सुबोल।
इत्यादि काम आए अनेक। बर बीर धीर लीनैं बिबेक ॥५५०॥

कवित्त

काहू साथ बीस रजपूत काहू साथ दस
काहू साथ पंन्नह पचीस भट लरे हैं।
काहू साथ पाँच सात काहू साथ तीस जुत
महि गहि लोह धीर बीर छोह भरे हैं ॥
गाढ़े गाढ़ पाट पढ़े हाथिन के दाँत चढ़े
आगैं ही कौ धसे पाइ पीछै कौं न धरे हैं।

एते उमराव महाराजा रूपसिंघ साथ
स्वाँमि हेत ह्वै सचेत भूमि खेत परे हैं ।।५५१।।

अथ अमृत ध्वनि छंद

खग भल दलमलि खग्गबलि प्रबल भुजा जनु पत्थ ।
रूप भूप किय रोख रुख जत्थत्थल मिलि सत्थ ।।
जत्थत्थल मिलि सत्थत्थकित समत्थत्थर किय ।
कुद्धद्धरीय विरुद्धद्धसि असि रुद्धद्धर किय ।।
तुच्छच्छकिय अतुच्छच्छबि कुल सुच्छच्छल बल ।
दक्खक्खचि पय रक्खक्खलु अरि लक्खक्खल भल ।।५५२।।

जगमग भय कर असुर पर सजि सर बाँन सगग्ग ।
रूप भूप बंस बरन रंग रस लगग्ग रजि अगग्ग ।।
लगग्गरजि अंगग्ग गाहिय षरग्गग्गज हनि ।
कुंभब्भभकिक सुंभब्भतिरत कुंभब्भजि भनि ।।
भुंडड्डहकिच मुंडड्षडष मुंडड्गमग ।
सज्जज्जय रब गज्जज्जस कमधज्ज जगमग ।।५५३।।

थरथर हर नारद हसे रचि मचि धसे मरद्द ।
रूप भूप हठि दुयन के मद्दद्दबटि गरद्द ।।
मद्दद्दबटि गरद्दद्दलकीय रद्दद्दलमलि ।
तक्कक्करीय झढक्कक्कलह कढक्कक्कलमलि ।।
रत्तत्तराल भरत्तत्तन सुपरत्तत्तरतर ।
जुत्थत्थकीय समुत्थत्थढ भढ लुत्थत्थर थर ।।५५४।।

धर धर कंपीय धर गिरदं तरभर छुटीय तुफंग ।
रूप जंग अवरंग सौं अंगग्गहीय उमंग ।।
अंगग्गहीय उमंगग्गज थट संगग्गह भरि ।
रंगग्गहर उतंगग्गति करि भंगग्गन अरि ।।
जोधद्धसि असि क्रोधद्धरि कीय बोधद्धरधर ।
सिद्धद्धनि धनि किद्धद्धरीय प्रसिद्धद्धर धर ।।५५५।।

दोहा

छाँडि तुरी सजी आतुरी बुयन पराजय दैन ।
रूप धार सनमुख धसे अस्वमेध फल लैन ।।५५६।।
कमध रूप रन रत करत घन घाइन घमसाँन ।
जुध मधि औरंगजेब से हेरि रहे हैराँन ।।५५७।।

बचनिका

औरंगजेब गाजी । महाराजा सौं भए राजी । साथ देखि । हाथ देखि । हथबाह देखि । उछाह देखि । जंग देखि । रंग देखि । अंग देखि । ढंग देखि । लागे कहन बचन बिसेखि ।।५५८।।

कवित्त

भागि गयौ दारा निज नाँम गुन धारा जिन
सार न संभारा खोइ डारा जस धन कौं ।
ऐसी बेर कमध करारा खूब लोहा मारा
करै ललकारा न बिसारा निज पन कौं ।।
जानैं जग सारा राजलाल रखबारा सहै
खरग की धारा बिसतारा रोस रन कौं ।
कबकौं करत जंग रंज न घट्यौ है रंग
बाह बाह रूप रहमत तेरे मन कौ ।।५५९।।

छप्पय

धरहु रूप तुम धीर करहु हथबाह न कोऊ ।
रूप दिली दल रूपखग्ग बल खल दल खोऊ ।।
सटक्यौ दारासाह हौहु अब तरफ हमारी ।
पंच हजारी हुते करूँ हौ हफत हजारी ।।
बर बीर सुनहु मानहु बचन कथन साहि औरंग कीयौ ।
कमधज्ज गज्जि सब सुकन कौ मारि खग्ग उत्तर दीयौ।।५६०।।

कवित्त

बाहिनी सी बाहिनी के पार गिरि गज पर
चढ़यौ अवरंगजेब महल अंबारी कै ।

बहै तेज धार में अपार बहै जात देखि
करत सबद बीर तारी किलकारी के ।।
महाराजा रूप गजराज के सरूप तामैं
भारी रौर पारी हने गरढ हजारी के ।
ऐसी ऊँची अचल अंबारत के ढाहिबे कुं
ताव करि दाब कीए दसन कढ़ारी के ।।५६१।।

कालकूट भरी जैसी टूटि बीज परी जैसी
काल ही की घरी जैसी लोह छोह लाज कैं ।
जम की सी डाढ़ जैसी गाढ़ भरे बाढ़ जैसी
तर की असाढ़ कैसी तेज ग्रहराज कैं ।।
हर के त्रिसूल जैसी बज्र सम तूल जैसी
कलह के मूल जैसी सोही लोही साज कै ।
महाराजा रूप ऐसी कोपि कै कटारी मारी
गाढ़े साहि औरंग के गाढ़े गजराज कैं ।।५६२।।

साहस की सींव रूप भुज बल भींव भूप
निहचल नींब कुल ध्रुब ज्यौ अटर की ।
वृंद कहै जंग जुर्‌यौ ही को अभिलाषी साखी
साखी कियो जग लाज राखी मुरधर की ।।
भारी भयकारी कोपि कमध कटारी मारी
कारी घटा बारी जैसी बीज तैसी करकी ।
धूली धर गिरी गज धूजि कै अंबारी धूजी
धरक धरक छाती औरंग की धरकी ।।५६३।।

महाराजा रूप भारमल नंद भूप रूप
बिरचि बजायौ लोह कई यक हजार मैं ।
घने घने घाइन घुमाइ घमसान कीयो
घने हने भट कमध करार मैं ।।
वृंद कहै बीर बार मारमार मचि रही
परे हैं अपार बार आवै न सु मार मैं ।
खेत मैं पिसाच प्रेत पसु न छुवन पाए
लागि गयौ तन तरबारिन की धार मैं ।।५६४।।

छप्पय

असि जमुनां छबि अमल सूर मंडल कर संचर ।
गहरी पानिप भरी तेज अति धार निरंतर ।।
झपटि लहरि औ' झरनि धीर भट जंतु धकाये ।
हर नारद हेरंब अंब जस गावन आये ।।
लै अनीदरभ तिल तन अरघ धर तीरथ सनमुख धर्यौ ।
करि भेद सूर मंडल कमध रूप भूप हरि पुर बस्यौ ।।५६५।।

छंद वाटकौ

दिल्ली चाह अथाह दला साहि जादाँ बजि सार ।
भूप भलावे रूप भुज भारथ हुंदा भार ।।५६६।।
भुज भार सधारीय सार भरोसै साहि दलाँ सिणगार ।
अहंकार अपार कमद्ध उपट्टे सार वह सिरदार ।।५६७।।
सिरदार सुभट्ट सुथट्ट लियै संग अंगि उलट्टि उछाह ।
गज थट्ट गरट्ट बिकट्ट बिघट्टन दैण दबट्ट दुबाह ।।५६८।।
दुय बाह अथाह कुल छल दाषबि मुंछ भुंहोंठ बिमेल ।
सजि टोप बग्ग नर आवध सिप्पर भीच भंडारण भेल ।।५६९।।
मिलि औरंग साहि मुराद भयंकर जंग समोगर जूटि ।
छुटि बाँण कबाँण छछोह छड़ छड़ छोह बिमाँण छूटि ।।५७०।।
छुटि साहस कायर उछल सायर देब दिबायर दीठ ।
अणभंग अषाडै पाँणि पछाड़ै रोस बजाड़ै रीठ ।।५७१।।
बजि रीठ बलाबलि बीर महाबल साबल ध्रौ बिस धीर ।
खग झाडीय औझड ठाल खड खड त्राछ तड तड तीर ।।५७२।।
तड तीर अमीर लमीर तडफ्फै गिद्ध झडप्फै गात ।
खल खेत खल भल चेत चलच्चल बीजल ज्यौं बिज पात।।५७३।।
बिज पात जिहीं करि घात बिरौलै जोध हिलौलै जंग ।
थट मैंछथरक्कै रूप न थक्कै रूपन थक्कै तकै अवरंग ।।५७४।।
पंग चाटि झटक्के घाव भभक्के खेत सलक्के खाल ।
धर भार धभक्के कुम्भ कसक्के लोह छके लोहाल ।।५७५।।

लोहा लहकारे लग्गि धिगारे मारे मेछ मरट्ट ।
ढीचाला ठाहे सार संबाहे गाहे मेलि गरट्ट ।।५७६।।
रद पाडिर बट्टाँ भैरब सट्टाँ बाट बिरट्टाँ खेत ।
रण रत्त बहाए पत्र भराए पाय धपाए प्रेत ।।५७७।।
प्रेताँ पल पाए खाय अघाए घाए कियौ घमसाँण ।
थिर कीरति थप्पे प्राण समप्पे सूरज बडै अबसाँण ।।५७८।।
सजि अबसाँण बिमाँण चढ़ि बरि अपछर तजि तंन्न ।
रूप मिले हरि रूप सौं भारहमल सुतन्न ।।५७९।।

दोहा

बाच जुधिष्ठिर भीम बल बर अरजुन ज्यौं बान ।
रन जुझे अभिमन्यु ज्यौं रूपसिंघ राजान ।।५८०।।
सतपै से पनरोतरैं जेठ सुकल पच्छि जाँम ।
नौमी तिथि कौं रूप नृप करि जुध आए काँम ।।५८१।।

छप्पय

माँन सुता मन सुद्ध रिधू सीसौदनि राँनी ।
इंद्रजाल अंगजा सहित हाड़ी सुख साँनी ।।
सतजुत गिरधर सुता गौडी राँनी गुनबंती ।
सुनीय स्रबन अबसाँन हेत पूरन हुलसंती ।।
सत सील पतिब्रत धरम सौं एकोत्तर कुल उद्धरीय ।
महासती रूप भरता सौं भेदि भाँन मंडल मिलीय ।।५८२।।
अंग जोति उद्योत जोति जरतार जग मग ।
आभूषन अति ओप जोति या भूषन जगमग ।।
चलत तजत आबास जोति संमिलित जगच्चखि ।
जोति रूप जगमगत लखत चक चूंधि जगच्चखि ।।
सतसील धरम लज्या सहित अगनि कुंड मंजन [भि]लीय ।
महासती रूप भरतार सु भेदि भाँन मंडल मिलीय ।।५८३।।
श्री महाराजा रूपसिंघ भूपति भारमल नंद ।
ताकौ जस बरनन कियौ बरबानी कबि बृंद ।।५८४।।

१०

यमक-सतसई

सरसति[१] को नमत नर सरसत कोमल बैंन।
गनपति कृपा कटाच्छ तैं गन पति सुभ फल दैंन ॥१॥
केसब कबि बरने जमक अब्यपेत सब्यपेत।
सुखकर दुखकर[२] भेद सब बरने वृंद सहेत ॥२॥
बिन अंतर इक से सबद अब्यपेत सो जान।
अतंर सों इक से सबद सब्यपेत पहिचान ॥३॥

अथ अव्यपेत : आदि पद यमक

संकर संकर संत कौं मन बंछित कों देत।
मन बच क्रम कर कीजियें ताही सौं हित[३] हेत ॥४॥
नर हर नरहर[४] और की करत आस बेकाज।
संत सुदामा रंक तैं राव किये[५] महाराज ॥५॥
निसा निसाकर देख री कैसो[६] अमल उजास।
यामैं मान न कीजियै करियै बिबिध बिलास ॥६॥

द्वितीय पद यमक

लाज काज छाँड़ें तऊ मोहन मोह न कीन।
काहू कौ पिय निठुर सौं नौज होहु[७] मन लीन ॥७॥

पाठान्तर—१. श्री सरसति २. दुष्कर ३. हिय ४. नरहरि नरहरि ५. कियो ६. कैसे ७. होउ।

कालिंदी के पुलिन पर तरबर तरबर[१] छाँह ।
ए री मदन गोपाल[२] सौं मिलियें भर भर[३] बाँह ।।८।।

सिसिर दुस्ट बन करत[४] है पातन पातन पात[५] ।
सजन[६] सुरभि तरु करत है सरस सु पल्लब[७] गात ।।९।।

तृतीय पद यमक

पय पाबन जागत जगत अबनी अमल उदोत ।
कोक कोकनद मुदित मन प्रगट प्रभाकर होत ।।१०।।

मो चित लागी चपपटी निपट अटपटी बात ।
जात जात पिय सौं मिलैं[८] बिमा मिलैं हित जात ।।११।।

चतुर्थ पद यमक

घर बर सौं[९] काम न कछू नैंक मदन सर भीन ।
ब्रज बाला बन बन फिरत नंद नंद आधीन ।।१२।।

अथ द्विपद यमक १।२

कर मोहित मोहित करी हर हरली[१०] कुल लाज ।
को सिष मानें बिषभरी कौन करै गृह काज ।।१३।।

३।४ चरन

धनुष चढ़न संदेह पें मुनि महिमा अनपार ।
अबलोकन लोकन किये जब सुकुमार कुमार ।।१४।।

१।३ चरन

मुरली मुरलीधर धरी अरी परी धुन[११] कान ।
जा तन जात न बनत है लाज करी कुल कान ।।१५।।

पाठान्तर—१. तर २. गुपाल ३. भरिभरि ४. करतु ५. बात ६. सुजन ७. स पल्लब ८. सुख पात हैं ९. बरसौ १०. हरि हरिली ११. धुनि ।

२।४ चरन

हरि बिन[१] छिन न सुहात है चंद न चंदन बात।
तन मन कैसें होत सुष बनत न बन तन जात ॥१६॥

१।४ चरन

देष स्याम घनस्याम घन सुनि[२] मोरन के सोर।
चल[३] री बन मोहन चलित[४] बनिता बन[५] ता ओर ॥१७॥

२।३ चरन

बिछुरें[६] मन मोहन सषी कलप कलप दिन जात।
पलक पलक लागत नहीं कही परत नहिं बात ॥१८॥

अथ त्रिपद यमक १।२।३ चरन

केतक केतक केतकी फूले कदंब कदँब।
बनि बनिता हरि हैं तहाँ उठि चलि न करि बिलंब ॥१९॥
बट बटपारो[७] बसतु[८] है लट लटकति[९] है भाल।
अरी अरीली जाय जिन हरि लैहै मन लाल ॥२०॥

१।३।४ चरन

लषि लोचन लोचन लग्यो जिय हिय जान सु रंग।
जलजातन जात न सुरत लगत कुरंग कुरंग ॥२१॥

१।२।४ चरन

फल तर[१०] साल रसाल पर कोकिल किल कुहकार।
सरस सपल्लब डार तरु मधु मधुकर गुंजार ॥२२॥

२।३।४ चरन

तन ब्याकुल पलक न लगत[११] मन मनमथ भय भीन[१२]।
देष सघन उनये नये[१३] सुधि बिरहीन रही न ॥२३॥

पाठान्तर—१. बिनु २. सुन ३. चलि ४. चलत ५. बनि ६. बिछुरे ७. बटपारा ८. बसत ९. लटकत १०. फलि नर ११. लागत १२. लीन १३. उनए उनए।

अथ चतुश्चरन यमक

बंसी बंसीबट बजी सुनि सुरभी सुर भीन।
सुरत सुरत गोपिन[1] लगी सुरन सुरन सुष दीन ॥२४॥

एरी ए रीझे अनत मोहि मोहि जिय लैंन।
चैन लहौं[2] छिनहूं न हूँ हरि चित्त हरि चितवैं न ॥२५॥

परसौं परसौं रचि रहे रैंन[3] बिहान बिहान।
कहौं कहौं अजहौं[4] रहे अरी अरीले जान ॥२६॥

चंद न चंदन मो[5] रुचैं बात न बात सुहात।
बिन[6] प्यारे प्यारे न ए कहियैं हियैं पिरात ॥२७॥

सास सास बिनहूँ करौं[7] ननदी नदी बहाउ।
जिन पैहूँ पैंहूँ न छिन[8] षेलन षेल न जाउ ॥२८॥

अथ सव्यपेत–प्रथम पद यमक

सुरभित बन कीनों सुभरासि कोमल मलय[9] समीर।
तहाँ सुरत सुख लेत हैं नित राधा बलबीर ॥२९॥

द्वितीय पद यमक

कुंजन कुंजत[10] कोकिला अलि गुंजत अलिमाल।
चलि बलि हिलि मिलि लेहु सुष[11] तहाँ रसिक नँदलाल ॥३०॥

तृतीय पद यमक

चलि कुंजन मैं राधिका बिचरत नंद किसोर।
सुमन देष फूलत सुमन भूलत मान मरोर ॥३१॥

चतुर्थ पद यमक

तहाँ तिय संग जल केलि सुष लेत रसाल गुपाल।
घेरि लियौ[12] चहुं ओर तैं ताल तमालनि[13] ताल ॥३२॥

पाठान्तर—१. सुरति सुरति गोपन २. लहू ३. पैं न ४. कहूँ कहूँ अजहूँ
५. मुहि ६. बिनु ७. बिनहूँ करूँ ८. जिनपें जिनपें हू न छन ९ मलै
१०. कुंजन ११. हित मिलतेऊ सुरन १२. घेर लयौ १३. तमालन।

अथ द्विपद यमक १।२ चरन

ठौर सघन बनि[1] कुंज मैं बेर[2], सघन जल पूर।
जाहि सु मन सौंपियें ताहि न करियें दूर ।।३३।।

गमन मैन बन तन कियो घेर लियो मन मैंन।
सब तज देषन उठि चली सोभा सुंदर नैंन ।।३४।।

३।४ चरन

मोहन डारी मोहनी मो[3] मोही बन माहि।
बत उत रत हैं हरि तऊ हिय तें उतरत नाहि ।।३५।।

याकों सुधि[4] न संभार कछु फिरत सु मन नहि[5] साथ।
जहाँ गोकुल सँग फिरत हैं ए री गोकुलनाथ ।।३६।।

१।३ चरन

पीत बसन सुंदर बदन तिहिं मन नैकु निहारि[6]।
प्रीत बसन करि लेति है[7] समझति नाहि गंबारि[8] ।।३७।।

गति जीत्यो गजराजु तें करि[9] जीत्यो मृगराज।
मोतिन को गजरा जु तें पिय[10] पै पायो आज ।।३८।।

२।४ चरन

अरध रैंन मन मैंन करि[11] हरि मुरली सुर भीन[12]।
ब्रज बाला बन[13] उठि चली सुनत भए सुर लीन ।।३९।।

१।४ चरन

नई बैस मैं होत है अंग ढंग रस रंग।
तैसें नाहिन होत री नई बैस मैं अंग ।।४०।।

पाठान्तर—१. बन २. बैर ३. हों ४. याकी सुध ५. तिहि ६. निहार
७. पीत बस न कर लेत हैं ८. गंबार ९. कर १० पिव
११. मेंन कर १२. लीन १३. बनि।

२१३ चरन

मेरे बरजें ना रहति तू नित बन तन जात।
बनत न बात दुराब की कहत सरेषित गात ॥४१॥

अथ अव्यपेत-सव्यपेत सुखकर-दुखकर मिलित यमक

केसर की सारी बनी सारी बनी बिचारि।
तातें बनता बन[1] रही हार[2] निहारि निहारि ॥४२॥

कुंज बिहारी कुंज मैं छरी छरी दिखलाइ[3]।
चित उचकी चितवत[4] चकी पर तन परत न पाइ ॥४३॥

कहों सु नावत सीस हरि कहों सुनावत बैंन।
बन बन[5] बनि बनि फिरत[6] हैं नैंन सरस रस लैंन ॥४४॥

देह दही बेचत दही दई दई यह जाति।
गोरस मिस गो रसहि हरि मग मँडराति डराति ॥४५॥

देही देही मैं कीयो अरी अरीले हाथ।
इन नीकै[7] चितयो न छिन[8] चितयो तयो अकाथ ॥४६॥

एंन बैंन नवनीत से छबि नव नीके गात।
तू नवनीत बनी[9] चलो बनो बनो नहिं बात ॥४७॥

आवन बन कैसें बनत नत ह्वै कहो निहोरि।
सबही मिलि सुदती दती चितवन ही की षोरि ॥४८॥

सहि सहि लीनें मैं सबै सबके बके कुबैंन।
जब जोरें जोरें बनैं कमल नैंन सौं नैंन ॥४९॥

रसना तौ वह ही[10] भली रस नातो जिहि माहि।
ना तौ हाँ तौ करि सखी मोहि सुहातो[11] नाहि ॥५०॥

बनी माहि राधे बनी बनी बनी की भाँति।
भई देख सिर उनमनी सबै उन मनी काँति[12] ॥५१॥

---

१. तो तौं बनि बनता २. हारि ३. दिखराइ ४. चितवन ५. वनि वनि ६. फिरतु ७. नीको ८. बिन ९. नबनी नबनी १०. ई ११. सुहातौ १२. क्रांति।

असव्यपेत यमक

बेधत हौं[१] बिन बेध ही खरे अनीरे[२] ऍन।
तू इन नैंनन कौं[३] कहत खरे अनीरे[२] ऍन ॥५२॥

मिली जु तम की रैंन मैं प्रीतम की रुचि लेष[४]।
चमकी पुनि[५] तमकी तरुनि[६] दमकी दामिनि[७] देष ॥५३॥

ए री याकौं नैंक ही कौनैं कही रिसाय[८]।
कौनैं मौनैं गहि रही अब गौनैं तें आय[९] ॥५४॥

सबही तें अनषात हैं क्यौं न अली अनषात[१०]।
उखरी ऊख तऊ खरी बनि[११] सन सघन सपात[१२] ॥५५॥

बरस न लागे नाह कौं चले छाँड़[१३] नव नेह।
तरसन लाग्यो जीयरा बरसन लाग्यो मेह ॥५६॥

कर हाँ रसना तें चली कर हा तैं अब नाहि।
कर हाँ रस नातैं चली रस नातै बन माहि[१४] ॥५७॥

अथ अव्यपेत-सव्यपेत सुखकर-दुखकर यमक

बिजय देत जय सबद जुत अमित अजय अनुरूप।
जय भंजय मंजय दुरित जय जय जोति सरूप ॥५८॥

बानी कौं बंदन कियैं बानी मधुरी होत।
सुबरन की बानी चढैं[१५] बानी जगमग जोत[१६] ॥५९॥

ब्रह्म निबेदन करत है बेद न पावै पार।
जन भव बेदन हरत हर[१७] कहत बेदबिद सार ॥६०॥

बार न लाइ जगत पति बारन तारन बार।
बा रन तारन दुष्ट के काज सबारन[१८] सार ॥६१॥

पाठान्तर—१. हैं २. अनीँन ३. कुं ४. अ-लेषि ५. सुनि ६. तरुन ७. दामन ८. रिसाइ, ९. आइ १०. अनषाति, ११. बन, १२. सपाति १३. छाँड़ि १४. करि हाँ, रची, करि हा तौ १५. चहै १६. होत १७. हरि १८. सुधारन।

जे गोपी गोपीन सँग गोपी गोपीनाथ।
ते सबही गोपी न तिन करी अगोपी गाथ[१] ।।६२।।

जो ही ही की पूतना हले पूतना प्रान।
जननी ऐसो पूत ना जनम्यौं काहू आन ।।६३।।

हरि से सनमुष कहि सकौं[२] गुन न असेसन[३] भाषि।
हरि सेसनमुष देषबो हरि से सनमुष राषि ।।६४।।

सुबरन दुति पटु तन चितै तन सु बरन घनस्याम।
करि सु बरन बरनन करौं मन[४] सु बरन घनस्याम ।।६५।।

निस तारे केतक, किते जन निसतारे स्याम।
दुष्ट अनिस तारे तिते बिसतारे गुनि[५] नाम ।।६६।।

भये धराधर आप हरि कियो धराधर सैंन।
धर्यौ धराधर हाथ पर कर अधरा धर बैंन[६] ।।६७।।

भक्त उधारन हरि कहूँ[७] करी उधारन काय।
काज सुधारनहार हरि करी उ धारन[८] काय ।।६८।।

हरि जसु धारन हरि बिषय नाम सुधारन होइ।
वह ई जन बसुधा रतन जनम सु धारन सोइ ।।६९।।

जे अयान गुरु पाप रत जप तप रत नहि होइ।
जो इह रत गुरु पा परत परत सुधारत सोइ ।।७०।।

मन बच क्रम करि आन कौं मो उर आनन आन।
आनन ही तें हरि बिना आन न करौं बषान ।।७१।।

कन कन पाइ न दीन जन लहि कनक न छकि जात।
नाम सुधा कन कन परत मोह कन कन छकात ।।७२।।

करि ताही सौं सोच करि करि ताही सौं हेत ।।
करता ही कै बात सब सो कर[९] ताही देत ।।७३।।

पाठान्तर—१. नाथ २. सके ३. गुन ऐसे सन ४. तन ५. गुन ६. भए, कीयौ, परि करि ७. कहौ ८. उधारण सुधारण धारण ९. संकर।

सुन लै करन पुरान गुनि सुनिलै करन अनंद।
कर निहूजि करुना करन करन पूज नँद नंद ॥७४॥

गोबरधन कर[१] पर धर्‌यौ गो बरधन[२] के हेत।
बर धन माँगै धन मिलै बरधन कौं बर देत ॥७५॥

गन पतितन के ऊधरे गनपति तन की साषि।
स्रीपति जदुपति बिपति पति हरति बिपति पति राषि ॥७६॥

हरि अरजुन हिय सौं मिले हरि अरजुन हित कौन।
हरि अरजुन बिप्रहि दिये तरु अरजुन गति दीन ॥७७॥

जोगु नही जप तप नही जो गुन ही गुन हीन।
हरि गुन ही गुनही सदा तो ह्वै है गुनहीन ॥७८॥

धरत सुदरसन चक्र कर परम सुदरसन स्याम।
हरत सुदरसन त्यौं हरत ताप तीन हरि नाम ॥७९॥

पदमपान के पद पदम झलकत पदम अनूप।
दरसैं पावैं पदम निध परसैं पद महि भूप ॥८०॥

देत भजन तैं संष निधि लहैं निरंतर संष।
लियो संष हरि संष अरि ऐसे बिरद असंष ॥८१॥

एक निमष हरि भजन तैं कलमष कोटि हरंत।
सत-मख हू तैं जनम रस[३] सत मख काहि करंत ॥८२॥

हरी बिपति पति पंच की करी बिपति पति साँति।
पंडव पतिनी को रषी प्रभु पति नीकी भाँति ॥८३॥

बासब सेबत है चरन बास बसे ब्रज माहि।
सुमन सुबास बसे हरि[४] बासब सेब सनाहि ॥८४॥

पन घट राख्यौ चाहिहैं तो पनघट जिन जाइ।
ओ[५] पन घट की रहसि कैं[६] गौपन घटत न काइ ॥८५॥

जलजातन से नयन जुग जात न छबि नब नेह।
जा तन चितबत जगत पति जात न सो जम गेह ॥८६॥

पाठान्तर—१. गिर २. बर्द्धन ३. जन सरस ४. हरे ५. ऊ
६. रहि सकैं।

नाग पछार्‌यो फेरि कैं नाग नथ्यौ बर जोर।
नाग उधार्‌यो नगधरन नागर नंद किसोर ॥८७॥

गरज समैं अगरज बचन पग-रज लावत भाल।
गरजत घन की सी गरज अगरज भये गुपाल ॥८८॥

नगन मिले संग नगन तन नगन रहत है गात।
नगन फिरत हरि भजन बिनु न गनत द्यौस न रात ॥८९॥

तपन[1] तपे हरि भज भये तपन समान प्रताप।
तप न तपे ते नर इहाँ तपन सहत संताप ॥९०॥

सुरत रँगीली[2] सौं बिरचि सुरत रंग हरि नेह।
सुर तरंगिनी तट लहैं सुर तरंग सुर गेह ॥९१॥

अनत रहैं नत साध सौं हरि तजि अनत न जाइ।
ते अनतप ही सुष लहत हैं[3] अन तप रहत सदाइ ॥९२॥

मोहन मदन गुपाल की मदन बदन छबि देख।
मद न रहत निज रूप कौ सब सुख सदन बिसेख ॥९३॥

या कुंजन मन राषिहैं या कुं जन मन कोइ।
हरि जन मन कुं[4] राषिबो हरि जन मन हरि कोइ[5] ॥९४॥

गोपन के बछ बछरुबा बिधुजन[6] गोपन कीन।
राषैं गोप न गोप पन[7] हरि अद्‌भुत रस लीन[8] ॥९५॥

कमला सन बरनन करैं कमलापति जग जोति।
कमलासन धरि हरि जपैं कमला सनमुष होति ॥९६॥

दंड कमंडल छाँडि कैं दंडक मंडल लेत।
दंडक मंडल मैं रहैं मुनि धरि हरि सौं हेत ॥९७॥

भजि हैं तज पाषंडकौं जोत अखंड उद्दोत।
सोई संत अखंड मत जग दुख खंडन होत ॥९८॥

पाठान्तर—१. नयन २. तरंगिनी ३. ते अनंत यही सुख लहत ४. कौं ५. होइ ६. बिध जब ७. गोपनपन ८. भीन।

छाँड़ि रसा धन देत हैं सुर साधन बिसराइ।
जिनके साधन हर भजन तिनके साध न काइ ।।९९।।

जो दरसन मैं देखियें निज दरसन मैं होत।
तौ षट दरसन देखिबौ हरि दरसन मैं होत[1] ।।१००।।

सजग तपति तप रैन दिन जोग जगत पति साषि।
हेत[2] जगतपति भगत कौ लेत जगत पति राषि ।।१०१।।

जोजन गंधा सुत कहत गुन जोजन करि जास[3]।
लहै मुकति सा जो जतन जो जन जुत बिसबास ।।१०२।।

बाद न करि बकबाद तें होत सबाद न कोइ।
हरि अपबादन हरि भजें जस बादन जग होइ ।।१०३।।

मोहत मो घनस्याम सौं मो घनस्याम सुहात।
मोघ न करत मनोरथनि मोह तमो घन जात ।।१०४।।

तर[4] पातन के चीर करि हर पात न लग कोइ।
तन पातन कासी करें तन पात न फिर होइ ।।१०५।।

व्यापक रूप अनंत सम जाकौ नाम अनंत।
जोई जपत[5] अनंत गुन होत निरंतर संत ।।१०६।।

अंतर रहत न स्याम कौं[6] उर अंतर जय जाप।
अंतरहित जन कौं करत अंतरजामी आस ।।१०७।।

बामदेब रत[7] नाम सों हरि सरूप अति बाम।
मोहत बाम अबाम कौं बस किय बाम अबाम ।।१०८।।

उदित धाम निधि कोटि तें जगमगात अति धाम।
नाम सुधामय जो जपत सो पावत हरि धाम ।।१०९।।

धाम[8] काम तजि नाम लगि है पूरन मन काम।
जपत अकाम सकाम सब काम हुतें हरि काम ।।११०।।

पाठान्तर—१. ज्यौं, दरसन, त्यौं २. देत ३. तास ४. तन ५. जप तप
६. सों ७. रति ८. धरम।

मासन मैं अगहन भये अगहन जाकौ रूप।
सेबत अग हन आदि सब अघहन[1] नाम अनूप ॥१११॥

पइयें गुरु उपदेस तें जपहु जगत गुरु स्याम।
गुन[2] नारद मुनि संत जन भाषत गुरु गुन ग्राम ॥११२॥

भव के पोषन भरन हरि भव से करत बषान।
भजियें नर भव पाइकें भवकरता भगवान ॥११३॥

चहैं सुपारस कौंन की पारस ढूंढ़त काहि।
तुव पारस हरि हैं सदा ताहि कृपा रस चाहि ॥११४॥

सदा सुरभि रितु सुष जहाँ सीतल सुरभि समीर।
तहाँ चराबत सुरभि हरि चरचत[3] सुरभि सरीर ॥११५॥

चंद न ऐसी छबि धरैं चंदन है सुष कंद।
चंदन बेंदी संजुगत चंद बदन[4] ब्रज चंद ॥११६॥

सीस कलाधर कौ मुकट बदन कलाधर धाम[5]।
नाम कलाधर काम है कोटि कलाधर स्याम ॥११७॥

ठाढ़ौ कर लकुटी लियें कुंज कुटी के माहि।
भ्रकुटी धनुष कटाच्छ सर भ्रकुटी चूकत नाहि ॥११८॥

परम हंस जिन कौं भजैं भजैं हंस आरूढ़।
हंसगमनि सँग फिरत हैं हंस सुता तट रूढ़ ॥११९॥

हरि के तिलक अलीक मैं देषि कहौ न अलीक।
गोपी कौं जु अलीक सौं सहत अली न अलीक ॥१२०॥

कोब सती असती कहा बन बसती के माहि।
हैं सबती[6] के स्याम कै कौंन जुब सती नाह ॥१२१॥

हरि मुर लीनै बिरद हरि मुरलीधर भर भाइ।
पै मुरली पूरन करत मुरली मधुर बजाइ ॥१२२॥

कुबलय नैंनी राधिका कु-बलय-मानि ब्रज चंद।
कुबलय भूषन जुगल छबि ए कुबलय सुष कंद ॥१२३॥

पाठान्तर—१. अगहन २. गुरु ३. चरि चित ४. चहै ५. साँम ६. बसती।

ब्रज लोचन की तारिका दुष प्रतारिका जान।
राधे गुन बिसतारिका अचल तारिका बान ॥१२४॥

तो रति रति क्यौं कहति है प्रेरति रति मति मोहि।
मूरति रति पति स्याम है जोरति रति सम[2] तोहि ॥१२५॥

बरत करत हरि मिलन कौं बरत करत हित मेल।
करतनु राधे प्रेम बस धरत बरत कौ षेल ॥१२६॥

अज अजतन कौं मुनिन कौं जतनन न मिलत दयाल।
अज-जतन राधे बस कियौ तजत न संग गुपाल ॥१२७॥

देषि कमलनी दलन कौं सब अकमलनी होत।
पाइ अकमलनी[3] दलन कौं तुई कमलनी जोत[4] ॥१२८॥

कमलनैंन बिन राधिका कमल नैंन भर लेत।
कमल नैंन ऐसे ढरत कमलन ही के हेत ॥१२९॥

भूख न भूषन की कछू ब्रज भूषन की भूख।
भूषन रुचित न रुचित चित जा बिन चंद मयूख ॥१३०॥

रजनी पति देषैं तपति रजनी बिलपति जात।
रजनी रँग भई राधिका रज नीरज न सुहात ॥१३१॥

दुष हरनी राधे सदा हरिनी कैसे नैंन।
हरिनी की सी छबि लियैं हर नीके मुष बैंन ॥१३२॥

सरसीरुह से दृगन तैं सरस दृष्टि[5] निहारि।
सरस रसीले हरि किए सुबस रसीली नारि ॥१३३॥

बर नीरज से नैंन मुष आबरनी अग्याँन।
बरनी रानी राधिका बरनी पुरुष पुरान ॥१३४॥

मधुरितु मैं मधुमास मैं मधु मुरली धुनि कीन।
मधुरिपु ललित लतान कौ मधुकर ज्यौं रसलीन ॥१३५॥

मधुप रचित रबि पुहप के मधुप रचित इक रंग।
मधु परचित हरि कुंज मैं मधुप भए रति संग ॥१३६॥

पाठान्तर—१. प्रणाम २. रस ३. कमलिनी ४. होति, जोति ५. देषि।

राधे कै निस सरद मैं सरद रद छद कीन।
सरद स आधे की तपनि[1] सरद करी रसलीन ॥१३७॥

अधर सेज पर स्याम घन अध रति समैं असंक।
अधर मधुर मधु पान किय अधरक हिय भरि अंक ॥१३८॥

चंद्राबलि सिर धर रहे चंद्राबलि कै गेह।
चंद्राबलि उपट्यौ[2] हियैं नष चंद्राबलि देह[3] ॥१३९॥

प्रेम दलालन पै बिकै सुनि सुनि लालन बैंन।
लोयन लाल न कीजियै लालन जगि जगि रैंन ॥१४०॥

रतन कनक भूषन बदन तन कन स्वेद चुचात।
जतन करत न दुराब के हरि तनक न सकुचात ॥१४१॥

रसरीतै माखन रितौ[4] रस रीतें करि जात।
रसरी तै[5] बाँधे पकरि लै रसरी तें मात ॥१४२॥

हसत चलाबत गोपकनि हसत बसत बन माहि।
वह सत गोरस दान कौं दहसत मानत नाहि ॥१४३॥

अस मसखरी तिय बची बाम सरबरी लोच[6]।
हरि बिन इक हू सरबरी रही सरबरी सोच[6] ॥१४४॥

सनमानत हरि राधिके[7] किन मानत हो बैंन।
यह न प्रमानत बात कौ मान तजेही चैंन ॥१४५॥

जमु नाही नाही नियमु जमुनाही सौं हेत।
जमुनाही दरसैं तिन्हैं जमु नाही फिर लेत ॥१४६॥

हरि के पावन तैं चली पावन गंग सदीब।
सुभ गति कौं पावन लगे[8] जिते अपावन जीव ॥१४७॥

पर धन सों नहिं काम कछु पर धन सों नहिं काम।
ते जग पर धन पति जपें पर धन पति के नाम ॥१४८॥

पाठान्तर—१. सरदस आरति सम असंक २. दुपरी ३. गेह ४. चितै ५. सुन री तें ६. लोंचि, सोचि ७. राधिका ८. सब जग कौ पावन करै।

बर ही मो जिय लेत है बर ही करि करि सोर।
किहि बर ही धर हरि धरैं बर ही कौन कठोर ॥१४९॥

मो तन मो मन दरस हो मोहन मोहन कौन।
मो तन मो तन मन कियो मो तन मोहन कौन ॥१५०॥

सोधत कुंजन मैं गई सोध न पायो बाल।
सो धन धन जिहिं घर बसे परम यसोधन लाल ॥१५१॥

पीत बसन तें लषि गई पीत बसन बल बीर।
गोपी तब सनमुष मिली पीत बस नष सरीर ॥१५२॥

पलकन झारै पाउ जिय बारि फेरि सुख लैहु[1]।
पलकनि हो हरि तन चितैं पलक न लागन दैहु[1] ॥१५३॥

उतपल नैंनी राध कहि उत पल नैंन अचैंन[2]।
उत पल कलप समान है उत पल नैंन लगै न ॥१५४॥

काहू को कलपाइयै करि कल बिकल उपाइ।
सो कैसे कल पाइ है समझि कहो समझाइ ॥१५५॥

जिन की रति गोपीन सौं कीरति जिन सम नाहिं।
जिन की रति हरि नाम सौं तिहिं कीरति जग माहिं ॥१५६॥

तरकी मनो असाढ़ की ऐसी तरकी नारि।
तरकी छिरकि गुलाब[3] सौं सीतर की मनुहारि ॥१५७॥

मान निबारहु माननी होत पात उत घात।
ए री आवत पातकी करत काम उतपात ॥१५८॥

उदै कोकनद मित्र कैं रहे कोक नद फूलि।
रहे कोकनद सकुच कै रहे कोक नद फूलि ॥१५९॥

आए आवत अरुन ज्यौं अरु न उदै तजि संग।
अरुन बरन लोचन किए अरुन बरन वह अंग ॥१६०॥

सरस ठौर संकेत की जहाँ केतकी बास।
मीनकेत की उमंग मैं रस निकेत किय बास ॥१६१॥

पाठान्तर—१. लेउ, देउ २. उतपन मैं न अचैंन ३. गुलाल।

रूप रचित पर चित हरन होहु न पर चित चोर।
होत न मधु कर बीर मैं बिल बिन मधु कर बीर ॥१६२॥

कर नीचै करियै नहीं कर नीकै[1] उपगार।
करनी सोई कीजियें भव दध करनी पार ॥१६३॥

बारी बार न लाउ री बारन बुष की बार।
बारन गति ह्वै ई गई बारन ही के भार ॥१६४॥

घूघर बारे पीय[2] अरु घूघर बारे बार।
तापर घरबारे निरषि गोरे बारे कार[3] ॥१६५॥

सरसीरुह फूले जहाँ ह्रद बिन सरसी तीर।
स-रसी बातैं कहत तैं सर-सी लगत सरीर ॥१६६॥

तीर न प्यारे प्रानपति रतिपति मारत तीर।
कैसें राधे तो रहै हरि बिन जमुना तीर ॥१६७॥

माया बेरी मोह की जकर्यो सब संसार।
माया बेरी पुन्य की कदत उदधि भव पार ॥१६८॥

हरि हैं जो तेरे हियैं तो हरिहैं सब पाप।
हरि है ममता अजरहौं[4] जरिहैं जग संताप ॥१६९॥

त्रिबिध सदागति कुंज मैं हनत सदा गति काम।
तहाँ सदा गति तू करति अरी अनोषी बाम ॥१७०॥

जिन कीरति पतितन करै पतितन ऐसी भास।
जाकी कीरति जगत मैं पावन पतित प्रकास ॥१७१॥

गरज न मेरे और की गरजन लागे मेह।
तजौं न गुरुजन गरज तैं नागर जन सौं नेह ॥१७२॥

कुंदन कुंदन कीजियै दसन देह छबि जोर।
चंदन चंदन सम करो मिलि तन लषि मुष ओर ॥१७३॥
पाइ परे सुष पाइकै तजि सब और उपाइ।
मोहन मोहे मानिनी अधर सुधारस पाइ ॥१७४॥

पाठान्तर—१. नीचै २. पाय ३. बार ४. अजरतौ।

न गनत काहू नारि कौं दाधे तुव रस लीन।
नगधर भूषन पहरि कै नग धर तैं बस कीन ॥१७५॥

स्याम सुघर सौं मन लग्यो गई सुघर सुधि भूलि।
निस दिन कुंजन मैं फिरत कुमद कंज सी फूलि ॥१७६॥

काम दहैं मो प्रानपति हित मद है तन प्रान[1]।
काम दहैगो कौन बिधि लगत न मो तन बान ॥१७७॥

सरद सुधाकर किरन तें बसुधा भयो प्रकास।
किये सुधा तें परसपर सरद रदन के बास[2] ॥१७८॥

जानत जान समान तें काम समान न आन।
छटत बान कमान के छूटत मान अमान ॥१७९॥

सकुचि तिहारो उर भयो नैकु न सकुचति बाम।
लोगन मैं उघरी लगन घरी न ठहरति धाम ॥१८०॥

जकरी बिरह जंजीर तें पल भर जकरी नाहि।
मिलत न सुघरी लाज तें मिलत स्याम बन माहि ॥१८१॥

लाल लाल कोए कीए आए को ए लाल।
सोए नाही रात कौं सो ए नाही[3] बाल ॥१८२॥

भई बस न मो माननी बसन गए तिहि धाम।
जानी सहज सुबास तें बसन बसाए स्याम ॥१८३॥

बरन लगी बिरहागि तें बरन भई तन पीत।
बरन लगै कछु काम तें हरिबर न करत प्रीत ॥१८४॥

घोष घोष मैं होत है दधि मथानि के घोष।
घोषत कृष्ण कृपाल कौं नाम प्रेम रस पोष ॥१८५॥

मो जियरा तरसत लग्यो तरस न आवै तोहि।
सुदरसन मुख होइ हरि दरसन दीजै मोहि ॥१८६॥

करत प्रदच्छन स्याम कौं कहियें दच्छिन सोइ।
काम मद च्छन कौं तजै काम प्रदच्छन होइ ॥१८७॥

पाठान्तर—१. ग्रान २. किय बसुधा तें परसपर सरद रदन के बास ३. जाहु।

भक्ति बिलच्छन[१] हरि भजै सुभ लच्छन परकास।
लच्छ न ताकौं परहरै कछू न अछित तास[२] ॥१८८॥

हरि मन रामा रमन सौं रमा रमन सौं प्रीत।
भूले पर मन जन धरै पर मन रंजन रीत[३] ॥१८९॥

परम तपस्या जे करत पर मत करत न पोष।
परम तत्त्व सौं मन लग्यौ जग्यौ परम संतोष ॥१९०॥

हेरत जाके रूप सौं हेरत बन मैं ताहि।
गहे रतन जिन मथि उदधि अहे रतन नर आहि ॥१९१॥

रत न कहौं बिन राधिका भूषन रतन बनाइ।
रत न करत तिय और सौं करत न और उपाइ ॥१९२॥

अरी निसा नीकै करी दई निसानी मोहि।
आज निसाँ नीकें मिलै हरि हिय सानी तोहि ॥१९३॥

मगन भए हरि भक्त सौं मग न बिचारत और।
जम गन कछू न करि सकैं नाम गनत हरि ठौर ॥१९४॥

जगत रैन दिन हरि हियें छाँड़ि जगत सौं मोह।
भजत दुरत तिनके सबै भजत नाम तजि छोह ॥१९५॥

एक बरी इक परहरी एकबरी बिरहागि।
एक बरी सीषे लषन हरि कबरी तट[४] लागि ॥१९६॥

जल जमुना कौं लैंन कौं चली जलज मुखी आज।
निज लज तजि रस बस किए जलज नैंन ब्रजराज ॥१९७॥

जलज हार पहिरें हियें जलज लियें निज हाथ।
जलज नैंन बन बन फिरत जलज नैंन की साथ ॥१९८॥

हरित बाँस की बाँसुरी हरि तहाँ मधुर बजाइ।
हरि ततच्छिन मन बाम कौ हरत बिरह बन आइ ॥१९९॥

पाइन चलि मिलि स्याम सौं यह उपाइ नहि आन।
पाइ कृपा इन लाल की पाइ न मधु तजि मान ॥२००॥

पाठान्तर—१. भक्त बछल तू २. कबू न अलच्छन तास ३. प्रीत ४. रीतइ।

अज कहै सु उर धरि मति अज कहैं सु उरधारि।
धरि जक सोई[१] देत है सबकौं रिजक सभारि ॥२०१॥

रास लुगाइन संग निस दिन गाइन सँग जाहि।
सुर गाइन गावत जिनहि गाइ न काहे ताहि ॥२०२॥

परसत पुहुप पराग के मोहि लगत उपराग।
स्याम सरागन स्याम बिन नाहि सुनत उपराग ॥२०३॥

हरि अराधिका राधिका सिद्धि साधिका साधि।
आधि ब्याधि की बाधिका छाँड़ि[२] उपाधि अराधि ॥२०४॥

रूप सारिका राधिका स्याम निहारि निहारि।
धरत दाब परिसारिकैं सारि बिसारि बिसारि ॥२०५॥

उठी अलक सानी अहो कहा दुरावत गूढ़[३]।
अतर अलकसानो यहै कहै देत है गूढ़ ॥२०६॥

हित समै न समझी सखी कछु उपजी जिय मैं न।
मैंन मैंन सों मन कियौ अब मारत है मैंन ॥२०७॥

रमन जाइ बन मैं कियौ रमन और तिय संग।
तऊ रमन लागत सखी पर मन[४] होत न भंग ॥२०८॥

रमन जाइ बन बन भ्रमन तऊ भ्रम न मन होइ।
जहाँ सुभ्र मन कौ भ्रमन गनौ सु भ्रमन सोइ ॥२०९॥

भ्रमर हैं न जिहि[५] बाग मैं तहाँ न सुमन सुबास।
जहाँ भ्रम रहै चित्त मैं तहाँ न प्रेम प्रकास ॥२१०॥

सुमन केतकी बास जहाँ कोमल मलय समीर।
मीनकेत की गति तहाँ हरिहु बिरह की पीर ॥२११॥

अलि कुल घेरी पदमिनी सरस सुबास सुरंग।
अलि कुल घेरी पदमिनी सरस सुबास सुरंग ॥२१२॥

सुमन सु बाग बिलास मैं राग बिलाबल होत।
सुमन सु बाग बिलास मैं राग बिलाबल होत ॥२१३॥

पाठान्तर—१. साँई २. वाम ३. पूठ ४. सन ५. जिन।

गहरी गरजन आप तैं इत आए घन स्याम।
गहरी गरजन आप तैं इत आए घन स्याम ॥२१४॥
करत न एते परस कुच जोबन बिन ए काम।
करत न एते परस कुच जोबन बिन ए काम ॥२१५॥
ए कहैं न मन मान तैं तातैं बोलत नाहि।
एक हैं न मन मान तैं तातैं बोलत नाहि ॥२१६॥
उर अंतर धरि रुचिर हित पर चित पर मन कीन।
उर अंतर धरि रुचिर हित पर चित पर मन कीन ॥२१७॥
करी बिभूति जभी तजी करी बिभू तजि मीत।
तप सी तन बन भीत रहि तप सीत न बन भीत ॥२१८॥
मानत ज्यो सम आनई मान तज्यो सम आन।
जो गीताकौं जानई जोगी ताकौं जान ॥२१९॥
काहे रत हौ आन सौं का हेरत हौ आन।
बापर बारी माननी बा परबारी मान ॥२२०॥
तब आँगन मैं खेलती अब आँग न रस रंग।
या ही तैं हरि हैं मिलैं याही तैं ए ढंग[1] ॥२२१॥
सुर ही मोहित देखि कैं सुरही चारत स्याम।
मुरली सुर ही मैं चुभ्यौ सु रही इक टक बाम ॥२२२॥
जिन पर करनाई नही तिन कर नाई लच्छि।
नदी नदी पर सब कहैं नदी नदी नदी पर तच्छि ॥२२३॥
बिछी बिछौना चाँदनी रही चाँद नी छाइ।
मोहि चाँद नीकौ लग्यौ मो ब्रज चंद मिलाइ ॥२२४॥
नई बैस मैं होत हैं सरद न बदन सरूप।
नई बैस मैं होत हैं सरद न बदन सरूप ॥२२५॥
आस पास मुनि मंडली आस-पास तजि दीन।
आस पास तन पास[2] बन ते नर होइ न दीन ॥२२६॥
इते असम सर सर हनत उते असम हिय पीय।
अरी असम गति बिरह की भयौ असम सम जीय ॥२२७॥

पाठान्तर—१. पाई तेरो ढंग २. आस बास तन बास।

अंबर घन की बास जुत अंबर पहिरे अंग।
अंबर घन गरजन समैं अंब रहे पिय संग ॥२२८॥

सघन कुंज घन सघन धुनि पिय संग दुगुन हुलास।
सघन पान के खात मुख हीत सुरंग सुबास ॥२२९॥

ललित हाब ललित ललन गाबत ललिन बिभास।
ललित लता के कुंज मैं ललिता बलित बिलास ॥२३०॥

दंपति ताल तमाल तर कहि कहि बचन उताल।
ताल ताल पर परसपर हसत सु दै दै ताल ॥२३१॥

बात पात की की सुनी आबत है वह आज।
पात पात की गति लियैं[1] काँप्यौ तीरथराज ॥२३२॥

आबप तें तीरथन की तीर थके नर[2] धीर।
तीरथ चढ़ि[3] मनमथ समथ न्हात चलाबत तीर ॥२३३॥

हनूमान कौं लंकपति कह्यौ को नु काहा काम।
कह्यौ तिहारौं पलक मैं हनू मान यह नाम ॥२३४॥

सबर[4] अरि के परस तै स बर अरि की पीर।
अंबर[5] हरि हरि हैं सघी संबर दैन सधीर ॥२३५॥

इहिं असार संसार मैं स्याम नाम ततसार।
सार करत संसार की ताकौं छिन न बिसार ॥२३६॥

वह गिर तें ढरि धरि ढरै या कौं गिर पर राह।
बिरहनि नैंन प्रबाह है तै सौ नैंन प्रबाह ॥२३७॥

बार बार मुकता चुनैं[6] बार बार बन जात।
कबहू मेलै बार मैं ह्वै है री उत पात ॥२३८॥

बन षेलत हरि राधिका उर जलजन के हार।
बन षेलत हरि राधिका उरज लजन के हार ॥२३९॥

पाठान्तर—१. बात बात की गति लपै २. मन ३. चाढ़ी ४. संबर ५. संबर ६. बनै।

घट पट की सुधि ना रही सट पट की गति आन।
मटकी पटकी धरन मैं कान्ह कपट की खान ॥२४०॥

लाल भई अनुराग सौं लाल चष्या तर साल।
लालहि लाल गुलाल सौं लाल किए ब्रज बाल[1] ॥२४१॥

हरि सँग बीनत पुहुप बनि रहसि बजावत बीन।
कहा कहौं परबीनता उपजि नबीन नबीन ॥२४२॥

नमत पाकसासन चरन रिपु सासन बल बीर।
ताको सासन बिन कहूँ सास न भरत सधीर ॥२४३॥

गुंजन के हर वा हियै अलि गुंजन के पुंज।
षेलत अलि गुंजन लियै हरि अलि गुंज निकुंज ॥२४४॥

कोकिल स-फल रसाल पर कुहकत सबद रसाल।
हरि कौ करत रसाल तन राधे यौं हरि साल ॥२४५॥

जसुमति नंद रसाल तन हरि सुर गन हर साल।
कहि जीबो हर साल लै[2] देत गिरह हरि साल ॥२४६॥

बरस गाँठि कौं ब्रज सकल बरसत घन पढ़ि छंद।
कहत कुबर सत सिब बरस चिरजीबौ नँद नंद ॥२४७॥

होत असोक असोक लषि सोस न सोसन देषि।
लगत रसाल रसाल चित बाग नैंन अबिरेषि ॥२४८॥

कह कोसन पीतम बसै को सन पूरन काम।
कोसन कोसन कमल के कोसन लागी बाम ॥२४९॥

केसरि रँग पिचकी छुटै तन केसरि रँग बास।
षेलत लाल गुलाब सौं अति पट बास सुबास ॥२५०॥

छई सघन धरकन सलिल घन चमकनि अति कौन।
बिरही हिय धरकन लगे घन धरकनि[3] धुनि दीन ॥२५१॥

पाठान्तर—१. लाल २. सौं ३. धमकन।

मिलि गुरुजन पुरुजन वई बचि गुरुजन की मार ।
तऊ तिय किय मद मदन कै पिय उरजन पर हार ॥२५२॥

परमानंद कुमार की अपर मान आभास ।
सु परमान भाषत निगम परमानंद प्रकास ॥२५३॥

राग रंग सौं हिय रँग्यौ अंगराग रँग अंग[1] ।
राग रंग मुषराग जुत रहत राधिका संग ॥२५४॥

तन पट बास बसे पहरि करि पट ब्रास गुलाल ।
कपट बास तजि खेलियै अरी खेल पटु बाल ॥२५५॥

पहिरैं हार बसंत को गावत राग बसंत ।
रितु बसंत षेलत सुघर ब्रज सब संत बसंत ॥२५६॥

बेनी तरकी अतर सौं अतर अगर सौं धूप[2] ।
मिली अतर सूँ राधिका हरि सौं नेह निरूप ॥२५७॥

तर की छिरकि गुलाब सूँ सुष तर किय हिय माहि ।
बित ईतर की जेठ को कुंजन तर की छाँहि ॥२५८॥

नाह अनारी करत है पर नारी सँग सैंन ।
घर-नारी के झरन हैं पर-नारी से नैंन ॥२५९॥

नाहक नाह बिदेस किय नाह न नेह निबाह ।
राधे चितबत राह कौं राधे हि चितबत राह ॥२६०॥

तनसुष की सारी बनी तिय तन सुष छबि ऐंन ।
तनसुष को सारी बनी अतन अतन सुष दैंन ॥२६१॥

रजनी के रँग अँग भयौ रजनी बिलपत जात ।
नीरजनो पति ना रुचै रचनीपति न सुहात ॥२६२॥

नबसत भार भरी चलत न बसत साजें तीय ।
नबस तरुन के होत लषि न बसत काके हीय ॥२६३॥

सषी स घट घट ऊट ह्वै[3] घट लै निकसी घाट ।
घूंघट मैं नट नटत लषि नटबर घेरी बाट ॥२६४॥

पाठान्तर—१. रंग २. अतिर अंग सो धूपि ३. सषि संघट उट कै ।

मनि मानक बानक बने मानि कहै सब बाल।
मन मानिक लै मिलत ए जग मानिक नँद लाल ॥२६५॥

हरि निसचर मन हरि करी बिरह न जाई बिदेस।
लागत निसचर सरद को निसचर कैसे बेस ॥२६६॥

केसरि मोतिन को हियै पहरै केसरि बास।
केसरि बिरह मतंग कौ अँग केसरि रँग बास ॥२६७॥

कान बीर बीरी बदन अंचल भरे अबीर।
चलहु बीर संग इनन के बन षेलन बलबीर ॥२६८॥

नर कत हति हित रहत है अरि अनर कत सुभाइ।
धरकत कत हरि अनुरकति नर कत हति नही जाइ ॥२६९॥

हर बिरहत जिहि नाम सों बन बिहरत बलिबीर।
बिरहत बिरहि बसंत मैं बिरह त मनमय बीर ॥२७०॥

उदित होत मन मैं न सुष दोषाकर कौं देषि।
उदित होत मन मैं न सुष दोषाकर कौं देषि ॥२७१॥

कुंज सघन चंदन बलित सरबर जुत जल केलि।
अंग सघन चंदन चरचि रचित स्याम जल केलि ॥२७२॥

जपत बिनायक जपत सब सुरगायक सुख भौन।
कृस्न बिनायक दूसरौ भजिबे लायक कौंन ॥२७३॥

सनक सनंदन जपत निति नँद नंदन ब्रजराज।
पूजत नंदन सुमन हरि चिर नंदन के काज ॥२७४॥

डगमग सारस गति लियें सुनि हे सारस नैंन।
रति सुष सा रस मेटि तन सार स किय जग रैंन ॥२७५॥

उरजा तन सी लट लषी उर जा तन लपटात।
उर जात न कब हौ बिसरि उर जातन ही जात ॥२७६॥

राजत उर द्विजराज पद भूषन कुल द्विज राज।
संत सहाई होत है चढ़ि बाहन द्विजराज ॥२७७॥

जनक भक्त मन क्रम बचन सदा जनक है नाम।
जगत जनक जानत सकल जनक सुता पति राम ॥२७८॥

चित लगि पुरुष पुरान सौं हित पुरान सों होइ।
स्रवन करत नित भागबत परम भागवत सोइ ॥२७९॥

आसा के आधार तें चित चिंता बिसराइ।
आसा के आधार ज्यौं डिगत देह ठहराइ ॥२८०॥

जैसें परसें नैंन तन सरद चंद तें होत।
तैंसें दरसें परम सुष सरद चंद तें होत ॥२८१॥

जाकौ लोक अलोक मैं लोक लोक आलोक।
करि अबलोकन चित्त मैं जहि अलोक कहि लोक ॥२८२॥

करत असोकहि सोक हरि सो कहि चित्त बिहार।
सोक असोक बन मैं बसै चलि री मान निबार ॥२८३॥

जगमग जोति जराब की जगमग करत प्रकास।
हरति सेबती स्याम कों धरति सेबती बास ॥२८४॥

नाब बैठि आवत इतैं हौं बरजति हौं नाव।
तन बनावतें बावरी कहा बन जाइ बनाव ॥२८५॥

तन चंदन की षोर करि चंदन बिंदु बनाइ।
जग बंदन कों जग करत पग बंदन सिर नाइ ॥२८६॥

अव्यपेत यमक : सिंहावलोक

आबन बन कैसे बनत नत ह्वै कहौ निहोरि।
हौं रिस रिस ई कौंन तू न तू समभौ पिय षोरि ॥२८७॥

बैंन हार सुष मैंन के हरि तिय करि हिय हार।
बनिसन हारन मैं अरी निस दिन करत बिहार ॥२८८॥

तिलक फूल सी नासिका तिल कपोल परि स्याम।
भाल तिलक पहरैं तिलक भली बनी है बाम ॥२८९॥

नारि हाथ मैं राखियै भूलि तजो जिन कोइ।
जीबन ताही को गनत नार हाथ मैं होइ ॥२९०॥

रसिक अहीरा तोहि दियौ हीरा सो मन सार।
तूं ही राधे राष री करि हीरा कौ हार ॥२९१॥

बास बसाइ अबीर सौं पहरि कनक की बीर।
तोहि बीर की सौंह है बसि करि लै बलबीर ॥२६२॥

सकलनि सारी भवन तें सकुचि बिसारी नारि।
सकल निसा री रति रमी परी सलबटी सारि ॥२६३॥

तूँ राधे परबीन है तौ बजाइ कर बीन।
कै फूलन बीनन चलौ ए री करि अरि बीन ॥२६४॥

संत सुदरसन धरन कौ पावै दरस न कोइ।
दरस ससी सुष उदित दुष दरस अदरसन होइ ॥२६५॥

सुषकरता री स्याम घन बलि कर ता पर प्रान।
कर तारी दै गान करि करतारी हित प्रान ॥२६६॥

पहलै पाटी पारि कै पाटी गहि रही सोइ।
पढ़ी न पाटी प्रेम की समझि कहाँ तें होइ ॥२६७॥

बेनी सुमन सिंदूर भरि भली त्रिबेनी कीन।
काम कु बेनी अलक मैं उरझ्यौ हरि मन मीन ॥२६८॥

बनि ठनि बैठी बारनै करी बार नैं भूरि।
मनू भरी छबि सलिल तें पार बार नैं पूरि ॥२६९॥

जमुना तट नीके अरी बटनीके जतु कुंज।
कामु रली पूरै तहाँ मुरलीधर रस पुंज ॥३००॥

प्रफुलत करुना कुंज मैं करुनाकर हैं स्याम।
करु ना नाचति राधिके करु नाना सुष बाम ॥३०१॥

मुरली धुनि पलकनि लगी पलक न लगी निहारि।
उलट पलट हरि मन कियो लटपट निकरी नारि ॥३०२॥

गरुड़ासन जन जानि कै डासन मो मन कीन।
दुषडासन कौ दुष हर्‌यौ स्री हरि परम प्रबीन ॥३०३॥

लाल चुनी तिय चुनिन मैं लालचुनी कै कीन।
उर लगाइलो स्याम मनि लाल चुनी रँग भीन ॥३०४॥

नीलकंठ बोलन लगे देषि नील घन माल।
नीलकंठ सुमिरन लगी काम सताई बाल ॥३०५॥

गरुड़ासन कोपन लग्यौ गरुड़ासन के त्रास।
गरुड़ासन गति भूलि गौ गयौ अनत तजि बास ॥३०६॥

सोभा सीस कलेस को सो कृपा करै सकलेस।
जन अकलेसन रहि सकै रहै न लेस कलेस ॥३०७॥

अकू सारि संसार को अति अपार बिसतार।
नाब नाब अबलंबि कै काहि न उतरै पार ॥३०८॥

बीतत है इत रात री तू इतरात अयान।
तो पति राषत पाइ परि ता पति ही सौं मान ॥३०९॥

तो सौं बिलसत राति दिन बिसतराति है प्रीत।
एते पर सतराति है कौंन सयानी रीत ॥३१०॥

तोसौं बिनती करत है बिनय लियै नँदलाल।
बिन मानै[1] जानत नही बिनसत रंग रसाल ॥३११॥

भयो प्रानपति बिरह तैं काम बास सौं बाम।
भए धाम सुष धाम कै काम बाम कै बाम ॥३१२॥

निसा न एकहु जातु है कहत बजाइ निसान।
निसा न मेरी होत है देषत सुरत निसान ॥३१३॥

हस बिबसन सन[2] मुष भई तुम हरि बसन हसात।
कीनो बसन कदंब पर अब कछू बस न बसात ॥३१४॥

का मद ही का मदन ही काम दही इहि हेत।
काम दही कौं जाहि तिहि देत फिरति सुधि लेत ॥३१५॥

कुसम लता रत भौंर ज्यों काम लता रत स्याम।
फूलन मारत मान करि ताहि लतारति बाम ॥३१६॥

फुलबारी मैं हरि मिली फुलबारी ज्यौं बाम।
फूल बारी ते स्याम पर फूल बारी भए धाम ॥३१७॥

मित्र मित्र के मित्र कौं मित्र मित्र कौ बारि।
मित्र चित्र कौं देषि कैं भई चित्र सी नारि ॥३१८॥

पाठान्तर—१. मानत, २. सत।

ए री याकौं बारि दै कहा बारि दै मूढ़।
बिरबा[1] पे मसबार दै हठ निबार दै गूढ़ ॥३१९॥

काम कपट सब बारि दै लषि बा रिदै अनूप।
ए री तन मन बारि दै राषि बारि दै रूप ॥३२०॥

लोक लाज कौं बारि दै अरी बारि दै नेम।
राषिबा रिदै राधिके कान्ह बारि दै पेम ॥३२१॥

कोप करत है कौंन सौं तोहि रही समझाइ।
किन पकरति सुधि राधिके को पकरत है पाइ ॥३२२॥

छिनकु लीन सुध सुरन की फिर गिर परी कुलीन।
जिहि कु लीन तिहि बस करी किती कुलीन कुलीन ॥३२३॥

जो गोकुल की गोपिका कुलकी मोही स्याम।
कुल की कानि छुड़ाइ कैं ब्याकुल की ब्रज बाम ॥३२४॥

गिरि पर दारन मान हरि पर-दारन को नेम।
परदारन के प्रानपति परदारन सौं पेम ॥३२५॥

जुग जुग तिन को अबतरन अजुगति हर सौं हेत[2]।
जुगति उधारे तानकी मुकति संत कौं देत ॥३२६॥

जप तप तन कौं[3] भूलि मति तजि पतितन कौ साथ।
भजिअ पतितन राषपति सजि सुख संपति हाथ ॥३२७॥

गोरषबारो तत चहैं गोरषबारो जोइ।
गोरष बारो जपत सो गोरषबारो होइ ॥३२८॥

जो रषबारो जगत को गोरषबारो कोइ।
तो रषबारो प्रभ सदा मो रषबारो कोइ ॥३२९॥

भोग साधना साधियै भोग साधना खोइ।
जोग साधना छोड़ियै जोग साधना होइ ॥३३०॥

ए री तैं सीषी कहाँ ए रीतैं रु[4] कहैं न।
हित रीतैं रीतैं तऊ हरि तौ रहित रहैं न ॥३३१॥

पाठान्तर—१. बिरहा २. हरन सु हेत ३. जग पतितन कौं ४. सु।

लषि पीवत रस रूप कौं पीवत रस भइ लीन।
लाज तजि निधरक भये नेंकहु लाजत जी न ॥३३२॥

जरी रुपहरी कोर की पहरी सारी अंग।
खिली[1] दुपहरी राति मैं जरीउ पहरी[2] संग ॥३३३॥

नाम नाकपति लेत नित पुनि पिनाकपति लेत।
भजत पाप ना नाकपति परम नाकपति देत[3] ॥३३४॥

बसत दरी तजि सुंदरी नाद रीति करि पोष।
जिन न आदरी हरि भगति तिन न आदरी मोष ॥३३५॥

सुर सरिता धारी कहत सुर सरि ताके नाहि।
सुर सरिता धारी अधर सुरस राषि हिय माहि ॥३३६॥

गुरु कबिता के गुन कहत कहत सेस कबिराज।
कबिता कबि ताकी कहैं जो भब[4] समद जिहाज ॥३३७॥

करि संकर मन बुद्धि चित संकर सुमिरत सोइ।
संक रहित जन जपत सो जगत बसंकर होइ ॥३३८॥

हालाहल हर[5] संग्रह्यौ हाला हलधर लीन।
हालाहल धरनी धरत कहा कहा बिधि कीन ॥३३९॥

छबि मरीचि कर बदन तें यहि मरीचि सबिलास।
कैं मृगनयन मरीचिका हे राधे तुव हास ॥३४०॥

हरिनी छौना सी चपल दुष हरनी कैं नेह।
हरि नीकैं बितई निसा हरिनी तिय कैं नेह ॥३४१॥

कानन कुंडल मकर छबि हिमकर मुष छबि घेर।
तेजअ[6] हिमकर लाल सौं मकरि मिलन की फेर ॥३४२॥

कनक कुंभ से गोल कुच कुंभ कुंभ से पीन।
सात कुंभ सी गात छबि कुंभकरन पुर छीन ॥३४३॥

अलिक तिलक फैली अलक अलकत फैल्यौ पाइ।
अलकसात पग मग धरत लोचन जुग अलसाइ[7] ॥३४४॥

पाठान्तर—१. खुली २. हरी उपरी ३. लेत ४. भजि ५. धर ६. अहि मकर ७. जु अलकसाइ।

खेलत मीन निकेत सौं मीन नयनि सर तीर।
नैंन मीन गति चलत तहाँ मीनकेत के तीर ॥३४५॥

भइ रँग पीरे पात सी मन मथ पीरे गात।
पी रे पी रे बकत कछु राधे बिरह बसात ॥३४६॥

अरबीले मोहन इतैं अरबीले रहे आप।
अरबीली उत लै रही अरबी हमहि सँताप ॥३४७॥

इतैं बेतक[1] ही तू मिली उतैं बे तकहैं[2] लाल।
जब तक हेरी कुंज मैं तब तक हेरे ख्याल ॥३४८॥

पीउ रजनी के उबत ही पीबर जनि रस लीन।
मोहि उरज नीके जगत करजन सोभित कीन ॥३४९॥

करन फूल लै सबन कै करन फूल है कान॥
करन फूल आनंद की[3] चली मिलन भगवान ॥३५०॥

कंकन करन जराइ कैं जिय कंकरन सुभाइ।
कंकन से मुकता लगे लगे चित्त मैं आइ ॥३५१॥

अँगुरिन मुँदरी नगन की मन मुद रीति बिसेष।
कुमुद रीति नैंना लई कुमुद रीति मुष देष ॥३५२॥

लटकन ढिग[4] लटकत ललित लटकत चलत सरागि।
मन पटकन पावै नही लट कत लटकन लागि ॥३५३॥

अटति कुंज बट तटनि अट न टरति जिय तें ख्याल।
मानि अटक अटकति न छिन न टरति अटकी बाल ॥३५४॥

तू अट करति न थल समय पेम अट करत होइ।
इक टक रत निरषत बदन करत कहा सुधि खोइ ॥३५५॥

इत अलबेली राधिका उत अलबेले लाल।
तन अलबेली मिलन की अलबेली की चाल ॥३५६॥

तर तर तर बितरत सुरत[5] कबहु तरत कर नीर।
चित रत उतरत पार तरि तरुनि तरुनिजा तीर ॥३५७॥

पाठान्तर—१. बतक २. बतक हे ३. है आन की ४. ही ५. पुरत।

बारत मदन गुपाल सौं बारत तन मम काम।
काज सँवारत पेम के लाज निबारत बाम ॥३५८॥

सोभन हरि के बदन की सोभ न पावत चंद।
सोभनपन धरि जन सदा नव नागर नंद नंद ॥३५९॥

बामन होत उन बलि छल्यो धरि बामन बपु स्याम ॥
बलि छलि बामन के मनहि बाम न करियै काम ॥३६०॥

जाकै अरुचित हैं सदा अरु चित चंचल नाहि।
जिहि अरुचि ब[1] अबिबेक बिधि वहै धन्य जग माहि[2] ॥३६१॥

हिय रुचि उपजत मिलन की घन रुचितन पिय सोइ।
सुचित हेतु सौं जो मिलें ततौ सुचितई होइ ॥३६२॥

अध्रुब[3] पदारथ जे तजे ध्रुब हरि समझ्यो धीर।
ध्रुबपदता के सेइ कै ध्रुब पद लह्यौ सधीर ॥३६३॥

काम करम समुझाइ कैं कर मनुहार प्रकार।
करम करम तैं ल्याइ कै[4] कर मन धीर करार ॥३६४॥

कंज भवन भूलत न छिन भव न तजत छिन साथ।
कुंज भवन मैं फिरत हैं तीन भवन के नाथ ॥३६५॥

भवन मई सब होत हैं तीन भवन जिहि बार।
भवन भवन जहाँ रहत है रहत जु भव करतार ॥३६६॥

कमल कमलनी बन मुदित बन बन मलिनी बास।
चलि दुष मलिनो होहु बलि कत मलिनी तन बास ॥३६७॥

बसत न छिन घर बन बसत अबस कहत सिष ताहि।
बसतन उदबस गनत है तिय परबस तन आहि ॥३६८॥

कोटि अहिम रुचि जोति जिन[5] मुष रुचि हिम रुचि जोत।
ताहि भजन तैं अरुचि मिटि क्यों न सुचित चित होत ॥३६९॥

सुचि तन छबि सुचि मन बचन सुचि लोचन झलकंत।
सुचित आन धरि ध्यान जपि सुचित होत हैं संत ॥३७०॥

पाठान्तर—१. अरुचित २. धन्य जन्य जग माहि ३. ध्रुव ४. हौं ५. जित।

नवरंगी तन रास रस गोपिन सँग संगीत।
गावन[1] मैं संगीत के गीतन मैं हरि गीत ॥३७१॥

हरिचंदन कौं चित्र किय कर हरिचंदन डार।
चंद नयौ उदयौ त दिन चितयैं नंद कुमार ॥३७२॥

गायन के ब्रज गोप ब्रज संग लियें ब्रजराज।
ब्रज बीथिन मैं फिरत हैं ब्रज राधे तजि लाज ॥३७३॥

कोटि कामना सम करै काम काम ना देत।
मोहि काम ना और सौं है प्रकाम[2] हरि हेत ॥३७४॥

हरि रथ पथ के सारथी रथ पथ रण मैं लीन।
रथ पर थपकें रथ किए भारथ पथ मैं लीन ॥३७५॥

बाजि राज गज घंट नद[3] बाज राज हिननाहि।
षगनि बाजिराजनि हने पारथ भारथ माहि ॥३७६॥

छूटे बान कमान के जूटे बान कबान।
छूटे प्रान परान[4] के फूटे तन तन त्रान ॥३७७॥

फूलन सेज बिछाइली रही चाँदनी छाइ।
की सब सौत बिछाइली पिय छकाइ छबि छाइ ॥३७८॥

रूप भारती नाहि सम रति भार तियौ है न।
पेम भारती निस जगी किए भारती नैंन ॥३७९॥

रंभा भव जुत पान मुष सो रंभा सुष दैंन।
रंभा बन मैं राधिका रंभा सी छबि ऐंन ॥३८०॥

नयो नयो रस लेत हैं नयो नयो रस चाहि।
उनयो जोबन राधिकहि नयो चाहियै ताहि ॥३८१॥

बन गहनो गहनो अबसि नाहिन गहनो गेह।
मोहि अगहनो जग लगत गहनो हिय पिय नेह ॥३८२॥

निरस जान अनिरस तजे सुबस निरस दिन रात।
राधे अनिरस तजि मिलौ है अनिरस यह बात ॥३८३॥

पाठान्तर—१. गावत २. प्रकास ३. तट ४. षरान।

करि उमंग लगि हेत जप मधु मंगल के मित्त।
हरति अमंगल संत के करति सुमंगल नित्त ॥३८४॥

संगी सबल सु बाहुबल छल बल कर अबिलंब।
सब लषि[1] गए सुबाहुबल मारयौ प्रबल प्रलंब ॥३८५॥

बरन जलद से गज बने जलज बाजि उदोत[2]।
दीयें लाष पर देषियें दियें बिना नहि होत ॥३८६॥

जातरूप भूषन मिलें जात रूप जुत जोत।
जातरूप हरि भजन तें जातरूप जुत होत ॥३८७॥

अकर करतु है जगत कौ जगकरता सौं हेत।
और तियन पै लेत कर तोहि कान्ह कर देत ॥३८८॥

परषत[3] पेमहि नेम कौ करषत[4] राधे चित्त।
न रषत उर अंतर कपट निरषत हरि मुष नित्त ॥३८९॥

राधा सँग राधारमन गौरि रमन सुचि नैंन।
रति संग रहै काम कै रति सिंगार सुख लैंन ॥३९०॥

जे बिषईते रहत हैं बिषय भोग अनुरत्त।
बिष सम मानत बिषय सुख जे हैं बिषय बिरत्त ॥३९१॥

होत असंभव भुवन भव उर अनुभव उपजाहिं।
भव भव रट जे रटत ते भव भव भटकत नाहिं ॥३९२॥

धन जोबन[5] के साथ तब जोबन धन के साथ।
देह बिधाता होहिं तौ धन जोबन मैं हाथ ॥३९३॥

धन जीबन जेहि जान तिहि जग जीवन सौं नेह।
जोबन जौ लौं जात है समझि देह फल लेह (त) ॥३९४॥

सु कहैं सहज सुभाब कोउ जु कहै सु कहै बानि।
सु कहै जु कहै संत जन सु कहै सुक उर ठानि[6] ॥३९५॥

स्रुति सुखकारी कहत हैं स्रुति अनुसारी बैंन।
हरि अनुसारी राधिके स्रुति अनुसारी नैन ॥३९६॥

पाठान्तर—१. लग २. बाल उद्योग ३. परतष ४. परषत ५. जीबन धन ६. तान।

उर मति आनो आन तिय दुरमति दूर दुराइ ।
मेरे उर मति फुरत है उरमत है आइ ॥३९७॥

अनिलै निलै न रुचत है उर अनिलै लागत नाहि ।
सोई क्यों न लगाइयै सोई सब बन माहि ॥३९८॥

लखि लखि भाव बिभाव री लख बिभाबरी बाम ।
भरत भौंर की भाँवरी दिन बिभावरी स्याम ॥३९९॥

तो मत अनहित आवरी इत आव री अयान ।
अपनो मन परचावरी हित रचाव तजि मान ॥४००॥

देव देव बसुदेव सुत जिहि पूजै बसुदेव ।
तिहि पूजै बसु देवतरु देत हेत भरि[1] भेव ॥४०१॥

मेरो कछू न करि सकै गोप पंच परपंच ।
सुधि रही न सरपंच लगि पंचकरन मैं रंच ॥४०२॥

बिधि बिधि कर तिय कर करी उर उरमति जब आइ ।
खरी तपति दिनकर करी करक रीत सिय राइ ॥४०३॥

गनि काके काके कहौं गनिका के से दोष ।
अगनिकाठ ज्यौं अँगनि दहि अगनित जन किय मोष ॥४०४॥

चितवत रस मैं अति मगन चितवन टगी लगाइ ।
चितवत मासे दुहुन के चितवत गए बिकाइ ॥४०५॥

मो ही सौं मोहि गई सखि मोही की प्रीत ।
मनमोहन सौं कीजियै मनमोहन की रीत ॥४०६॥

अहो दई काहे दियौ यहै निरदई पीय ।
दई दई कबकी करत दया न उपजत हीय ॥४०७॥

मिली सु औसर पाइ कै छाँड़ अनौसर बार ।
त्रास घनो सरपंच कौ पहरयौ नौसर हार ॥४०८॥

हार तिहारे हिय धरयौ हारति ही छिन चित्त ।
अहराति न ठहराति तू जात मिलन हरि मित्त ॥४०९॥

पाठान्तर— १. करि ।

ज्यों ज्यों गुरजन कसति हैं त्यों त्यों बिकसत चित्त।
जिहि मग निकसत स्याम घन तिहि मग निकसत नित्त ॥४१०॥

ललित लता सी लहलहति उलहति हियो निहारि।
लहति पुन्य के जोग तैं ताहि मिलो[1] बलिहारि ॥४११॥

एक ही न छिन चैन है तोसों बात कही न।
भई कहीन कही न कल जैसें मीन क-हीन ॥४१२॥

मैं न करी मनुहार कछु मैन करी कुलकान।
मैन करी मोरन[2] कीयो मैंन करी लै[3] मांन ॥४१३॥

तजे भोज सब रीत के सबरी के फल पाइ[4]।
बरी कुरूपी कूबरी तहाँ हरी सतभाइ ॥४१४॥

उत पाती मिल कै लिष्यौ तुम दीज्यो बिष याहि।
उतपाती लषि[5] कै दई हरि कृपया बिष याहि ॥४१५॥

या सरसों सींची लयो सरसौं पीयरो रंग।
सरसों लषि पिय सुधि भई सर सों हुई अनंग ॥४१६॥

तन छवि अलसी कुसुम सम अलसी बिलसी बाम।
काम अनल सीतल करन बड़े अनलसी स्याँम ॥४१७॥

सू धराई लौंने लला[6] अँबराई लौं जात।
लै अँब राई लौंन कौं सुत पर बारी[7] मात ॥४१८॥

केल कुंज मैं लै दई सब ब्रज बाल सकेल ॥
हरि राधिका अकेलियें करत कहौं रस केल ॥४१९॥

संतत हियें बिचार कै संतत सुमिरत बाँम।
संत तहाँ सतसंग है संत तहाँ सुष धाँम ॥४२०॥

जे सेबत[8] सिबरात[9] कौं सिब सिब जपत सुजान।
सिब प्रताप[10] तिन कौं सदा सिबपद लहै निदान[11] ॥४२१॥

पाठान्तर—१. मिल्यौ २. मोचन ३. लों ४. षाइ ५. लिष ६. लली ७. बारत ८, सेबक ९. सिवराज १०. प्रापत ११. सुजान।

संत सनेही स्याम के प्रेम सने ही होत।
निसनेही संसार सौं उर जिहिं ग्यान उदोत ॥४२२॥

दंत देष[1] छबि लषि षगी रति मुकुंद हिय माँहि।
कुंदन सरभरि करि सकै कुंदन सरभर नाँहि ॥४२३॥

बिसम नयन के ध्यान तैं होत समन दुखदंद।
जान देबता समन कोउ[2] हरत समन के फंद ॥४२४॥

परबत सुनि सुनि जात है परब परब को न्हान।
परबत धर क्यों[3] लषि कहौ परबस परिहै प्रान ॥४२५॥

गन कासी पाबन पुरी तारन कासीनाथ।
गनका सी बिचरत मुकति कासीबासी साथ ॥४२६॥

सीतापति काहि न भजति काहि भजत सी ताप।
ताके भजन प्रताप तें भजत ताप[4] संताप ॥४२७॥

आनन उनई अरु नई जनु अरुनई प्रभात।
उरज अरुन जोबन लग्यो[5] भई अरु नई बात ॥४२८॥

जैसें कौंपर तरुनई होत अरुनई साँझ।
तैसें तन मैं तरुनई तरुन तरुन ई साँझ ॥४२९॥

बिछुरत नंदकुमार कैं परी मार पर मार।
मार मारगन की करत करी सुमार सुमार ॥४३०॥

किती सुमार सुमार की आबत नाँहि सुमार।
मार मार कौं भजि कितक बाँची नंद कुमार ॥४३१॥

जोर तहाँ ही चलत है जोरत हैं जिय माँहि।
जोरत ही कैसें बनत जे रति जोरत नाँहि ॥४३२॥

कोमल अधर प्रबाल से अरु प्रबाल से रंग।
ए गुपाल सुष पाइ हौ या प्रबाल के संग ॥४३३॥

हा हा-सी बानी मधुर सुचि हाँसी मुष माँहि।
हा हा सीतल करत है तेरी हाँसी नाँहि ॥४३४॥

पाठान्तर—१. देह २. कौ ३. कौं ४. पाप ५. लग्यो।

सुष सींबा सी बिध रची तन दीबा सी लोइ।
वा-सी बाही जानियै वा-सी और न कोइ ॥४३५॥

अंत रहित की बात सौं अंतर हित नही रंच[1]।
अंतर रहत न नैक हौं अंतरहित सुष चंद[2] ॥४३६॥

अरी उदबसाई सबै तिय हिय साई पीय।
सुमन बसाई राधिका स्यांँम बसाई हीय ॥४३७॥

अमल कमल सी राधिका बिछुरै मिलै सुभाइ।
होत कमल सीमाहि सी होत कमल सीमाहि ॥४३८॥

उत रत री रतरी तरस उत रत नंदकुमार।
बैठ तरी उतरी सबै उतरी जमुनाँ पार ॥४३९॥

उतरे नाहिन जनम कौ उतरे सिब दरबार।
तरे न कबहूँ जात जन तरे समुद संसार ॥४४०॥

जात पाँत की कलपना जहाँ जात ही जात।
खात जात हैं खात हैं जात जात पै भात ॥४४१॥

लीय रस कोरा चंद कौ ऐसो मधुर सबाद।
ए रस कोरा साँच ही रस कोरा परसाद ॥४४२॥

नाथ कृपा तें पाइयै बरनाबरन बिचार।
छूटत[3] बरनाबरन कौं बरनाबरन बिचार ॥४४३॥

लेत परसपर हाथ तें बिबिध कबल कौ सबाद।
देत कमल मैं कमल जनु कमला कौ परसाद ॥४४४॥

महिमा महाप्रसाद की प्रभु प्रसाद तें जान।
पाबत ही पाबत सबैं ग्यानबान कौ ग्यान ॥४४५॥

स्री पुरुसोत्तम षेत कौं दरसैं परसैं कोइ।
दरसैं भासै[4] जगत कौ है पुरसोत्तम सोइ ॥४४६॥

करी कलंकित लंक कौ बीर कलंकित धीर।
हन्यो कलंकत लंकपति अकलंकित रघुबीर ॥४४७॥

पाठान्तर—१. अंच २. संच ३. छूटन ४. भावै।

कोइल सी कुहके मधुर कोइल सी यह बाम।
कोइ लमैं बहु पुन्य जुत कोई लहै यह बाम ॥४४८॥

उनमन काहे रहत हौ उनमन मोहन कौन।
पावन मन करिकै मिलौ पावन मन सुष पीन ॥४४९॥

दई जोग तैं आनि कै उदई पूरब प्रीत।
मुदई छिन तै लषि करी स्याम दई रस रीत ॥४५०॥

जुदई गनि मत स्याम सौं जु दई दाम सु लेहु।
उदई प्रीत बिचारत न मुद ई छिन लषि जेहु ॥४५१॥

गइयाँ दोहन कौं षरकि गइयाँ जे जे बाम।
सँग लगई यातैं सबै अंग लगइयाँ स्याम ॥४५२॥

धौरी कारी धूवरी धौरी कारी गाय।
उधहौ रीझ कहाँ गई बिसरी ढोरी लाय ॥४५३॥

गोरी गाइ बुलाइ ली मोहन गोरी गाइ।
गोरी बात भुलाइ कैं गोरी ढोरी लाइ ॥४५४॥

अंबर चंदन चित्र कीय अंबर पीरे गात।
अंब रसीले लाल बन अंब रसीले षात ॥४५५॥

काहि[1] कूपतैं बैठि कैं अंब रसीले पीउ।
या बारी तें लीजियें अंब रसीले पीउ ॥४५६॥

बारी रहत न जात हैं बारी क्यौं उकताहु।
बारी बारी स्याम पै बारी बारी जाहु ॥४५७॥

बारत हौ लै जाइहै नंदकुबार भुलाइ।
अरी रसीले बार मैं बार बार मत जाइ ॥४५८॥

यहई प्रीत उपाउ री सुष पाउ री गवारि।
झारि[2] पाउरी स्याम के धरि पाउरी सुधारि ॥४५९॥

बचन तजत कुबचन कहत[3] बचन निबाहत बाम।
सुनि मुरली धुन बचन कौ बचन न पावत धाम ॥४६०॥

पाठान्तर—१. काठ २. कारि ३. सहत।

ऊपरि अतर सन[1] अगर कौं अँगिया छपे उरोज।
सुर तरसत तन[2] परस कों करसत मनहि मनोज ॥४६१॥
दस सत करतें भूमि कों रस करसत है भान।
दस दस सतगुन फेर कें रस बरसत भगवान ॥४६२॥
जाने जाने भौर बन यह जु भौर बन चाल।
आएहौ तजि भौर बन मोहि भौरब न लाल ॥४६३॥

सोरठा

लग्यो महावर लाल[3] लगे महा उर जान पिया।
बिन गुन कहा उर माल कहौ कहाउ रह्यौ कहा ॥४६४॥

दोहा

जहाँ गुंजरत भौंर तिहीं भए कुंज रत लाल।
राधी गोपन कौं जरत हियें गुंज रत माल ॥४६५॥
जाके अनगन गुन गनै अनगन भूषन नाहि।
अनगन मैं अन गगन मैं अनगन कर हिय माहि ॥४६६॥
कोदंडी दंडी जिते होत अदंडी भाइ।
कासी मान बिमान के जात बिमान बसाइ ॥४६७॥
है श्रीकासी सिबपुरी है सिबपुरी प्रकास।
सेबत सिबपुर पाइयै कै सिबपुर मैं बास ॥४६८॥
उदधि माह कासीपुरी कासीपुरी समान।
जामैं मुकता देषियै मुकता प्रगट अमान ॥४६९॥
गोबरबारी गोरटी गोबर नैंकु निहारि।
गोबरधन-धर बसि कियो गोबर बारी ग्वारि ॥४७०॥
मेरी कान्ह निसा करी नैंक सौं करी नाहि।
मिलन साँक री कुंज की गरी साँकरी माहि ॥४७१॥
पहरी सारी सोसनी बिरह सोसनी बाम।
स्याम नेह सौं सोसनी हिय[4] पोसनी सकाम ॥४७२॥

पाठान्तर—१. सत २. है ३. भाल ४. हित।

बिरह पीर पीरी परी पीरी प्यारी बाम।
पी-री पी-री जक लगी पीर परीकर स्याम ॥४७३॥

पहरी तन सारी हरी गहरी गहरी बाँह।
हरी हरी द्रुम डार तहाँ मिले दुपहरी माँह ॥४७४॥

सबके धुर धारी धरनि धरी धरम धुर धीर।
सिंधु रतन गुन के दई सिंधुर गति बलबीर ॥४७५॥

बसुधा री सोहित करी[1] रस बसुधारी स्याम।
तें बसुधारी प्रीत करि बोल सुधारी बाम ॥४७६॥

फागुन खेलत पीय सँग फागु न सकुचै कोइ।
फगबा लीजे फेंट गहि नेह न फागुन होइ ॥४७७॥

भरत माट केसर सलिल भरत न छबि तजि संक।
भरत परसपर रंग सों भरत परसपर अंक ॥४७८॥

तन सिंगार उदगार हित अनंगारि कुच पुंज।
गनरि घोर भर लाल कौं देत गारि[2] कल कुंज ॥४७९॥

दृग अंजन दै राधिका मनरंजन रसलीन।
कहत निरंजन बेद तिहि अंजन रंजन[3] कौन ॥४८०॥

जोरत जुबति गुपाल सौं भरत जोर रँग चोल।
जोरत नैन चुराइ[4] चित जोरत गाँठ निचोल ॥४८१॥

परवेसन करीयै नही परवेसन मैं पीय।
परवेसन की नागरी करि लैहै बस हीय[5] ॥४८२॥

बरजोरी चाहत कीयो बर जोरी हिय[6] प्रीत।
बर जोरी प्रीत न जुरत बर जोरी यह रीत ॥४८३॥

ऐपनबारी आड़की पनबारी परबीन।
बन बारी मैं[7] घेरि कै बनबारी बस कीन ॥४८४॥

पाठान्तर—१. बसुधारी सौं हित करी २. गाल ३. रंजित ४. चुकाय ५. बहि जीय ६. हित ७. पनबारी मैं।

पन्नगारि[१] सेवत सदा पूजत[२] पायन गारि।
ताहि न गारि छुवाइयै दीजै ग्वारिन गारि ॥४८५॥

री कृसोदरी राधि के सुर सोदरी सुबान।
ठाढ़ौ स्याम जसोदरी मिलहु मोदरी मान ॥४८६॥

बाद करत क्यौ[३] बात कौं करत बादरी नाहि।
पिय सौं मिलैं सबाद री झरी[४] बादरी माहि ॥४८७॥

तोपर बारी हरि सबै पर बारी जग माहि।
पर बारी से अधर की तू परबारी नाहि ॥४८८॥

भरियै रंग पतंग सौं करियै रँग सषि साषि।
पीजै री रँग प्रेम को लीजै री रँग राषि ॥४८९॥

लोक रती मुष मेलि[५] कै लोक रती न बिचार।
कोक रती जु न होत तो को करती मनुहार ॥४९०॥

स्याम सुधरती बात ज्यों[६] धरती तिय जिय चौंप।
हौं करती[७] मनुहार तौ करती करती सौंप ॥४९१॥

हरि राधा हौं ए कही तोहि एक ही चाल[८]।
एक हीन सों भरत नही एक हीन ज्यों ताल ॥४९२॥

रस बिनोद परसत उरज करत परसपर देत।
रस परबस मन होत है बढ़त परसपर हेत ॥४९३॥

बहसि बहसि हिल मिल करी करत सराह सिहात।
हस हस दंपति करत है रहस रहस की बात ॥४९४॥

कल हारी कोइल कुहुकि बिरहा री दुष दीन।
बलिहारी पिय स्याम सौं हारी मेल प्रबीन ॥४९५॥

पचि हारी समुझाइ कैं हा-री हा-री कीन।
हौं हारी तेरी बिजै मिलौ बिहारी लीन ॥४९६॥

पाठान्तर—१. पनगारी २. पुंजत ३. हैं ४. इसी ५. मलन ६. जो
७. हुंकरती ८. बाल।

बात बतावत[1] जोत की हियें बतावत स्याम।
उधो एतावत कहौ बेतावत है काम ॥४९७॥

चित दे स्याम बुलाइयै[2] ते भुलाइयै नाहि।
लै बलाइयै[3] काम कौ यह बलाइयै[4] नाहि ॥४९८॥

चित चलाइयै मिलन कौं चित चलाइयै नाहि।
बिचलाइयै न हेत हिय बि चलाइयै सुठाँहि[5] ॥४९९॥

मन मत लीजै और कौ मनमत कीजै नाहि।
पी उनमत तु हूजियै मन उनमत मन माहि ॥५००॥

नाहि पिसुन बल कहत है सुनबत है नँदलाल।
सुन बत मेरी जाइ मिलि सुनबत हौं तोहि बाल ॥५०१॥

फी के तेरे अधर कत धर धर धरकत हीय।
एते पर निधरक फिरत इधर उधर कत तीय ॥५०२॥

बसन कीये कासीपुरी मोह बस न मन होइ।
सिब सनमुष नित ही रहत बसन हीन तन सोइ ॥५०३॥

घाट घाट संघट्ट घट सुबरन घटित सुघाट।
जन घट घट के बदन तें सिब सिब सिब उदघाट ॥५०४॥

अघट सुघट सिब संत कै घट घट माहि प्रकास।
ज्यौं अघटित ब्यापत[6] सदा घट घट माहि अकास ॥५०५॥

सिब सौं बसन बनाय कछु लैहै बसन बसाइ।
बसे बसे कासी बहुरि बसन न करिहै आइ ॥५०६॥

बासी कासी सिबपुरी सिब समान ही जान।
कासी कासी सिब कहत सिब सिब कासीबान ॥५०७॥

सिद्धि सुबेनी सुंदरी न्हात त्रिवेनी प्रात।
मोह उदधि तें मीन मन गहत कुबैनी घ्यात ॥५०८॥

ऐनी नैनी की बनी बेनी सुमन समेत।
ज्यौं ब्रजमंडल मैं जमुन बेनी सुमन समेत ॥५०९॥

पाठान्तर—१. बनाबत २-३-४. भुलाइयै ५. सुठाम ६. ब्यापक।

बीर होइ रघुबीर ज्यौं धन पर हरै न कोइ।
चतुर चोर लंकेस ज्यौं धन परहरै न कोइ ॥५१०॥

कलि मैं दाता करन ज्यौं धन पर हरै न कोइ।
चतुर षापरा चोर ज्यौं धन परहरै न कोइ ॥५११॥

रावन की मति जानकी कुल लजान की रीत।
महाजान की जानकी तिय लीनी जु अनीत ॥५१२॥

मधु माधब के मास मैं मधु माधब के रंग।
राधा माधब सँग रहत उमा उमाधब संग ॥५१३॥

तोहि न चावत हाथ मैं मुष लगाइ रस पागि।
ताहि नचावत राधिका मुह लगाइ मुह लागि ॥५१४॥

तू मोहन के लाग मुष राधा दई बुलाइ।
राधा हरि मुह लागि कै दई सबै उकसाइ ॥५१५॥

तपत सलाका लोह की सुर कीने ताहि छेद।
स्रवन सलाका हुइ लगै सुर निकसे सुर भेद ॥५१६॥

लगी रहत सबकन सुवन लगी रहत सब गैल।
अलगी रहत न स्याम सौं बात लगी ब्रज फैल ॥५१७॥

लगी जात छुटि जब लगन लगत न मिलन बनाव।
लगी जात जब हाथ तै लगत न तट सौं नाव ॥५१८॥

नेहन हेरी स्याम तुव अरी न हेरी संग।
काम अहेरी तोहि तब हेरी हेरि निषंग ॥५१९॥

बैसाषी साषी सबै साषी कहत न राषि।
बैसाषी कहिहैं सबै सब ब्रज सुष की साषि ॥५२०॥

जहाँ पाउ धारे तहाँ संत उधारे स्याम।
ज्यौं चहैं त्यौं देत ज्यौं लिये उधारे दाम ॥५२१॥

जा करनी सौं हरि मिलै करनी करनी सोइ।
गेह राज के काज सब करनी बिना न होइ ॥५२२॥

धरनी कै बिद्या पढ़ै उधर नींद कौ षोइ।
करत उधरनी घोष सत धरनीधर से होइ ॥५२३॥

चलत छाँड़ कुल लीक कौं ताकौं लगै अलीक।
अली कहौ निबहै[1] कहौं जौ रथ चलै अलीक ॥५२४॥

बेर बेर लै ओपनी ओपन करै जु कोइ।
राधे तुव तन ओप सम कुंदन ओपन होइ ॥५२५॥

निरबिद्या लहै रहै अबिद्या खोइ।
कृपा महाबिद्यान कै[2] बिद्याधर से होइ ॥५२६॥

परपारी[3] कोइल कुहकि बटपारी दुष दीन।
क्यौं आपारी राषियै कृस्न कृपा बिहीन ॥५२७॥

होरी होरी करि सबै होरी षेलत फाग।
होरी झकझोरी पिया झौरी भरी पराग ॥५२८॥

उपरी झाँष झरोष मग परी न सषि ही साथ।
रूप परी सी राधिका परी लाल के हाथ ॥५२९॥

हरबर बरूत कृस्न पिय रुकमनि हरिबर आइ।
हरबर बारी अंबिका पूजी हरिबर पाइ ॥५३०॥

इक मुहचंग बजावही एक बजावत चंग।
चाचर[4] चंग मचावही ब्रजबाला हरि संग ॥५३१॥

चकी चकी चित चितइतें उचको उर आनंद।
बात कहत सषी सौं कहूँ[5] उवित उदधि सुत चंद ॥५३२॥

पिय न साच की बाच की उचको औधि सुछंद।
चकी चकी ज्यौं लषि चकी गति पिसाच की चंद ॥५३३॥

चुपरी चुपरी रीझे ललन चुपरी अँगिया चाह।
नेह चिक नई छाँड़ कै करी चिकनई नाह ॥५३४॥

सोरह से दस सुंदरी जुत सोरह सिंगार।
सो रहसै बहसै हसै नंद किसोर उदार ॥५३५॥

पाठान्तर—१. निबहत २. कृपा महा बिद्या बारै ३. पर बारी ४. चावर
५. सषि साँच की।

कर कर सोर हसै कहा नंद किसोर निहार।
सो रहसै करीयै नही जोर हसै संसार ।।५३६।।

न करि निरादर बर भरी करि आदर बर बाम।
दरबर कंठ लगाइयै[1] सुंदर बर घनस्याम ।।५३७।।

आज दिबारी रंग है रात दिबारी भात।
षेल जुबारी पीय सौं बारी सारी रात ।।५३८।।

लाल रसद रद छद बिषै स-दरद छत पिय दीन।
राधे सदरद सब करी सौतैं सदरद कीन ।।५३९।।

रंग भरी अरु रस भरी भरी सुभाग सुहाग।
हरि मुरली राधा धरी भरी राग अनुराग ।।५४०।।

बंस रोस राधा तज्यौ बैन बंस कौ साथ।
बंस बैन नाहिन तज्यौ क्यौं न तजै[2] हरि हाथ ।।५४१।।

जौ छाँड़ै कुल लाज कौ ताकौ लागै लाज।
लाज छाँड़बे कौं कहौ नाहिन बनत इलाज ।।५४२।।

कुल की लीक न छोड़ियै छाँड़ै लगै अलीक।
दई भीख तज लीक कौ लगी सीत कौ लीक ।।५४३।।

पग न धरत मग फूक कै पगन धरत है चूक।
प्रेम पगन[3] कौ राधिका राषी उपगन कूक ।।५४४।।

पाइ पाइ ब्रज सुंदरी जाइ परत हैं पाइ।
पाइ पियत रस गोपिकन पूरन ब्रह्म कहाइ ।।५४५।।

बरजी नाहि न रहत तू बर जोतै बन जात।
तोकौं घर बर तजन की नाहि बिबरजी बात ।।५४६।।

ताकी सोभा लोक मैं ताही को सौभाग।
जो भाषै हरि नाम कौ सो भाषै बड़भाग ।।५४७।।

दिबरानी सी उठ चली दिबरानी के साथ।
बौरानी हौ राधिका रानी हित की गाथ[4] ।।५४८।।

पाठान्तर—१. लगाय लै २. चढ़ै ३. मगन ४. माथ।

रूपमंजरी सन करहु रूप मंजरी तीय।
रूपमंजरी पास चलिबे ठाढ़े हैं पीय ॥५४६॥

हार[1] नाग पुन्नाग कौ नटनागर के हीय।
तैसै नागन गेसहू हार हीए परकीय ॥५५०॥

ब्रज की गरी गरीन मैं नब नागरी अनूप।
सगरी छबिगुन आगरी सुषसागरी सरूप ॥५५१॥

भगत भाव करि हरि भजै भगत अभाब अहेत।
सु-भगति जन की जानि कै साँई सुभ गति देत ॥५५२॥

स्त्रीपति संतत सेइयै स्त्रीपत संतत दैन।
तीन लोक के लोकपति लोक जपत दिन रैन ॥५५३॥

न्हात बरुन मैं ते हरै षोल बसन के पास।
नँद ली आए[2] नंद के नंद बरुन के पास ॥५५४॥

सुभ रज स्त्री ब्रज भूम की सुभर जहाँ आनंद।
बन बिचरत गोपीन सँग बिचरत जहाँ नँदनंद ॥५५५॥

ब्रज रज परम पुनीत है ब्रजरज अंग लगाइ।
ब्रज रज हरि कै लेत है ब्रजपति अंग लगाइ ॥५५६॥

परम पुरुष पद पदम कौ ब्रज रज परम पगार।
होत परस ही स्याम सौं अरस परस अनुराग ॥५५७॥

नाहि कौंन के अंगना गए अंगना बेस।
ऐसी कौंन जु अंगना कियौ अंगना पेस ॥५५८॥

नाकी नफरी करत है धरत पिनाकी ध्यान।
दास जना की जहाँ तहाँ करुना की भगबान ॥५५९॥

आन रतन छिन होहु जन हरि गुन रत न बिसार।
करत न काहे सफल भव उत्तम नर तन धार ॥५६०॥

जन जन मन राषत फिरत अजनम करत बिसार।
जन मन राषि गोपाल सौं लेत न जनम सुधार ॥५६१॥

पाठान्तर—१. हीरे २. नंदलि आए।

संपूरन सब गुननि तें पूरन ब्रह्म प्रकास।
लोकन पूरन लौं सदा परिपूरन जग आस ॥५६२॥

भूल जात हैं बेषवर सघन बेष बर नाम।
असन बेष बर को तऊ लेत षबर हैं स्याम ॥५६३॥

आठौं जाम न हरि भजे जग जाम न प्रभु सोइ।
हौं जामन या बात कौं फिर जाम न जो होइ ॥५६४॥

लिये जामनी नेह की नीठ जामनी आइ।
ता तजि[1] हरि मो जामनी कहौं जामनी न जाइ ॥५६५॥

नाम मुकति सोपान चढ़ि करहु प्रेम रस पान।
खान पान परिधान की सुधि लैहैं भगवान ॥५६६॥

भरी रसबती ऊषलौं सरस सरबती बाल।
करत रसबती सौं करत रस बतियाँ नँदलाल ॥५६७॥

कहौं अपरस कहौं परस कुच कहौं कर परस गात।
अरस परस अनुराग की करत परसपर बात ॥५६८॥

अरस परस ह्वै स्याम घन अरस परस मन कौन।
अरस परस हरि राधिका भए परसपर लीन ॥५६९॥

उदधि प्रबेस पतंग कौ तरु कोटरनि पतंग।
घर घर प्रगट पतंग रिपु जुब जन अंग अनंग ॥५७०॥

काम कलपतरु स्याम हैं काम कलपत न स्याम।
काहे कलपत बाम तू स्याम कलप[2] भजि बाम ॥५७१॥

रैन कहाँ नीके रहे कहौ क हानी स्याम।
कौन क हानी कुलवधू गोकुल कुलटा नाम ॥५७२॥

लाल पीक है गाल पर तुम्हें पी कहै कौन।
तुम अलीक तहकीक हौ होत कोक प्रति भौन ॥५७३॥

क्यौं पल पी कहियै न हरि[3] पी कहियै परबीन।
जलज रक्त चंदन जजै हर पर चंद नबीन ॥५७४॥

पाठान्तर—१. तातहि २. तलप ३. पलकी कहि सैन हरि।

परे घरे पनघट तिय न चितबत घरे निसंक।
घरे करे उघरे हियै नष रेषन के अंक ॥५७५॥

घटबारी दधि दूध के पनघट बारी बार।
घटबारी पै लेत है घटबारी घटबार ॥५७६॥

दधि घृत घटबारीन पै माँगत दान मुरार।
घटबारे कौं देत है[1] घटबारी घट बार ॥५७७॥

आसा आसा तू फिर्यौ धर धन आसा काम।
आसा पूरन हरि भजौ हरि आसा बिस्राम ॥५७८॥

पहरी बास आसाबरी आसाबरी अलाप।
पिया ती आसा है बरी आसा पूरन आप ॥५७९॥

कुंज गलिन के बीच री सहज स्याम मिलि जाँहि।
बीच पारि है नीच कोउ बीच पारियै नाहि ॥५८०॥

कंजन के सोतैं मिली केसौ तै बिथुराइ।
केसौ तैं दुमनी किए के सौतैं उकसाइ ॥५८१॥

कहूँ देत गजराज कौ कहूँ देत गज राज।
देत देत मुक्त ब्रजिराज कौ कहूँ मुक्त ब्रजराज ॥५८२॥

भर माया के मोह मैं भरमाया संसार।
आन रमाया मोह मैं प्रभु माया संसार ॥५८३॥

कंद मूल कोउ खात है कंदमूल कोउ खात।
कंद मूल सुख जगत कौ भजत मूल मनु प्रात ॥५८४॥

षटरस षाँडे राधिका षटरस बन किय धाम।
यह रजनी घनस्याम की मिलौ न क्यूँ घनस्याम ॥५८५॥

परम निरंजनी रंजनी यह निरंजनी जोति।
नैंन निरंजन अंजनी राधा जनी बहोत ॥५८६॥

मैं जानी जानी जगत जातन जानी जात।
राधे तू नित जात है जात न जानी जात ॥५८७॥

पाठान्तर—१. देबता।

स्रवन होत मुख तें बचन स्रवन परत जब आन।
हरि दूषत है ऊषरस और पियूष मिठान ॥५८८॥

कोकहि बीतत निसदिसा को कहि सकै बनाइ।
बार पार सरस रित के आबत जात बिहाइ ॥५८९॥

महा क्रूर अक्रूर है तासों कहत अकूर।
ब्रज जीवन दुष दै गयौ लै गयौ जीवन मूर ॥५९०॥

ब्रज के सब लोकन करी अबलोकन कौं भीर।
कंस पछारचौ केस गहि केसब बीर सधीर ॥५९१॥

रंग भंग किय कंस कौ मारचौ मत मतंग।
नँद नंदन अद्‌भुत कियौ रंगभूमि मैं रंग ॥५९२॥

प्रथम कियौ संजोग सुष बहुरौ दियौ बियोग।
अब अजोग ऊधो सषा हमैं सिषाबत जोग ॥५९३॥

जोग जोग जोगीन कौं हम सुबिजोगी लोग।
हमकि जोग संजोग है जोग नहीं हम जोग ॥५९४॥

राष कूबरी काष मैं साधत जोग प्रजोग।
हमहि कूबरी भेजियो तोरि जोरिहैं जोग ॥५९५॥

उनदोही गइयाँ षरकि दोही करौं अनेक।
उन दोही अंषियाँ लषी उन दोही किय एक ॥५९६॥

कनक दोहनी हाथ है धेनु दोहनी काम।
देखत सूरत सोहनी काम दोहनी स्याम ॥५९७॥

देषत मूरत मोहनी सरनि मोहनी काम।
करी मोहनी डारि कै मोह नींद बस स्याम[1] ॥५९८॥

क्यों हू किये दुरै नही बितई कहाँ दु रैन।
अबलौं छुटी न लालजू भाल लाल पदु रैन ॥५९९॥

अलकाबलि तेरे बदन है अलकाबलि जाउँ।
नैन जु अलि छबि ऐन है काम जु अलि तिहिं ठाँउँ ॥६००॥

पाठान्तर—१. मोह नीर घनस्याम।

गजरथ बाहन पालकी होत बाह बेबाह ।।
जासौं कृपा गुपाल की बेपरवाह निबाह ।।६०१।।

कहौं बिभूत बिलास है कहौं बिभूत बिलास ।
कहौ न बासन बास है कहौं नबासन बास ।।६०२।।

कहौं बिबाई पालषी कहौं पालषी पाइ ।
एक न कृपा कृपाल की एकन कृपा सहाइ ।।६०३।।

कहौं गिर दरी साथरो कहौं सुंदरी साथ ।
कहौं कनक है हाथ मैं कहौं कनक है हाथ ।।६०४।।

कहूँ काम हरिगुन कथन कहूँ काम के काम ।
कहूँ काम धर बीर के कहूँ अकाम सकाम ।।६०५।।

जा जन कै मोहन ममत मोहन सर न लगाहि ।
समता के रस सौं तृपत कोउ सम ताके नाहि ।।६०६।।

भगत जगत पति कौं भजै रहै जगत कै दास ।
जे न जगत पति कौ भजै तिते जगत के दास ।।६०७।।

जे पंडब कुल हत भए कुलहत भए निदान ।
कौंन होत प्रतिकूल जिहो सानुकूल भगबान ।।६०८।।

परी जाल उछली परै ज्यौं मछली जलहीन ।
परी बिरह जंजाल मैं स्याम छली त्यौं दीन ।।६०९।।

चढ़त जुबानी है चढ़ी बदन जु बानी जोर ।
कहा जुबानी कहि कहौं जुबा जुवति की जोर ।।६१०।।

झाँष झराषै[1] स्याम तन एरी रोष निबारि ।
तोहि सरोस निहार कै हमत परोसन नारि ।।६११।।

नित हरि संग जगी रहत जगी रहत है जोत ।
पाई प्रेम जगी रहै सो तो उजगी होत ।।६१२।।

लागन देत न घटन कौ लंगर लागन देत ।
नबलागन को नब कटक[2] लाग लाग कै लेत ।।६१३।।

पाठान्तर—१. झरोषन २. झटकि ।

एक तरुनि तजि राधिका एकत इत उत जात।
एकत लपकि न रहत है एकत मिल[1] दिन रात ॥६१४॥

हरि झगरौ कत करत हौ कत रोकत हौ गैल।
उतै भूल हूँ जाइहौ भूल जाइहौं फैल ॥६१५॥[2]

उलटी बेनी मैं फिरचौ[3] उलट पुलट मन होत।
उलटी बैनी मैं परचौ जोत न[4] पावत गोत ॥६१६॥

पीन थनी की नासिका पीन थनी की आहि।
मनमथ नीको जान कै मन मथनी की ताहि ॥६१७॥

ऐसी देषी मेनका देष मैन का बान।
मैंन काय ह्वै जात हरि लाग मैंन का बान ॥६१८॥

गाबत गारि धमार मिलि काम जगाबत बाम।
रंग लगावत अंग सौं अंग लगाबत स्याम ॥६१९॥

गरी गरी मैं रँग भरी गगरी लीने हाथ।
मगरी रोकत स्याम कौ भरत उमग री साथ ॥६२०॥

जुगलत अमृत सु नित पियत लोचन जुगल चकोर।
जुग लग तृपति न पाबहीं लष मुष जुगल किसोर ॥६२१॥

सजल सघन घनस्याम छबि पीत बसन घन जोर।
निरषि निरषि घनस्याम मुष मुदित सुघन मन मोर ॥६२२॥

रबन बनज माला बनी बनी सुबन बनमाल।
बनमाली ब्रज मैं बने बनमाली ब्रज माल ॥६२३॥

रति छबि हारी देषि कै प्रीत बिहारी अंग।
राधा छबि हारी मिली कुंज बिहारी संग ॥६२४॥

॥गुप्त यमक अंतलापिका ॥

सदा सघन बन कुंज कौं हेर बिरह की पीर।
को गोपिन सँग प्रीत कौं कुंज बिहारी धीर ॥६२५॥

पाठान्तर—१. एक मिलन २. सर्वत्र हौ के स्थान पर है ३. बैजी मैं पर्यौ ४. ज्यों मन।

नटत न ज्यौं की त्यौं कहत नट नवली तिय संग।
न टरत अपने सील तैं नटत नरी नवरंग ।।६२६।।

कंचन लोभ न मुनिन कौ कंचन काच समान।
लोचन लगे गोपाल सौं लोचन लगत न आन ।।६२७।।

राधे कृस्ना कृस्न कौं कृस्न करी जल माहिं।
कृस्न कृस्न सौं पच्छ तैं कहा कृस्न हौ नाहिं ।।६२८।।

साधारन जिय[१] जान तू साधार न संसार।
मुरली जगत आधार कै है राधा आधार ।।६२९।।

घरबारी सौं रचि बिरचि पर घर बारी तीय।
पर घर बारी कौं भजैं जे घर बारी जीय ।।६३०।।

है राधा हरि बल्लभा राधा बल्लभ सोइ।
दुहून प्रेम ही मैं अधिक नाहिं मही मैं कोइ ।।६३१।।

दास भाव प्रभु दास सौं सदा सुभाव सुसुद्ध।
जग सौं भाव उदास हैं जे हरि भाव प्रबुद्ध[२] ।।६३२।।

जाके हिरदै ग्यान है नहि अग्यान हिय माहिं।
सो साधुन के ग्यान मैं और ग्यान मैं नाहिं ।।६३३।।

पंचभूत मैं पाइयैं जग प्रसूत[३] परवेसु।
पंच कहत सो साँच है पंचन मैं परमेसु ।।६३४।।

पहिलै पंचीकरन कर परपंची मिल जाँहि।
इन पंचन कौं ले दए इन परपंचन माँहि ।।६३५।।

पंचभूत अदभूत ए पंचभूत घट माहिं।
जाकौं लागै जाइकै ताकौं त्यागै नाहिं ।।६३६।।

परपंची नारद कही बात बिपंची माहिं।
जो न जात दिन कलह मैं परै कल हमै नाहिं ।।६३७।।

मैं अपना इतबार दै ली राधे अपनाइ।
जैसे सीतल कीजियै तपत बूध अपनाइ ।।६३८।।

पाठान्तर—१. जिन २. प्रसिद्ध ३. प्रसून।

कुल मनि सुत मृदु षात मुष व्याकुल देष्यौ जाइ।
जो कुल[1] गोपी गोप तहाँ गोकुल देषे माइ ॥६३९॥

गोषे साथ अनाथ के किय इक साथ सनाथ।
करन सनाथ अनाथ के कबहु नाथ के नाथ ॥६४०॥

मोर पच्छ धर पच्छधर मोरपच्छ धर होइ।
जुगल पच्छ धर बदन छबि मो बिपच्छ धर सोइ ॥६४१॥

होइ असंचित औगुननि संचित हरि गुन भेब।
चित चाहत है परम सुष संचित करि हरि सेब ॥६४२॥

जुगल पच्छ सित स्याम ससि जुगल पच्छ सित स्याम।
समन ब्रजन[2] ब्रज चंद के सम न चंद छबि धाम ॥६४३॥

चलत सदा कुल राह मैं छाँड़ और कुल राह।
छुवत न औगुन राह कौ काहि न होत सराह ॥६४४॥

नाही नाहर नहर तैं नाहक झपटत बाल।
नाह रहे पहरै सदा नेह सनाह रसाल ॥६४५॥

ससि तारन[3] जपत है तारा इन गुन धाम।
पाराइन करिहै अबस जप ताराइन[4] नाम ॥६४६॥

सदा मोद रहिबौ करै सदा मोद रस देत।
पावहु जस आमोद री कर दामोदर हेत ॥६४७॥

दानबारि तें मेट किय दान बार तें मान।
दानबारि के नाम पर क्यौं न बारियै प्रान ॥६४८॥

हर त्रिपुंडरी कर भजैं पुंडरीक सों पूज।
तुंडरी कहा मति अघन पुंडरीक चष पूज[5] ॥६४९॥

दरपन सो निरमल हियो जीय मैं दरप न लीन।
नहि दरपन कंदरप सों मुनि कंदर पन लीन ॥६५०॥

चरन राषियै चित्त कौं चरन राषियै चित्त।
बन बन बिचरत संत कौं यह आचरन नित्त ॥६५१॥

पाठान्तर—१. गोकुल २. ब्रजिन ३. ताराइन ४. नाराइन ५. कूज।

उपबन माली कै रह्यौ[1] उपबन सुबन बिहार।
सुपबन सीतल सुरभि मृदु उपबन जमुना धार ।।६५२।।

बन बन जन सौं हिल मिलै उर बनजन के हार।
बन बन बातें प्रेम की बन बन चलहु सबार ।।६५३।।

उग्रसेन कंसहि हन्यो करि उग्रसेन प्रताप।
उग्रसेन कौं राज दिय उग्रसेन हरि आप ।।६५४।।

तू हरई करई कहति हरए करए बैंन।
हर ए[2] हीय धारत नही हरए हरए है न ।।६५५।।

हरि बरराति रहे कहौं तपत न हिय सियरात।
मारी मदन अरात की अरी परी अररात ।।६५६।।

स्याम सुभग राषत हियै सुभगति कहियै सोइ।
सुभगत सु भगत पाइयै असुभ असुभ गति खोइ ।।६५७।।

कासी सेबन जोकरत सुर सरिता के तीर।
सुर सरि ताके होत है सुर सर ताके तीर ।।६५८।।

अरी मधुर बाँ मान तजि मिल मधुरिपु हस हास।
मधुर मधुर बानी गरजि धुरबा चढ़े अकास ।।६५९।।

लाल चलावत रस कथा बाल चलाबत चित्त।
देष चलाबत छबि रची हीय चलाबत मित्त ।।६६०।।

सौदामनि की दुति दमक हिय दामन कौ भास।
हरि बिनु दामनि कौ लियौ कियौ[3] राधि के दास ।।६६१।।

तोहि रमाबत जान कै स्याम रमाबत रंग।
परमाबत रति की करत उर माबत न उमंग ।।६६२।।

परमाबधि आनंद की अबधपुरी अभिराम।
अबधन बदत उधार की निरबधि गुन जहाँ नाम ।।६६३।।

लेत यग्य बलि मुनिन पै सुर ताकै बलिहार।
बलिहारी तेरी त्रिबलि छल्यौ बल छिन[4] हार ।।६६४।।

पाठान्तर—१. सहैं २. महर ३. सो ४. छलन।

अरी सुता वृषभान की सौत भान क्यौं होइ।
मनन तपत वृषभान लौं सीत भान हरि सोइ ॥६६५॥

भरत बिस्व कौं और तें भरत बिस्व के काम।
तो ह्री को भरिहै वहै बिस्वभंर जिहि नाम ॥६६६॥

कहीं न करियै दीनता दीनबंधु पै जाइ।
दीनबंधु पै कीजियै जो दीन दयाल कहाय ॥६६७॥

जोई अपराधी नहै सोई अपराधीन।
जाकी अपराधीन है कहियै सुपराधीन ॥६६८॥

जबै न जोबन बैन तन तबै न बैन समैन।
नैंन सैंन बस सेन मुष संग सैन मुष चैन ॥६६९॥

कहौ चकित चितबत कहा कित चित है बलि जाँउँ।
इन अनचित हू चलत हौ अनुचित तजहु सुभाउ ॥६७०॥

बरजित तरजित हौं अरी बरजित तिनकौं जात।
बरजित सौं बर ना चलै यह बर लगत न बात ॥६७१॥

नगनन की यह तरजि है नगन करी पिय रात।
नगन गगन की जोत तें नगन न जानो जात ॥६७२॥

देषन दुतिया चंद कौं मिली तिया ब्रज माहि।
दुतिया के तन की दिपति ऐसी दुतिया नाहि ॥६७३॥

अति रन बारे जीबते जाने अति रन हार।
तारे तारनहार हरि तारन तारनहार ॥६७४॥

दृगन लषत जालीन मैं हरि यह जल जालीन।
मनों परे जालीन मैं मीन चपल गति लीन ॥६७५॥

तेरी बात चलाइ दी सौतिन हिय बिचलाइ।
सबैं दई बिचलाइ हरि राधे हिब बिचलाइ ॥६७६॥

रतनारी अँखियाँ करी रतनारी लगि पीय।
तऊ करत नारी सखी अहौ अनारी पीय ॥६७७॥

हन अपरन कबहु न कीयौ हिय अपर न हम लीन।
तन अरपन की कहा चली सरबस अपरन कीन ॥६७८॥

बीर बहूटी सालीयै बीर बहूटी साथ ।
बीर बहूटी सेबने महदी बिंदु सहाय ॥६७९॥

मैं बाकौ अबतर करी सीतल छिरकि गुलाब ।
तैं बातैं अबतर करी यह कहि कौन हिसाब ॥६८०॥

तेरे गरजत बरस तैं गरज सरत प्रति भौंन ।
सरिता सरभर कीजियै तेरी सरभर कौंन ॥६८१॥

एरी अरत कहा इतो सुरति करति किन फूल ।
जो हरि उर उपजी अरत सुरत जाइहै भूल ॥६८२॥

निबरे जाके बोल बँध सबरे जानत नाहि ।
बरजे जाइ हरि राधिका अरी बरेजा माहि ॥६८३॥

छली छबीली लाल कौ छिगुनी छला दिखाइ ।
तबतैं करत छलाब कै छाँड़[1] अरी बछलाइ ॥६८४॥

हम जनपत्री स्याम की जानत हैं कहा नाहि ।
लिषी[2] जोग पत्री लगी[3] पत्री सी हिय माहि ॥६८५॥

हा हा रत हारत नही सुरत महारत बाल ।
याके हार बिहार मैं हा हा रमै री लाल ॥६८६॥

हुतौ मही मटकीन मैं दीयौ मही मै डार ।
हम ही मै तऊ बरत है मोहन मदन मुरार ॥६८७॥

चंपकली सोभित भली चंप करन चित[4] बाम ।
चंपक ली राधे मिलहु चंपक बन में स्याम ॥६८८॥

हार हार मै लाल है सुरत हार मै लाल ।
हार हार मै लाल है हार लाल[5] मै लाल ॥६८९॥

बात घात तैं टूट है ज्यौं तरुजर बलबान ।
बात घात तैं तोरिहौं त्यौं मानबती कौ मान ॥६९०॥

मातौ दुरद पछार कै लीने दुरद उषार ।
करी कंस की दुरदसा मल्ल दुरद किय मार ॥६९१॥

पाठान्तर—१. छीद २. लषी ३. लिषी ४. ब्रत ५. हार ।

जपत पल छन स्याम कौ तप लच्छन जुत सोइ।
उपलच्छन ताकौं तजै अपलच्छन कौं खोइ ॥६९२॥

सोई सुमति सराहियै जा हिय जसुमति नंद।
जग पावत[1] जसु मति बिमल होत सु बसुमति बंद ॥६९३॥

हरि परहरि हिय राषियै परिहरि जग जंजाल।
परहरि कै पद पदम पर परि पारियै गोपाल ॥६९४॥

पथर तिरे जिहि नाम ते इहि कथ[2] रत सब लोइ।
दसरथ सुत किन तारहै जो तिहि पथ रत होइ ॥६९५॥

जनमत ही जीवन दियौ जीवन को जग जीय।
हरि जनमत हरि हाथ सब जन मत सोचै हीय ॥६९६॥

भूल जात गति आपनी लष गोपिन गति लेत।
अगतिन के करि दूर हरि अगतिन कौं गति देत ॥६९७॥

दीन बिनती दीनपति सुनियै[3] परम प्रबीन।
हमसे अपराधीन कौं करियै अ-पराधीन ॥६९८॥

धर आसन आस न धरै बास न बासन तंत।
जोबन मैं बन मैं रहै[4] तापस ताप सहंत ॥६९९॥

परजन मनसा मै पग्यौ कहा भयौ जो कोइ।
जन मन साचैं हरि जपै जनम न दूजै होइ ॥७००॥

उपमा रूप अनूप की बरनूँ कहा बिचार।
नख पद पदबी पाइहै नषपद पदबी नार ॥७०१॥

पानप सों सरसे रसे[5] सब सुष सरसे दैन।
कान्ह रस रसे राधिका सरसे तेरे नैन ॥७०२॥

कौन भवन तन जाइ कै करीर बन तन फेर।
मोहि कहै बनत न कछू रबी[6] सुबन तन हेर ॥७०३॥

बनवारी मैं षेलती बनबारी सु निहार।
सारी बारी नारि पर सारी बारी नार ॥७०४॥

पाठान्तर—१. पाबन २. पथ ३. मानहु ४. रमै ५. भरे ६. रही .

तिरछी चितबन तें उतै चितै चितै हरि लीन।
चाहि रहै जिय चाहि कै इतै भए हरि लीन ॥७०५॥

पिया[1] रसीली संग जगि किया[2] आरसी गात।
फिर देखत है आरसी लगी आर सी बात ॥७०६॥

कीनी सुमना राधिका सुमना तै सुमनाइ।
हरि इह सुमना दाम ज्यौं राखौ हियै लगाइ ॥७०७॥

परनारी की प्रेम पगि पर नारी वह धार।
सो पर नारी राधिका परनारी सब बारि ॥७०८॥

हरि अबरज हरि से बदन हरि भव कौ हरि जान।
हरि बिचरत हरि मैं सदा हरि से बरन बषान ॥७०९॥

सारँग तारचौ कर धरचौ सारँग मुष छबि जान।
जग प्रताप सारंग सौं भज मन सारँगपान ॥७१०॥

ज्यौं सुबरन के होत है भूषन भाँत अनेक।
त्यौं सु-बरन के अरथ बहु सबद होत है एक ॥७११॥

हरि चरित्र समझै भलै पावै नाही षेद।
सोई जमक दोहान कौं नीकै जानै भेद ॥७१२॥

गुन रस सुख[3] अमृत बरस बरस सुकल नभ मास।●
दूज सुकबि कबि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥७१३॥

आगर नागर नरन[4] कौ नगर मेडतै बास।
जमक सतसया कौ धर्‌यौ नाम सुवृंद बिलास ॥७१४॥

बहुर सतसया ए कहै सुनत होत मन मोद।
सरल अरथ ताके सबै[5] नाम सु वृंद बिनोद ॥७१५॥

पाठान्तर—१. किया २. पिया ३. मुख ४. नगर ५. अरथ गरथ ताके सरै

गूढ़ार्थ—●. गुण=३, रस=६, मुख=७, अमृत=१।

११

सत्य सरूप रूपक

श्री महाराज राजसिंह को गुरा सुलतानी जंग समैं को ग्रन्थ रूपक सत्य सरूप

दोहा

सिध बुध दाता सारदा गनपति गुन भंडार।
सुभ कारज की सिद्धि कौं अखिल जगत आधार ॥१॥

जे प्रभु सौं अरु स्वामि सौं हेत धरत जिय माँहि।
ताको कबहू जगत मैं होत पराजय नाँहि ॥२॥
जे प्रभु कौं अरु स्वामि कौं हित[1] चाहत नाँहि।
प्रगट पराजय होत हैं ताही को जग माँहि ॥३॥
प्रभु निज प्रीति पिछानि कैं होय सहायक आय।
सुन गज अरु प्रहलाद की कैसी करी सहाय ॥४॥
करी बिजय गज की जहाँ ग्राह पराजय पाय।
भक्त काज अबतार हरि कहैं पुरान बताय ॥५॥
हरनाकुस प्रहलाद कौं केती दीनी त्रास।
दास त्रास हरि क्यौं सहैं भये नृसिह प्रकास ॥६॥

पाठान्तर —१. हित चित चाहत नाँहि।

द्रुज मुख सुर बोखी जहाँ राबन जय पद लीन।
राँम त दिन राखस हन्या भक्त बछल सुध कीन ॥७॥

भारथ पारथ सारथी भये जहाँ भगबान।
ताकी हरि कीनी फते पूरन प्रीति पिछान ॥८॥

हरि के जन जेते भये अरजुन आदि अनंत।
सुने पराक्रम तिनन ह्वै कोउ न पावत अंत ॥९॥

बिरद बहुत ब्रजराज के कापैं बरने जाय।
सेस महेसऽरु सारदा तिनहूँ पार न पाय ॥१०॥

ज्यौं सहाय तिहिं जुग करी दास आपने पाय।
त्यौं ही इहि जुग अब भये राजसिंह के भाय ॥११॥

हरि गुन के स्रोता जिते कहत सुकबि सों बैंन।
कृस्न करी जिहि बिधि कृपा कहों स्रबन सुख दैन ॥१२॥

कवि-बचन

स्रोता सुनिये सुचित ह्वै जस प्रभु दास सुहाय।
गिरधर जिहि सिर पर धरचो सो फल कहूँ सुनाय ॥१३॥

कहैं वृंद कर जोर कैं पाय पूज बर पाय।
सरन उबारें सेबकन बरनों सुजस बनाय ॥१४॥

सूर बीर दाता सरस गुन निधि सील समुद्र।
मान नंद आनंद मय रिपु खंडन रन रुद्र ॥१५॥

साँच बाच जुधठिर सुपह भुजबल भीम समाँन।
अरजुन सों बानावली राजसिंह राजाँन ॥१६॥

करन दान जैसो करन बिक्रम बिक्रम बीर।
माँन तनय मानत जगत मानत नय जय धीर ॥१७॥

बरनत हैं जस षट बरन असरन सरन अनूप।
चरन चरन राखत सुचित बिपति हरन हर रूप ॥१८॥

जोध जोध बंस जानियै रनमल सो रनमल्ल।
केहर के हर कुल कलस हर बल्लाँ हर बल्ल ॥१९॥

कवित्त

करन सो दाता परकाज को करन हार
करन पिता के भो समान भासमान हैं।
बिक्रम नरेस जैसो बिक्रम बिसेषियत
किया श्री त्रिबिक्रम की धीरज निधान हैं।।
वृंद कहैं देव देवराज जैसो नरदेव
बसुदेव मनि बासुदेव गुनगान हैं।
राज राज जैसो हैं बिराजमान मान नंद
महाराजा राजसिंह राजैं राजदान हैं।।२०।।

छप्पय

गुन गंभीर बीराधि बीर पंडीर धीर महि।
मान नंद साहस समंद छबि चंद वृंद कहि।।
राजहंस तप तेज हंस अवतंस तेज वर।
निधि निबास बासब बिलास जस बार भासकर।।
इक साह उथप्पिय छत्र हरकि इक साहि थपिय छत्रहि धरहि।
महाराज बहादर राजसिंह जो आरंभइ तं करहि।।२१।।

दोहा

सोभित लियें कृपा-निकर कृपान कर बलबीर।
कलप कल्पतरु कबिन कौं संगर धीर सधीर।।२२।।

भेटति हैं जंभारि ज्यौं जंभ अरिन के दंभ।
पतसाही कमठान कौं भर थंभन थिर थंभ।।२३।।

छप्पय

पातसाह दिल्लीस कोप दछिन पर किन्नों।
बीजपुर किय फते गोलकुंडा गढ़ लिन्नों।।
सिबा समापत भयो पकर संभा को मार्‍यो।
लिये बहुत गढ़ कोट समझि निज समय बिचार्‍यो।।
अबलिया साह अबरंग को आगम मति यह उप्पजिय।
होय न बिरोध यह जानि कैं कर बिबेक यह बात किय।।२४।।

पातसाह-बचन : दोहा

आजम कौं ऐसें कह्यो दिल्ली के सिरताज ।
देस दक्खिन तुमकों दयो इहाँ करो तुम राज ॥२५॥

आजम औरंग साह को हुकम न कियो प्रमान ।
कछू न प्रत्युत्तर दियो मन मैं धर अभिमान ॥२६॥

बीजापुर की साहिबी भागनगर को राज ।
तहाँ कियो औरंग तब कामबगस सिरताज ॥२७॥

कामबकस कैं यह कही कछु जिय समझहि साब ।
बड़ि मजलस कर पुहचियो अपनी ठौर सिताब ॥२८॥

आजम भेज उजेन कौं हुकम कियो पतिसाह ।
छोटी मजल मुकाँम कौं करते चलियो राह ॥२९॥

ले सूबा उजेन को आजम कियो प्रयान ।
अवधि पाय अवरंग को पाछैं छूटे प्राँन ॥३०॥

भये गनीम के मुलक मैं पातसाह परलोक ।
साजी बाजी असदखाँ राखी साखी लोक ॥३१॥

जाहर करी न असदखाँ राखी बात दुराय ।
आजम कौं दुय मजल तें लीनों फेर बुलाय ॥३२॥

संबत सतरै तेसटै सन इक्काबन जास ।
अस्तंगत औरंग ससि अमा फालगुन मास ॥३३॥

बाका औरंग साह को सुनि कैं मोजम साह ।
उत्तर दिस तें उठि चले धरि दिल्ली की चाह ॥३४॥

हुते अहमदानगर मैं आजम साह हजूर ।
तखत रखत पतिसाह को लियो खजाना पूर ॥३५॥

तखत बैठि सिर छत्र धरि गज सिक्का ठहराय ।
फेर दुहाई दछिन मैं चल्यो निसान बजाय ॥३६॥

मरदाना आलम मरद असदखाँन रनधीर ।
साहिब आलमगीर को बड़ो अमीर बजीर ॥३७॥

खबरदार सब बात मैं संग लियो सिर ताज।
बुधि बल तें पतिसाह के किते सुधारे काज ॥३८॥

चौपई

खाँन बहादर निसरत जंग। जुलफिकार खाँ लीनो संग॥
छहैजारी मनसब जाको। प्रबल प्रताप दछिन मैं ताको ॥३९॥

कोप ओप जापर चढ़ि जावैं। गढ़ गनीम कौं धूरि मिलावैं॥
चिंजी फते जोरबर कीनी। चिंजीबर कों दहसत दीनी ॥४०॥

जेइ गनीम के गाढ़े कोट। ते सब लिये खग्ग की चोट॥
जेइ गनीम मुहारें आवें। कै मारें कै ताहि भजावें ॥४१॥

दोहा

मुर्यो न कबहूं जंग मैं जुर्यो जहाँ तहाँ जंग।
जुलफिकार सिरदार कौं आजम लीनो संग ॥४२॥

दल पति दलपति दूसरो बुंदेला बल बंड।
दोर्यो सु बाकी मदत खल कीने खंड खंड ॥४३॥

रामसिंह हाड़ा हठी सुत किसोर सिरदार।
लोहों लरि परि परि उठ्यो को जानें कै बार ॥४४॥

अमानुला खाँ ओ हठी चो हजारी उमराब।
सलेमान खाँ साहसी जानें जुध के दाब ॥४५॥

सगैले खाँ आलम हठी भाई मुनिबर खाँन।
जंग जुरे न मुरे कहों गाढ़े भरे गुमाँन ॥४६॥

केते मुगल पठान संग और दच्छिनी ज्वान।
आजम लीनें समझि कें करिबे कौं घमसाँन ॥४७॥

रिस करि मोजम ऊपरें क्या बाँधों समसेर।
सोटे की इक चोट सों करौं जंग मैं जेर ॥४८॥

कहिबै बचन गरूर के आजम चले अभीत।
साईं गरब प्रहार हैं यह समुझी न अनीत ॥४९॥

दिसि दिसि तें सब साहि सुत चले अकबराबाद ।
अपनी अपनी तरफ तें सबै कहावत ज्वाद ।।५०।।

पूरब दिसि तें प्रथम ही साहिब साहि अजीम ।
आइ पुहुँचे आगरै धरें भुजा बल भीम ।।५१।।

हुतो अकबराबाद मैं मुकत्यारखाँ नवाब ।
माँन भंग ताको कियो तामैं रही न ताब ।।५२।।

साहि बहादर साह की फेर सहर मैं आन ।
गाढ़े साह अजीम जू सजे जुद्ध सामाँन ।।५३।।

आजम सुत गुजरात तें चल्यो आगरो लैंन ।
सुन्यौं प्रताप अजीम कौं बैठो जाय उजैंन ।।५४।।

आजम कौं आयो सुन्यौं लंघि नरबदा सीम ।
कोप समोगर जाय कैं डेरा किये अजीम ।।५५।।

साहिब साहि अजीम तब रिस कर भौंह चढ़ाय ।
धरि पोरस ऐसें कह्यो बीरत बचन सुनाँय ।।५६।।

साह अजीम-बचन : छप्पय

कहियें सोई बचन कहै सो निबहैं सोई ।
मात पिता पछि के सुभाव पुरुषन मैं होई ।।
आज तखत के काज साज दल आजम आयो ।
लोह छोह धरि लरों भयो मेरो मन भायो ।।
ज्यों रूप करी तैसी करों वाहि खग्ग अपछर बरी ।
या करों फते जैसें बिरचि औरंग साहि फते करी ।।५७।।

दोहा

राजसिंह महाराज सों ऐसें कह्यो अजीम ।
आया है सफ जंग का समैं निकट अति भीम ।।५८।।

महाराज-बचन

साहिब साहि अजीम सों करी अरज महाराज ।
आजम सों लरि लैंहिंगे सब पतसाही साज ।।५९।।

छप्पय

कहा भयो आजम्म दोरि दछिन तें आयो।
कहा भयो आजम्म प्रकर ल्हसकर लै धायो॥
कहा भयो आजम्म धूम धर अंबर धरिहैं।
कहा भयो आजम्म लोह छल बल करि लरिहैं॥
गज थट्ट वट्ट संघट्ट भट दवट दरेरा दैहिंगे।
साहिब अजीम इकबाल तें मार फते कर लैहिंगे॥६०॥

साहि अजीम-बचन : दोहा

आगें भी तुम बंस मैं भले भये बरियाम।
फते करी पतिसाह की लस्करि करि संग्राम॥६१॥
भले हूजियो बीर बर है आजम सों काँम।
तुम भुजबल नै हम फते करिहैं कर संग्राम॥६२॥
जानत हैं तुम सौं सदा कृपा करत हैं नाथ।
इहि 'सुलतानी जंग' की फते तुम्हारै साथ॥६३॥

कवि वचन

नृपति जुधिष्ठिर की बिजै जैसें अरजुन हाथ।
अरजुन की हरि तें बिजै कहत जगत यह गाथ॥६४॥
साहि बहादर की फते ज्यों अजीम के साथ।
त्यों ही फते अजीम की स्त्री गिरिधर के हाथ॥६५॥
एक पदारथ के जहाँ हैं अभिलाखी दोय।
आपस मैं अति क्रोध बढ़ि ह्वै बिरोध जुध होय॥६६॥
तैसें दिल्ली तखत की पतिसाही को चाह।
माजम आवत इत उमगि उतकों आजमसाह॥६७॥

छप्पय

चहूं चक्क चलचलिय भूमि हलहलिय कटक भर।
उदधि सलिल उछलिय अट लट लिय गिरधर॥

सेस सकुचि सलसलिय पिछ कलमलिय कमठ कपि ।
दल दरेर वलमलिय धूरि नभ धसिय सूर दपि ।।
चढ़ि चले भले सामान सों हिय दिल्लीधर हित धरै ।
आवत उत्तर दछिन तें माजम आजम आगरै ।।६८।।

बलित बिबिध बाहनी खग्ग पानिप गाहर भर ।
गज तुरंग उमराव नक्र चक्रादि भयंकर ।।
कोप लहरि बाड़ब प्रताप अति देत दरेरा ।
बाजि गाजि दुंदुभी कौन करि सकै निबेरा ।।
आजम-समुद्र उलंघो अबनि दछिन दिसि तें आगबन ।
माजम-अगस्त अति कोप करि करहि तत छिन आचमन ।।६६।।

मिले रत्तमुख मुगल भूरि पठनेटे भूरे ।
मिले सेत किलमाक स्याह हबसी रन सूरे ।।
बीर कमध चहुबाँन गोर हाड़े कछबाहे ।
धरैं धोप दच्छिनी चिल बुंदेले चाहे ।।
सन्नाह बाह आयुध सजे सूर तन्नतन अनुसरै ।
रहक ले नाल आगे किये आये दुहुँ दल आगरै ।।७०।।

दोहा

माजम आजम सों कह्यो तुम दछिन पतिसाह ।
बहुरि लीजियो मालबो क्यों करिये गजगाह ।।७१।।
समर बिजय संदेह है समर परैं लरि सूर ।
हार जीत प्रभु हाथ है मत कीजियो गरूर ।।७२।।

आजम-बचन

ए कायर के काँम हैं रिस छाँड़ें रस काज ।
ऐसे कैसे करि सकै राजा पुहुबी राज ।।७३।।
छिति बूंदें हय खुरन सो खग्ग धार धर धीर ।
बसु पूरन जो बसुमती ताहि भोगबै बीर ।।७४।।

छप्पय

अब तुम माजमसाह बचन मेरो सुनि लिज्जै ।
करि आये पतिसाह काम सोई किन किज्जै ।।

लरे साहु औरंग लरों तिहि भाँति लराई।
देहैं जिसैं खुदाय सोइ करिहैं पतिसाई॥
मानूं न सुलह कोऊ कहों लोह छोह धरिकैं लरों।
कै चढ़ूं तखत आजम कहै कै तखतों बिच तन धरों॥७५॥

कवि-बचन : दोहा

आजम माजमसाह को बचन न कियो प्रमाँन।
होंनहार सुइ होत हैं कहा कोउ करै सयाँन॥७६॥

यह कहबत साँची भई राजनीति की रीति।
सब की समैं बिनास कैं होय बुद्धि बिपरीति॥७७॥

इततैं उततैं बुद्धि बल अंग जंग अंगेज।
माजम आजम को कटक भयो चहैं मुँहमेज॥७८॥

दोऊ के ल्हसकर जबर दोऊ कै खग्ग जोर।
निहचं ताही की फते स्त्री गिरिधर जिहि ओर॥७९॥

छप्पय

कायर घर संभरिय सूर सुरलोक संभारिय।
कायर सुंदर सुरति सूर अपछर रति धारिय॥
कायर परि मुख सेत अधर सुबिकय भय भग्गिय।
सूर चढ़िय मुख रंग मूछ भौंहन सों लग्गिय॥
कायरन काय थर थर करिय धूंम देख धीर न धरहिं।
दुय कटक होत मुँहमेज तब सूरबीर निधरक लरहिं॥८०॥

सूर मोह परहरिय मोह अपछर उर धारिय।
सूर सस्त्र सन्नाह अंग अपछर सिंगारिय॥
सूर चढ़िय केकान चढ़िय बिम्मान अपछर।
सूर बंछि अपछरहि बंछि अपछरनि सूर बर॥
बढ़ि रोम बीर चित बिक्कसिय उर अपछर रति रस बढ़िय।
संग्राम भूमि पथ गगन पथ सूर अपछर संचरिय॥८१॥

सूर समर समुहीय भयसु कायर समूह घर।
सूर चित्त निधरक्क चित्त कायरनि धरक धर॥

सूर छछोहे हत्थ पाय छछोहे कायर[१]।
सूर लज्ज संग्रहिय लज्ज तज्जिय कायर[१]।।
भनि वृंद सूर भारथ भिरहि कायर रन भजि निस्सरहि।
लरि सूर करहि षत्रबट प्रगट कायर षत्रबट बिस्सरहि।।८२।।

सवैया

गौरि हसी बिहस्यो गवरी-पति नारद नाचि उठ्यो हितनातें।
खेचर भूतर प्रेत पिसाच रु आपस माँझ करी मिल बातें।।
आलम के दल कों चलकें हरिहैं करि बान कृपान कि घातें।
मान तनें राजसिंह महीपति जीति हैं जुद्ध स्त्री नाथ कृपा तें।।८३।।

दोहा

बा दिन थापन जुद्ध कौं माजम चढ़े सिकार।
साजादे सब साथ लै ओर भले सिरदार।।८४।।

साहिब साह अजीम जू सोधे अटक चलाय।
जितें पेसखानाँ तितें चले निसाँन बजाय।।८५।।

साहि चढ़े सुन कें भये महाराज असबार।
मुजरा साहि अजीम को चितबत यहैं बिचार।।८६।।

पातिसाह सौं मिलन कौं एक ठौर पर आय।
ठट्ट लियें ठाढ़े रहे सुधि कौं अनुग बढ़ाय।।८७।।

बाजि छोड़ मुजरा कियो जिहि बिधि है दसतूर।
निकट भये अति तखत के स्त्रीपति साह हजूर।।८८।।

पूछि तदि महाराज सौं स्याह आलम पतिसाह।
आजम के संगी सुभट कहो तिनन की चाह।।८९।।

सबहि सुनत ऐसें कह्यौ समुझि समय की रीत।
माफ होय तकसीर उन ज्यों उपजै परतीत।।९०।।

आलमगीरी सुभट जे लिखत अरज कर जोर।
हम चाहत हजरत कदम ऐहैं, आजम छोर।।९१।।

पाठान्तर—१. कायर छर

संग बदर का पाय कैं आये हजरत पास ।
करता अरु पतिसाह की एक जीय घर घर आस ॥६२॥

राजा कों दीने तबैं लिख राखे फरमाँन ।
तखत रबाँ के बीच हे कर दीने सनमाँन ॥६३॥

दे फरमानहि यह कहो पहुँचैं उनके पास ।
जुलफिकार खाँ रामसिंह उन उपजै बिसबास ॥६४॥

करि सलाम घोरैं चढ़े निज सेना मैं आय ।
मिलियै अबैं अजीम दल सुधि कौं सुभट पठाय ॥६५॥

आजम काबू पाय कैं रचि पचि जुध ठहराय ।
दोर पेसखानाँ उपरि परचौ अचानक आय ॥६६॥

अपनो दल पतिसाह दल लीनैं आजम साह ।
दछिन के सूबा सबैं अरु दछिनी सिपाह ॥६७॥

ऐसी भारी फौज कर सकल जुद्ध सामाँन ।
कोपि अराबा रोपि कैं छोड़े बाँन कबाँन ॥६८॥

साहिब साहि अजीम सौं खबरदार सुधि कीन ।
आज पेसखानाँ उपरि आनि लराई लीन ॥६९॥

खबर भेजि पतिसाह सौं साहि अजीम सिरदार ।
धस्यौ आपनो फौज लै भुज धर भारथ भार ॥१००॥

चढ़चो अजीम हरोल ह्वै आजम ऊपरि कोप ।
रुप्यो अराबा रोपि कैं अंगद ज्यौं पग रोप ॥१०१॥

छंद नाराच

हरोल ह्वै अजीम साह किद्ध जुद्ध कोपि कैं ।
रहचो सुमेर ज्यौं सधीर बीर पाय रोपि कैं ॥
चलाय बाँन तोप कौं अमीर मीर हैं हनैं ।
मतंग तुंग अंग भंग ते सुमार को गनैं ॥१०२॥

कमान के छछोह बाँन जोर छोर कैं हुए ।
सिपाह के सनाह देह भेद पार ह्वै गए ॥

अजीम साह के सिपाह लोह छोह सौं लरें।
अनेक सत्रु घूमि घूम रंग भूमि पै परें ॥१०३॥

दोहा

साहिब साह अजीम जू पठयो जो करबल्ल।
कही बहादर साह सौं जुद्ध मच्यो दुहुँ दल्ल ॥१०४॥

करबल साह अजीम कै करी खबर बिन फेर।
हजरत रन भूमैं भभकि निकसे आजम सेर ॥१०५॥

छोह भरयो छल बल भरयो दल बल भरयो अपार।
हजरत ऐसे सेर की कीजे आनि सिकार ॥१०६॥

उतकों आजम साह अरु साह अजीम इहि ओर।
महा मत्त गजराज ज्यौं परी जोर अति घोर ॥१०७॥

वह मातो गज बृद्ध बय यह गज मत्त जुबान।
निहचै फते अजीम की जानी इहि उनमान ॥१०८॥

आजम साह अजीम गज लरत भये चोदंत।
सोर जोर दुहुँ ओर तें भभकत सोर अनंत ॥१०९॥

साह अजीम महाबली पिता भक्ति गह पूर।
आजम कौं चाहैं कियो तखत छत्र तें चूर ॥११०॥

पातिसाह तब उठि चले सुनी खबर तहकीक।
महाराज ठाढ़े जहाँ निकसे आय नजीक ॥१११॥

खबर भई या फौज मैं नृपति राजसिंह नाम।
अपनी अपनी तरफ सौं सबन किये पैगाम ॥११२॥

हमकों काम जरूर है हैं तुमही को सोय।
इत आवो हम तुम सबै चलिये सामिल होय ॥११३॥

खातर मैं ल्याये नहीं काहू के पैगाम।
करी सिताबी जान कैं मुख स्वामी को काम ॥११४॥

छंद भुजंगी

लई बाग बीरं सुधीरं रठोरं।
बढ़ी रेनु धुंधं परयो चक्क सोरं।
बजे नाक बाजं गजे गज्ज राजं।
तहाँ सिंधुरं घुग्घरं घन्न राजं ॥११५॥

बजे बाज नीसान ओसान नद्दं।
तहाँ नाद स्त्रोनं सु पूरं सुबद्दं।
बजी पाय बाजं खुर ताल ऐसी।
बज्जी कच्छ तारं अपारं सु जैसी ॥११६॥

कटी सार बंधे सु सूरं सम्हारे।
फते हैं फते हैं सुभट्टं उचारे।
बढ़ें एक एकं सु कीनं गरट्टं।
भयो मुक्ख रंगं सुरत्तं जु थट्टं ॥११७॥

मंही आय कैं एक दोरयो सु आगें।
कह्यो नृप्प राजं खगं याहि लागैं।
तहाँ बीर बानैत को आय छूट्यो।
खगं सूँ तिकट्टी रुघनाथ जूट्यो ॥११८॥

हन्यो खग्ग ऐसो अजैमाल पूतं।
करयो कंध के संध दूरं सु छूटं।
करी म्यान चाँदा हरैं ते गरत्ती।
रठोरं सु ठोरं लखी तेग तत्ती ॥११९॥

तहाँ यों पताका लगें पौंन बाजै।
मनों चंग भररा नभं सोभ साजै।
बनी गज्ज थट्टं सु मग्गं ढरारी।
जनूँ दादरी सा दुरी मेघ प्यारी ॥१२०॥

चढ़ी मूँछ भौंहैं सु बाहैं चढ़ाई।
हुलस्से बिकस्से भटं सोभ पाई।
चितैं चित्त दृड्ढं सु मुऽटं कृपानी।
जगी बीरता धीरता ज्यौं जुबानी ॥१२१॥

सजीले पजोले सनाहैं सु पूरी।
तुरंगं सु अंगं सिलै सज्जि रूरी।
बने पक्खरं गज्ज नेजा चमक्कै।
सिरी सोभ साजैं सुन्हैरी झमक्कै ॥१२२॥

करी सुंड जंभीर लीन्हैं फिराबैं।
चलैं बेग ऐसैं घनं सोभ पावैं।
हहाँ हाँह बोले धरैं सीस नाथं।
सबैं बीर सामंत बिद्या समाथं ॥१२३॥

घटा कौंच कारी मनौं मेघ भारी।
हुती ठोर दूरैं सुनेरी निहारी।
जुट्यो है भतीजा तहाँ जोट काका।
इतैं साह अज्जीम आजम्म पाका।
छुटै बान तोपं सगाग्गै सु गोला।
मनों मेघ बर्षा परे जान ओला ॥१२४॥

दोहा

अंतर जोजन को हुतो हय गय तेज चलाय।
मुजरा कियो अजीम कौं एक घरी मैं आय ॥१२५॥

अपने कुल की लाज कौं स्वामि धरम के नेह।
राजा आये चाह पर आग लगी पर मेह ॥१२६॥

खूब करी आये भले रन दूलह राठौर।
अति आगें बायें कछू ठाढ़े रहो उहि ठौर ॥१२७॥

लरत भिरत जा ऊपरें भार परत जब आय।
ताहि कीजो मदत दीज्यो दुयन हटाय ॥१२८॥

राजसिंह कौ यह हुकम कीनौं साह अजीम।
हाथी ऊपर ह्वै खड़े नृपति करी तसलीम ॥१२९॥

करि प्रनाम स्रीनाथ कौं धरि उर अंतर ध्यांन।
फुरमायो ता ठोर पर रहे ठाढ़े राजांन ॥१३०॥

रन मुख ठाढ़ो लरन हो जहाँ बाजखाँ पठाँन ।
जुलफिकार खाँ आनि तहाँ जोर कियो घमसाँन ॥१३१॥

बाजखाँन के ऊपरें आय परचो जब भार ।
महाराज ताकी मदत धसे सनमुष धार ॥१३२॥

सस्त्र लगें मुरछित भयो बाजखाँन तिहि नाँम ।
परे खेत लरि सूरबाँ भागे भागि लताम ॥१३३॥

कवि वचन

नाम न कहिबे जोग मुहि क्यों करि कहूँ प्रकास ।
कहाँ हिंदू कहाँ तुरक जे तिनको हो बिसबास ॥१३४॥

बंस बड़े फौजें बड़ी बड़ै डील ज्यों फील ।
हिरन चरन करि उड़ि गये करीन नैंक न ढील ॥१३५॥

गज बाजी पष्षर सिलह सुभट बंस सिरदार ।
भागे हिंदू तुरक कइ तज भुज भारथ भार ॥१३६॥

जुलफिकार नब्बाब की देखि अबाई फौज ।
जुध जीतत दच्छिन सदा नुसरत जंग हर रोज ॥१३७॥

जाकै भुज दिल्लेस को सदा रहत रण भार ।
औरंग दीनो हो उमँग जाति सिपह सिरदार ॥१३८॥

भली फौज साथी भले आथ पर्‌यो घमसाँन ।
तुपक तीर चव धार चलि धोप बोप किरपाँन ॥१३९॥

आजम की तहाँ ओर सों माजम दल पैं आय ।
लाजम ही जिहिं बिधि करी रन मैं खडग चलाय ॥१४०॥

भार पर्‌यो भयहू पर्‌यो सनमुख देख नबाब ।
कटैं लटैं कायर हटैं किहिं भट रही न ताब ॥१४१॥

कवित्त

कछू फौज माजम की हटी यह सुनी वृंद
मान नंद आयो बीर बाँन बरसावतो ।

फिर गये मुँह गाढ़े बैरी बरिया बनके
रहि गयो शाह तारा नोबल बजाबतो ।।
मुँह पर खाय मार मुरगो जुलफिकार
जग मैं बहादुरी को बिरद कहाबतो ।
ह्वै ही गई हुती पातिसाही साह आजम की
आलम की भीर रार्जासह जो न आवतो ।।१४२।।

दोहा

उतकौं आजम साह कै जुलफिकार हरबल्ल ।
रार्मासह दलपति दुबौ ओर अमीर अटल्ल ।।१४३।।

इलैं बहादर साह कै भुज अजीम जुध भार ।
अधिपति सार अजीम कै रार्जासह सिरदार ।।१४४।।

एक सिंह पारबर धरैं अगन सहाई पौंन ।
राजा साथि अजीम कौं करैं सरभरैं कौंन ।।१४५।।

छंद मोतीदाम

लियैं गजराज मनूं गिरराज । सजै तरु झंगर पाखर साज ।
बजैं घन घुघ्घुर घंट निनाद । सजै मिल कोकिल मोरन साद ।।१४६।।

भुसुंडन सुंडन लागि सिंदूर । उठी मनु जागि दबागि सपूर ।
झरै मद धार कपोलन माँहि । मनों झरनां जलधार धसाँहि ।।१४७।।

पटाझर सिंधुर सुंदर स्यांम । घटा जल पूर महा अभिरांम ।
ससोभित ओपित उज्जल दंत । बिराजत रूप मनों बग पंत ।।१४८।।

चमक्कत सार करी गज सुंड । झमक्कत बिज्जुल के जनु झुंड ।
गरज्जत मत्त बड़े गजराज । सुनैं घन लज्जित गाज अवाज ।।१४९।।

चले गति चंचल तेग तुरंग । मनों नट नृत्तु लाहतु रंग ।
परब्बति पाखर सोबन साज । मनों पछिराज सपछ बिराज ।।१५०।।

घने भट पायक घायक भाय । परैं नहि पिछ पर छित पाय ।
चढे गज दंत कपैं किलकार । सहैं मुख संमुख सार प्रहार ।।१५१।।

बने कर बाँन कमाँन बंदूक । चलावइ चोट चलाक अचूक ।
फिरावइ खग्ग फरी कर फेर । बचावइ घाइ कपैं घट घेर ।।१५२।।

छंद भुजंगी

नरन्नाहरा जेंइ सज्जे सनाहं ।
बड़े बीर बीराधि आजान बाहं ।
कटारी कृपानी बरछी कमानं ।
कबच्चै कसैं भीम भीमं समानं ।।१५३।।
सजे सेत नीसान बज्जे निसानं ।
अहंकार तैं ओप ओपैं अमानं ।
अभै की धुजा सी भुजा आसमानं ।
अधारै डिगंतं धपै आसमानं ।।१५४।।
गजारूढ़ ह्वै कै चढ़्यो गाढ़ गाढ़ै ।
चमू साह माजम्म की सोह चाढ़ैं ।
किधौं आइ मैनाक सों चित्त कोप्यो ।
अरापत्ति के ऊपपैं इंद्र ओप्यो ।।१५५।

दोहा

दोऊ फौजैं साह की बीर खेत पर आय ।
दगे अराबा उर दुहूँ धिगे धूम नभ छाय ।।१५६।।
साह आजम की फौज सूँ लरत राजसी बीर ।
गाढ़ो गाढ़े राव पर सावंत संग सधीर ।।१५७।।
नाम जु गाढ़े राव हो हाथी अति रन धीर ।
गाढ़ी गाढ़ी ठौर मैं भंजत गाढ़ी भीर ।।१५८।।

छंद भुजंगी

छुटे बाँन उत्तान आकास छाये ।
कुहक्के कमानं बिमाँनं भजाये ।
फसे पंजरं कुंजरं पुंज फोरें ।
तन त्रान तोरें तन प्रान छोरें ।।१५९।।

तिरच्छी छरी उच्छरी तुंड तोरैं।
तरप्पै सरप्पै झरप्पै झकोरैं।
छरी मच्छरी सी परी सेन तालं।
तुरच्छैं तरैं बीर बाहं बिसालं ॥१६०॥

गिलै तोरि मंसं सुभट्टं सरीरं।
चढ़ैं सामुही बाहिनी बाहि नीरं।
फिरैं कुंभि देहीन मैं चक्र ऐसैं।
रसैं रत्त को लून मैं लाठि जैसैं ॥१६१॥

छुटैं नालि लंबी रसाला बिसाला।
अगर्भी (?) कियैं काल गोला उछाला।
कियैं सोर आवैं लियैं धूँम धूमैं।
फटैं कुंभ कुंभी परैं घूमि भूमैं ॥१६२॥

गिर बार दंती परैं लागि गोरे।
तुटे सृंग सृंगी मनों बज्र तोरे।
परे लाग गोलान की आगि कारे।
उखारे मनों बृष्ष दाबागि जारे ॥१६३॥

छुटैं राम चंगी सु चंगी सुबंगी।
गिरैं लागि गोलो मतंगी उतंगी।
कमानें लई बीर कीरत्ति भीनें।
कसी बान सौं बान संधान कीनें ॥१६४॥

चलै तीर तीखे तसम्मीर चाली।
करैं बीर बीराधि तूनीर खाली।
लगैं तें तन त्रान कौं भेदि जावैं।
महाधीर तेऊ महा पीर पावैं ॥१६५॥

अरी सीस मैं तीर ऐसो लखाई।
रह्यो पार ह्वै के तुला दंड नाईं।
उलस्यो जुई फौज के आय आगें।
भुई लोट गो सूर की साँगि लागें ॥१६६॥

निकस्यो उलस्यो हुस्यो बाहि नेजा।
कियो रेज रेजा करी को करेजा।
मुहारें लरें राजसी षेत माँ ही।
फते साहि माजम्म की चित्त चाँही ॥१६७॥

हथी आठ नो कोउ तें जूथ गाढ़ो।
जुदो होय हाथी चढ्यो एक ठाढ़ो।
चिलतें बनो लाल रंगी सुरंगी।
बन्यों लाल ही टोप ओपें उतंगी ॥१६८॥

बन्यो सेस बीरत रत्तं बदन्नं।
मनों प्रात को सूर सोभा सदन्नं।
गह्यो भूप होदा पुछ्यो नाँम को हो।
कहो जो कहो आपनों नाम जो हो ॥१६९॥

मिरो राजसी नाम राठौर जानों।
मिरो राम हाड़ा यहैं नाम मानों।
मिल्याथे मिल्यो हों मिली प्रीति चाहं।
मिले प्रीति की रीति आजान बाहं ॥१७०॥

आबें कौंन हाथी चढ़े फौज माही।
कहा जानियें कौंन हैं ठीक नाँहीं।
दुहूँ साथ ह्वै फौज साम्हैं चलाये।
मिल्यो राम वा फौज मैं छोह छाये ॥१७१॥

हठी नाम जादो उतें राम हाड़ा।
मंड्यो आय आजम्म की फौज आड़ा।
बकारै हकारें हड़ो तीर बाहैं।
गरज्जै तरज्जै गजानीक गाहै ॥१७२॥

इतें फौज को जोध जोधार जूटें।
महा मत्त मानों पटा छूट छूटें।
छछोहे छके ताकि कैं तीर छोरें।
फबी फौज के सत्रु के कोंच फोरें ॥१७३॥

लरैं साह की फौज सों राम हाड़ा।
लसैं जानि भारी भर्‌यो लाज गाड़ा।
दुहूं धाँ कृपानी बरछी दबट्टैं।
करी के अरी के किते कंधे कट्टैं ॥१७४॥

इहाँ राम हाड़ा लरे कामि आयो।
चितैं रूप रंभा विमानं चढ़ायो।
दलप्पत्ति साम्हैं सँभार्‌यो बुंदेला।
अनेकान सौं झूझ झूझ्यो अकेला ॥१७५॥

जिन्हैं ओर तें यह अभ्यास कीनों।
दछन्नान के गेह बदहि दीनों।
कह्यो हाथ बायें जु लीनें कमानं।
गजारूढ़ आयो गुनें जुक्त बानं ॥१७६॥

मिली भौंह सों ऊठि कैं मूँछ सेतं।
बंध्यो मुष्ष बाँना बिधो कीर्ति केतं।
किधों द्वै ज के चंद द्वै रूप कीनों।
बकारें बुंदेला महा रोस भीनों ॥१७७॥

महा जुद्ध जाच्यो महा बीर भायो।
गाढ़े राव पेलै मारू राव आयो।
तहाँ राव कासेस कम्मान तानी।
करी कुंडलाक्रांत लों काँनठ आँनी[1] ॥१७८॥

कियो दाब ओ राब मन मैं बिकस्यो।
तज्यो बान सूरें सु बायै निकस्यो।
मुके बान द्वै च्यार बुंदेल रावं।
महाराव जूटो करे दाब घावं ॥१७९॥

लगे तीर होदा किते कौच माँही।
तिहीं ठौर राठौर कम्मान साँही।
परी मार भारी चले हत्थ तेजं।
कसीसैं कमानं बहै षग्ग नेजं ॥१८०॥

पाठान्तर—१. ठाँनी।

छक्यो राव जुद्धं सु कुद्धं उपायो ।
लरे बीर दोऊ जसं जग्ग गायो ॥१८१॥

दोहा

बाजषाँन की ओर कों पैठ्यो राव बुंदेल ।
तुपक तीर सकती षडग जुध करि जूझ उझेल ॥१८२॥

झूझ पर्‌यो कासेस नृप भयो सहीद पठाँन ।
चले दुहुन के कर भले तीषे बाँन कमान ॥१८३॥

गजहि पेल आयो गरज कर धरि बाँन कमाँन ।
कोप्यो खाँन अमानुला आनि कर्‌यो घमसाँन ॥१८४॥

छंद भुजंगी

अमानुल्ल खाँ सामुहैं तीर मारै ।
महा सूर को तेज को को सँभारै ।
कराली सराली चलै बाहु जोरै ।
असो कोन जो सामुहैं डीठ जोरैं ॥१८५॥

महा जेठ को भान मध्यान जैसौ ।
तकैं धीर कों खेत मैं बीर कैसौ ।
चढ्यो मत दंती महा बीर भायो ।
मनों बीर बुंदेल कै बेर धायो ॥१८६॥

महा बाहु राजा तष्यो बीर कोऊ ।
मची सार की मार संग्राम दोऊ ।
दुहूं बीर बाँके लरैं षेत माँही ।
हटैं नाँ मिटै नाँ लटैं एक नाँहीं ॥१८७॥

किये हाथ कम्मान के बान मारैं ।
हकारैं बकारैं दुहूँ सार झारैं ।
लग्यो बान जो षान के अंग माँही ।
जक्यो सो गयो ह्वै छक्यो बीर नाँही ॥१८८॥

अमानुल्ल के हाथ के तीर छूटैं ।
झिलम्मैं सु फोरैं शिरे लागि फूटैं ।

बईं दाहिनी ओर को सीस माँही।
चली रक्त धारा राजा सोभ पाँही ॥१८९॥

कढ़े सीस तें बान कम्मान जोर्‌यो।
चिलत्तें भली फोरि कैं अंग फोर्‌यो।
दुजो बान बाको जु बाँही चलायो।
लग्यो बाँन षाँ कै छिल्यो छोह छायो ॥१९०॥

कमानं लई षाँन अमानुल्ल बीरं।
निकस्यो निषंगं तहाँ सोधि तीरं।
तहाँ जोरि कैं बाँन कम्मान तानी।
तज्यो बान अमानुल्ल षाँ क्रोध मानी ॥१९१॥

किहूँनी लग्यो दाहिनी हाथ बानं।
फुट्यो कोच दूँ घोंटु हूसेन मानं।
इतैं राजसी तीर तीषै चलायो।
लग्यो माहु तें अंग हस्ती फिरायो ॥१९२॥

तहाँ तम्म किक्कैं बान कम्मान डारी।
हुती पास बंदूक ताकों सँभारी।
फिर्‌यो जाँन हस्ती फिर्‌यो आप इत्तैं।
कियो कोपि ओप्यो सुतो काज कित्तैं ॥१९३॥

अमानुल्ल खाँ हाथ बंदूक लीनी।
महाराज के सामुहैं आन कीनी।
तक्यो पेंड नो सात सोहैं निसानं।
तिहीं बेर राजा भये सावधानं ॥१९४॥

दियो तीर ताके भुजा मूल माँही।
डिग्यो हाथ ताको रह्यो ठीक नाहीं।
बंई ओर को छूट गोली निकस्सी।
तन त्रान कों भेद ऐसैं परस्सी ॥१९५॥

दोहा

मारत मीरन तीर सौं लरत राजसी बीर।
लग्यो दाहिनी आँखि में घोर मीर को तीर ॥१९६॥

कहत सुने हैं हरि करें मुसकल में आसान।
सो परतषि देषी सबैं आँषि बची लगि बाँन ॥१६७॥

काढ़ि आँषि के तीर कौं कोपि कियो राजान।
अमानुल्ल खाँ कौं हन्यों मारि च्यार उर बान ॥१६८॥

छंद गीतिका

हठि हमीरुदी षाँ बहादर लर्‌यो सनमुष आइकैं।
गज चढ़्यो उज्जल पहर बगतर मुह मुर्‌यो सर षाइ कैं॥
महाराज ताकी पीठ पर सर तीन मारे ताकि कैं।
लुटि गयो होदे बीच तबही लोह के छकि छाकि कैं ॥१६६॥

चौपई

जुलफिकार खाँ तेग बहादर। बाघ नगारा लियो जोर बर।
गढ़ कौं फौज चहूं दिस फेरी। घेरि मारि राहेरी घेरी ॥२००॥

छंद भुजंगी

वहैं फौज आगैं जुलफिकार आयो।
इतैं सामुहैं जोध जोधार धायो।
लरैं सूर सावंत बाहैं बरंछी।
बकारैं दबट्टैं तहाँ बाजि कच्छी ॥२०१॥

झमा झम्म खागैं बजैं षेत माँही।
सुनैं सार के सब्द कछू ओर नाँही।
लरैं बीर राठौर मत्ते मुगल्लं।
गहैं गाढ़ जम दाढ़ फोरैं बगल्लं ॥२०२॥

लथा पत्थ ह्वै कैं गिरैं बाज सेती।
मनों मीर मल्लं जुटैं माँही रेती।
घरे षेत मैं के किते बेग भागे।
घुमै पीठ घोरा कितौं लोह लागे ॥२०३॥

कढ़्यो बान राजा गढ़े राव पेल्यो।
नतावैं सितावैं तिही मुष्ष झेल्यो।

लरैं लोह राजा लगैं लोह पूरैं।
निलोहैं अस्यो कोच मूँचा पिचूरैं ।।२०४।।

छछोहे जु कम्मान के तीर छोरैं।
तके तुंड के मीर के दाँत तोरैं।
लर्यो दछिनी फौज सौं खूब लोहैं।
इहाँ भूलि न घाव ओसान जोहैं ।।२०५।।

भई सार की मार लै जीव भाग्यो।
लगे बान ग्वालेर की राह लाग्यो।

दोहा

लरत देखि राजान कौं सब सुद गई भुलाय।
खाँन जमाँ सुत गज चढ्यो लेट्यो दहसत खाय ।।२०६।।

पूछ्यो होदा पकरि कैं राज सिंह नृप राय।
उर मैं जमधर लागि हैं कै तू नाम बताय ।।२०७।।

नाम कह्यो समसेर खाँ हों निजमुद्दी खाँन।
हरी हनत हों खग्ग सों राखि लियो राजाँन ।।२०८।।

छंद रूपमाला

भूरी जु डाढ़ी मूँछ भूरी अंग भूरे रंग
कायरी आखैं माँझ पीठी निजमुदी के संग।
मारे न तिनकों छाँड़ दीने देषि कातर दीन
तब दुहुँन स्री महाराज कौं तहाँ उन सलामैं कीन ।।२०९।।

छंद गीतिका

उमराब आजम तनों आयो विसिष तीखे बाहतो।
गज चढ्यो बगतर पोसु प्रति भट गाजि गज थट गाहतो ।।
भरि रोस भुज बल भीम सरभर छोह बीरत छाइकैं।
महाराज ताहि ब्कार मार्यो चपल सेल चलाइ कैं ।।२१०।।

सवैया

माजम आजम जंग जुरे करवाल करालन चाल परी हैं।
वृंद कहैं राजसिंह महीपत मान तनैं कुल रीत करी हैं ॥
ओप अछी बरछी तिरछी करि बाही भुजा बल रोस भरी हैं।
फोर फरी जकरी जु करी अरि पंजर कौं चपरें निकरी हैं ॥२११॥

मान तनैं राजसिंह महाबलि भीम सो भीम भुजा बल मानों।
भारथ भार गहैं बिरच्यो हठि मारयो हैं मीर अमीर पठानों ॥
बैरी हन्यों बलकैं तिरछी कर सो बल वृंद बिसेष बखानों।
मारयो है कर्ण बिकोदर को सुत सा बरछी बरछी वह जानों ॥२१२॥

मान तनैं राजसिंह महाबत माजम की जय चित धरी हैं।
आजम के दल ऊपरि कोप तिहाँ बधरी बरछी पकरी हैं॥
सत्रु के पंजर मैं जकरी तन त्रान करी सँकरी जकरी हैं।
जाल लतान के जाल घिरयो नग फोरि कें नागन सी निकरी हैं ॥२१३॥

छंद रूपमाला

जे पातसाही के सिपाही सब किहैं यह गाथ।
लगि सेल हाड़ा काम आयो राजसिंह के हाथ ॥
अह कहैं राजा आप मुष तैं जब चलैं प्रस्ताव।
वह हन्यो सेल चलाय आजम साह को उमराव ॥२१४॥

दोहा

आवत हौ सर मारतो आजम को उमराब।
मारयो ताकों सेल तैं कह्यो मारबो राब ॥२१५॥

छंद भुजंगी

चढ़े हाथियाँ सत्रु जे जुद्ध चाहैं।
बिरच्यों राजा राजसी तीर बाहैं।
किते मीर तीरान सों मारि डारे।
गये लौटि होदान मैं प्रांन झारे ॥२१६॥

लगे तीर मीरान के देह एही।
मनों सूल के झूल सोहंत सेही।
लगे अंग एकैं भये नाम मूंदैं।
धसैं बीर के तीर ज्यों षाक तूदैं ॥२१७॥

चलाबैं जिकों ताकि ताकों गिरावैं।
महा धीर के तीर खाली न जावैं।
सची मैंनका मंजुघोषा घृताची।
कहैं बात साची यहैं सिध्य साची ॥२१८॥
तड़िता मनों मेघ स्यामं दिषाई।

गजं पीठ बैठैं षगं यों चलाई।
लरे षूब राजान के हाथ लागे।
रहे ते जुलफिकार के राह भागे ॥२१९॥

तिन्हैं मारते मारते तीर भाले।
ते आजम्म की फौज मैं घेर घाले ॥

कवित्त

महाराजा मान नंद महाराजा राजसिंह
लीनें संग रंगभूमैं सुभट सचेत हैं।
केतक अमीर मीर तीर तरवारन सों
मार कैं गिराये भय कारी कीनों खेत हैं ॥
सार के प्रहारन सहाहस के प्रतिभट
तिनकी दबाय पीठ अति छवि देत हैं।
बानन तैं मारि मुह आगैं धरि लीने जैसें
पौंन बेग मेह कौं धकाय आगें लेत हैं ॥२२०॥

प्रथम जुलफिकार सलेमाँन षाँन षाँन
हमीरुद्दी अमाँनुला बीरति बितान के।
हाड़ा रामसिंह ओ बुंदेला दलपति ओर
आजम के उमराव नाना बानि बान के ॥

कोह धरि लोह भरि घेरा करि घेरे राजा
राजसिंह प्रबल प्रताप बलबान के।
कर सर लागे अरि ऐसें मुरझाये गये
जैसें ग्रह तारे अस्त होत तेज भान के ॥२२१॥

दोहा

जान परे ते जुद्ध मैं कहे तिनन के नाम।
ओर किते भागे लरे परे बीच संग्राम ॥२२२॥

छंद पद्धटिका

महि बंस रतन महिपति महेस। दलपति भयो जैसो दिनेस।
परताप सिंह सत्रसाल नंद। सत्रु कौं हनें संगर सुछंद ॥२२३॥
जिन बंस भयो राजा रतन्न। उज्जेन लर्‌यो जस के जतन्न।
परताप करन परताप सिंह। ज्यों करत पराक्रम करत सिंह ॥२२४॥
जहाँ परें तीर गोली अपार। सावंत धीर बाहंत सार।
भरथंभ आइ भाइय जु भीर। धर धीर मुहारें मझ्यो धीर ॥२२५॥
एकलो विभारें अरि अनेक। वीराधिबीर बीरता बिवेक।
भारत्थ भीम जिम भुजा डंड। षगबाहि करें अरि षंड षंड ॥२२६॥

छंद भुजंगी

सबें सूर सावंत रावत सत्यं।
लरें लोह सों छोह सों लत्थ पत्थं।
दुतंगं उतंगं तुरंगं दबट्टैं।
बिकट्टं गटं गज्ज घट्टं बिघट्टें ॥२२७॥
धपट्टै लपट्टै झपट्टै धकावें।
हटक्कै झटक्कै कटक्कै हटावें।
मुलक्कै मटक्कै बकै मार मारं।
उलट्टैं पलट्टैं थटैं षग्ग बारं ॥२२८॥
छुटें तोप धक्कें धरक्कै न छत्ती।
भभक्कै रबक्कै छकै सिंह भत्ती।

चमक्कै नचक्कै झमक्कै झकोरैं ।
तमक्कै तरक्कै तकै तुंड तौरैं ॥२२६॥

सरक्कै नसक्कै ठठक्कै न थक्कै ।
चमक्कै बरच्छी कृपानी चिलक्कै ।
घमक्कै घमा धम्म सेलं धवायं ।
घमक्कै घमा घम्म बाजंत घायं ॥२३०॥

लरैं सूर सावंत गाढ़े गसीले ।
दहल्ले नहल्ले नचल्ले हठीले ।
गाढ़े राव कै आइ रावत आगें ।
लरैं यों भुजा डंड आकास लागें ॥२३१॥

गजारूढ़ राजा गजारूढ़ कीनों ।
भभक्कै हरी रोस पोरस्स भीनों ।
हुदे ऐचि हाथी चढ़े जे निहारे ।
झटक्कै अरी केहरी सीस झारे ॥२३२॥

लरैं बीर बीरान सौं छोह लागें ।
लट्यो ना हट्यो ना तनं लोह लागें ।
महा बाहु जो गात नौ तीर मारैं ।
बरछी चलैं सत्रु के पिंड पारैं ॥२३३॥

दोहा

आजम कै चाकर हुतो इक अबदुल्ला षाँन ।
गयंद चढ़चो मार्यो हरी तिहि सिर वाहि कृपान ॥२३४॥

हाथिन के असवार पर ह्वै हाथन की चोट ।
तेग तडित सिंधुर सघन गजारोह जुत जोट ॥२३५॥

छंद वेअष्षरी : भाषा मारवाड़ी

सभा सिंह सिरदार सहेतो । दाव घाव दुइणा दल देतो ।
सिवदानोत सोहियो समहर । भोपति कुल बैरियाँ भयंकर ॥२३६॥

अडपायत अनूप अहंकारी । कटकाँ हटकैं बाहि कटारी ।
सुत गोपाल कान्हहर समहर । अरियाँ हणें आजटें असिमर ।।२३७।।

हिमत सिंह मंडियो जुध माहे । सुत गोपाल सूरतन साहे ।
बीजल जिम बीजू जल बाहै । हूके बैर हराँ ढिग ढाहै ।।२३८।।

बाघ सिंह बैरियाँ बिरोलै । झटकै असि बर रुहिर झकोलै ।
अचलाहरो जैत सुत एहो । जुध जग जेठ जसकरण सजेहो ।।२३९।।

अमर समर भिडियो अडपायत । साहिब रायतणो तिण सायत ।
जग जीवण हरष तरी जूटो । कवारण बिच किरबाद्य बिछूटो ।।२४०।।

प्रोत रामचंद्र सौं कहि राजा । बाजै कटक बीर रस बाजा ।
परिकर कुसल देस पहुँचावो । जाण जरूर साथ थे जावो ।।२४१।।

भड भिडसी भारथ हुइ भेला । बिदा न ह्वै स्यूँ हूँ इण बेला ।
मन राषवा कियो फुरमायो । असिबर हथो सिबड फिर आयो ।।२४२।।

प्रोहित राम भिड़ै भरि पोरस । रण हर अबधायो बीरा रस ।
अचला सुतन अछंटें असिबर । बणियो घाव बिरोलै जुध फर ।।२४३।।

चोरंग सुहडा सौह चढ़ाबै । दपटै षैंग षत्रिबट दाबै ।
लोहाँ लड भडाँ ललकारै । हथबाहंत छत्तो हलकारै ।।२४४।।

प्रोहित देबीसिंह सिंह पर । अचलाहरो बिहंडै अरिकर ।
रूक हथो आह बिराँ साबत । रह चैरि माराबताँ राबत ।।२४५।।

जोगीदास जोध जुध जूटो । छलबल छोह पटाभर छूटो ।
आणंद तण अडियो आषाडै । पिसणा असि साबला पछाडै ।।२४६।।

है थट्टांगै थट्टाँ हुबियो । फौज बिभाड फताहर फबियो ।
करमसियोत पराक्रम कीधो । लोहाँ लडे प्रबाडो लीधो ।।२४७।।

सुत सुजाण पातल षग साहे । आजम कटक झटक अबगाहे ।
बीकै नीको सार बजायो । बिहंडरि भाब पघाब बणायो ।।२४८।।

सकजो बगतर पोस सिाप ही । समहर भिडियौ आजम साही ।
झडफ सिरोही पातल झाडी । पिसण काय दुयकर धर पाडी ।।२४९।।

भारथ भिड़ियो रतन भुजालो । बाघावत रावतां बडालो ।
आजम कटक सामुहो आयो । बंरह खाँ सिर सार बजायो ॥२५०॥

ऊदल अटल भुजाबल आणे । जगता तणों षत्रबट जाणे ।
मनोरहरो गज थटाँ मोडै । तरवारियाँ बैरियाँ तोडै ॥२५१॥

हठबादी हर भाँण हठालो । भिड़ियो भारथ भडाँ भुजालो ।
हरि करणोत दुयण दल हणियो । घाव बणाब कुंभ हर बणियो ॥२५२॥

स्याम सुतन फतमल बध साराँ । धड बेहड करतो षग धाराँ ।
भोपत कुल षत्रबाट भबाडै । बडफर बैरी हराँ बिभाडै ॥२५३॥

हुय गज गडगड हैंबरा हडबड । दौलाँ दलाँ आवियो दडबड ।
स्याम सुतन पुहतो सिरदाराँ । हथबाहाँ भजियाँह हजाराँ ॥२५४॥

नरो भिड रने ठाह नरूको । चाव दावचा पडै न चूको ।
महावतणों अरिहराँ मारे । बदन घाव बणि बयण उचारे ॥२५५॥

अमरो समर भिरियाँ आगैं । जगमालोत स्वामि छल जागैं ।
कुसलावत रावत काँधालो । बधि बधि बयण कहैं बाँहालों ॥२५६॥

रूक हथो रुघनाथ रढालो । चाँदावत करतो धकचालो ।
अरजुन सुत बर बीर अषाडै । पूरण हरो सात्रवाँ पाडै ॥२५७॥

समहर सोर जोर साँभलियो । आतस धोम ब्योम ऊछलियो ।
भूल पड्या हुय सक्या न भेला । समर किसी बिधि हुबा समेला ॥२५८॥

णहि जमि सकइ पाछै रहिया । कुल छल परस बोलै कहिया ।
असि षंड भडाँ सताबी आबो । बड फर सनमुष सार बजाबो ॥२५९॥

ओलै जीब घातियाँ ओराँ । तिण षिण परसो सरसो तोराँ ।
कहि बाय कायराँ ढिला कर । पुहतो सैन साबताँ तणनि पीर ॥२६०॥

कमधराज सौं मुजरो कीधो । भिल भीरायाँ स्वामि भ्रम लीधो ।
उमग षबास सताबी आयो । बजताँ लोहाँ लोह बजायो ॥२६१॥

धीर षलासाँ बलाँध मोडै । तरबारियाँ बगतराँ तोडै ।
गोमंद तणो नछर मन गाढ़ै । वैरी हराँ बीजलाँ बाढ़ै ॥२६२॥

मुहतै मेष पराक्रम मंडे । षग्गाँ बाहि षलाँ दल षंडे ।
सुतन कपूर साँबताँ सरभर । सकमल हरो सोहियो समहर ॥२६३॥

सोरठा

दीठो ईसरदास समहर गोबरधन सुतन ।
खल खण्डिया खबास हथबाहै देदाहरै ।।२६४।।

धनों षबासस धीर सुत ईसर हेमाहरो ।
बैरि हराँ बिच बीर रिण वै पाणी राषियो ।।२६५।।

न्यामतषाँ नेठाह् षग झल मोहबत षानरो ।
लोहाँ पग लंगाह् लंघे लीक न लंघई ।।२६६।।

साम्है बहतै सार न्यामतषाँ लंघो निडर ।
बिढि बिढि बारं बार राजा सौं मुजरो कहै ।।२६७।।

ऊदल सुहड अभंग करण सुनत भारथ करै ।
चाँदाबत चतुरंग पात लहर पाडे पिसण ।।२६८।।

दो मझ गोकलदास चाँदाबत भिडि चापडै ।
बधि बाहै बाणास दुयणा मुथरादास रो ।।२६९।।

बषतो दलाँ दुबाह् रढमल भड अषई तणों ।
गजाँ कहै गज गाह रावत रेवंतसिंहरो ।।२७०।।

समर महासिंघ सूर बेढी मणों षंगार कुल ।
गाहै गज गहपूर हरी सुतन रतनाहरो ।।२७१।।

गरिबदास गज गाह कहै धीर षंगार कुल ।
दबटै दुयण दुबाह भडसकजो भगबानरो ।।२७२।।

अषई षत्रबट अंग कुसलावत कुल करमसी ।
अरि मारबा अभंग बधि बधि बाहै बीजलाँ ।।२७३।।

चैनसिंघ चित चाब कलहण दूजौ करमसी ।
घणथट्टाँ दे घाब भिडियो रण भाऊ तणों ।।२७४।।

जोराबर जोधार बस कमासक जोबिढै ।
पिसणाँ सार प्रहार समहर हणें सुजाण सुत ।।२७५।।

नाहर सिंघन ठाहनी जो अडे अरि नाहराँ ।
हठ करतो हथबाह आजबाबत आषाड सिंघ ।।२७६।।

समहर बाहै सार जगतावत कर मैं जिसोद।
मोहकम तिण बार सार प्रहाराँ सो हियो ।।२७७।।

मनीराम मन मोट हठी कान्ह तण राम हर।
वुयणाँ दे षग दोट भाटी कीधो झूझ भर ।।२७८।।

मोहकम लोह् मराट बीकावत बंस आसकन।
षल षंडै षत्रबाट समहर दूजै करमसी ।।२७९।।

गहभरियो तन गोड सूरतसिंघ सूरति सकज।
ठेलै अरि जुध ठोक राजावत चत्रभुज हरो ।।२८०।।

दोलतसिंघ दुझाल कुसलावत करि बरहथो।
जुध दूजो जगमाल राजा हर रहचै रिमाँ ।।२८१।।

सजि सिबदान सधीर जुडियो जगमालोत।
जुध माहै मीर अमीर कुसलावत राजसिंघ कुल ।।२८२।।

बिनैसिंह बद बीर साँवत साँवतसिह सुत।
किसनहरो कंठीर बीको बिहंडै बैरियाँ ।।२८३।।

बषतो भडछा हाल सज सहलोत पिदाग सम[1]।
षलाँ कहै बैगाल हण षग साँई दास हर ।।२८४।।

अचलो बदरीदास सज सहलौत बलू सुतन।
बिहंडै मतंग ब्रहास हठ चढ़ियो गोपाल हर ।।२८५।।

घण थट्टाँ घासीह निडर नरायणदासरो।
समहर भिडियो सीह भाटी षाटी झीत भल ।।२८६।।

बारहट बेणीदास सजसो गोबरधन सुतन।
बाहंतो बाणास भादथ बिडदा बैभडाँ ।।२८७।।

बारहट अमर दुबाह दुजडाँ हथ बिरदासरो।
गज थट्टाँ गज गाह जालपहर जुडियो जैठ ।।२८८।।

बारहट बदरीदास कलहणि बार किसोररो।
पोरस कियो प्रकास हणि पिसहाँ जालप हरै ।।२८९।।

पाठान्तर—१. सुत

हठियो हिरदैराम प्रोहित पिसणाँ पाड़िया।
संगावत संग्राम भल कीधो भोजा हरै ॥२६०॥

समहर कजो[1] सचेत कूंभावत करिके संस्याष।
लहण पड़ियो षेत अजबो बरियो अपछरा ॥२६१॥

मदन नरूको मोडि दोलत सुत असिपति दलाँ।
तरवारघाँ तन तोडि गिरधर सुत सुरपुर गयो ॥२६२॥

झूझारो झूझार रण झूझ्यो राजा तणों।
बरियो भड तिण बार हूराँ ठाकुर सीहरै ॥२६३॥

कल छल सुनत किसोर जोराबर जोराबराँ।
जुध बेलाँ षग जोर हठ हणियाँ गिरधर हरै ॥२६४॥

रण भिडियो मन रूप त्रिजडाँ हथ अरजन तणों।
अरियाँ हणें अनूप बिढै बिहारीदास हर ॥२६५॥

सुंदर षवास सुजाण मुष आगें महाराजरै।
छुटे बाँण चहुं बाण लागों लडथडियो नहीं ॥२६६॥

बडफर स्यामों बीर अधपति राजडरों अगीर।
धूम बिलोके धीर चेलै पाँबन चातरे ॥२६७॥

पीरै रोपे पाय कोतल मुह आगें कियो।
षल भय दहसत षाय हौंस नाक हठियो नहीं ॥२६८॥

दीठो चरबादार नाथो जुध नेठाह नर।
समहर बहताँ सार रेबँत कोतल राषियो ॥२६९॥

दोहा

परै बाँन गोले जहाँ लरैं सूरबाँ सैक।
अलहदा दल्याबै षबर करै पाय ती पैक ॥३००॥

सोरठा

हरी भाँड हथबाह सत्रवाँ सिर बाहै सहै।
सुहडाँ कीध सराह आयो काम उछाह सौं ॥३०१॥

पाठान्तर—१. कमो

कायम कायम कीध जस राजडरो जंग मैं।
दुयणा माथे दीध डंका बंक दमामिया ॥३०२॥

जग्गू कर करजोर समहर हिरदैराम सुत।
ठटी नगारां ठोर मन नेठाह नगारची ॥३०३॥

छप्पय

सुत सलेमषाँन की सुदिड्ढ घण थट्टाँ घासी।
बकसो जीवण तणों पिंड पोरस्स प्रकासी।
दे दूहा मार का गुणी मिल कडषा गावै।
रण भिड ताराबताँ चाय भल छोह चढाबै।
राजड नरिंद पाई फते भुवण तरै जस भाषियो।
ढाढी बजाय रब्बाब द्दढ़ रण मंडल रस राषियो ॥३०४॥

छंद भुजंगी

मारू राब राजाँन म्लेछा मिटावै।
मरद्दै मरद्दं गरद्दं मिलावै।
दुरद्दं समद्दं करै रद्द मद्दं।
बिहद्दं लियै सद्द हद्दं बिहद्दं ॥३०५॥

जंबूरान के जोर तोरै जरद्दं।
परे देख किते हरद्दं जरद्दं।
खिलै बीर खेलै खखद्दं खखद्दं।
झरै रत्त पूरं तनद्दं सनद्दं ॥३०६॥

झटा झट्ट खागाँ झपट्टै झटक्कै।
गटागट्ट बैताल गूदं गटक्कै।
कटाकट्ट बाजै कटै कंध कायं।
लटा पट्ट ह्वै रत्त कायं लगायं ॥३०७॥

तटा तूट तूटंत सीसंत डफ्फै।
झटा पट्ट सौं ग्रज्ज ग्रज्जं जझप्फै।
छटा छट्ट सौं बीर बाहंत सारं।
रड्डा चट्ट सौं प्रेत चारं प्रचारं ॥३०८॥

जटा जूट सौं आँत संभू जुटावै।
पटा छट की खाल औढ़ै बिछावै।
उड़ैं मुंड लैं ग्रद्ध आकास पंथं।
झरै रत धारा भरै भान रत्थं ॥३०६॥

कबंधं उठै हाथ लीनैं कृपानी।
भरै पत्र पीवै रगत्तं भबानी।
भरचो खेत की लाल पाथौधि जैसें।
तिरैं ढाल कच्छं भुजा मच्छ तैसें ॥३१०॥

परै खेत मैं हत्थि हैं बीर ऐसै।
बिचित्रं बसत्रं लिषैं चित्र कैसे।
नचैं भूत भैरू बजै झाक झैरू।
लरैं साहि जैसें लरैं पंडु कैरू ॥३११॥

तरप्फै तकें देत बैताल ताली।
करैं मुंड माला महाकाल काली।
परे खेत मैं जे लरे लोह पूरे।
बरे अच्छरों बीर संग्राम सूरे ॥३१२॥

दोहा

आजम को दिन पलट गो भयो पौंन प्रतिकूल।
भयो बहादर साह कैं पौंन गौंन अनुकूल ॥३१३॥

उततैं आवैं छूटि कैं लगैं तूल से बाँन।
इततैं छूटैं बान ते लागैं बज्र समान ॥३१४॥

छंद भुजंगी

उतैं मीर आजम्म के तीर छोरैं।
करी छैक सन्नाह कौ नीठ तोरैं।
इतैं बीर के हाथ तैं तीर छूटैं।
फरी ओकरी की भरी देह फूटैं ॥३१५॥

धसे बीर के षग्ग की तेज धारा।
मनों पूर भादों नदी तेज धारा।

करारे कटैं कोर ढाहै बहंती।
बहैं जाहि तामैं परैं बाज वंती ॥३१६॥

उतैं मीर के हाथ छूटैं कृपानी।
सनी बीर सन्नाह उत्तू निसानी।
उतैं मीर जे तीर गोली चलाबैं।
जितैं ताकि बाहैं तितैं चूकि जाबैं ॥३१७॥

इतैं बीर बैरीन कों तीर बाहैं।
ढलै तांन के पुंज कों ढूकि ढाहैं।
महाराज राजान के बीर मानी।
भई भीर देबी प्रसन्नं भवानी ॥३१८॥

दोहा

बार करत प्रति भट जिते रहत बार उर बार।
बार बार इतके करत होत बार तैं पार ॥३१९॥

छंद पद्धटिका

फौज सौं लरत हे महाराज। गज गाह करत हे सिंह गाज।
यह समय पाय मुनबर अपार। गज चढ्यो चल्यो भरि गर्ब भार ॥३२०॥

इहि बेर षान आलम अभंग। उठि चले मुनब्बर बंधु संग।
फौज सो निकसि छल चित्त छाय। आये अभीत छाती चलाय ॥३२१॥

साहिब अजीम अरु पातसाह। जहाँ संग लियैं ठाढ़े सिपाह।
आये दै बाँनी दिसि अनीक। अति ढीठ भये ठाढ़े नजीक ॥३२२॥

दोहा

गज असवार अजीम सा पीठ जलाल पठाँन।
गाढ़े गाढ़े गहभरे लीनें बान कमाँन ॥३२३॥

जाने आवत अरज कौं अपनें ई उमराव।
तातें किहूं अटके नहीं तीर सेल के घाव ॥३२४॥

छंद भुजंगी

दुहूँ बीर भाई बड़े डील आये।
सजीले धजीले किते सेन गाये।
सजें च्यार होदा सनाहैं सुठाहैं।
लियें साथ संगी सु जुद्धें उछाहैं ॥३२५॥

सबें कौंच पूरे झिलम्मैं झलक्कें।
नचें षेत मैं प्रेत काली किलक्कें।
सिरें तास चीरा सुधू घी लपेटें।
लियें फौज भारी करारी समेटें ॥३२६॥

जहाँ सेष पट्ठान लीनें मुगल्लं।
किते सैद बीरं सुधीरं अचल्लं।
तहाँ षाँन आलम्म नब्बाब आयो।
लियें संग भाई अनुज्जं सुहायो ॥३२७॥

दोहा

मुनिबर षाँन महाबली सुभट धरैं कर सेल।
गजारूढ़ आये दुहूँ साह अजीम पर पेल ॥३२८॥

छप्पय

इतकों साह अजीम उतैं मुनबर षाँन ओप्यो।
दुहूँ द्रिष्ट अंकुरीय कहर कुह चुगता चित्त कोप्यो।
कर कमाँन किय बाँन सेष[1] बरछी उम्भारिय।
हन्यों तीर सुलताँन षाँन बरछीय सु मारिय ॥
लगि बाँन तहाँ भट आन नहि फुटि तकिया सें हथि फुटिय।
गज गजहि दंत मैंमंत मिलि साह सुभट इहि बिधि जुटिय ॥३२९॥
बाँन धरि कम्मान साह तहाँ फिरमुष मारिय।
त्योंही सकती सेष[1] बीच हौदे लग झारिय ॥
घूमि परघो गज पीठ तहाँ मुनिबर षाँ झूझ्यो।
साहिब फते अजीम भीम सम जग कौं सूझ्यो ॥

पाठान्तर—१. सेल

करि कोप षाँन आलम बलिय अनुज बीर धायो प्रबल।
गज पेल ठेल तहाँ सेल भुज फोरि जंघ जल्लाल थल ॥३३०॥
त्यों ही साह अजीम बाँन कम्मान कसीसिय।
मार भल्ल द्वै च्यार सुतन आजम अति रीसिय ॥
जूझ्यो आलम षाँन परिय चक धमचक ऐसिय।
भट थल लपेट पट षग्ग बजि झाट अनैंसिय।
बजि धार मार उम्भार करि सूर धीर अपछर बरहि।
तिहिं ठोर साहि आजम सुतन जयत जयत सब मुष करहि ॥३३१॥

दोहा

षाँन जमा को नंद अति अभिमानी अनभंग।
किते षाँन आलम किये जुरि दच्छिन मैं जंग ॥३३२॥
संभा की सुध पाय कैं दोरयो कोस पचास।
ताकों ल्यायो पकरि कै षाँन जमाँ के पास ॥३३३॥

छंद गीतिका

ता[1] षाँन आलम कौं सिधारयो मारि मुनिबर षाँन कौं।
बल बंड साह अजीम भुज बल ताँन बाँन कमाँन कौं ॥
उड़ि गये केते लगि गोले भड़ भिड़े भाराथ सौं।
धन भाग इनके परे रन मैं जाह सुत के हाथ सौं ॥३३४॥

कवित्त

जंग सुलतानी साहजादे लियैं अनी पानीं
कढ़ि कै कृपानीं लरैं-?-ललकार कैं।
बाँनन की मार परैं तीरन की तार परैं
गोली बे सुमार परैं सकै को सँभारि कैं ॥
काली किलकार मुंड माली मुँह हार करैं
सार के प्रहार अरि सीस डारे झारि कैं।
साहिब अजीम साह महाबली बाँन मारि
डारयो षाँन आलम मुनव्वर कौं मारि कैं ॥३३५॥

पाठान्तर—१. तहाँ

दोहा

जानत मो बिन मोजदी हैं मरदाना कौंन।
साहिब साह अजीम कैं सरभर होय सु कौंन ॥३३६॥

जो सहिजादा मोजदी ताहि कु हाड़ा नाँम।
हिम्मत बैसा बिन परयो जरयौ न एको काँम ॥३३७॥

पारथ ज्यों भारथ भिरत रार्जसिंह राजाँन।
माजम साह महाबली सब पैं सुने बषाँन ॥३३८॥

ताही समैं बुलाय कैं लषे सरन के घात।
रार्जसिंह को बन रह्यो रुहिर लपेट्यो गात ॥३३९॥

सोभा सार प्रहार की देषि बहादर साह।
महाराज राजान की स्त्री मुष करी सराह ॥३४०॥

दीनी तबैं बहादरी रिन मैं जैसें पाय।
अपनी आषैं देषि कैं रीझ न खाली जाय ॥३४१॥

झूझि परी आजम अबनि सुत सुभटन के संग।
रार्जसिंह के खग्ग बल जीते माजम जंग ॥३४२॥

छंद गीतिका

अस पति आजम काँम आये लगी गोली सीस मैं।
अहंकार अंग अपार जैसें सीस दस भुज बीस मैं ॥
बेदारबाला ज्याँ परे रन तीर गोली लागि कैं।
हौंनी न ऐसी भई जैसी जंग पावक जागि कैं ॥३४३॥

सफजंग दिल्ली के चकत्ता लरैं लटकैं फिर लरैं।
पुनि जाय पकरे पियैं पोसत कैद कररी तिहिं परैं ॥
दुष सहैं केते परैं पर बस मोत बिगरैं हू मरैं।
यह जाँन आजम कामि आयो आय हूराँ तिन बरैं ॥३४४॥

दोहा

मीर लुटे होदा महीं औंधे बदन अचेत।
निहुरे मनों निबाज कों आजम साह समेत ॥३४५॥

दुरजोधन कुल सहित ज्यों मरे किये अभिमाँन ।
त्यों आजम हू जोम मैं मारे गये निदाँन ॥३४६॥
जय जस सौं दल कुसल सौं फते निसाँन बजाग ।
भये बहादर साह जू डेरों दाखिल आय ॥३४७॥
आजम हुकम अजीम जू डेरों आय निहार ।
महाराज को दिलबरी करि बकसी तरबार ॥३४८॥

सोरठा

बाहे जुध पर बीर तण राजा राजड़ तणै ।
तिहि मैं तेरह तीर फूटा बगतर फोडि कैं ॥३४९॥

दोहा

गोली एक बंदूक की छूटी निकट संधान ।
निकसी गई बायें खबें परजि मोर तन त्रान ॥३५०॥

सोरठा

हेकण हेकण हाथ दुयदुय मुरि अरि दबटिया ।
भल कीधो भाराथ राजड़ आगल रावताँ ॥३५१॥
रावत कर कर रोस पाड़ै पखरै ताँ पवँग ।
पाड़े बगतर पोस अधिपति राजड़ आगली ॥३५२॥

सवैया

तैसेई सील सुभाव लियें जैसें ग्रंथन मैं कबि चंद ही बाँचें ।
धीर महा खग चोटन सौं कहुँ पीठ न देत हैं भारथ माँचें ॥
आजम की चतुरंग चमूँ सँग जंग जुरे परमेसुर बाँचें ।
मान तनें राजसिंह महीपति देखिय रावत साँवत साँचें ॥३५३॥

छप्पय

अधिपति आगलीयाँर सार झले सावँताँ ।
पाडे बगतर पोस पाडि पवँगा पखरैताँ ॥
मोडे मद मद झराँ नराँ नाहराँ निजोडे ।
धडछे अरि धज बडाँ ग्रीव साबलाँ धमोडे ॥

केई कपड़े केइ पड़ि पड़ि ऊपड़े के निलोह रावत कहैं ।
पड़िया सांवत प्रथिराजरा राजडरा सांवत रहे ।।३५४।।

सवैया

स्वामि के कांम सुधारन कारन मान नरिंद को नंद प्रबीनों ।
माजम साह की कीनी फते अरु आजम कौं हनि कै जस लीनों ।।
नोबत तेग दिए गज भूषन रूपकों भूप मरातब दीनों ।
साह बहादुर आदर सौं राजसिंह कौं 'राजा बहादुर' कीनों ।।३५५।।

केहर के कुल कौं राजसिंह त्रिबिक्रम बिक्रम सिंह ज्यौं धायो ।
तीरन सौं तरबारन सौं बरछी दल सौं दल मार हटायो ।।
वृंद ढुंढ़ू बिधि मांन नरिंद के नंद कों ऐसें बड़ो जस आयो ।
माजम कौं पतिसाही दई अरु आजम कौं जम गेह पठायो ।।३५६।।

छप्पय

सतरै सै चोसठो बीर बिक्रम संबत्सर ।
बदि असाढ़ पंचमी बार.रबि भिरे दिलेसर ।।
मोहरैं साह अजीम महाबल भारथ मंड्यो ।
ह्वै हरोल कमधज्ज खग्ग बल खल दल खंड्यो ।।
बहादर साह जय जस दियो साह अजीम सिरताज कौं ।
दीनों अजीम जय जस तिलक राजसिंह महाराज कौं ।।३५७।।

दोहा

हरि हर हरि जुत नंद ते देषि जंग को रंग ।
भले हुते पैं छाँड़ि कैं गए भटन के संग ।।३५८।।

बड़े कहा छोटे कहा वृंद भले ते दीठ ।
राजपूती कौं जुद्ध मैं ते न गये दै पीठ ।।३५९।।

नाम धरत हे ओर को रजपूती की चाह ।
जे को जानें कित गये किंहि बिरियाँ किंहि राह ।।३६०।।

कलस

साह बहादर दियो बिरद राजाँन बहादर ।
सब उमरावाँ सिरै कियो दीनौ बहु आदर ।।
स्वाँमि काम की सिद्धि ध्रवे भारथ खग धारा ।
रण साभि लराबताँ दिया बहु पटाबधारा ।।
नृप मान नंद रा.................................।।३६१।।

दोहा

वृंद जथारथ जुद्ध की रचना रची अनूप ।
समुझि नाम याको दियो 'रूपक सत्य सरूप' ।।३६२।।

१२

हितोपदेशाष्टक

नैननि की जोति जो लौं नीके कै निहार हरि
सुन ले पुरान जो लौं सुनै सब कान है।
रसना रसीली जो लौं रसत रसीले बोल
तो लौं हरि गुन गाय जी पै तू सुजान है।।
काँपै नाहि कर तो लौं भली भाँति सेवा करि
पायन प्रदच्छना दे जो लौं बलबान है।
जरा जकरै तें कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है।।१।।

भूलि जैहैं सुरति सुमति मति भूलि जैहैं
इत कित भूलि जैहैं एतो साबधान है।
जीभ लरधरि जैहैं कर थरहरि जैहैं
कर थिर हरि पै तू हरि अभिमान है।।
मन की फिरन मेटि मन को फिराय फेरि
मनका के फेर मैं न फेरियो सयान है।
जरा जकरै तें कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है।।२।।

आसन बिछाय पदमासन बनाय मन
मान पदमासन को सासन प्रमान है।

तन साध मन साध नयन बयन साध
स्रोन साध साध जेते साधन बिधान है ॥
बिषै बिष परिहर प्राणायाम कर ध्यान
धेय धर धर सुख को निधान है।
जरा जकरैं तैं कहा करिहौ कहत बृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है ॥३॥

जनम अनेक पाय मानस जनम आय
भूलि जाय नाम या मैं तेरी महिमा न है।
राव कहा रंक कहा पंडित बिबेकी कहा
जेते जग आये तेते सब मेहमान हैं ॥
जिय मैं बिचार यह कीन्हों निरधार नाम
नीकै उर धार यातैं तेरो महि मान है।
जरा जकरैं तैं कहा करिहौ कहत बृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है ॥४॥

ए हो धाम काम बाम काम बाम काम धाम
काम करबे को तेरैं पूरन सयान हैं।
मन बिसराम अभिराम स्याम नाम ता कौं
उर धरबे कौं होत अति ही अयान हैं ॥
ऐसी बिपरीत रीत छाँड़ दै अनीत प्रेम
पूरन प्रतीत राख भाषत पुरान हैं।
जरा जकरैं तैं कहा करिहौ कहत बृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है ॥५॥

प्रथम ही जीव पुनि अंग रंग रूप दीन्हो
दे करि जनम तोहि दीन्हो पय पान है।
पोषन भरन करि करन बिबेक दीन्हो
बुद्धि बल दीन्हो ताते भये महा जान है ॥
ऐसे उपकार करतार के संभारि उर
निहचै उद्धार तेरो वाही सौं निदान है।

जरा जकरैं तें कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह सावधान है ।।६।।

छबि सौं बलित गुन कलित ललित अति
गलित पलित होत ऐसो परमान है ।
आध नाहि ब्याध नाहि और हू उपाध नाहि
तो लोभ न साध कैं अराध जो सयान है ।
देषियें संसार सो असार तू समझ ले
तामैं यहै तत्त्व सार मान बचन प्रमान है ।
जरा जकरैं तें कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह सावधान है ।।७।।

सिब सनकादि बेद ब्यास मुनि नारद से
बुद्ध के बिसारद से हारद के जान है ।
बिधि बालमीक अंबरीख भज नीक भए
छाँड़ कै अलीक ठीक कीनो गुन गान है ।।
तैसें तू ही वाही सौं मगन ह्वै रहत क्यौं
न पढ़त पुरान ऐसो पुरुष पुरान है ।
जरा जकरैं तें कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह सावधान है ।।८।।

अष्टक हित उपदेस कौं पढ़ै सुनैं मन लाय ।
तिरत जलधि संसार तें वृंद मनोरथ पाय ।।

१३

पुष्कराष्टक

तीर तीर नित ग्रमल नीर धीर धीर न्हात जन ।
हरत पाप बिधि त्रिबिधि ताप संताप जात मन ।।
तप निधान बिधि बिधि बिधान सुभ ध्यान तपत तप ।
जुत बिबेक तहाँ द्विज अनेक चित एक जपत जप ।।
पुहवी प्रसिद्ध जहाँ सिद्ध सब सुष समृद्धि गुन बृद्धि गनि ।
सेबत वृंद आनंद सौं पुष्कर तीरथ मुकुट मनि ।।१।।

कलित···लक···ललित जल भरित कुंभ बर ।
कंक कोक कलहंस करत नित केलि हंस बर ।।
पुष्कर भव किय प्रकट परस पुष्कर भव भंजन ।
पुष्कर भव परकास जगत पुष्कर मन रंजन ।।
अघ ओघ हरन पावन करन करन भाव कवि वृंद भनि ।
उद्धरन धरन पर उदित अति पुष्कर तीरथ मुकुट मनि ।।२।।
(वंशज)

---

१. वंशजों से प्राप्त गुटिका-संग्रह से लेने के कारण छंदों के साथ 'वंशज' संकेत दिया है ।

१४

भारत कथा

एक समैं बन सघन मैं बिचरत पाँचों बीर ।
भई त्रिषातुर द्रौपदी चाहैं पायो नीर ।।१।।

नृप आग्या तें जौ गयो नीर भरन सर तीर ।
सरबर मैं बानी सुनी भयौ चकित चित धीर ।।२।।

एक एक कौ है कह्यौ इक इक प्रस्न प्रबीन ।
उत्तर काहू नाँ दियो किए चेतना हीन ।।३।।

राजा तब आए तहाँ सोचैं करें बिचार ।
तब जलचर वेई प्रस्न बूझे एकहि बार ।।४।।

कौन मुदित अचिरजु कहा कहा बात पथ केहि ।
धर्मराज उत्तर कहौ पांडब जोवत होहि ।।५।।

दिवस पाँचवें या छठे मिलें साक आहार ।
रिण प्रयास तें जो रहित यहै मुदित संसार ।।६।।

दिन ही दिन यम भौंन कौ है जोबन कौ गौन ।
देखि रहे चाहत रहे या तें अचिरज कौंन ।।७।।

मोह् कड़ाहा रबि अगनि करि इंधन नी रात।
मास दरबि प्राणीन कौ काल पचति यह बात ॥८॥
तत्त्व बुर्‌यौ मत हठ पर्‌यौ बहुत मुनिन की बानि।
सतसंगी जहं संचरै पंथ वह पहिचानि ॥९॥

धर्म बारिचर रूप ह्वै बूझे प्रस्न प्रवीन।
ए उत्तर राजा कहे पांडव जीवंत कीन ॥१०॥

धरम सुवन कौ धरम द्रढ़ देखि धरम हित पीन।
होहु तुम्हारी जय सदा यह बर आसिस कीन ॥११॥

१५

स्फुट छंद

मंगलाचरण

कौन हौ, ब्रह्म अपूरब हौं, कहाँ बास, जहाँ बिधि सृष्टि बनाई।
राखत को हैं, अनाथ कौं राखै को, कौन पिता, सुधि नाहिन पाई।
चाहौ सो लेहु, त्रिपैंड धरा, अति थोरी यहैं, त्रैलोक बताई।
बृंद कहैं बलि कौं छल्यौ बात ही बातन सौ तुम कौ बरदाई ॥१॥
(वंशज)

तू नब जोबन गोपबधू कबि बृंद कहैं चित चंचल बारी।
कंस सो भूपति गोपन की बिधि अंबुज नाल सी ग्रीव सँबारी।
भूलि हू मो बिन ही कबहू जइयो मति कुंज मैं कुंजबिहारी।
नंद के बैनन नैन नवाइ लजाइ रहे तिन की बलिहारी ॥२॥
(वंशज)

चंदन चंगी प्रेम प्रसंगी रसिक रसंगी रागंगी
हरि अद्‌भुत अंगी उदित अनंगी अखिल असंगी रसबंगी।
जोगी जोगंगी तत्व तरंगी भेदि भुजंगी सिब संगी
गति ललित त्रिभंगी अमित उपंगी नाना रंगी नव रंगी ॥

....

नवरंगी नागर नवल अति सुकुंवार सरीर
वृंद जपत जस सरस रस जय जय स्री बलबीर ।।३।।
(वंशज)

....

छंदा बहु बिधि छंदा छाबै छंदा सुच्छंदा ।
जुग जुग चिर नंदा जोति अमंदा आनँद कंदा नँद नंदा ।।४।।
(वंशज)

....

नंद नंद आनंद मय जीत्यो अजित अनंग ।
पीत बसन नव नव बसन चंदन चरचित अंग ।।५।।
(वंशज)

अति सुंदर स्याम की सुंदरता लखि कामहू की सुधि भूलत हैं ।
नरदेव सबै हिय मैं नबाइ लजाइ रहे तिन की बलिहारी ।।६।।

श्री चतुर्भुजजी के कवित्त

फूलित कमल ऐसे चरण कमल जुग
फूलन के लागे प्रीति लागे सुख पाइके ।
फूलन के फेंटा उपरौनी पुनि फूलन की
फूलन की फाग फबि रही छबि छाइ के ।।
अति ही उदार उर हार हिये फूलन के
फूलन के मंदिर मैं सुंदर सुभाइ के ।
वृंद कहैं ए रे मन भ्रमर सरूप ह्वै के
ऐसे रूप राचि स्री चतुर्भुज राइ के ।।७।।
(वृं० वि०)[२]

लीन भयो मन मीन सु तो तन तें अनतें छिन एक न खेलैं ।
वृंद कहैं सुनि के गुन ग्यान ए कानन आन की बान न झेलैं ।।

---

१. वंशजों से प्राप्त जिस गुटिका-संग्रह से ये छंद लिये गए हैं, उसके आदि अंत के पन्ने खो जाने तथा उसके बीच में बड़ा-सा स्थान जीर्ण होकर फट जाने के कारण वहाँ का विषय उपलब्ध नहीं हो सका है। अतः यहाँ लोपनिर्देशक—बिन्दुओं द्वारा इस बात का संकेत कर दिया गया है। इसीलिए ये छंद त्रुटित हो गये हैं।

२. वृं० वि० संकेत का अभिप्राय शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु पत्रिका के 'वृन्द विशेषांक' जून, १९२८ से उद्धृत है' का संकेत है।

राय चतुर्भुज मोहनि मूरति को बरनै बुधि कोटि सकेलैं।
ऐसे भये सब अंग बिमोहित लोचन देखि निमेष न मेलैं ।।८।।
(वृं० वि०)

सुंदर स्याम स्वरूप चतुर्भुज मोहनि मूरति मोहि सुहावै।
मोचन पाप महा रुचि रोचन लोचन पान किये न अघावै ।।
वृंद कहै छबि या तन की नर पुन्य उदै कोउ देखन पावै।
जो सुख तीनहु लोकन मैं नहिं सो इन भौंहन कोन मैं पावै ।।९।।
(वृं० वि०)

मोहन मूरति सोभित स्री नग भूषन जोति उदोत निहारूँ।
सुंदरता सुख धाम सुधामय वृंद बिसेस यहै उर धारूँ ।।
आज बिराजत या तन की छबि और कहा उपमा सु बिचारूँ।
कोटिक काम सुधाकर कोटिक कोटिक बेर समेट के बारूँ ।।१०।।
(वृं० वि०)

वेद परमान मो पै परमान कही
जाइ मेटि पर मान परमानंद बिधाई हैं।
सुबरन करिकैं सुबरन करि स्याम
सु बरन तन मन सुबरन भाई हैं ।।
बारन उछारयो तहाँ बार न लगाई वृंद
त्यों ही दुख बारन अबारन लगाई हैं।
आचतुर मुख गो चतुर के चतुर कहैं
तारन जगत स्री चतुर्भुज राई हैं ।।११।।
(वंशज)

लीला के पद

भयो राजा राम हूँ तिनकी तिय सीत हूँ
पठाए पिता बन हूँ बचन सुन रानी के।
बसे पंचबटी हूँ तहाँ तें हूँ जनकजा कौ
राबन हरी हूँ जातुधान राजधानी के ।।
वृंद कहैं सोवत समैं मैं हरि मात मुष
सुनत ही अपनी पुरातन कहानी के।

बोल उठे लछमन धनुष बान कहाँ मेरे
दुष्ट न जान पावै बारी इहिं बानी के ।।१२।।
(वंशज)

सीता सुधि ल्यायो हनुमान तब लंक पर
बिजै दसमी को है चढ़ाई महा जान की।
कारी षरदूषन के मारे षर दूषन को
पाथर की बाँध पाज.........पार की ।।
क्रुद्ध करि जुद्ध करि जीत्यौ इंद्रजीत कौ
सँभारयौ कुंभकर्न सुधि भूलि हैं अजान की ।
रावन कौं मारयौ...........उधारि वृंद
देव काम पूरि कें लो आए राम जानकी ।।१३।।
(वंशज)

कंस करूर ओ कूर महा कवि वृंद हियें रिस घेर घिरायो।
नंद कुमार महा सुकुमार भयंकर बारन संग भिरायो ।।
मारयौ है कुंभ मैं बज्र मुठी हनि संतन को हिय राजु सिरायो।
ज्यौ मघवा गिरि देत गिराइ त्यौं गोकुल राइ गयंद गिरायो ।।१४।।
(वंशज)

अति मतबारो अति बारो जानि पीलबान
पेल्यो अ.........................चारि कै।
जान्यौ न महातम महा तम सो कारो देषैं
लागै भय भारो ताहि पौरस बिचारि कै ।।
.................द लाल झपटि पकरि पूँछ
नाग ज्यौं फिराइ नाग धरनि पछारि कै।
वृंद कहैं बीर बनमाल.................
.............गजदंत गजदंत से उखारि कें ।।१५।।
(वंशज)

देवकी के गेह तें निकरि कै पछारत हो
सोई बैर जोग माया जीय मैं धरत है।
.......कहि वृंद याही अनुमान तें हूँ जानत हौं

कठिन कराल कोप नाँहि बिसरत है।
तरकि तरतराइ करकि करकराइ ह्व........
........कौं दिसि ओ बिदिसि बिचरति हैं।
नाम तें बिरोध बंधु भए तें न बाज्यौ थार
यातें कंस काँसे पर बीजुरी परति हैं ।।१६।।
(वंशज)

प्रात ही मात बिलौवत ही दधि आन मथानी गही सु बिवेकी।
बालक हो जु गुपाल रहो यह सक्ति कहाँ तुम कौं मथबे की ।।
खैबे कौं माखन देहौं लला सुन घोर मथान की बोल हैं केकी।
वृंद कहैं मुसकाय हँसे हरि कैं सुध समुद्र छीर मथे की ।।१७।।
(वृं० वि०, वंशज)

छीर समुद्र ओ गाइन को पति हैं प्रतिपालक हैं स्तुति भाख्यौ।
जानि सो नंद के नंद भयो जिन दूध के लालच ही अभिलाख्यो ।।
वृंद कहैं इन सौं पहिचानि भई पहिलै जे न चाख्यो सो चाख्यो।
देखो उदारता मातहू के तनके पयपान तें ताकहू राख्यो ।।१८।।
(वंशज)

आवहु संभु बिराजो इहाँ बिधि बैठहु आसन बायों बिछायो।
छेम षडानन हैं, सुभ सक्र, कुबेर कहाँ अजहू नँहि आयो ।।
सोवत नींद मैं बोल उठे हरि वृंद जसोमति संभ्रम छायो।
कान्ह कहा कहै यों कहि कै धुधकार कै मात हिये सौं लगायो ।।१९।।
(वंशज)

हरिचरण-वर्णन

कोमल रसाल अति परम प्रकासमान
नीके नव पल्लव से अरुत बरन हैं।
आवत मधुपगन गावत मधुर धुनि
सेवत सुबास लेय आनंद करन हैं ।।
केसरि सहित कमलाकर मैं सोहत हैं
सुमन सिंगार अरु जीवन सरन हैं।

वृंद कबि लोक बहु बरन बखानें ऐसे
अमल कमल हैं कि हरि के चरन हैं ॥२०॥
(वृं० वि०)

हरिस्मरण

करन सुनहु गुन.....................य करन सुनन करि।
करि जल तें उद्धरि धरित गोबर्द्धन कर हरि॥
कर हरि लीन ली...कर भंजन अभिमान मान मोचन।
सुंदर बर.. ॥
बर बीर धीर बसुदेव तन तन अभिनब जलधर बरन।
.......................भव कमल कमल नैंन करुना करन ॥२१॥
(वंशज)

रमन रास रस सरस सरस मिलि प्रेम उपावन।
गाबन निज..राबन॥
राबन कुल संहरन हरन जपत नाम जस।
जस गावत संसार सारदा तार भक्त .... ॥
बरनैं बिबुध लोक आगम निगम मन सुद्ध सेबहु रसिक जन।
....रसिक लाल राधा रमन ॥२२॥
(वंशज)

नग गन जटित किरीट सीस सोहत जोति जित।
केसि कंस संहरन करन निज जन आनंदित॥
.......................अधर रहसि राधा चित रंजन।
नटनागर नँद नंद नेह निधि नाथ निरंजन।
गुन गुनी कहत जस सकल लोक असरन सरन।
सनकादि सिद्ध नारद सदा धरत ध्यान श्री गिरि धरन ॥२३॥
(वंशज)

कबहीं तो सुभर सरोबर से जानि तहाँ
मीन ह्वै कै तृषा ताप पाप कौं हरत हैं।
सरस कमल जानि कबहौं होम धूप ह्वै कै
लेत हैं सुबास छकि छोह बिसरत हैं॥

कबहों, सुभाइ सुष पाइ ·····पाइ रज
रहैं लपटाइ बाल लीला सी धरत हैं।
वृंद कहैं संघ चक्रधारी के चरन राचि
मेरो मन ऐसें हित भावना करत हैं ।।२४।।
(वंशज)

नाम-महिमा

ईस्वर के हेत होम·······महा·········तो
कीजै कौन भाँति एतो काम सब दाम के।
तीरथ को जैबो ओ पुरान को सुनैबो सो तो
कैसें·················रहैं धंधे धाम के ।।
मेरो कह्यो कीजै यामैं गाँठ को न छीजै कछु
होत हैं सफल दिन छिन अ·········के।
स्याम नाम लीजै जासौं सीजैं सब काम वृंद
नाम बिन ओर सब काम कौंन काम के ।।२५।।
(वंशज)

पाइ························ स्याम नाम ही तैं
नाम ही तैं देषीय तरंग सुर धाम के।
भव पारावार पार पावै स्याम नाम ही तैं
····················प्रताप स्याम नाम के ।।
जिन स्याम नाम ही तीनों तिनके रहे हैं (नाम)
गीध व्याध गनिका करैया बिधि बाम के ।।२६।।
(वंशज)

कलिजुग माहि नाम कामधेनु काम कुंभ
कामना के पूरन कौं नाम कामतरु हैं।
भव दधि तरबे कौं नाव······················
······अभिराम नाम आनंद को घर हैं ।।
अनुभो की सिद्धि नाम नाम नवनिद्धि वृंद
नाम ही तैं अठसठि तीरथ महान हैं।

आठौ जाम स्याम नाम नाम ही सौं काम राखि
सुनि सुनि साखि नाम स्याम सरभर हैं ।।२७।।
(वंशज)

विनय

पुरुष पुरान चतुरानन चतुर जिहि
बेद मैं बतायो सनकादिकन गायो है।
भगत बछल ओ भगति प्रिय नाम हरि
सुक बलि पृथु से उधारे जस गायो है ।।
वृंद कहि यह सुनि हियरा थरहरानों
एक बात औरों सुनि जी मैं जीय आयो है।
अधम उधार नाम पतित पावन नाम
गीध ब्याध तारे स्याम तातें सुख पायो है ।।२८।।
(वंशज)

कौरब-सभा-समुद्र, गहर बिरोध बारि[1]
कोप बड़बानल की ओप अगमगी है।
जोधा दुरजोधन, तिमिंगलादि जल जंतु[2]
वृंद कहैं लोभ की लहर सगमगी है ।।
कुबुधि बयारि तैं दुसासन तुफान उठ्यो
चाल्यो बादियान चीर भीर रगमगी है।
प्रीति पतबार लै कैं हूजिये करनधार
आज हरि लाज की जहाज डगमगी है ।।२९।।
(वृं० वि०)

केते जुग बितये अनंत गति लेत लेत
धरि धरि बेष सबिशेष भाव भिरि कैं।
सूछम सथूल अध ऊरध तिरीछो ह्वै कै
उलट पुलट नाच नाच्यो घिरि घिरि कै ।।
अब नंद नंदन सौं बिनती करत वृंद
भावै सु करहु तातें राखो मन थिरि कैं।

पाठान्तर—१. ब्याल २. कुमंडलादि जल पति

जे तो प्रभु रीझे तो परम मौज कीजै
जे न रीझे तो कहो न ल्याऊँ साँग फिरि कें ॥३०॥
(वृं० वि०)

छत्रिन पौरुष छाँड़ि दियो सुख पाइ बसे मृगराह दरी ज्यौं।
साहस धीरज मान कुमान रहो परिमान घर्‌यारि घरी ज्यौं॥
धर्मधरी डर ते झकझोर तरी जल जोर झकोर परी ज्यौं।
वृंद कहैं करुनामय हो प्रभु तो अब कीजे सहाय करी ज्यौं ॥३१॥
(वृं० वि०)

उपालंभ

ग्राह गह्यो गज राखि लयो तब तो न बिलंब करी जपने की।
द्रौपदि की पत राख लई मिट आँच गई अरि ते तपने की॥
वृंद अनेक कितेक कहूँ बिद ताते सहाय करो अपने की।
नाँहि तो बेद पुरानन की कहि मानि हौं बात सबै सपने की ॥३२॥
(वृं० वि०)

जो कछु बेद पुरान कही सुनि लीनी सबै जुग कान पसारे।
लोकहु मैं यह ख्यात प्रथा छिन मैं खल कोटि अनेकन तारे॥
वृंद कहैं गहि मौन रहै किमि हौं हठि कै बहु बार पुकारे।
बाहर ही के नहीं सुनो हे हरि! भीतरहू ते अहो तुम कारे ॥३३॥

आत्मबोध

चहियें यह तो मन भौंर भले नित ही पद पंकज ही खचि तू।
अरु जो न सुभाव तजै अपनो तो कहै कवि बृंद यहै सजि तू॥
सधि है परमारथ स्वारथ हो सु महा रस लालच तें लचि तू।
प्रभु के पद पानि हियै मुख नैंन इतें अरबिंदन सौं रचि तू ॥३४॥
(वृं० वि०)

देख्यो चाहैं सो दिखाऊँ सुन्यो चाहैं सो सुनाऊँ
भाँति भाँति तेरो गायो गाऊँ बारबार है।
ज्यौं नचावें त्यौं ही नाचौं जाही ताही रंग राचौं
बामा बाम काम हू को कछू न बिचार है॥

कहैं त्यौं करौं पै कहैं लेत हौं कहत वृंद
तू ही मेरो कह्यो एक कीजो निरधार है।
अंत बेर राखियो परम हरि ही सौं हेत
एहो मन मेरो तोसौं यह ही करार है॥३५॥
(वंशज)

सुर गुरु सुर गुरु गुन ताके गावत
बिचारि ताहि कौं क्यौं न बिचारि हैं।
नर मन मनि ह्वै कै नर मन रंजै पैं तू
नर मन रमन रमा को उर धारि हैं॥
रा···तिसौं काम काम राम ति सौं काम
तेरैं काम तिसैं राम तिसैं काहे न सँभारि हैं।
बिपतिक पति पति राषत बिपति पति
रे पतित पति तोहि सो पति उधारि हैं॥३६॥
(वंशज)

ज्ञान

जनम अनेक तामैं मनुष जनम सार
तामैं सार उत्तम सुकुल अबतार हैं।
गुरु सार गुरु के बचन सार वृंद कहैं
सार सतसंग सार बिबेक बिचार हैं॥
तामैं दान दीबो सार जग जस लीबो सार
हरि रस पीबो सार पर उपगार हैं।
संसार को सब कोऊ कहत असार पैं
सार दरसी कौं तौ असार ही मैं सार है॥३७॥
(वंशज)

एक के अनेक नाम भाषा भेद करि होत
जानैं ताकौं एक भास भासैं रट रट मैं।
जैसे ताल जल जो ले आवै सोई मेरो कहैं
वहै जल बिमल कहावै घट घट मैं॥
वृंद नट बिद्या मैं निपट पटु होत सोई
नट बिद्या एक सी बतावें नट नट मैं।

घट माहि जानें सो तो घट घट माहि जानें
घट में न जानें सो न जानें घट घट में ॥३८॥
(बृं० वि०)

एक की अवग्या तें अनेक की अवग्या होत
एक पूजें ओर सब पूजे ऐसो कहियें।
तो अनेक एक माँहि एक है अनेक माँहि
ऐसे समजानि भाव भेद पें न गहियें॥
सब ही को संगी नाना रंगी सरवंगी ताहि
ताहि प्रेम नेम ही सौं परतीत ही सौं लहियें।
बृंद कहैं ए तो बिधि सेस गुरु मुख जानि
जासौं मन लाग्यो होय ताही के ह्वै रहियें ॥३९॥
(वंशज)

अधूरा छंद

जानत हौं जब सतसंग तें बिबेक आबै
........कहाँ रहै बन में कि तन में।
बृंद कहैं यह बिस्ब ब्यापक सरूप ताहि
तु ही कहि कहूं एक जन....में॥
(वंशज)

असरन सरन है तिनकी सरन कोऊ
तिनकी सरन बिसरन तो सु रति हैं।
जनपद जनपद जन जन पद फिरें
क्यौं न परिजन मोही भजन पगति हैं।
बृंद छहि भगति उधार...........
वही सुधा रही सुधार नित प्रति हैं।
भगति पगति ताहि देत सुभ गति
हरि हरि दुष गति........पति हैं ॥४०॥
(वंशज)

....

ताहि बिखाइ परबीनता छिपाही हैं।
थिर चर जीबन की जीबन की थित कीनी
जीबन की बृत्ति दीनी तिन कौं, तहाँ ही हैं ।।
परिहरि दोष परितोष को पोष करि
बृंद कहि लहियै सुभर छत्र छाँही हैं।
पोषन भरन को करन लाग्यो सोच कहा
हेरि बिस्वंभर तू रहत बिस्व माँही है ।।४१।।
(वंशज)

मधुर मनोग्य प.....................न
ब्यंजन बिनान स्वादु बान लीजियत हैं।
सीरा पुरी छीर पेरे मेबा कबि बृंद कहैं
मिसरी मिलाइ.........दूध......रत हैं ।।
पेट की सहल रूखे सूखे सौं भरत ऐ पैं
जानत हो याकौं ए तो काहे कीजियत हैं।
अंत बेर सरस नाक दाबि हरि गुन गावैं
याही तें अगाऊ रसबति दीजियत हैं ।।४२।।
(वंशज)

ऊपर का प्यार है पै अंदर की रूखी रूह
सक्कर लपेटी जैसी पैनी धार छुरी है।
देखत ही खूब जैसे.........................
याकी हलभल बीचि दगाबाजी बुरी है ।।
बृंद कहैं सुन तो खिलाफ मैं न कहता हौं
इस तें फरक ताकी.......................... ।।
षासनाई करै तो तू साहिब सौं कर यार
दुनियाँ की आसनाई आसका राबुरी हैं ।।४३।।
(वंशज)

केता समझाया...............पाया कछु
वहै दिल देखता हौं तेरा अब ताँईं का।
जहाँ तहाँ जाता है पै मिलती मिलावता है
..............नाथ जू की आँई आँई का ।।

रहबे तनाह बेतमाह राखि उस ही की
जिस तैं निबाह सुनि गा………… … ।
बृंद कहैं तुऊ कौं हजार बार कहता हौं
सचा दिल बीच राखि साया एक साँई का ।।४४।।
(वंशज)

सुन तो……नेह…… कहौं होता नाँहि
बृंद कहैं ऐसा ही बनाइ रखा तबका ।
चींटी कन भर फील मन भर पावता है
मन भर पावैं रतालब तलब का ।
जालिम सौं डर न गरीब सौं जुलुम करि
दिल मैं महर धर कहता हौं कबका ।
दुनिया के काम कौं खबरदार है पै
करि खबर उसी की जो खबरदार सबका ।।४४।।[1]
(वंशज)

हरिहरैक्य-भावना

गंग चरन हरि धरिय धरिय उतमंग गंग हर ।
हरि अलछि किय लछि हरहि परतछ गौरि धर ।।
हरि सुपुत्र किय काम काम हर कोपि भसम किय ।
हरि जन संपति हरत हरत हर बिपति जन सुनिय ।।
जप बृंद जगत साधार हरि-हरि सु जगत सब संहरन ।
है जदपि एक हरि-हर तऊ कृत बिरुद्ध करुनाकरन ।।४६।।
(वंशज)

बृषभ संग दोऊ रहत दुहून संगीत गीत हित ।
दुहून कियो बिषपान दुहून सिर चंद सुसोभित ।।
दोऊ भिच्छुक दोऊ चोर दोऊ अरजुन हितकारी ।
दुहून गंग उद्धरिय दोऊ मातंग प्रहारी ।।

---

१. एक पृष्ठ पर पीछे से आता हुआ कोई छंद यों समाप्त होता है—
मैं पयोनिधि मैं बारिधि मैं नीरधि मैं जलधि मैं याकों गहि डारियैं ।।

निज सक्ति भक्त आसक्त दोऊ दुहून देव सेवत समो।
जन वृंद जपत जस जोरि कर एक रूप हरि-हर नमो ॥४७॥
(वंशज)

हर-स्मरण

जो दिग अंबर धरे काम किहि धरे बान धनु।
जो धारे धनुबान भसम लेपन तो किम तनु ॥
भसम लेप जो कियो ततो गिरिजा किहि कारन।
जो गिरिजा संग्रहीत तो किम काम निबारन ॥
यह लखि बिरोध बिधि संभु बपु अनख इन मन लयो।
षडमुड कुमार अफरे गनप भृंगी तन दुर्बल भयो ॥४८॥
(वंशज)

बाम सरीर नबैं नहिं नैंक हौं कैसें कैं पाइन सीस नबाबैं।
बाम भयौ तन बाम तहाँ मनुहारि कौं अंजलि कैसें बनाबैं ॥
आधी भई रसना जउ भाव तहाँ मधुरे बच कैसें सुनाबैं।
मानबती गिरिजा भई तो वह वृंद कहैं हर कैसें मनाबैं ॥४९॥
(वंशज)

कुन्द की कली से कमैं कंकनन कमनीय
कौमुदी कलाधर कौं कलित कपाल हैं।
करटि कलेबर के कृति कौं कसत कटि
कालकूट कंठ कर कलित कपाल हैं ॥
काम कौ कदन काम कामना कलप कुज
कैलास के कूल केलि कोप कैं कराल हैं।
वृंद कबि कहैं काहू काहे कौं कृपाल कहौं
कालिया को कंत कित केवल कृपाल हैं ॥५०॥
(वंशज)

देवी-स्तुति

तेरी इक चाह पर वाह दिल तेरे राह
तो ही सौं निबाह नाम जपत सबेरो हूँ।

राखें जहाँ रहौं औ कहावे सोब बँन कहौं
तेरी कृपा लहौं यह चाहत घनेरो हूँ ।।
तेरे गुन गाऊँ सुख संपति सरस पाऊँ
तेरे पद पदम बसाऊँ मन मेरे हूँ ।।
साँचे सरनाम कबि वृंद कर जोरि कहैं
खाना जात चाकर भवानी मात तेरो हूँ ।।५१।।

बेद बिधि पूरन सौं पूरित कलस थापि
रोपित सु बिधि जब ओपित सुहाति के ।
धूप दीप अच्छत सु कुंकुम सिंदूर फल
इत्यादिक उचित कुसुम भाँति भाँति के ।।
वृंद कहैं ठौर ठौर थानक उछाइ चाह
ध्यान धरैं संत भय भंजन अराति के ।
पुन्य जोग पाये नव दुर्गा गुन गाये ऐसे
जन मन भाये दिन आये नवरात्रि के ।।५२।।

एक जन नीके जननी के हेत होम करैं
एक होम धूम ते पबित्र करैं प्रान है ।
एक जन जाप करैं जनन के पाप हरैं
एक जन पूजैं करि जथा जोग दान है ।।
तीरथ को धावै एक ध्यान मन लावै एक
तन चरचावै एक गावै गुन गान है ।
एक जन दुर्गा पाठ पढ़ैं कबि वृंद कहै
आई नवराति सब ऐसे सावधान है ।।५३।।

काम न किरोध साधु पंडित के सोध उर
बोध मैं मगन अबिरोध सब ही के हैं ।
दया के निधान जानैं पूजन बिधान सदा
भजन मैं सावधान जोतिबान जी के हैं ।।
सिर पर धरैं हरि गुरु के चरन सदा
तीरथ बरत करैं औ सुबुद्धि ही के हैं ।
आतम गवेषी जन जन के हितैषी कबि
वृंद कहैं ऐसे जन तेई जननी के हैं ।।५४।।

बैनी सुख देनी सीस सोहत सुमन मोहैं
हार हिये बासुकी बिराजैं सुछ पानी को।
बिजया के संग रंग सरस कनक सेती
चन्द तैं लिलाट नीको सोभा सुखदानी को।
दिसि औ बिदिसि के दुकूल देह नीके नैन
तीन लोक देखें बस होत मन मानी को।
वृन्द कहै कीजिए भजन गुन यहै जानि
भव को सरूप जैसो रूप है भबानी को ।।५५।।
(वृं० वि०)

देवी-स्तुति : राग धनाश्री

दरसन की बलिहारी, हे अंबे, दरसन की बलिहारी।
अति सुंदर अभिराम साँबरी सूरत अति सखकारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।१।।

पूरन सरस सुधानिधि मुख पर कोटि चन्द छबि बारी।
लोचन तृप्ति निमिष नहिं पावै निरखत बारंबारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।२।।

देखे सुने अनेक देब पै नाहिन भे अनुहारी।
सब तैं सरस तोहि सौं जननी लागी सुरत अमारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।३।।

ब्रह्मादिक सब तेरे ही सेबक सेबा करत तिहारी।
निसि दिन बसो वृंद जन के हिय जिय की प्रेम पियारी।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।४।। ।।५६।।
(वृं० वि०)

ईश्वर-स्तुति

त्रिभुवन चो स्लामी जगत चो तारण। आधारण ब्रह्मंड इक्कीस।
जण जण कतै जाइ की जाचै। जाच एक पूरण जगदीस ।।१।।

भूलन अवर भरोसै भ्रम भ्रम। क्रम क्रम धणी सुधारण काज।
मनिख मनिख आगल की माँगै। माँगि एक दाता महाराज ।।२।।

जग सुख लहै सुदामा जेही। जनम जनमचा मिटै जंजाल।
पुरुष पुरुष कि सौं प्रारथै। प्रारथ एक जगत प्रतिपाल ॥३॥
भगत बछल कबि वृंद सदा भजि। चाव भाव करि करि गुल चाल।
दीन बचन दूजा मति दाखै। दाख भाख मुख दीन दयाल ॥४॥ ॥५७॥

(वृं० वि०)

अमृतध्वनि

कह कह किलकत कालिका निरखि असुर दल निद्ध।
पच्छहि सुर गन वृंद कहि जुद्धद्धरिक बिरुद्ध॥
जुद्धद्धरिक बिरुद्धद्धसि असि रुद्धद्धस कित।
अब्भब्भट घट गब्भब्भखि भखि भब्भब्भभकत॥
रत्तत्तरफर गत्तत्तकि रन मत्तत्तह तह।
धक्कक्कर धक धक्कक्कटि तक टक्कक्कह कह ॥५८॥

डर अरि प्रबल प्रताप लखि, धुज्जै कुनप अथग्ग।
क्रुद्धद्धरि त्रिपुरे चढिय, बध्घग्गयण बिलग्ग॥
बध्घग्गयण बिलग्गग्गहर उमंगग्गण सुर।
सुंभम्भरित अबब्भब्भरित निसुंभब्भय उर॥
चंड प्रसंमित मुंडद्दनुज बितुंडप्परि हरि।
भुंडप्प्रबल प्रचंडड्डगि लखि भुंडड्डरि अरि ॥५६॥

(वृं० वि०)

प्रेम-प्यास

कूप पर धूप ही मैं रूप रस रीझि रहे
हवै गये मगन छिन सुख मैं बिहात है।
कोक परिहरि ओक लोक लोक डर हरि
ढीली ओक करैं त्यौं त्यौं धार पतरात है॥
संग की सहेली तेऊ भूली घट घाट गति
गहैं रस रीति लिखी चित्र की सी भांत है।
वृंद कहै ऐसी कछु प्रेम प्यास लगी दुहु
पीबत अघात है न प्यावत अघात है ॥६०॥

(वृं० वि०)

सीतल सुगंध धीर परस समीर उर
नीरज उसीर नीर चंद न सिरात हैं।
फूले फूले बाग फूल सर से लगत सब
राग रंग नित नये सुख मैं बिहात हैं॥
भूषन बसन तन करत बनावत न
मन मैं न चैन प्रिय बात न सुहात हैं।
वृंद कहै ऐसी कछु प्रेम की अटक तातैं
मिलैं अनमिलैं बाको ऐसे दिन जात हैं॥६१॥
(वृं० वि०)

वंशी के कवित्त

सातौं सुर एई सातौं अरचि समान कान्ह
फूँक तैं लपट झपटनि पसरत है।
वृंद कहै कोटिक उपाव तैं बचाव नाहि
कानन लौं लागि लागि ब्याकुल करति है॥
अति फैल रही ब्रजबालिनी कै गैल परी
जाकी ज्वाल जाल तातें अबला जरति है।
पी करि दबागि ब्रज मंडल बचायो अब
सोई आग बंसी बीच ह्वै कै निसरति है॥६२॥
(वृं० वि०)

बंसीधर बंस पै बिबस करै औरन कौं
निसि दिन रंध्रन के राह निकसति है।
वृंद कहैं टेढ़ो गति लीनैं बिष भीनै चलि
कानन तैं कानन कौं आनि कै डसति है॥
उठति लहरि 'हरि हरि' बरराइ उठै
सुधि बिसराइ ब्रज सुंदरी ससति है।
जानति हौं राग नाग रागिनी, ए नागिनी हैं
कली के कुटुंबी मानौं बंसी मैं बसति हैं॥६३॥
(वृं० वि०)

नेत्र-वर्णन

आप ही बीच दलाल भये पहिलैं ही कछू समझै करि सैना।
चाहक ज्यौं मन गाहक लै हित बात बनावत है दिन रैना॥
बृंद जिती जिय राखौं दुराइ सु देत जताइ कहैं बिन बैना।
कीजै कहा, कहियै किन सौं, न बसाइ कछू, ए बड़े ठग नैना॥६४॥
(बृं० वि०)

कान्ह सौं नैन लगे जब तैं तब तैं दिन रैन कछू न सुहावै।
बृंद यहै चित चौंप चुभी पल ही पल देखन ज्यौं तरसावै॥
सास की त्रास, जिठानि की कानि, कोऊ मिस ले गृह काज को धावै।
आँगन आई, झरोखन झाँखि, अटारी चढ़ै, फिर बाहिर आवै॥६५॥
(बृं० वि०)

बृंद कहैं हरि सौं चित जोरि करो हिय सौं हित हान कियो री।
देबर सास ननंद जिठानी रिसानी रहै करि मान हियो री॥
घेरु चल्यो सिगरे ब्रज मैं इह भाँतन जीब कुतावलयो री।
दोस कहा अलि औरन कौं अपुने इन नैनन भेद दीयो री॥६६॥
(अनूप)

नैननि ऐसो सुभाब पर्यौ पलही पल देखे बिना न रहाँही।
गैर कुठौर चबाब ठइ हटकाइ रही हठ जाँहि तिहाँही॥
बृंद सनेह दुराबत हौ सु बताबत लोक हजारन माँही।
हौं बरजौं, बरजे न रहे, अब कहो सु कहौ सखि मो बसि नाँही॥६७॥
(अनूप)

राधिका रूप-वर्णन

अति सुकुमारि बृषभान की कुमारि रूप
रति अनुहारि मनुहारि कै मनाई है।
बृंद कहै नीलांबर बादर की ओट सखि
सबन की डीठि चतुराई कै बचाई है॥
जोबन की जोति तन बसन की जोति नग
भूषन की जोति जगमग दरसाई है।

१. अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर; हस्तलिखित ग्रंथ, संख्या १६२ से उद्धृत।

मिलि घनस्याम सौं मिलन घनस्यामजू सौं
कामिनी को रूप धरि दामिनी जु आई है ।।६८।।
(वृं० वि०)

कुच-वर्णन

कमल गुलाब मृदु पल्लब सो अंग तेरो
ए अति कठोर मानों बज्र ही के गढ़े हैं।
सोभित पदमिनी सो सूछम सरीर तेरो
ए परम पीन गज कुंभन से बढ़े हैं ।।
वृंद कहै तेरो सुधानिधि सो सुमुख, ए तो
देखियत दुर्मुख मलीनता सौं मढ़े हैं।
जानत हौं याही तें तरुनि तेरे ही तें कुच
बाहिर निकसि फिर छाती पर चढ़े हैं ।।६९।।
(वृं० वि०)

अति ही कठोर जोर जाबेंत दिखाइ देत
अंबर लपेटे नित सोभित समाज के।
स्याही लीयें हीय चढ़े चाहते धनी पैं दाम
अति अभिराम देखे पीय सिरताज के।
तन पर करज प्रहार तें न हार धरें
गोलक सें नीके कहीयत बड़े काज के।
करि असबारी कबि वृंद सखकारी कुच
आए कर लैन को करोरी कामराज के ।।७०।।
(प्रतिष्ठान)[1]

चाँदनी-वर्णन

कुसुमित कास के प्रकास को न भास होत
फूले अनफूले से कुमुद गन भये हैं।
रजत के थार भरे मुकतान जानि परे
वृंद कहैं हंस के जुगल बिछुरे (?) हैं ।।
चन्दन चरचि रचि सुमन सिंगार सेत
करि अभिराम तेरे अंग छबि छाए हैं।

१. राजस्थान प्राच्य बिद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, ह० ग्र०, संख्या ४६०६ से उद्धृत।

सरद की चाँदनी मैं ऐसे छिपि जैहैं जैसे
पारे मैं के पारे तैसे तारे मिलि गये हैं ॥७१॥
(वृं० वि०)

रितु ग्रीषम चंदन चित्र कियैं तन सीतल सूछम सेत निचोलैं।
अति सोभित भूषन मोतिन के छबि जोति भरे सुथरे बहु मोलैं ॥
निसि पूनम छीर समुद्र मैं न्हात भुजान सौं रोहनि लेत झकोलैं।
पति के पितु सौं पति देखत यौं तिय देत आलिंगन कंचुकि खोलैं ॥७२॥
(वृं० वि०, प्रतिष्ठान)

होरी-वर्णन

अंग अंग रंग भरे तरत तरंग भरे
सखी सखा संग भरे मैन की मरोर तैं।
अंचल अबीर भरे फैंटन गुलाल भरे
रस भरे बस परे भरे बरजोर तैं ॥
मुख हास भरे परिहास भरे बोलैं बैंन
चितवत सैन भरे नैननि की कोर तैं।
वृंद कहि केसर के नीर भरे रीझ भरे
खेलत बसंत अरे दोऊ दुहुँ ओर तैं ॥७३॥
(वृं० वि०)

रूप रसाल सबैं ब्रजबाल अबीर गुलाल लई भरि झोरी।
हास बिलास कहौं परिहास कहैं कबि वृंद कहौं चित चोरी।
चंग मृदंग उपंग बजैं मुंह चंग सजैं मुख हो हो री होरी।
अंग अनंग तरंग लियैं हरि राधिका खेलत रंग सौं होरी ॥७४॥
(वृं० वि०)

हिंडोरा के कवित्त

केसरी कुसुंभी सूही सारी जरतारी भारी
लगी हैं किनारी छबि नारी नारी गन मैं।
जोबन के भार भरी सुमन सिंगार भरी
प्रेम मद भार भरी सौंधे भरी तन मैं ॥

बृंद कहैं झूलत हिंडोरें गोरे गोरे गात
जगमग जामिनी कि दामिनी ज्यौं घन मैं।
चलियें गुपाल लाल चमकत चुनिया सी
लाल लाल लाल मुनियासी बाल बन मैं ।।७५।।
(वृं० वि०)

उत स्याम बादर त्यौं सघन तमाल इत
दामिनी सी फबि रही राधे छबि छाई है।
गाजत मधुर तैसे नूपुर के सुर रंगी
पँचरंग डोर सुरचाप सुखदाई है ।।
झूलत झकोरन तें बारन तें हारन तें
मुकता झरत बूँदें भूमि झर लाई है।
वृंद कहैं सावन मैं ए हो मन भावन
बिलोको सोभा सघन हिंडारैं दरसाई है ।।७६।।
(वृं० वि०)

जाके अंग जगमग जोति को प्रकास भास
चंद्रिका सो हास स्वास बास मकरंद की।
हीरन के हार गज मोतिन के हार चारु
चोसर चमेली हार सोभा सुखकंद की ।।
राधिका बिचित्र चित्र चंदन रचित कबि
बृंद कहैं चित गति मोही नँद नंद की।
तास डोरिया की सेत सारी को झिलमिलाट
गंग के तरंग मानौं झिलौं मिल चंद की ।।७७।।
(वृं० वि०)

षड्ऋतु- र्णन

ग्रीषम मरीचिका सी हासी मृग मन मोहे
भूमि रस बरसत पाबस सुहाई है।
चंद मुख सरद जुन्हैया जोति की निकाई
सो तें थर थर कांपें गातें हिम हाई है ।।

सिसिर की सोभा नुत मंजरी प्रकट मोहैं
फूलित नबेली पिक मधु रितु आई है।
वृंद कहि ऐसे सब रितु सुख लीजे स्याम
बनिता बिचित्र छहौं रितु छबि छाई है ।।७८।।

(वृं० वि०)

प्रकृति-वर्णन : श्लेष कवित्त

देखे नैंन खंजन से दिज कुंद कली सम
बोलें पिक बानी सब मुख बासहू पराग की।
सोभित अधर बिंब भूषन कदंब संग
सोसन रहतै सुमन रुचि राग की।
सदा फलेंल स्त्रीफल से पयोधर बर
सोहैं फैली अंग छबि भले चंपक की।
वृंद कबि यह काहू बनिता की बात कही
नाँहि ने जू यह तो कही हें बात बाग की ।।७९।।

(प्रतिष्ठान)

श्रृंगार-वर्णन

काम भरी ब्रज बाम महा अनुराग भरी हरि अंक भरे हैं।
राबन से हरि………………लसे क्रोध के बोध लरे हैं ।।
नंद जसोमति वृंद कहैं सुत मोह पगे जग जानि परे हैं।
ग्यान बिग्यान धरेई रहै………………हि भाइ तरे हैं ।।८०।।

(वंशज)

पनघट बारो घनघट बारो वृंद कहैं
बाँकी लट बारो ब्रज बात बिसतारि गो।
राग रट बारो तन चंदन लपट बारो
निपट कपट बारो निकट निहारि गो ।।
लटक लकुटि बारो मुरली मुकुट बारो
चटक मटक बारो चटपटि डारि गो।
पीत पट बारो जमुना के तट बारो ए री
बंसी बट बारो बटपारो बट पारि गो ।।८१।।

(वृं० वि०)

श्लेष कवित्त

वहैं उरबसी सोभा पुहूची बनत नीकी
वहैं कंठ सिरी गुन भरी छबि छाइ कैं।
वह ई करन फूल जोति सों जगमगत वह
सीस फूल होत मोहित सुभाई कैं।।
वहै हार मोतिन कौं रूप मन मानत है
पाइ लसमान अंग संग रंग पाइ कैं।
जातें एती बातें बनी आवैं कबि वृंद कहैं
जात जात वहैं ल्यावैं भूषन बनाइ कैं।।८२।।
(प्रतिष्ठान)

राधिका का परिहास

मोहन खेलत है जहाँ फाग बनी बिच काच के आँगन बारी।
केलिकौं चातुर, खेल कौं आतुर आई तहाँ बृषभानु दुलारी।।
जानि के पानी सयानी तऊ चित चौंकि चली है समेटि कै सारी।
वृंद कहै उत कान्ह हँसे, पुनि ग्वारि हँसी सब दै करतारी।।८३।।
(वृं० वि०, अनूप)

कृष्ण का परिहास

रुचि मोहन की जिय मैं धरि कैं फुलमा भरि गागरि लै निकसी।
गइ ग्वारि जहाँ हरि हेरत हे गहि लीनी उतारि कै डीठि गसी।।
कबि वृंद कहै मन माखन मानि कै चाखत ही मुख मौन बसी।
जिय कान्ह खिसाइ लजाइ रहे उत कौं तिरछैं तकि ग्वार हसी।।८४।।
(वृं० वि०, अनूप)

मंदिर मैं मिलि खेलत ही अति मोहन ढीठ महा जिय जाने।
राधिका काच कपाट के भीतर ठाढ़ो समीप हिये सुख माने।।
वृंद कहैं हरि आये अचानक डीठ परे कुच कुंकुम साने।
डारत हाथ न हाथ चढ़े मुसक्यानी सबै भए कान्ह खिसाने।।८५।।
(वृं० वि०, अनूप)

छल मोहन सौं धरिगी बुबा सेज पै सौर सुधार कै ऊपर दै ।
हरि सो कह्यो प्यारी तिहारी क्यौं हौं समुभाय अबेली वै कुंज मैं हैं ।।
कबि वृंद कहै हरि आय तहाँ परिस्यौं पलका परसी न ह्येयै ।
द्रुम रंध्रन मैं तकि ग्वार हसो उत कान्ह खिसाय रहे चुप कै ।।८६।।
(अनूप)

नवोढा-वर्णन

प्रान पियारी मनोहर बानी सुनाइयें मानि निहोरे ।
दास भयो रहौं तेरी.........................कहौं कर जोरे ।।
मेरो कछू अपराध है तो भुजपास के बंधन देहु सजोरे ।।
काम हुतासन ताइ रखे...........................च गोरे ।।८७।।
(वंशज)

आज ही गौन कियो पिय पै मन मानी धरी इन धन्य जिया की ।
बृंद कहै अजहू लगि मोहि सखी इन की जु अयान हिया की ।
नैननि बैननि ओज उरोज भई गति आन की आन तिया की ।
या तन की दुति यौं प्रगटी उक्सायें तै ज्यौं दुति होत दिया की ।।८८।।
(वृं० वि०)

दाउ की सौंह तिहारो सौं मो अपुनी सौह फिर यौं झगरौगी ।
आपुही ते उठि आपु गीयौं अंगिया लहँगा हु उतारि धरौगी ।।
वृंद करो जु कहे की प्रतीत प्रजंक मैं बैंठ कै अंक भरौगी ।
'हहा करों छोरहु मोहि पिया तुम' आजि कहो सु बिहाने करौगी ।।८९।।
(अनूप)

वृंद बिचक्खिन लाल सुलक्खिन यौं रस खेल हिये अभिलाख्यो ।
लाइ सखी बरही तिय सौं पीय सौं मिलइ सु गई मिल दाख्यो ।।
आन गही जबही तवही कुच ऊपर अंचर दे गहि राख्यो ।
नाँहि हा हा जी, कहा करिहौ, बर हौ ! मोहि छोडहु यौं मुख भाख्यो ।।९०।।
(अनूप)

केतक दाइ उपाइ कीयै रति मंदिर मैं पग देत सकाता ।
सामुहैं लेउं तो पीठ दै बैठत सोवत चौंकि उठै बरराता ।।

काम कलोल की बात कहा कहौं, बातन हू की न हौं मोहि साता।
मोहि कान्हरो नांह दीयो बिपरीत करी बिधि भूलि बिधाता ॥६१॥
(प्रतिष्ठान)

प्रौढा-वर्णन

दंपति चातुर खेलति चोपरि दाउ रदच्छद को दुहु कीनौ।
वृंद कहै बहसै बिहसै मुख जीत को दाब पिया हठि लीनौ।
"यौं मत दीजियो यौं" कहि कै तीय पीतम कै रदन छद दीनौ।
हारी तऊ पीय प्यारे सो जीति कीयो प्रउढा रस खेल नबीनौ ॥६२॥
(अनूप)

स्वकीया मान-वर्णन

बदन अरुनताई नैक न जनाई और
बचन चतुराई की निकाई मैं न काई है।
रहसि की बात जो चलाई तौ न मौन ठई
आँखनि रुखाई है न भौंहनि चढ़ाई है ॥
वृंद कहैं और काहू बात पै न लखि पाई
प्यारी की सरोष रुख याही तें मैं पाई है।
पहिलें ज्यौं आपने अधीन जु बसत मेरी
आपनी कहत ही ज्यौं कहि न बताई है ॥६३॥
(वृं० वि०)

काहू के कहे री भौहें तरकि तरेरी करि
फीके बच भाखे अब नीके बच भाखि ले।
वृंद कहै जोबन गहेली अलबेली हेली
रिस अभिलाषी अब रस अभिलाषि ले ॥
मोहि हितू जानत है तो तू मेरो कह्यो कर
मान रस चाख्यो रति-दान-रस चाखि ले।
आप आय सौतिन के देखत मनाय पीय
तेरो मान राख्यौ अब तू ही मान राखि ले ॥६४॥
(वृं० वि०)

फूले दोऊ नैन बन फूल से भरत ऐन
चैन देन मैं न तन फूल्यो फल लीजियै।
फूल्यो अनुराग भाग फूलत सुहाग फूल्यो
फूल्यो यह जोबन पै नैंक न पतीजियै।
वृंद कबि फूल्यो बन सघन सु फूलन सौं
ऐसे समै फूलि फूलि प्रेम रस पीजियै।
फूल्यो इत चंद उत फूल्यो ब्रज चंद चित
एसी एसी फूलन मैं न भूल मान कीजियै ॥९५॥
(अनूप)

दूती-वर्णन

जानै न है रस की बतियाँ अरु हैं छतियाँ अजहूँ लौं अछूती।
मान अयान सबै मिटी है जब मेरी कही उन कानि पहूती॥
बृंद कहोगे सोई कहिहैं मुख जैसे कहैं सुक सारिका तूती।
जो सुख दै तुमको सब ही बिधि तो गनियो अपनी हित दूती ॥९६॥
(वृं० वि०)

बोल अमोल बिलोल सुलोचन काम किलोल सुधारस जैसी।
हास बिलास हुलास होये मुखबास सुबास तैं बानक तैसी।
वृंद सुजान कहाबत हौ पहिचान कै लैहु पिया छबि ऐसी।
मेरे कहे की कहा चलि है पीय हाथ कै कंकन आरसी कैसी ॥९७॥
(अनूप०)

श्लेष कवित्त

लाल रंग रंगी अंग चंगी चटकीली छबि
सोभा सरसीली अति चित अभिलाखीयें।
नाजक निपट निहुराये तैं निहुरि जात
मध्य भाग मूठि मैं समात सति भाखीयें॥
वृंद कबि कहै गुनबंती गुन कान कीयें
जिनके सहाइतें समर रस चाखीयें।

मेरो कह्यो मान पीय परम सुजान कान्ह
कामिनी कमान कर ही मैं गहि राखीयें ॥६८॥
(प्रतिष्ठान)

सोरह सिंगार सारी लाल सेत दाँतहि की
सबज सुधारी स्याम सुनो चित चाइ कें।
जोरि करि रहियो छचौकि परे तब
इत उत हेरि सारि लीजो दाब पाइ कै।
आज मन माने पासे ढरिहै तिहारे प्यारे
मेरी सिख सीखी खेल खेलियो सुभाइ कै।
वृंद कबि आपुही चतुर रूप बनि नीकै
चौपरि सी प्यारी को ल्याइहौं बनाइ कै ॥६६॥
(प्रतिष्ठान)

शुक्लाभिसारिका

सु सखी सुखदाई कों बताई ठोर बन माहि
सोभति निकाई वृंद कुंद के निकर की।
तहाँ सुचताई की बिछाई सेज मन भाई
कीनो अधिकाई चतुराई निज कर की।
खल तीय आई तिन ढूंढ़त पाई पीय
प्यारी ज्यौं सुहाई रेंन मानो सुखकर की।
जेती सेतताई तेती देखन दिखाई ऐसी
अमल जुन्हाइ छबि छाई हिमकर की ॥१००॥
(प्रतिष्ठान)

संयोग

वृंद कहै पीय आए अचानक प्यारी लजाय चिते रही भू मैं।
अंचर को सुधि भूलि गई निज नीबी गही रही हाथ दुहू मैं॥
प्यारे लइ भुज भीर तबै मुख नाही हा हा ससकै सिर घूमैं।
नैंन भरै, निहुरे सतराय, जिहिं मुंह फेरे तिहिं मुंह चूमैं ॥१०१॥
(अनूप)

खेलत ही अलि पुंजन मैं अलि गुंजन रंजन कुंजन माँही ।
कोमल कंज सुबास प्रफुल्लित छाए लता तरु सीतर छाँही ।।
ता समयै मन भावन की सखि आई बुलावन वृंद तहाँ ही ।
तासौं अनेक बिबेकन की मुख बात करैं अरु बोलत नाँही ।।१०२।।
(वृं० वि०)

देह नबाहि गुलाब के पानी सौं कुंकुम वृंद कपूरन माँजी ।
तै सिख ते नख लेहु सिंगार सजे कर दर्पन ले चखि आँजी ।।
बात दिढाय भरोसो दिबाय भई चलबे कुं तबे कह्यौ नाँ जी ।
बेर को बेर बिगारत यौं जैसे सौ मन दूध मैं बूंदक काँजी ।।१०३।।
(अनूप)

जात हुती सजनी गन मैं बन मैं बनि सुंदर खेल नबीनौ ।
वृंद सबै सखि आपन मैं कछु काम कला रस मैं मन दीनौ ।।
एते अचानक आन गही हम देखत कान्ह अरी कहा कीनौ ।
सौंह कि रोरि दिबाय रही कुच एंठ मरोर सुधारस पीनौ ।।१०४।।
(अनूप)

झूम झूम पबन झकोरन सौं वृंद कहै
ऐसो झर लाव जैसो परझर लावतो ।
मोरन के सोरन सौं घन मिल घोरन सौं
ऐसो घहराब तैसो तब घहराबतो ।।
बरस निसंक घन बड़ी बड़ी बूंदन सौं
प्रीतम समीप मेरो मेरे मन भावतो ।
अब तोसौं डरौं नाँहि तेरे पाँब परौं नाँहि
वे दिन बितीत भये जा मैं तू डराबतो ।।१०५।।
(वृं० वि०)

श्लेष कवित्त

वृंद कबि नीकी हैं बिसात पासे दाउ बिन
खेल कौं सबाद कैसें पाबत प्रमान कौं ।
सास पास बैठी तिह हेरत लजात प्यारी
चाहै पन रहैं त रहैं यौं सयान कौं ।।

सेर होन पावें तो करत जीय सात पान
छकहूँ न पावें एकें सारि उठि आन कों।
पगरो न पाव तो लौं झगरो करत आली
एते पर देखो प्यारी जीतें चाहैं आन कों ॥१०६॥
(प्रतिष्ठान)

मित्र को दरस देखि कर को परस पाइ
सब तन अतनु प्रकास प्रकटि न है।
बिबिध बीना ककोक पछीन के मन मोद
बनि बनि बानिक सबै योगबीन हैं॥
दीप दीप जगमग जोति को उदोत होत
वृंद कहि प्रीति को निबाहिबो कठिन है।
सोइ कहैं बैन जातें दंपति को होत चैन
रैन कहै रैन दिन कहैं कहैं दिन हैं॥१७०॥
(प्रतिष्ठान)

विरह-वर्णन

एक समै पिय आये पिया पहँ गौन बिचार हिये धरि हैं।
कहि वृंद सुधारस पान कियो बड़ी बार लौं अंक रहे भरि कैं॥
करि सीख चले तब तें तिय नैननि नीर प्रबाह परे झरि कैं।
मन हौं बिरहागनि आँच लगी सु जम्यो हिय नेह चल्यो गरि कै॥१०८॥
(वृं० वि०, अनूप)

यौंहि सुन्यौ पिय गौन तिया तब आन महा बिरहागन घेरी।
देखि दसा उपचार करे सखि ए कहि बृंद न आबत नेरी॥
ताल गयो न गयो दिसि उत्तर भोर भयौ सु भई गति औरी।
जारत बार भइ नहिं रंचक खार पहार की छार न हेरी॥१०९॥
(अनूप)

बन बन बाल मिल खेलत बसंत वृंद
काहू कहि हसि पिय चलबे की बात है।
तबही बिरह पीर भइ तन तइ तातै
धरि कै बिकल गति अति अकुलात है॥

ता परस्यौ पौन ताप रस्यौ हिम गिर
हिमगिरि एकै बार बिपुल बहात है।
तामे हर आप कह्यौ बह्यौ छ पाप
कहीं बहीं चाप कहीं ताप बहो जात है ॥११०॥
(अनूप)

जा दिन तें चले कान्ह प्रानपती द्वारिका कौं
ता दिन तें राधिका उसास अति लेत है।
ताप तन सीतल समीर नीर तें न सुखात
मैंन दुख दैंन लाग्यौ चैंन है न चेत है ॥
अंक पंक नाहिन ससक न कलंक यामैं
लागी रही स्याही की दिखाइ स्याही देत हैं।
वृंद कहि चंद यह त है ब्रज चंद ढिग
लखि सखि लिख्यो बिरहातरी को हेत है ॥१११॥
(प्रतिष्ठान)

चाह अरबिंद की न चाह चंद चंदन की
नाहि चाह सीत मंद पौन के परस की।
राग की न चाह बारी बाग की न चाह मेरे
नाहि चाह ए री तेरी बतियाँ सरस की ॥
वृंद कवि जाही सौं लगनि लागी वाही सौं है
जिन बिन घरी मोहि बीतत बरस की।
कही कर जोरि कोरि बातन की एक बात
मेरे चित चाह प्रान प्यारे के दरस की ॥११२॥
(वृं० वि०)

प्यारे बिन सेज सौंज देखे दुख दूनो लागै
यातें बैठ रही हे अँधेर इह भाँत है।
वृंद कहे सखि कहु कैसे कलि परे तोहि
एक दीप नाहि दूजो कैसी स्याम रातु है ॥
सुनत ही नाम सुधिआये सुधि भूल गई
औरे गति भइ ताप तइ अकुलात है।

ओरा घोरा पाय हिम चंदन मिलाय कीए
कोटिक उपाय तोउ नेक न सिरात है ॥११३॥
(अनूप)

वृंद कहि प्रानन अधार कान्ह प्रान प्यारी
कहों गति मंद कहों गति चलपात की।
कबहों सुभाइ कबहोंक सीरी भइ जाइ
कबहों तपति अति मति उतपात की॥
कर ही मैं रहै कर ही तें पुनि छूटि जाइ
रह्यौ बहराइ कं अतनु जुर पात की।
ताही रस दीजै और जिवाय जस लीजै वह
तुम बिन नार भइ नारी सनपात की ॥११४॥
(अनूप, प्रतिष्ठान)

पी बिन त्री बिरहागि जरी जकरी न घरीहु भइ सियरी।
हिम नीर उसीर समीर सुहाय न कंज कली हु करे सियरी॥
कबि वृंद कहे तन चंद्रक चंद न चंदन चित्र सहे जिय री।
तन पीर परी पियरी मुख तें जक लागी यहै पीय री पीय री ॥११५॥
(अनूप)

जिनसौं बिन अंतर ही निबही अब बीचि किते तरु आनि अरे।
अबलोकनि मैं पल बीचि न दी, अब बीचि नदी सर नीर भरे॥
कबि वृंद कहै ससि काम सरीर सु पच्छ हुते सु बिपच्छ खरे।
जिन बीचि मैं हार धरे कबहू अब तो तिन बीचि पहार परे ॥११६॥

वसंत-वर्णन

कोह भरे नैन बहि अंतर कुहू से ऐन
कुहू कुहू कैं पुकारैं बटपारे पिक हैं।
और ठोर ठोर भौंर चौरन की भीर भार
निरवै निसाचर के हिरवै न ठिक है॥
वृंद कहै काम बान खरे बिष भरे ए हो
अबला अकेली छाँड़ि जात तिन्हैं धिक है।

निहचै असंत याहि कहत है बसंत याको
नाम है बसंत पै उजारि पैं अधिक है ।।११७।।
(वृं० वि०)

आँखें अनियारी पिचकारी न्यारी छुटी रही
नीर भीर भर्‍यो उमगत अति हियो है ।
बिरह बिलाप मुख हो हो करतारी गारी
सोच कीच बीच लपटाइ तन लियो है ।
वृंद कहै मुख की ललाई सो गुलाल सम
धीरज अबीर ज्यौं उड़ाइ सब दियो है ।
कंत के बियोग तें बियोगिनी बसंत माँहि
प्रेम पागि फाग लागि कैसो खेल कियो है ।।११८।।
(वृं० वि०)

गूढ़ कवित्त

मैं तो चाह धरी चित दुतिया के चंद सम
तुम पून्यौ चंद सम चित चाह आनी है ।
मो रति मिल जुग जाम धुर धाम सम
तुम जुग जाम धुर छाँह रति मानी है ।।
दोहा करि कहौं नाहि एक बात कहो तुम
मैं तो इन माँहि वृंद परकी न मानी है ।
मैं तो तुम सो है करी चार सम प्रीति तुम
हम हू सौं सबति सम प्रीति ठानी है ।।११९।।
(वृं० वि०, प्रतिष्ठान)

जाकी बात बिच ठोर ठोर एक पाव दहै
जाके नैन तीन तीन गुननि सहित ही ।
छती आध नीति जैसे बातें दोइ आध कहै
आतैं दोइ दोइ सु तै तीन तीन चित ही ।।
बीस पाँच तीन हतें साढ़ी तीन दून कहा
साढ़ी इकईस ठठ ह्वै तो तजि कित ही ।

वृंद कहै सुनि मानि[1] ऐसे साढ़ी चार लल-
ना तें आदि आँक सौं सनेह कीजे नित ही ॥१२०॥
(वृं० वि०, प्रतिष्ठान)

देखी आजु हस्त चित लीयें काती मगसिर
मीन मेष मकर सरूप सुख दानी हैं।
सोहत मिथुन कुंभ और सिंघ तुल मध्य
मूरति सलौनी वृंद साथि पहिचानी हैं॥
सोरभ कलस और बिरहिन आदि आदि
मध्य मध्य अंत अंत वै बर समानी हैं।
आधो आध परत हो तेरं जो मिलाव मोहि
तोहि दे उर तो जाकी अकह कहानी हैं॥१२१॥
(प्रतिष्ठान)

सुनहु सयानी पंचदस बिंब देखत ही
सत बिसरं पंच नन दीने हैं।
छल आध भरन अढाई नन हूँ की लाज
बीस दून लल हू ताकी बात न प्रबीने हैं॥
मिलन कीनो ताही तिहि गुन उ भीन सन
कें आदि बेंदि देकें आइ तें भी हठ लीने हैं।
पाब च्यार सस ह्वं तो कहि तूं कहत वृंद
बोलन पचास है है जीय कीने हैं॥१२२॥
(प्रतिष्ठान)

ताहि कहैं साढ़ी कबि साढ़ो तीन दून तेरी
तिघन तिहाब नितें मेरे पीउ बयो हैं।
और ही के दोला साढ़ी ग्यार बब खेलै हैं
पै याही कै अतीन लीखो देख्यो खेल नयो हैं।
यह तोरि दस च्यार आध नाँहि नेंक हारी
आगें तें होठ दून तातें ढीठ भयो हैं।

पाठान्तर—१. औ निसानी

इन याके ढोला बृंदाबन मैं तिरीरी मेरें
तिरीरी दे करि तिलाला छीन लयो हैं ॥१२३॥
(प्रतिष्ठान)

यमक कवित्त

दसन बसन तेरें दसन बसन कीन्हों
दरकं हसन हरें बचन भरत ही।
अरुन जलज जैसे अरुन भये हैं नैंन
अरु नभ अरुन प्रभात निरसत ही॥
बिथुरी अलक अलि अलि सी अलक पर
बृंद प्रीति रीति मो पें कही न परत ही।
काहे कौं दुरावै हम जानी हैं उरोजन मैं
नख रेख रेखी नखरे खरे करत ही॥१२४॥
(बृं० वि०, अनूप)

सोभित सुबास मन लोभित सुबास मुख
देखत लजात जलजात से नयन हैं।
रूप उरबसी रति उर उरबसी बृंद
उर बसी प्यारे पीय मूरति मयन हैं॥
भारी भरि अंक मृग अंक मुक्तनि माल
टूटी अंक अंग मृग अंक से नयन हैं।
उठी हैं अलक सानी सौंधे सौं अलक सानी
बसुधा सुधारी बिधि सुधा से बयन हैं॥१२५॥
(बृं० वि०, अनूप)

मानत न गाड़ो गहै मानत क्यौं हूं कहैं
मानत न तेरो जब मानस गनात हैं।
सो पीउ दयो मनाइ पाइ सिर नाइ नाइ
बातन बनाइ बृंद तें वह ठगात हैं॥
ए बसत रातन मैं ए लसत रातर मैं
मैंना सतरात बिधि पूछत दुरात हैं।

तनक न सेत रूप तनक न अधरा मैं कन
कन हार भयो कन कन कन बात हैं ॥१२६॥
(प्रतिष्ठान)

एती मनुहार कीयें एती मनहारि रही
एते मान यातें मान गहै न मनात हैं।
कहे कबि वृंद तू तो सुनहु स्रवन बारी
वै तो बनवारी बन बारीयो न जात हैं॥
बातें वे बिसारी सारी बीसहुँ बिसारी चली
जाति हूँ बिसार चली काहे सतरात हैं।
नाह के सुहातें करी नाहि तैं सुहातें तोहि
नाहीयै सुहात मोहि ना हीय सुहात हैं॥१२७॥
(प्रतिष्ठान)

सजनी सजनी रजनी रजनीस चिते हूँ चितै न खिलैं अखिलैं।
तन लागत मोहि नलैं अनलैं सम नाहि सुहात निलैं अनिलैं॥
मन मोहन कैं मनमोहन हैं बसहों बस हों बसहों अखिलैं।
तन को तनकौं न सँभारि सकैं पलकैं हु कहू पलकौं न मिलैं॥१२८॥
(प्रतिष्ठान)

मूरति मधुर सुर मुरली मधुर सुनि
मोहें सुर मुनि सुर पुर होस हरीयें।
कटि पीत पट मोर पच्छ को मुकट नट
नागर निकट बसि प्रेम बस परीयें॥
वृंद कहैं गुरुजन जन भ्रुकोत को पुरजन
सुर जन दुरजन काहू सौं न डरीयें।
पल अनमिल रहीयें न मन मोहन सौं
पल अनमिल नैंना देखि छोई करीयें॥१२९॥
(प्रतिष्ठान)

एक स्वर चित्र कवित्त

एक स्वर सजन अपत जगमगत
अचल जस जगमग दरस सरस कर।

अचल बसन दस बसन लसत तन
गरल असन बर असन बरद बर।
अजर जरन गन धरन हरन अघ
बरन बरन जन चरन सरन धर।
अमल बदन खल मदन कदन मुद
परम सदन दत करन परम हर ॥१३०॥
(प्रतिष्ठान)

गतागत कवित्त : परमेश्वरजीरो भवानीजीरो

जे गन मानव पायन ते तस भाव भए भुवि धार भजे।
जे तन आप जपैं जमनाहि लहैं जस ईसुर भाजि छजे ॥
जे सरधा सु हिता सु रढ़ै पद बूंतन मैं सद मोह मजे।
जे रइ रार सु बेगि जजे नित स्रीबर केसर तंत सजे ॥१३१॥
(प्रतिष्ठान)

चोक ह्वै न आउ नारकेर घृत को बनाउ
खिचरी खवाउ सुनि नेह की उजागरी।
ठोर मनि की बताउँ पौर गढ़ की ढहाउ
बंदूख की गोली करि लाउँ बुधि आगरी ॥
नार की नारि द्विज नागर की नारि पुनि
नगर की नारि दिखलाउँ सुख सागरी।
सखीन प्रसन्न कीनो उत्तर सखिहूँ दीनो
वृंद कहैं नागरी न नागरी न नागरी ॥१३२॥
(प्रतिष्ठान)

प्रश्नोत्तर छप्पय

मनि बिधाउ चौपरि खिलाउ बीबीना सजाउ भनि।
छीनी लाउ अरि लरि हराउ सिबतरु बलाउ बनि ॥
निसि मिटाउ दीपक दुराउ रंग लाल बाउ पट।
धनु चढ़ाउ चोसर बनाउ उपगार चाउ बट ॥

कवि कह्यो आनि काहू चतुर वृंद बषान बिधान धुन।
इहु उत्तर जानि सुजान नर सारी बरन पतंग गुन ॥१३३॥
(प्रतिष्ठान)

गृह छबाउ गढ़ मुष ढहाउ बगतर जुराउ करि।
घट बनाउ रथ पथ चलाउ चक्री कहाउ धरि।
साध बान लच्छन बषान करि दीप बान धन।
रचि मिठान करि जुर बिलान मिलि मुक्कि मान मन।
यह कह्यो आनि सुजान नर उकति अनेक बिबेक बस।
तब प्रत्युत्तर वृंद कहि करी न चक्र न लच्छ रस ॥१३४॥
(प्रतिष्ठान)

करिअ बाज बंदूख की हर रोगी को रोग।
कायथ जन उनमत्त करि नहि दारू को जोग ॥१३५॥

कथ बाहौ जगि धरम पाप बढ़ माण बेधि मम।
ठगता खलता छड़िता पमन थंमि थंमि बम॥
चित्त चढ़ि धण सामिजे मछ बिफलाहि भाण चित्त।
भूठ टेब डर ढाहि सुचिर हीय लीणता सहित।
सब दीह भाव धरि नाम लपि लाभ परम पद फल लहसि।
कबि वृंद कहैं इण कबित्त सुं बरण चित्त बंछित लहिस ॥१३६॥
(प्रतिष्ठान)

चित्रोपरि

चंदमुखी मुख चंद इतै उत चंद उयौ सु प्रकासन थोरें।
हाथ बरी छबि जोति भरी अति ऊँचे फुहार छूटे जल जोरें॥
तापर पंख रह्यो थहराइ कै चारु चकोर पेर्‌यो भ्रम भोरे।
उं चितवै छिन यो चितबैं सु चढ्यो जनु चित्त चितोनि हिंडोरें ॥१३७॥
(प्रतिष्ठान)

कादि अनुप्रास

कोमल कमल से किसोर कमनीय काय केसी कंज कुंजर करोरिन को काल हैं।
कपटी कुटिल क्रोधी कुच्छित कलहकारी कुमती कुसंगीन कौं कठिन कराल हैं॥

कंज कंबु कौमोद की कलित चकर कर कचन की कंजन की कंठ कंठमाल हैं।
कामना कौं कामतरु कामधेनु कामकुंभ·····························।।१३८।।
(वंशज)

कालिंदी के कूल तें कराल काल करबस
कोपि काढ्यौ कठिन क्रूर क्रूरकारी हैं।
केसी कंस कुंजर कलेबर कवन कीनौं
कूबरी कुरूप कमनीय कायकारी हैं।।
कुकुंज कुंजन मैं कोकि कामिनी कदंबन कौं
काम केलि कलित करत किलकारी हैं।
करुनाकरन कहौ कहत है वृंद कबि
कैसे कैसे काम कीए कान्ह कायकारी हैं।।१३९।।
(वंशज)

समस्यापूर्ति

समस्या : पयोनिधि पेर्‌यौ चाहै मिसरी की पुतरी।
पूरन परम परब्रह्म को भरोसो राख
सुन मुनि साख जिन डोलै इत उत री।
थिर चर जीवन को जीवन की वृत्ति दीन्हीं
ताही सौं रचि रुचि राच प्रीत जुत री।।
वृंद कहै साहिब समर्थ सब बातन मैं
जिनकी कृपा तें ऐसी बात अद्‌भुत री।
पंगु गिरि गाहैं मूक निगम निबाहैं क्यों न
पयोनिधि पेर्‌यौ चाहै मिसरी की पुतरी।।१४०।।
(वृं० वि०)

कुंभज करूर ताकी कठिन करूर दीठ
देखिके डरानो न हिलानो इत उत री।
पर हर लहर गहर गाज छाँड़ दई
वृंद कहै भई गति अबीठ अद्‌भुत री।।

अमल मुकुर कैसो अचल सुभाव गह्यो
रह्यो दब भई बात ऐसी अद्‍भुत री।
ह्वै कर निसंक अंक ऐसो दाव पाय क्यों न
पयोनिधि पेर्‌यो चाहै मिसरी की पुतरी ॥१४१॥
(वंशज)

औरंगजेब को ललकारना

उनके प्रभाव उन्हें पूजत हैं सब लोक
उनके प्रभाव वह साहिब अनंत को।
उनकी सहाय वह उनकी सहाय वे हैं
ताते न बसायो कछु औरंग असंत को॥
देह देहरान छोड़ि दोऊ गये देवलोक
ताते ए गिराये यह तंत बिरतंत को।
मानों जसबंत माँहि अंस हुतो देबन को
देबन में अंस हुतो राजा जसवंत को ॥१४२॥
ए हो साह औरंग कहावत हो पातिसाह
आप ही विचारो यह कैसी सु बिहानगी।
जब महाराज लाल डेरा ने लगाइ लूटे
तब क्यों न लरिकै दिखाई तेग बानगी॥
देस परदेस सूबा केतक इनाम दीन्हें
कीन्हीं दिलजोई अरु प्यार पर बानगी॥
अब जसबंत सुरपुर को सिधाये तब
तेग बाँध आये यह कैसी मरदानगी ॥१४३॥
(वंशज)

छोड़े फिरे तखत बलत बली दिल्ली पति
सोच ही रहत जाकूं बात चित्त चाही को।
गाम गाम धाम धाम अजिया धामधूम
साम सूम होइ रह्यो सबै जाहि ताही को॥

राग है न रंग है न कहूँ कछु ढंग है
　　　　हित चित भंग तंग बखत सिहाही को।
राजा जसबंत जू को आयु बल खूँटत ही
　　　　खूट गयो खूबी को खजानो पातिसाही को ।।१४४।।
(वंशज)

अदानी दाता

सोवत हैं अब ही तो तेल मैं अनात अब
　　　　भोजन करत अब फिरत बताईयें।
अंदर हैं अब कछु काम है जू खेलत हैं
　　　　अब समैं नाँहि जाहु साँझ फिरि आईयें ।।
वृंद कबि ऐसी बानि द्वारि दरबान काढ़े
　　　　बेर बेर कबिन कौं कहि बहराईयें।
घटि गयो दान अभिमान बढ़्यो कलि माँहि
　　　　का पें आई गाइ गुन कैसें कें रिझाईयें ।।१४५।।
(प्रतिष्ठान)

सबन के मन कुच गिरि घाटी बीचि घेरि
　　　　रोमराजी बन कटि तट सिंघ हेत हैं।
अधर कपोल हासी बेसरि अलक ए तो
　　　　चौंकीदारनें कहौं कहौं न जान देत हैं ।।
तान की चपेट नैंन बानत सुमा करि
　　　　वृंद कहि हेम नग भूषन समेत हैं।
कबिन कौं देती बेर साहन के सोच परे
　　　　मालजादी[1] ऐसें मुहुँ मारि छीन लेत है ।।१४६।।
(प्रतिष्ठान)

पाठान्तर—१. रामजनी।

अकृतज्ञ स्वामी

वे तो रोजगारी रोजगार के उमेदबार
तुम रोजगार देत मैं नैंक न डरत हो।
षिजमति चाहैं षिजमति बीच औवें तुम
षिजमति करि करि उलटि परत हो।
राषिय तमाम सिरपाब लीयो चाहै तुम
करिय तमाम सिर पाब ही धरत हो।
वृंद कहैं चाकर की चाकरी बनत कैसें
साहिब कहा ऐसी साहिबी करत हो ।।१४७।।[1]

(प्रतिष्ठान)

पूर्व देश के लोगों का वर्णन

तेल मैंल मिलत नितंब सिर एकैं चोल
काक से कुबोल अति कुटिल कुरंध की।
षोले बाँह कुथल कुरूप औ कचील गात
लंबे लटकात कुच कंचुकी न बंध की ।।
देषीनें सुहावे कान सुनैं तैं गलानि आवै
दई निरें गति दई पति मति अंध की।

पाठान्तर—१.

रहैं रोजगारी रोजगार के उमेदबार
वहै रोजगारी देत नैंक न डरत हैं।
षिजमत चाहैं ताकें षिजमत बीच आवैं
वहैं षिजमतकर उलट परत हैं ।।
राखइ तमाम सिरपाव लियो चाहैं वह
करइ तमाम सिर पाव ही धरत हैं।
वृंद कहैं चाकर की चाकरी बनत कैसें
साहिब कहाय ऐसी सायबी करत हैं ।।

कारी कारी मुकरी सिवूंर तें संबारी ऐसी

पूरब की चारी दारीदरी दुरगंध की ।।१४८।।

(प्रतिष्ठान)

पाहर ठाहर बीचि बसें जहाँ 'गाउ दु' छप्पर की रजधानी ।
लंग धरंग लँगूर से डोलत बोलत हैं मुख लोक कुबानी ।।
साहिब होत सहाइ तहाँ कबि वृंद त समेत की बात बखानी ।
राह् चलें तब भार लगै फुनि भार लगें पतभार के पानी ।।१४९।।

(प्रतिष्ठान)

नामानुक्रमणिका*

(अंक छंद-संख्या के सूचक हैं)

---

* बचनिका २६८-२७४, ४३२-४३८, ५१६-५५०; तथा सत्य रूपक २३६-३०३ में योद्धाओं के नामों की लम्बी सूचियाँ मिलती हैं, जिन्हें अनिश्चय के कारण प्रस्तुत अनुक्रमणिका में स्थान नहीं दिया गया है।

शुद्धि-पत्र

(तारांकित शब्द मूल पाठ में छूट गये हैं। अतः इन्हें जोड़कर पढ़ना चाहिए।)

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	२५	४	धूलि	भूलि
३९	२९	४	उलही	उलही उलही*
४०	३२	३	मीठि मीठि	मीठी मीठी
— वही	—	५	जस	जस लै कें*
४०	३३	२	अनंअ	अनंत
४२	४६	२	निखारियें	निरवारियें
४३	५२	२	बैठिन	बैठि
४३	५४	१	व्यौरि	व्यौरि व्यौरि*
४४	५६	५	अलन	अतन—?
४४	५९	२	नक-बेसिर	नक-बेसरि
४५	६१	५	प्रिय	पिय
४५	६५	१	अन	अँन
४६	६९	६	काही	ताही
४७	७४	१	सोई	सोई चलियें*
४८	७७	२	हैं	है
— वही	—		सारै	सार
४९	८२	३	हारे	हार धरे*
५२	५	३	रति	रति रंग*
५२	६	५	कहत	कहत बृंद*
५२	८	१	रस	रस जाति*
५४	१५	१	रंग	रंग रस*
५४	१५	३	निरिष—	निरषि उन्नत ?

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५४	१७	४	चढि बर	चढि गिरिबर*
५५	१६	१	चपत	चँपत
५५	२०	४	फुल	फूल
५६	२१	६	बूंद	बूंद प्रसिघ*
५६	२२	६	परस	सरस
५६	२४	४	तप	तरु
५८	२	२	बसाय	बताय
६०	२२	२	पंखा का	पंखा को
६१	३३	१	करि सक	करि सकै
६२	४८	२	पति के अंधे	पति अंधे
६६	९६	१	बैसे	कैसे
६७	११६	२	सीत	सील
६८	१३२	१	छिहिं	जिहिं
६९	१३४	२	दुहिन रुन का	दुहुनि रुकमि
६९	१३९	२	समुर्भों	समुभैं
७०	१४८	२	रौति	रीति
७१	१६५	२	समुभौ	समुभै
७१	१६६	२	बिरंथ	बिरथ
७१	१७१	२	कबूं	कबहूँ
७३	१८७	१	ऐस	ऐसो
७३	१८८	१	भागवै जाय	भोगवै आय
७३	१९५	२	बिकत	बिकल
७५	२२२	१	भलौ	भलौ भलौ*
७६	२३१	२	पर	परि
७६	२३५	१	दोख	दोस
७९	२७२	२	बदली	कदली
७९	२७३	२	बिताय	बिलाय
८०	२७८	१	गन त	गुन तैं
८०	२९०	२	खेत	खेल
८२	३१३	१	बूड़ो	बूभे
८६	३५८	२	वैसैं	कैसैं
८६	३६४	२	दीपक कैं	दीपक तैं
८७	३८१	२	लियौ	दियौ
८८	३८२	२	चहा	चूहा

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	३८३	१	घन	घन
८८	३९४	२	घर जायि	घर आयि
८९	३९६	२	निकष	निकस
९०	४१०	१	बुबुघ	कुबुघ
९३	४५१	१	छोडिये	छेडिये
९३	४५६	१	कारन	कारज
९३	४५७	२	लोय	तोय
९४	४६९	२	बर	घर
९५	४८२	२	जलै	चलै
१००	५३४	२	छलना	छतना
१००	५४४	१	चतर	चतुर
१०२	५६०	२	बिचार	किबार
१०३	५७८	पाठांतर	जिरमूल	निरमूल
१०४	५९५	२	घप	घूप
१०५	६००	१	तालस	तलास
— वही —		२	आघ	आँघी
१०७	६२५	१	समें	सौ
१०७	६३३	२	माटै मोटी	मोटै मोटी
१०७	६३४	१	चिरंचीब	चिरंजीब
१०९	६५४	१	बिहिन	वहनि
११०	६७३	२	जमदानि	जमदगनि
११३	७११	१	अकूर	अँकूर
११५	१	१	संडा डंड प्रचंड	सुंडा डंड प्रचंड
११६	५	२	षेडेवे	षेडेचे
११६	१२	—	सलाखा	सलखा
११९	३५	८	जाइक	जाइक –?–
१२०	३७	३	देब्बाँ	देष्षाँ
— वही —		५	खेसि वसमारत्ती	रोसि चसमारत्ती
— वही —		६	धमकै	धमक्कै
१२०	३८	२	बिचलायो	चिचलायो
१२०	३९	२	निदाह	निबाह
१२२	४५	२	पातिसाही	पातिसाह
१२२	४८	१	बैसाख ही	बैसाख ही की*
१२३	५२	१	जैसी	जैसौ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२३	५२	७	कबिता	कबि ता
१२३	५३	२	वाह	चाह
१२३	५४	२	पाठ पाठ	पाठ पठि
१२३	५७	२	तान	बितान
१२४	६०	२	संवर संथान	सुंदर सथाँन
१२४	६६	२	भेदात	भेदत
१२४	६९	२	लाँगत	लागँत
१२५	८२	२	प्रत्ताप	प्रताप
१२५	८३	१	बिसेसि	बिसेषि
१२६	८४	१	मिताँन । बिधि	बिताँन । बिध बिध
१२६	८९	१	किम	किय
१२६	९०	२	हाथर	हाथ
१२६	९०	८	जडावरसों	जडाव सों
— वही			किन्या	किया
१२८	९७	१	बिबच्छन	बिचच्छन
१२८	९९	३	अध घरम	अघ घरम
१२८	१००	२	संपति घरी	संपत्ति घरी
१२८	१०१	२	भगतिरमय	भगति मय
१२९	१०४	१	बय उकति सरलममति	बच उकति सरल मति
१३१	११८	२	बिसेसि	बिसेखि
१३१	११९	२	छिपमहि	छिनमहि
१३१	१२४	१	परजात यह रात थहराततरु पात पै	परसात यह तरु पात पै
१३१	१२४	४	सकल	सकत
१३२	१२७	८	सर	जर
१३५	१२६	२	कन	मन
१३५	१३७	२	बलंक	बलक
१३६	१३९	२	गत्तर	उत्तर
१३७	१४३	१	षलक	बलक
१३७	१४७	२	पधराएँ	पधराए
१३९	१५१	७	रीति पागौं	रीति पागें
१४०	१५५	६	भुलि	मूलि
१४१	१६०	बचनिका	निरंतर	निरंतर याही*
१४२	१६२	बचनिका	दाजा रूपसिंघ	राजा रूपसिंघ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१६२	२	दीति	रीति
१४३	१६६	३	हाँ हुँसियार।	हाँ हुँसियार हाँ हुँसियार*।
१४४	१६६	२	नजर	नजर
१४४	१७०	७	भाटी सब ले	भाटी सबल
१४४	१७२	१	पाइणी	पोइणी
१४८	१६१	५	खन	घन
१४६	१६३	१	षातू	षात
— वही —		५	रात	पाठांतर—गात
१४६	१६५	१	फली	फैली
१५०	१६८	४	बियै	पाठांतर—हियैं
१५२	२१०	३	बिस्ता	बिरत्ता
१५३	२१४	१	आभिष	आमिष
१५४	२१६	१	जेठ	जेठ सुदि*
१५४	२२१	१	मंडल	मंडप
१५६	२२६	५	तोल जाकौ	तोल ताकौ
१५६	बचनिका	६	कणाट	कर्णाट
१५८	बचनिका	११	हकीकत पाइश	हकीकत पाई ?
— वही —		१३	त्यावै	ल्यावै
१६०	२३६	१	चल्ल	मल्ल
१६०	२४४	४	किले	कीले
१६१	२४७	२	जंग	पाठांतर—चंग
१६१	बचनिका अन्तिम पंक्ति		तिस ही···जिसहि	जिस ही···तिस हि
१६३	बचनिका	६	घर	घरै
१६३	२५८	३	बिकयै	क्किये
१६३	२५८	६	बिबहार हे	बिबहार है
१६५	२६६	३	ऐक	एक
१६६	२७८	१	बार	पार
१६६	२७६	२	गहबिक···झमबिक	गहक्कि···झमक्कि
१६६	२८०	२	तोषपखाँनै	तोप खाँनै
१६७	२८६	३	सरम्भर	सरम्भर
१६७	२८७	२	लायै	लीयै
१६८	२६१	१	छिल थर	छिल थल
१६६	३०४	१	खिलि	खिति
१७०	३१६	१	भूमइयौ	भूम्यौ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७०	३२१	३	भुज पर्‌यौ	भुज घर्‌यौ
१७०	बब०	३	भुकाँम····दाबा	मुकाँम···घाबा
१७१	३२३	२	घर	घर
१७१	३२६	३	क्या तरता	क्या करता
१७२	३३०	५	चार्‌याँ	चार्‌यौं
१७३	३३५	—	भरयंभ	भरथंभ
१७४	३५६	१	काँधिल्य	काँधिल्ल
१७४	३५७	१	उदाब्रत	उदाबत
१७५	३६३	२	पुरजेषुर	षूबजे षुर
१७५	३६४	२	मूर	सूर
१७५	३६७	२	चिंत्त	चित्त
१७८	३८३	७	जब के	ज़ू के
१७८	३८७	१	तरत	तरल
१७९	३८९	१	थेथ	थेट
१८०	४०२	१	उचित	उदित
१८१	४०९	१	ताल	लाल
१८२	४२१	१	लनत	खनत
— वही	—	५	सन	मन
१८३	४२३	४	निरमल	रिनमल
१८४	४२८	२	ध्वजै	धूबजै
१८४ वही	—	१	सहिर	रुहिर
१८५	४३६	१	कैसे कथन	ऐसे कथन
१८५	४३८	३	ठाकुरै सी	ठाकुरसी
१८५	४३८	४	सूरबीरो	सूरबीरों
१८६	४४९	२	रत	रन
१८७	४६०	१	सुहाय	सुहाथ
१८८	४६९	३	बिसेषि	बिसेषि बिसेषि*
१८८	४७२	२	परचाका मुकति	परचारिका मुकति
१८९	४७३	अन्तिम	उमरावौं ने यह	उमरावौं यह
१८९	४७८	२	बहोदैं···बिहादै	बहोरैं···बिहारै
१९०	४७९	२	वहै	रहै
१९०	४८०	४	घवा···ध्रुवे	घरा····ध्रुवे
१९०	४८१	२	बीव	बीर
१९०	४८३	३	पहै	परै

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६०	४८४	१	हुंग	रंग
१६१	४८८	२	जोह	छोह
— वही	—	३	लाल रत	लाल रत्त
१६२	५००	२	भजाभच्च	भचाभच्च
१६३	५१२	१	दहसल	दहसत
१६२	५०१	२	गाढ गाढ	गाढ गाढै
१६३	५०७	२	थभै सूर सूरत	थंभे सूर सूरत्त
१६६	५२३	२	बस	बल
१६६	५२४	३	घजन	घसन
१६६	५२६	२	रत	रन
१६७	५२६	१	कुभक्रं न	कुंभक्रं न
१६७	५३६	१	तर्‍यौ	लर्‍यौ
१६७	५४०	१	रहे रब	रहे रन
१६६	५५४	५	त्तराल	त्तरल
१६६	५५५	१	गिरदं	गिरंद
२००	५५६	५	राजलाल	राजलाज
२००	५५६	७	रंज	रंच
२०१	५६४	४	भट	भट घट*
२०२	५६७	२	वह	वहा
२०२	५७५	१	पंग	रंग
२०३	५८१	१	सतपै	सतरै
२०५	११	१	चपपटी	चटपटी
२०६	४६	२	जब	अब
२१०	५८	२	जय…मंजय	भय…भंजय
२१०	६१	२	सार	हार
२११	६३	१	हुले	हुते
२१६	१२७	२	अज-जतन	अ-जतन
२१६	१६८	२	कदत	करत
२२०	१७५	१	दाबे	राबे
२२०	१७६	२	छुटत	छूटत
२२०	१८६	१	तरसत	तरसन
२२३	२१८	१	जभी	जमी
२२३	२२३	२	नदी नदी नदी	नदी नदी
२२४	२३३	१	आबप	आबन

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२५	२४४	२	वैलत	षेलत
२२५	२४६	१	कह	कइ
२२६	२५६	२	झरन	झरत
२२६	२६२	२	रचनीपति	रजनीपति
२२७	२७०	२	मनमय	मनमथ
२२७	२७३	१	सुरगायक	सुरनायक
२३०	३०८	१	अकू सारि	अकूँपारि
२३०	३१२	१	बास	बाम
२३३	३४६	२	जगत	लगत
२३७	४०५	१	चितबन	चितबत
२४३	४७६	२	गनरि	गारि
२४७	५२६	१	निरबिद्या	निरबिद्या बिद्या*
२४६	५५७	१	पगार	पराग
२५०	५६४	१	भज	भजै
२५०	५६७	१	सरबती	रसवती
२५२	५६२	१	मत मतंग	मत्त मतंग
२५२	५६४	२	हमकि	हमहि
२५३	६११	२	हमत	हसत
२५४	६२५	—	अंतलापिका	अंतर्लापिका
२५८	६७६	२	हिब	हिय
२५८	६७८	२	अपरन	अरपन
२६०	६६६	१	जीनन	जीवन
२६३	७	२	हन्या	हन्यो
२६४	२०	८	राजदान	राजवान
२६४	२१	५	हरकि	हरहि
२६६	७०	४	चिल	चित्त
२७०	८०	३	सुबकिय	सुक्किय
२७०	८१	४	मूर	सूर
२७२	६२	२	घर घर आस	घर आस
२७५	१२४	५	सगाग्गै	सगग्गै
२७६	१३१	१	लरन	लरत
२७६	१३६	१	आथ	आय
२७७	१४२	२	नोबल	नोबत
२७७	१४४	२	सार	साह

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७७	१५१	२	कपैं	करैं
२७८	१५२	२	कपैं	करैं
२७८	१५४	४	घपै	धरै
२७८	१५५	४	ऊपपैं	ऊपरैं
२७९	१६२	२	काल	लाल
२८०	१६९	१	बीरत	बीरत्त
२८१	१७६	२	बदहि	बर्दहि
२८१	१७७	२	विघो	किधों
२८१	१७९	२	बायै	बायें
२८२	१८६	३	मत	मत्त
२८२	१८७	१	तष्यो	लष्यो
२८६	२१३	१	महाबत	महाबल
२८६	२१६	२	बिरच्यों	बिरच्च्यो
२८८	२२६	१	बीरता	बीरत
२८८	२२७	१	रावत सत्यं	रावत्त सत्थं
२८९	२३१	३	रावत	रावत्त
२९०	२६०	२	तणनि	तणी
२९२	२६८	१	सुनत	सुतन
२९२	२७०	२	कहै	करै
वही	२७२	१	कहै	करै
२९३	२८२	२	माहै	मारै
२९३	२८३	१	बद	बर
२९३	२८४	१	पिदाग	पिराग
२९३	२८४	२	कहै	करै
२९३	२८७	२	भादथ	भारथ
२९३	२८८	२	जैंठ	जठै
२९४	२९०	२	संगाबत	सांगाबत
२९४	३००	२	ती	की
२९५	३०६	२	किते	कित्ते
२९६	३०९	२, ४	छट, रत	छूट, रत्त
२९६	३११	३	भृत	भूत
२९८	३२९	३	उम्भारिय	उब्भारिय
२९९	३२१	५	थल	थट
२९९	३३१	४	उम्भार	उब्भार

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९९	३३१	अन्तिम	आजम	माजम
२९९	३३४	१	सिधार्यौ	सिधार्यौ
— वही	—	२	कर्मान	कम्मांन
— वही	—	अन्तिम	जाह	साह
२९९	३३५	५	मुंह	मुंड
३००	३३७	२	जर्‌यौ	सर्‌यौ
३०१	३४७	१	बजाग	बजाय
३०१	३४८	१	आजम	माजम
३०१	३४९	१	राजढ़	राजड़
३०१	३५०	२	परजि	परसि
३०१	३५१	१	हाघ	हाथ
३०१	३५४	२	पवेंगा	पवँगा
३०२	३५४	१	केई कपडे	केईक पडे
३०४	२	३	लरधरि	लरथरि
३०७	१	१	नीर धीर	नीर धरि
११३	१३	—	दंशज	वंशज
३१४	२०	२	अरुत	अरुन
३१६	२७	५	नवनिद्धि	नवनिधि
३२०	४०	५	छहि	कहि
३२२	४६	५	हरि-हरि	हरि-हर
३२३	४८	६	षडमुड	षड्मुख
३२४	५१	१	सोव	सोई
३२४	५३	३	जनन	जनम
३२५	५६	२	सखकारी	सुखकारी
३२५	५७	१	स्लामी	स्वामी
३२६	६०	३	कोक	लोक
३२९	७०	७	सखकारी	सुखकारी
३३१	७६	८	हिंडारैं	हिंडोरैं
३३३	८५	१	ढोठ	ढीठ
३३४	८६	२	अबेली	अकेली
३३४	८८	४	उक्सायें	उकसायें
३३८	१०५	४	तैसो	जैसो
३३९	१०८	१	धरि हैं	धरि कैं
३४४	१२४	४	निरसत	निसरत

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४४	१२५	५	मुक्तनि	मुकतनि
३४७	१३५	२	दारू	दारु
३४७	१३६	३	थंमि थंमि	थंभि थंभि
३४९	१४४	१	बलत	बखत
— वही —		३	जजिया	जजिया की*
३५१	१४७	१	ओवें	आवें
३५१	१४८	३	कचील	कुचील
३५२	१४८	१	सिदूंर	सिंदूर
— वही —		२	चारी	नारी